



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 157]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 21, 2004/आषाढ़ 30, 1926

No. 157]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 21, 2004/ASADHA 30, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

विदेश व्यापार महानिदेशालय

सार्वजनिक सूचना

नई दिल्ली, 21 जुलाई, 2004

सं० 72 (आर ई-2003)/2002—2007

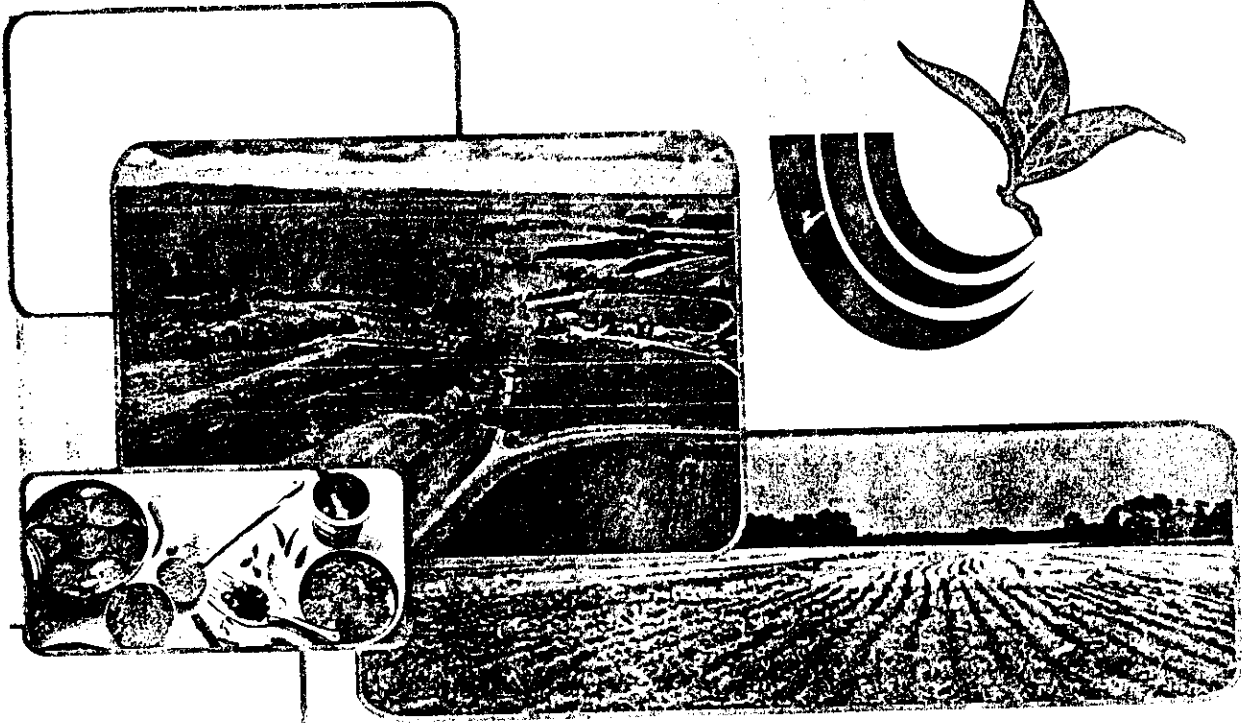
फा०सं० 01/91/180/000159/एम02/नीति-3.—पहले जारी सार्वजनिक सूचना संख्या 19, दिनांक 11 जून, 2001 और सार्वजनिक सूचना सं० 25, दिनांक 2 जुलाई, 2001 के अतिक्रमण में निर्यात-आयात नीति, 2002—2007 के पैराग्राफ 2.4 और 2.29 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए महानिदेशक, विदेश व्यापार, एतद्वारा प्रमाणित कार्बनिक उत्पादों के निर्यात के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाएं निर्धारित करते हैं :—

“कार्बनिक उत्पाद” के रूप में किसी कृषि उत्पाद को निर्यात करने की अनुमति केवल तभी दी जाएगी यदि इसे वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय (वाणिज्य विभाग) द्वारा कार्बनिक उत्पादों के लिए स्थापित राष्ट्रीय कार्बनिक उत्पाद संचालन समिति (एन एस सी ओ पी) द्वारा विधिवत मान्यता प्राप्त प्रमाणिकरण अभिकरण द्वारा जारी वैध कार्बनिक प्रमाण पत्र के तहत उत्पादित, प्रसंस्कृत और पैक किया गया हो। यह समिति परीक्षण और प्रमाणन अभिकरणों को मान्यता देने के प्रयोजन के लिए राष्ट्रीय मान्यता प्रदायक निकाय के रूप में कार्य करेगी”

2. एपेडा, मसाला बोर्ड, काफी बोर्ड और चाय बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त परीक्षण और प्रमाणन अभिकरणों को राष्ट्रीय कार्बनिक उत्पाद संचालन समिति द्वारा मान्यता प्राप्त माना जाएगा तथा कार्बनिक उत्पादों के परीक्षण और प्रमाणन के संबंध में मान्यता देने के प्रयोजन हेतु राष्ट्रीय मान्यता प्रदायक निकाय के नियंत्रणाधीन होगा।
3. कार्बनिक कृषि का ठीक प्रकार से विकास सुनिश्चित करने के लिए जून 2004 में वाणिज्य विभाग द्वारा प्रकाशित कार्बनिक उत्पादन हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम को इस सार्वजनिक सूचना के साथ संलग्न किया गया है।
4. इसे लोकहित में जारी किया जाता है।

गोपाल के० पिल्लै, महानिदेशक, विदेश व्यापार

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम



वाणिज्य विभाग

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

नई दिल्ली

प्राक्कथन

अपनी विविध कृषि-जलवायु संबंधी स्थितियों तथा कृषिपूरक जैव वैविध्य से युक्त होने के कारण भारत ऐसे जैविक उत्पादों की एक विशाल श्रृंखला की खेती तथा निर्यात की असीमित संभावनाओं से लैस हो गया है जिनकी अनेक विकसित देशों में विपुल मांग मौजूद है। जैविक खेती के केन्द्रीभूत तथा सु-निर्दिष्ट विकास को सुनिश्चित करने हेतु, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2000 में राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम का सूत्रपात किया गया।

तदनन्तर, इस कार्यक्रम को समर्थन प्रदान करने हेतु आवश्यक विभिन्न संघटकों को विकसित तथा अधिसूचित किया गया। इनमें उत्पादन, प्रसंस्करण, लेबलिना, भण्डारण तथा परिवहन हेतु राष्ट्रीय मानक सम्मिलित हैं। विश्वसनीय जैविक प्रमाणीकरण को सुकर बनाने हेतु प्रमाणीकरण एजेंसियों के द्वारा प्रमाणीकरण तथा निरीक्षण कार्यक्रमों के प्रत्यायन हेतु प्रणालियों, मापदण्डों तथा पद्धतियों को भी विकसित किया गया। अभी हाल ही में, एक राष्ट्रीय जैविक लोगो, “इण्डिया ऑर्गेनिक” को भी विकसित किया गया था जिसका उपयोग प्रमाणित जैविक उत्पादों के लिये किया जायेगा। इस लोगो तथा इसे संचालित करने वाले विनियमों को भी सरकार द्वारा प्रवर्तित किया गया है।

वाणिज्य सचिव की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय संचालन समिति (एनएससी), जिसमें अन्य संबंध मंत्रालयों, सरकारी विभागों तथा स्वायत्तशासी निकायों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है, ने उपर्युक्त समस्त प्रलेखन को अंतिम रूप प्रदान किया तथा यह समिति राष्ट्रीय कार्यक्रम की प्रगति की निरंतर रूप से निगरानी भी कर रही है। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात संवर्धन प्राधिकरण (एपीडा) को समन्वयन कार्य का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

कार्यक्रम के समस्त संघटकों को, अब, राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम” शीर्षक से एकल पुस्तक के रूप में संकलित किया जा चुका है जिससे कि संदर्भ ग्रहण करने में आसानी हो। एनएससी ने एपीडा द्वारा अपने तकनीकी परामर्शको, बाँयोटेक कॉन्सर्टियम इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली की सहायता से संकलित किये गये इन प्रलेखों पर विचार किया तथा उनको अनुमोदित किया। ऐसी आशा की जाती है कि यह संकलन भारत के जैविक उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं, व्यापारियों, निर्यातकों, आयातकों, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों और इनके साथ ही विदेशों के समान अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लिये एक उपयोगी संदर्भ-ग्रंथ के रूप में कार्य करेगा।

अनुभाग - 1

परिभाषाएँ

प्रत्यायन :

प्रत्यायन का अभिप्राय राष्ट्रीय जैविक उत्पाद मानकों के अनुसार तथा जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति तथा कार्यक्रम के दिशानिर्देशों के अनुसार जैविक फार्मों, उत्पादों तथा प्रक्रियाओं को प्रत्यायित करने हेतु प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा पंजीकरण से है।

प्रत्यायन एजेन्सी :

यह राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम की संचालन समिति के द्वारा प्रत्यायन निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को प्रत्यायित करने हेतु गठित की गयी एक एजेन्सी होगी।

प्रत्यायित कार्यक्रम :

का अभिप्राय उन प्रत्यायन निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के प्रत्यायन कार्यक्रम से है जिनको प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रत्यायित किया जा चुका है और जिन्होंने प्रत्यायन संविदा का अनुपालन करने हेतु सहमति व्यक्त की है।

वार्षिक रिपोर्ट :

का अभिप्राय प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों द्वारा प्रचालकों, उत्पादों तथा प्रसंस्करण कर्ताओं के संबंध में प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष प्रस्तुत की गयी रिपोर्ट से है।

अपील :

वह प्रक्रिया होगी जिसके द्वारा कोई निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा लिये गये किसी निर्णय पर पुनर्विचार करने हेतु अनुरोध कर सकता है अथवा कोई प्रचालक प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा लिये गये किसी निर्णय पर पुनर्विचार करने हेतु अनुरोध कर सकता है।

आवेदक :

वह निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी होगी जिसने प्रत्यायन हेतु प्रत्यायन एजेन्सी के सामने आवेदन किया हो।

प्रमाणपत्र :

का अभिप्राय किसी प्रत्यायित एजेन्सी द्वारा जारी किये गये एक प्रलेख से होगा जिसमें यह घोषित किया गया हो कि जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुसरण में विनिर्दिष्ट आवश्यकताओं के अनुसरण में प्रचालक द्वारा क्रियाकलापों को संचालित किया जा रहा है अथवा वर्णित उत्पादों को उत्पादित किया गया है।

पंजीकरण का प्रमाणपत्र :

का अभिप्राय निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा जारी किये गये प्रलेख से होगा जिसमें यह घोषित किया गया हो कि प्रचालक को विनिर्दिष्ट उत्पादों पर प्रमाणपत्र का प्रयोग करने हेतु लाइसेंस प्रदान किया गया है।

प्रमाणीकरण :

वह प्रक्रिया होगी जिसके द्वारा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा एक लिखित आश्वासन दिया जाता है कि एक स्पष्ट रूप से अभिनिर्धारित उत्पादन अथवा प्रसंस्करण प्रणाली का विधिवत ढंग से मूल्यांकन किया गया है और विनिर्दिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप है।

प्रमाणीकरण चिह्न :

का अभिप्राय प्रमाणीकरण कार्यक्रम के चिह्न, प्रतीक अथवा लोगो से है जोकि उत्पादों का जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रमाणित किये जाने के रूप में अभिनिर्धारित करता है।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम :

का अभिप्राय किसी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा इसमें विनिर्दिष्ट रूप में अनुरूपता का प्रमाणीकरण सम्पादित करने हेतु मापदण्डों के अनुसरण में प्रचालित प्रणाली से होगा।

प्रमाणीकरण हस्तांतरण :

किसी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा स्वयं अपने प्रमाणित प्रचालकों को कार्यक्रम के अपने प्रमाणीकरण चिह्न के अधीन उन उत्पादों का व्यापार अथवा प्रसंस्करण करने की, जिन्हें अन्य कार्यक्रम के द्वारा प्रमाणित किया गया हो, अनुमति प्रदान करने के उद्देश्य से, किसी अन्य प्रमाणीकरण कार्यक्रम अथवा एजेन्सी अथवा उस कार्यक्रम या एजेन्सी के द्वारा प्रमाणित परियोजनाओं अथवा उत्पादों की औपचारिक मान्यता।

सक्षम प्राधिकारी :

का अभिप्राय प्रत्यायन हेतु आधिकारिक सरकारी एजेन्सी से है।

परामर्शी सेवा :

का अभिप्राय जैविक प्रचालनों हेतु, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पद्धतियों से स्वतंत्र, परामर्शदात्री सेवा से है।

पारंपरिक :

ऐसी कृषि प्रणालियाँ जोकि कृत्रिम उर्वरकों तथा / अथवा रासानयिकों और कीटनाशकों के इनपुट पर निर्भर करती हैं अथवा जो जैविक उत्पादन के आधारभूत मानकों के साथ मेल नहीं खाती हैं।

रूपान्तरण :

किसी कृषि-फार्म को पारंपरिक से जैविक फार्म में परिवर्तित करने की प्रक्रिया। इसे संक्रमण भी कहा जाता है।

रूपान्तरण अवधि :

जैविक प्रबन्धन के आरंभ होने, तथा फसलों का जैविक के रूप में प्रमाणीकरण के मध्य का समय।

मूल्यांकन :

यह किसी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्य निष्पादन के क्रमबद्ध परीक्षण की प्रक्रिया होगी जिसमें यह जाँच की जायेगी कि वह राष्ट्रीय प्रत्यायन कार्यक्रम के अंतर्गत विनिर्दिष्ट आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूरा करती है।

फार्म यूनिट :

एक ऐसा कृषि फार्म, भू-भाग अथवा उत्पादन यूनिट जिसका किसी एक कृषक अथवा कृषकों के एक समूह के द्वारा जैविक रूप से प्रबंधन किया जाता हो।

खाद्य योज्य :

संपूरक अथवा संवर्धन के रूप में मिलाया गया कोई पदार्थ, जो किसी खाद्य उत्पाद की परिरक्षण गुणवत्ता तथा संगति को प्रभावित करता हो।

जैविक उत्पादन तथा प्रसंस्करण हेतु दिशानिर्देश :

जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुसरण में विशिष्ट फसलों के लिये प्रत्यायन एजेन्सियों के द्वारा जैविक उत्पादन तथा प्रसंस्करण हेतु स्थापित मानक।

संघटक :

का अभिप्राय किसी भी ऐसे पदार्थ, जिसमें खाद्य योज्य भी सम्मिलित हैं, से होगा जिसको किसी खाद्य पदार्थ के विनिर्माण अथवा तैयारी में प्रयुक्त किया गया हो तथा जो तैयार उत्पाद में, भले ही संभवतः एक रूपान्तरित रूप में, उपस्थित हो।

प्रतिबंधित इनपुट्स :

वे मर्दे, जिनका जैविक खेती में प्रयोग करना प्रतिबंधित है।

इनपुट विनिर्माण :

का अभिप्राय जैविक उत्पादन के विनिर्माण अथवा इनपुट्स के प्रसंस्करण से है।

अनुमत्त इनपुट :

वे मर्दे जिनका जैविक खेती में प्रयोग किया जा सकता है।

नियंत्रित इनपुट्स :

वे मर्दे, जिनके प्रयोग के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले संदूषण जोखिम, प्राकृतिक असंतुलन तथा अन्य कारकों का एक सतर्क मूल्यांकन करने के उपरांत, एक नियंत्रित रीति में, जैविक खेती में उनका प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की गयी है। कृषकों को प्रमाणकर्ता एजेन्सी से परामर्श करना चाहिये।

निरीक्षण :

इसमें यह सत्यापित करने हेतु स्थल दौरा सम्मिलित होगा कि किसी प्रचालन का कार्यनिष्पादन उत्पादन अथवा प्रसंस्करण मानकों के अनुसरण में है अथवा नहीं।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी :

यह निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण हेतु उत्तरदायी संगठन होगा।

निरीक्षण एजेन्सी :

का अभिप्राय ऐसे एजेन्सी से है जोकि राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति एवं कार्यक्रम के अनुसार निरीक्षण सेवाओं को निष्पादन करती है।

निरीक्षक :

वह व्यक्ति होगा जिसे निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के द्वारा किसी प्रचालक के निरीक्षण को सम्पादित करने हेतु नियुक्त किया गया हो।

आंतरिक समीक्षा :

का अभिप्राय प्रमाणीकरण अथवा स्वयं प्रत्यायन एजेन्सी के द्वारा किसी कार्यक्रम के उद्देश्यों तथा कार्य-निष्पादन के मूल्यांकन से होगा।

लेबलिन्ग :

का अभिप्राय लेबल पर उपस्थित किसी भी लिखित, मुद्रित अथवा ग्राफिक विषयवस्तु से होगा जोकि खाद्य पदार्थ के साथ संलग्न हो, अथवा खाद्यपदार्थ के समीप प्रदर्शित की गई हो और इसमें उसकी बिक्री अथवा निपटान को प्रोत्साहित करने के प्रयोजनार्थ विषयवस्तु भी सम्मिलित होगी।

लाइसेन्स :

प्रत्यायन संविदा होगी जो कि राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अनुसरण में किसी प्रमाणकर्ता को उसकी प्रत्यायित हैसियत के साथ सम्बद्ध अधिकारों को प्रदान करती है।

पशुधन :

का अभिप्राय किसी भी घरेलू अथवा पालतू पशु से होगा जिनमें भोजन हेतु अथवा भोजन के उत्पादन में पाले जानेवाले गोजातीय (भैंस तथा गवल सहित), भेड़, शूकरीय, बकरी, अश्वीय, मुरगा तथा मधुमक्खियाँ भी सम्मिलित हैं। जंगली जानवरों के शिकार अथवा मछली पकड़ने के उत्पादों को इस परिभाषा का एक अंग नहीं माना जायेगा।

मार्किटिंग :

का अभिप्राय बिक्री हेतु धारण करना अथवा बिक्री हेतु प्रदर्शित करना, बिक्री हेतु प्रस्तुत करना, व्यवस्थित करना, सुपुर्दगी करना अथवा किसी भी अन्य रूप में बाजार में रखने से होगा।

प्रचालक :

का अभिप्राय एक ऐसी व्यक्ति अथवा व्यापारिक उद्यम से होगा जो जैविक खेती अथवा जैविक प्रसंस्करण का व्यवसाय करता हो।

जैविक :

का अभिप्राय एक ऐसी विशेष कृषि प्रणाली से होगा जिसको मानकों में यथारूप में वर्णित किया गया है और रसायन विज्ञान में प्रयुक्त पदार्थों से नहीं होगा।

जैविक कृषि :

यह पारिस्थितिक प्रणाली की रचना करने हेतु फार्म डिजाइन तथा प्रबंधन की एक ऐसी प्रणाली है जो रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों जैसे कृत्रिम बाहरी इनपुट्स का प्रयोग किये बिना ही पोषणीय उत्पादकता को हासिल कर सकती है।

पद्धतियों का पैकेज :

क्षेत्र की दृष्टि से विशिष्ट रूप से, विशेष फसलों के लिये प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा जैविक उत्पादन तथा प्रसंस्करण हेतु स्थापित किये गये दिशानिर्देश ।

समानांतर उत्पादन :

का अभिप्राय किसी भी ऐसे उत्पादन से होगा जिसमें एक ही यूनिट में प्रमाणित जैविक गुणवत्ता तथा गैर-प्रमाणित जैविक गुणवत्ता, दोनों में ही, समान उत्पादों का विकास, पोषण, हैण्डलिंग अथवा प्रसंस्करण किया जा रहा हो । इसी प्रकार से, समान उत्पाद के "जैविक" तथा "रूपान्तरणाधीन" उत्पादन की स्थिति को भी समानांतर उत्पादन कहा जाता है ।

आंशिक रूपान्तरण :

उस स्थिति में माना जायेगा जबकि किसी पारंपरिक फार्म अथवा यूनिट के एक भाग को तो पहले से ही जैविक उत्पादन अथवा प्रसंस्करण में रूपान्तरित किया जा चुका हो और दूसरा भाग रूपान्तरण की प्रक्रिया के अधीन हो ।

वनस्पति संरक्षण उत्पाद :

का अभिप्राय किसी कीट अथवा रोग, जिसमें खाद्य पदार्थों, कृषि परक वस्तुओं, अथवा पशु आहारों के उत्पादन, भण्डारण, परिवहन, वितरण और प्रसंस्करण के दौरान पौधों अथवा पशुओं की अवांछित प्रजातियाँ भी सम्मिलित हैं, की रोकथाम, विनाश, आकर्षित करने, विकर्षित करने, अथवा नियंत्रित करने हेतु आशयित किसी पदार्थ से होगा ।

तैयारी :

का अभिप्राय कृषि उत्पादों का काटने, प्रसंस्करण, परिरक्षण तथा पैकेजिंग के प्रचालनों तथा जैविक उत्पादन विधि के प्रस्तुतिकरण से संबंधित लेबलिंग में किये गये परिवर्तनों से भी होगा ।

प्रसंस्करण सहायक - सामग्रियाँ :

एक ऐसा पदार्थ अथवा सामग्री जिसका स्वयं एक खाद्य संघटक रूप में तो सेवन नहीं किया जाता हो, परन्तु अभिक्रिया अथवा प्रसंस्करण के दौरान कतिपय प्रौद्योगिकीय प्रयोजन को पूरा करने हेतु कच्ची सामग्रियों, खाद्य वस्तु अथवा उसके संघटकों का प्रसंस्करण करने में प्रयुक्त किया जाता हो और जिसकी परिणति तैयार उत्पाद में अवशेषों अथवा कृत्रिम तत्वों की अनाशयित परन्तु अपरिहार्य उपस्थिति के रूप में होती है ।

कच्ची सामग्रियाँ :

खाद्य योज्यों के अतिरिक्त समस्त संघटक ।

मानक :

का अभिप्राय राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम हेतु संचालन समिति के द्वारा राष्ट्रीय जैविक उत्पादों हेतु स्थापित मानकों से होगा ।

पशुचिकित्सा औषधि :

का अभिप्राय किसी भी खाद्य-उत्पादक पशु, यथा मांस अथवा दुग्ध-उत्पादक पशुओं, मुर्गियों, मछली अथवा मधुमक्खियों पर लेपित अथवा प्रयुक्त किसी भी पदार्थ से होगा, भले ही उसका प्रयोग चिकित्सीय, रोगनिरोधक अथवा नैदानिक प्रयोजनों या शारीरिक प्रकार्यों अथवा व्यवहार के परिवर्तन हेतु किया गया हो ।

अनुभाग - 2

राष्ट्रीय जैविक कार्यक्रम का स्कोप तथा प्रचालनात्मक संरचना

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम एक राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति तथा कार्यक्रम के माध्यम से जैविक उत्पादन हेतु राष्ट्रीय मानकों के क्रियान्वयन हेतु एक संस्थागत तंत्र को उपलब्ध कराने का विचार रखता है। राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के लक्ष्यों में, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- क) अनुमोदित मापदण्डों के अनुसार जैविक खेती तथा उत्पादों हेतु प्रमाणीकरण कार्यक्रमों के मूल्यांकन के साधनों को उपलब्ध कराना
- ख) प्रमाणीकरण कार्यक्रमों को प्रत्यायित करना
- ग) जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों की अनुरूपता में जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण को सुकर बनाना
- घ) जैविक खेती तथा जैविक प्रसंस्करण के विकास को प्रोत्साहित करना

2.1 स्कोप

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम में, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित को शामिल किया जायेगा :

- क) जैविक उत्पादों के विकास तथा प्रमाणीकरण हेतु नीतियाँ
- ख) जैविक उत्पादों तथा प्रक्रियाओं हेतु राष्ट्रीय मानक
- ग) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों द्वारा प्रचालित किये जानेवाले कार्यक्रमों का प्रत्यायन
- घ) जैविक उत्पादों का प्रमाणीकरण

2.2 संरचना

2.2.1 प्रचालनात्मक संरचना :

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम की प्रचालनात्मक संरचना को आरेख 1 में दर्शाया गया है। इस कार्यक्रम को भारत सरकार द्वारा शीर्ष निकाय के रूप में वाणिज्य मंत्रालय के माध्यम से विकसित तथा क्रियान्वित किया जायेगा। यह मंत्रालय राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम हेतु एक राष्ट्रीय संचालन समिति का गठन करेगा जिसके सदस्यों का चयन जैविक आंदोलन के साथ जुड़े हुए वाणिज्य मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, वस्तु बोर्डों तथा अन्य सरकारी एवं निजी संगठनों में से किया जायेगा। राष्ट्रीय मानक और प्रत्यायन संबंधी प्रासंगिक मुद्दों के विषय में राष्ट्रीय संचालन समिति को परामर्श देने के लिये, उप-समितियों की नियुक्ति की जायेगी। राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम संबंधी राष्ट्रीय संचालन समिति एक राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति तथा कार्यक्रम को प्रतिपादित करेगी और जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों को तैयार करेगी जिसमें जैविक उत्पादन तथा प्रक्रियाओं के लिये मानक तथा राष्ट्रीय जैविक प्रमाणीकरण के प्रयोग के लिए विनियम भी सम्मिलित होंगे।

राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति तथा कार्यक्रम को राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय द्वारा संचालित किया जायेगा जो कि प्रत्यायन कार्यक्रमों तथा प्रचालनों हेतु समग्र नीति उद्देश्यों को परिभाषित करेगी। राष्ट्रीय संचालन समिति जब भी उचित समझे, प्रत्यायन पद्धतियों में संशोधन कर सकती है। राष्ट्रीय प्रत्यायन नीति तथा कार्यक्रम सावधिक आंतरिक समीक्षा के अध्वनीन हैं, जिसको तकनीकी समिति द्वारा संचालित किया जायेगा जो राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम में इस प्रकार के संशोधनों की आवश्यकता और अंतर्वस्तु के बारे में राष्ट्रीय संचालन समिति को परामर्श देगी।

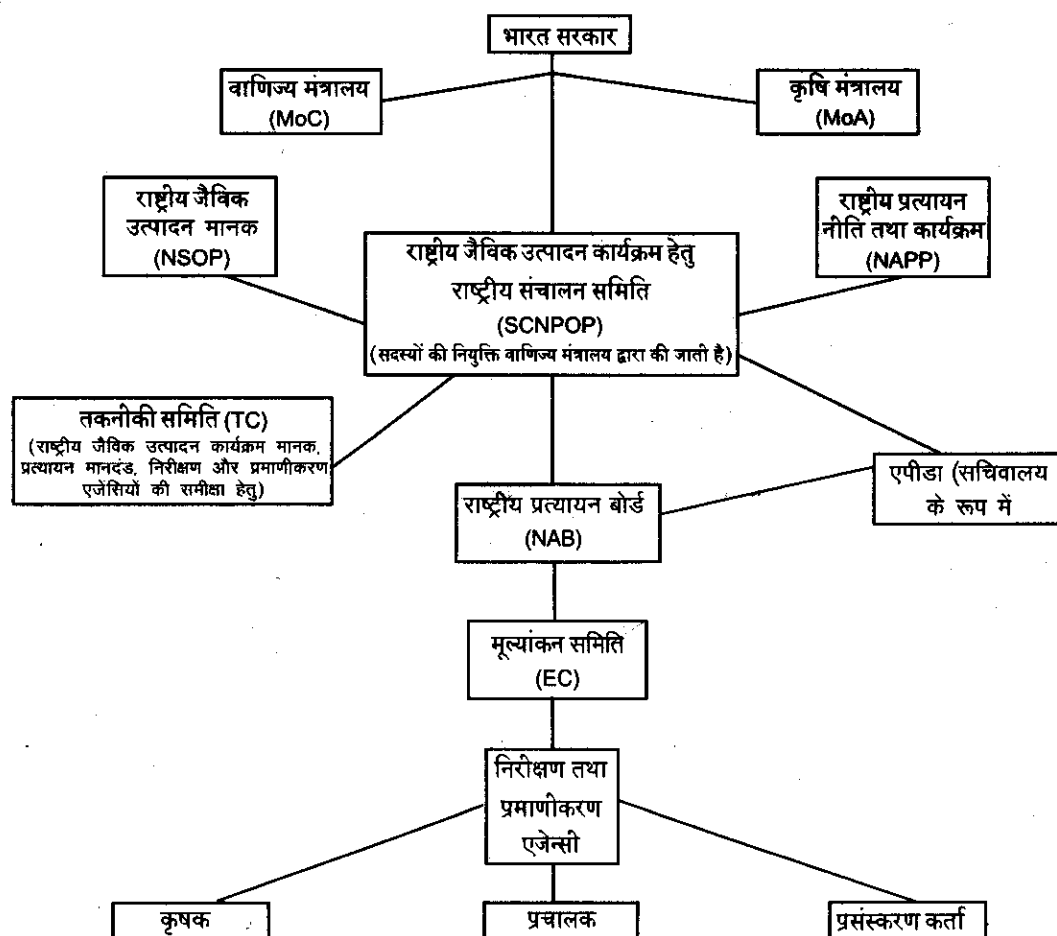
2.2.2 राष्ट्रीय प्रत्यायन एजेंसी

राष्ट्रीय संचालन समिति राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय के रूप में भी काम करेगी। राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय के सदस्य कृषि मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय और वस्तु बोर्डों के प्रतिनिधि होंगे। इस निकाय का अध्यक्ष राष्ट्रीय संचालन समिति का अध्यक्ष होगा। राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय के कार्य में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे:

- क) प्रमाणीकरण कार्यक्रमों के मूल्यांकन तथा प्रत्यायन हेतु पद्धतियों को तैयार करना।
- ख) कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने वाली एजेंसियों के मूल्यांकन हेतु पद्धतियों को सूत्रबद्ध करना।
- ग) निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेंसियों का प्रत्यायन

प्रत्येक प्रमाणकर्ता प्रमाणीकरण कार्यक्रम को क्रियान्वित करेगा तथा प्रमाणकर्ता को प्रत्यायित किये बिना किसी कार्यक्रम को प्रत्यायित नहीं किया जा सकता है।

आरेख 1 : राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP) की प्रचालनात्मक संरचना



2.2.3 मूल्यांकन एजेंसी

प्रत्यायन समिति द्वारा प्रमाणीकरण कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने वाली योग्य निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों का मूल्यांकन किया जायेगा। राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय द्वारा मूल्यांकन समिति की नियुक्ति की जायेगी। मूल्यांकन समिति के सदस्य वस्तु बोर्ड, कृषि मंत्रालय, ई आई सी/ई आई ए से लिये गये सदस्य होंगे। राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय की ओर से एपीडा, प्रमाणीकरण एजेंसियों से आवेदन पत्रों को प्राप्त करेगा और छांटेगा, आवेदकों के प्रमाणीकरण कार्यक्रमों की विश्वसनीयता का पता करने के उद्देश्य से मूल्यांकन दौरों आदि में समन्वय करेगा तथा उनकी व्यवस्था करेगा। मूल्यांकन समिति प्रत्यायन पर विचारार्थ अपनी सिफारिशें राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करेगी।

2.2.4 प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियां

मूल्यांकन समिति की सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय द्वारा उपयुक्त निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों को प्रत्यायित किया जायेगा। इन एजेंसियों को प्रचालन पद्धतियों, जैविक उत्पादन के राष्ट्रीय मानकों और अन्तरराष्ट्रीय मानकों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। उनके कार्यक्रम कम से कम एक वर्ष से चल रहे हों और वे इसकी पुष्टि में दस्तावेज प्रस्तुत कर सकें।

2.2.5 निरीक्षकगण

प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों द्वारा नियुक्त निरीक्षकगण विनिर्दिष्ट फारमेट्स के अनुसार प्रचालकों के द्वारा तैयार किये गये रिकार्ड्स तथा सांघिक स्थल निरीक्षण के माध्यम से प्रचालनों के निरीक्षण को सम्पादित करेंगे। मानकों तथा प्रमाणीकरण कार्यक्रमों के अनुपालन के आधार पर, प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी उत्पादों तथा प्रचालनों की जैविक अवस्थिति को, उनकी अवस्थाओं और सिफारिशों को विनिर्दिष्ट करते हुए प्रमाणित करेंगी।

अनुभाग - 3

जैविक उत्पादन हेतु राष्ट्रीय मानक

3.1 सामान्य फसल उत्पादन तथा पशुपालन

3.1.1 रूपान्तरण आवश्यकताएँ

सामान्य सिद्धांत

जैविक कृषि का अभिप्राय एक व्यवहार्य तथा पोषणीय कृषि-परिस्थितिक प्रणाली को विकसित करने की एक प्रक्रिया से है। फसलों तथा / अथवा पशुपालन के जैविक प्रबंधन के आरंभ तथा प्रमाणीकरण के बीच के समय को रूपान्तरण अवधि के नाम से जाना जाता है।

सम्पूर्ण फार्म, जिसमें पशुधन भी सम्मिलित है, को मानकों के अनुसार तीन वर्षों की अवधि के भीतर रूपान्तरित किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

एक पोषणीय कृषि-पारिस्थितिक प्रणाली द्वारा सर्वश्रेष्ठ ढंग से कार्य करने हेतु, फसल उत्पादन तथा पशुपालन में विविधता को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जाना चाहिये कि खेती प्रबंधन के सभी तत्व अन्योन्यक्रिया करते रहें।

एक निश्चित समयावधि के भीतर रूपान्तरण को निष्पादित किया जाना चाहिये। किसी फार्म को चरणबद्ध रूप से रूपान्तरित किया जाना चाहिये।

फसल उत्पादन की समग्रता तथा सभी पशुपालन को जैविक प्रबन्धन में रूपान्तरित किया जाना चाहिये।

इस बारे में एक स्पष्ट योजना तैयार की जानी चाहिये कि रूपान्तरण को किस प्रकार से आगे बढ़ाया जायेगा। यदि आवश्यक हो, इस योजना को अद्यतन किया जाना चाहिये तथा इन मानकों से संबंधित सभी पहलुओं को इसमें शामिल किया जाना चाहिये।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम को इस बारे में मानकों का निर्धारण करना चाहिये कि विभिन्न कृषि प्रणालियों को किस प्रकार उत्पादन तथा साथ ही साथ प्रलेखन में स्पष्ट रूप से विभाजित किया जा सकता है, और मानकों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिये कि इनपुट कारकों तथा उत्पादों को आपसी मिश्रण को किस प्रकार से रोका जाये।

मानक

3.1.1.1.

मानक आवश्यकताओं को रूपान्तरण अवधि के भीतर पूरा किया जायेगा। समस्त मानक आवश्यकताओं को रूपान्तरण अवधि के आरंभ से ही लेकर प्रासंगिक पहलुओं के संबंध में लागू किया जायेगा।

3.1.1.2.

यदि सम्पूर्ण फार्म को रूपान्तरित नहीं किया गया हो, तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेगा कि फार्म के जैविक तथा पारंपरिक भाग पृथक् तथा निरीक्षण योग्य हों।

3.1.1.3.

किसी फार्म/परियोजना के उत्पादों को जैविक के रूप में प्रमाणित किये जाने से पूर्व, रूपान्तरण अवधि के दौरान निरीक्षण को निष्पादित किया जायेगा। रूपान्तरण अवधि के आरंभ की गणना प्रमाणीकरण कार्यक्रम को आवेदन किये जाने की तिथि से अथवा अननुमोदित फार्म इनपुट्स के अंतिम आवेदन की तिथि से की जाती है, बशर्ते कि वह यह निरूपित कर सके कि क्रियान्वयन की उस तिथि से मानक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता रहा है।

रूपान्तरण अवधि की लंबाई जानने हेतु, कृपया अनुभाग 3.2.2 तथा 3.3.2. देखिये।

3.1.1.4.

ऐसे पारंपरिक, रूपान्तरणाधीन तथा / अथवा जैविक फसलों या पशु उत्पादों के समकालिक उत्पादन को अनुमति प्रदान नहीं की गयी है जिनकी एक दूसरे से स्पष्ट रूप से अलग पहचान नहीं की जा सकती है।

3.1.1.5.

जैविक तथा पारंपरिक उत्पादन के मध्य एक स्पष्ट पृथक्करण को सुनिश्चित करने हेतु, प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा, जब भी उचित हो, तो सम्पूर्ण उत्पादन प्रणाली का निरीक्षण किया जायेगा।

3.1.1.6.

जहाँ पर अनेक वर्षों से वस्तुतः पूर्ण मानक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता रहा हो और जहाँ पर अनेक साधनों तथा स्रोतों के माध्यम से इसकी पुष्टि की जा सकती हो, वहाँ पर एक सम्पूर्ण रूपान्तरण अवधि की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे मामलों में निरीक्षण एक युक्ति संगत समय अंतराल के साथ प्रथम फसल से पूर्व निष्पादित किया जायेगा।

3.1.2 जैविक प्रबन्धन का अनुरक्षण

सामान्य सिद्धांत

जैविक प्रमाणीकरण निरंतरता पर आधारित है।

सिफारिशें

प्रमाणीकरण कार्यक्रम को केवल ऐसे उत्पादन को प्रमाणित करना चाहिये जिसको एक दीर्घविधि आधार पर जारी रखने की संभावना हो।

मानक

3.1.2.1.

रूपान्तरित भूमि तथा पशुओं को जैविक तथा पारंपरिक प्रबंधन के बीच में परिवर्तन करते रहने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

3.1.3 भूमि की प्राकृतिक स्थिति

सामान्य सिद्धांत

जैविक कृषि को पारिस्थितिकी में सकारात्मक रूप से योगदान करना चाहिये।

सिफारिशें

निम्नलिखित क्षेत्रों का समुचित रूप से प्रबंधन किया जाना चाहिये तथा जैववैविध्य को सुकर बनाने हेतु जोड़ा जाना चाहिये :

- विस्तृत घासस्थली यथा झाबरभूमि, सरकण्डा भूमि अथवा शुष्क भूमि
- सामान्यतः वे सभी क्षेत्र जो कि आर्वतन के अधीन नहीं हैं तथा जिनमें भारी मात्रा में खाद नहीं डाला गया हो।
- विस्तृत चरागाह, बाँगर, विस्तृत घासस्थली, विस्तृत फलोद्यान, बाड़, बाड़ पंक्ति, वृक्षों के समूह तथा/अथवा झाड़ियाँ और वनरेखाएँ
- पारिस्थितिक दृष्टि से संपन्न बंजर भूमि अथवा कृष्य भूमि
- पारिस्थितिक दृष्टि से वैविध्य युक्त (विस्तृत) क्षेत्र सीमान्त
- नहरें, तालाब, झरने, नालियाँ, नमभूमि तथा दलदल और अन्य जल-समृद्ध क्षेत्र जिनको गहन कृषि अथवा जल उत्पादन हेतु प्रयुक्त नहीं किया जाता है।
- कूड़े के ढेर पर उगने वाली पादपजात से युक्त क्षेत्र

प्रमाणीकरण कार्यक्रम जैववैविध्य तथा प्राकृतिक संरक्षण को सुकर बनाने हेतु कृषि क्षेत्र की एक न्यूनतम प्रतिशतता हेतु मानकों को निर्धारित करेगा।

मानक

3.1.3.1.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्राकृतिक दृश्य तथा जैव विविधता मानकों को विकसित करेगा।

3.2. फसल उत्पादन

3.2.1 फसलों तथा किस्मों का चयन

सामान्य सिद्धांत

समस्त बीजों तथा वनस्पति सामग्री को प्रमाणित जैविक होना चाहिये।

सिफारिशें

उपजायी गयी प्रजातियों तथा किस्मों का मृदा तथा जलवायुपरक अवस्थाओं के प्रति अनुकूलित होना चाहिये तथा कीटों और रोगों का प्रतिरोधी होना चाहिये।

किस्मों का चयन करते समय आनुवंशिक वैविध्य को ध्यान में रखा जाना चाहिये।

मानक

3.2.1.1

यदि जैविक बीज तथा वनस्पति सामग्रियाँ उपलब्ध हों, तो उनका प्रयोग किया जायेगा। प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रमाणित जैविक बीज तथा अन्य वनस्पति सामग्री की आवश्यकता हेतु समय सीमाओं को निर्धारित करेगा।

3.2.1.2

यदि प्रमाणित जैविक बीज तथा वनस्पति सामग्रियाँ उपलब्ध नहीं हों, तो रासायनिक रूप से असंसाधित पारंपरिक सामग्रियों का प्रयोग किया जायेगा।

3.2.1.3.

आनुवांशिक रूप से तैयार किये गये बीजों, पराग, पराजीन पौधों अथवा वनस्पति सामग्री का प्रयोग करने की अनुमति नहीं है।

3.2.2 रूपान्तरण अवधि का कार्यकाल

सामान्य सिद्धांत

जैविक प्रबंधन प्रणाली की स्थापना तथा मृदा उर्वरता के निर्माण हेतु एक अंतरिम अवधि, रूपान्तरण अवधि की आवश्यकता होती है। रूपान्तरण अवधि का कार्यकाल मृदा उर्वरता को सुधारने तथा पर्यावरण प्रणाली के संतुलन को पुनः स्थापित करने हेतु सदैव पर्याप्त नहीं रहता है परन्तु यही वह अवधि है जिसमें इन सभी लक्ष्यों को हासिल करने हेतु आवश्यक समस्त कार्यवाहियों को आरंभ किया जाता है।

सिफारिशें

रूपान्तरण अवधि का :

- भूमि के पुराने उपयोग
- पारिस्थितिक अवस्था

के साथ अनुकूलन होना जरूरी होता है।

मानक

3.2.2.1.

यदि बीज बोने से पहले कम से कम दो वर्षों अथवा घासस्थली को छोड़कर अन्य बारहमासी फसलों के मामले में, उत्पादों की पहली उपज से कम से कम तीन वर्षों (छत्तीस महीनों) की एक रूपान्तरण अवधि के दौरान राष्ट्रीय मानक आवश्यकताओं को पूरा कर दिया गया हो, तो उत्पादित वनस्पति उत्पादों को जैविक प्रमाणित किया जा सकता है। प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी भूमि के पिछली स्थिति को ध्यान में रखते हुए कतिपय मामलों (यथा दो वर्षों अथवा इससे अधिक समय के लिये खाली उपयोग) में रूपान्तरण अवधि को बढ़ाने अथवा कम करने का निर्णय कर सकती है परन्तु इस अवधि का बारह महीनों के बराबर अथवा इससे अधिक होना अनिवार्य है।

3.2.2.2.

भूमि के पिछले उपयोग तथा पर्यावरणीय दशाओं आदि पर निर्भर करते हुए प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा रूपान्तरण अवधि को बढ़ाया जा सकता है।

3.2.2.3.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम फार्म की रूपान्तरण अवधि के दौरान वनस्पति उत्पादों को “रूपान्तरण की प्रक्रियाधीन जैविक खेती की उपज” अथवा इससे मिलते-जुलते विवरण के रूप में बेचे जाने की अनुमति प्रदान कर सकता है।

3.2.2.4

चारे के लिये इनपुट्स की गणना करने हेतु, जैविक प्रबंधन के प्रथम वर्ष के दौरान फार्म यूनिट में पैदा किये गये चारे को जैविक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसका तात्पर्य केवल ऐसे पशुओं के चारे से है जिन्हें स्वयं भी फार्म यूनिट के भीतर ही पैदा किया जा रहा हो तथा ऐसे चारे को जैविक के रूप में बेचा अथवा अन्य विपणन नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय मानकों के अनुसरण में फार्मों पर पैदा किये गये चारे को पारंपरिक रूप से उगाये, आयातित गये चारे की तुलना में वरीयता दी जायेगी।

3.2.3 फसल उत्पादन में विविधता

सामान्य सिद्धांत

बागबानी, खेती अथवा वनप्रान्त में मृदा की संरचना तथा उर्वरता और आसपास के पर्यावरण को ध्यान में रखने तथा पोषक तत्वों की हानि को न्यूनतम स्तर पर रखते हुए प्रजातियों की एक विविधता को उपलब्ध कराने को बनाया (फसल उत्पादन का आधार) जाता है।

सिफारिशें

फसल उत्पादन में विविधता को निम्नलिखित के सम्मिश्रण से हासिल किया जाता है :

- फलियों के साथ परिवर्तनशील फसल आवर्तन
- उत्पादन-वर्ष के दौरान भिन्न वनस्पति प्रजातियों के साथ मृदा की एक उपयुक्त कवरेज

मानक

3.2.3.1.

जहाँ भी उचित हो, प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह माँग करेगा कि एक निश्चित समय अथवा स्थान पर पर्याप्त विविधता को एक ऐसे ढंग

से हासिल किया जाये जिसमें कीड़ों, खरपतवार, रोगों तथा अन्य कीटों से पड़ने वाले दबाव को ध्यान में रखा गया हो, परन्तु इसके साथ ही मृदा, जैविक तत्व, उर्वरता, जीवाणु गतिविधि तथा सामान्य मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखा जाये अथवा उसमें वृद्धि की जाये। गैर-बारहमासी फसलों के लिये, इस सामान्य रूप से, परन्तु विशेष रूप से नहीं, फसल आवर्तन के माध्यम से हासिल किया जाता है।

3.2.4 उर्वरण नीति

सामान्य सिद्धांत

जीवाणु, वनस्पति अथवा पशु मूल की जैविक रूप से नष्ट हो सकने वाली सामग्री की पर्याप्त मात्राओं को मृदा को वापिस दिया जाना चाहिये जिससे कि उसकी उर्वरता तथा उसके भीतर जैविक क्रियाकलापों को बढ़ाया अथवा कम से कम बनाये रखा जा सके।

जैविक फार्मों पर पैदा की गयी जीवाणु, वनस्पति अथवा पशु मूल की जैविक रूप से नष्ट की जा सकने वाली सामग्री को उर्वरण कार्यक्रम का आधार बनाया जाना चाहिये।

सिफारिशें

उर्वरण प्रबंधन को पोषक तत्वों की हानियों को न्यूनतम कर देना चाहिये।

भारी धातुओं तथा अन्य प्रदूषणकारी तत्वों के एकत्रीकरण की रोकथाम की जानी चाहिये।

अकृत्रिम खनिज उर्वरकों तथा आयातित जैविक मूल के उर्वरकों को पोषण पुनःचक्रण के संपूरक के रूप में माना जाना चाहिये और एक स्थानापन्न के रूप में नहीं।

मृदा में समुचित pH स्तरों को बनाये रखा जाना चाहिये।

मानक

3.2.4.1.

जीवाणु, वनस्पति अथवा पशु मूल की जैविक रूप से नष्ट की जा सकने वाली सामग्री को उर्वरण कार्यक्रम का आधार बनाया जाना चाहिये।

3.2.4.2.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम स्थानीय दशाओं तथा फसलों की विशिष्ट प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, फार्म यूनिट पर लायी जा सकने वाली जीवाणु, वनस्पति अथवा पशु मूल की जैविक रूप से नष्ट की जा सकने वाली सामग्री की कुल मात्रा की सीमाओं को निर्धारित करेगा।

3.2.4.3.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम ऐसे मानकों को निर्धारित करेगा जोकि ऐसी जगहों पर पशु चरागाहों के आवश्यकता से अधिक मात्रा में खादयुक्त होने से रोकथाम करें जहाँ पर प्रदूषण का खतरा मौजूद हो।

3.2.4.4.

आयातित सामग्री (गमलों के लिये कम्पोस्ट सहित) को परिशिष्ट 1 तथा 2 के अनुसरण में होना चाहिये।

3.2.4.5.

साग-सब्जियों के लिये मानव अवशिष्ट (मल तथा मूत्र) से युक्त खाद का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

3.2.4.6.

खनिज उर्वरकों का कार्बन आधारित सामग्रियों के साथ केवल एक सम्पूरक भूमिका के रूप में प्रयोग किया जायेगा। प्रयोग की अनुमति केवल उसी स्थिति में दी जायेगी जबकि अन्य उर्वरता प्रबंधन पद्धतियों का इष्टतम प्रयोग किया जा चुका हो।

3.2.4.7.

खनिज उर्वरकों को उनके प्राकृतिक संघटन में ही प्रयोग किया जायेगा और रासायनिक शोधन के द्वारा उनको अधिक विलयशील नहीं बनाया जायेगा। प्रमाणीकरण कार्यक्रम आपवादिक स्थितियों में इसकी अनुमति प्रदान कर सकता है जहाँ पर ऐसा करना औचित्यपूर्ण सिद्ध हो। इन अपवादों में नाइट्रोजन से युक्त खनिज उर्वरकों को शामिल नहीं किया जायेगा (परिशिष्ट 1 देखिये)।

3.2.4.8.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम खनिज पोटेशियम, मैग्नेशियम उर्वरकों, सूक्ष्ममात्रिक तत्वों, खाद तथा उर्वरकों जैसे इनपुट्स के प्रयोग पर प्रतिबंध लगायेगा जिनमें सापेक्षिक रूप से उच्च भारी धातु अंश तथा/अथवा अन्य अवांछित पदार्थ, यथा क्षारीय धातुपिण्ड, रॉक फास्फेट तथा मलजल कीचड़ उपस्थित हो (परिशिष्ट 1 और 2)।

3.2.4.9.

चिलीयन नाइट्रेट तथा यूरिया सहित सभी कृत्रिम नाइट्रोजन युक्त उर्वरक निषिद्ध हैं।

3.2.5 कीट, रोग तथा वृद्धि नियामकों सहित खरपतवार प्रबंधन

सामान्य सिद्धांत

जैविक कृषि प्रणाली को इस प्रकार से संचालित किया जाना चाहिये जिससे कि कीटों, रोगों तथा खरपतवार से होने वाली हानियों को न्यूनतम

किया जा सके। एक संतुलित निषेचन कार्यक्रम, पर्यावरण के साथ उत्तम रूप से अनुकूलित फसलों तथा किस्मों के प्रयोग, उच्च जैविक क्रियाकलापों से युक्त उर्वर मृदाओं, अनुकूलित आवर्तनों, सहचर पौधरोपण, हरित खाद, आदि के प्रयोग पर जोर दिया जाता है।

प्राकृतिक ढंग से वृद्धि और विकास किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

खरपतवार, कीटों तथा रोगों को अनेक प्रकार को निवारक सांस्कृतिक तकनीकों के द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिये जोकि उनके विकास को संकुचित बना देती है। उपयुक्त आवर्तन, हरित खाद, एक संतुलित निषेचन कार्यक्रम, शुरुआती तथा पंक्तिरोपण से पूर्व क्यारियों को तैयार करना, घासपात से ढँकना, यांत्रिकनियंत्रण तथा कीट विकास चक्रों में बाधा उत्पन्न करना आदि इसके कतिपय उदाहरण हैं।

कीटों तथा रोगों के प्राकृतिक शत्रुओं की रक्षा करनी चाहिये तथा झाड़ियों, घोंसला बनाने की जगह, आदि के उचित प्राकृतिक वास प्रबंधन के माध्यम से उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिये।

कीट प्रबंधन को कीटों की पारिस्थितिक आवश्यकताओं को समझने और उनमें बाधा उत्पन्न करने के द्वारा विनियामित करना चाहिये। कीट शिकारी चक्र में एक संतुलन को स्थापित हेतु एक पारिस्थितिक साम्यावस्था की रचना करनी चाहिये।

मानक

3.2.5.1.

स्थानीय पौधों, पशुओं तथा सूक्ष्म जीवों के द्वारा फार्म पर तैयार किये गये उत्पादों को कीट, रोगों तथा खरपतवार प्रबंधन हेतु प्रयुक्त करने की अनुमति प्रदान की गयी है। यदि इससे पारिस्थितिकी अथवा जैविक उत्पादों की गुणवत्ता के खराब होने की संभावना होगी, तो जैविक कृषि के अतिरिक्त इनपुट्स के मूल्यांकन हेतु पद्धति (परिशिष्ट 3) तथा अन्य प्रासंगिक मापदण्डों का प्रयोग करके यह निर्णय किया जायेगा कि वह उत्पाद स्वीकार्य है अथवा नहीं। ब्रांडधारी उत्पादों का सदैव मूल्यांकन किया जाना चाहिये।

3.2.5.2.

कीट, रोग तथा खर पतवार प्रबंधन हेतु ऊष्मिक खरपतवार नियंत्रण तथा भौतिक विधियों का प्रयोग करने की अनुमति है।

3.2.5.3.

कीटों तथा रोगों का सामना करने हेतु मृदाओं के ऊष्मिक जीवाणुनाशन को केवल उन्हीं परिस्थितियों के लिये सीमित रखा गया है जिनमें मृदा का समुचित आवर्तन अथवा पुनर्नवीकरण करना संभव नहीं हो। ऐसा करने की अनुमति प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा प्रत्येक मामले पर पृथक् रूप से विचार करने के आधार पर प्रदान की जाती है।

3.2.5.4.

पारंपरिक कृषि प्रणालियों के सभी उपकरणों को जैविक तरीके से प्रबंधित भू-भागों पर प्रयुक्त किये जाने से पहले अच्छी तरह से साफ तथा अवशेषों से मुक्त किया जायेगा।

3.2.5.5.

कृत्रिम शाकनाशकों, फफूँदनाशकों, कृमिनाशकों तथा अन्य कीटनाशकों का प्रयोग करना वर्जित है। वनस्पति कीट तथा रोग नियंत्रण हेतु अनुमत उत्पादों को परिशिष्ट 2 में सूचीबद्ध किया गया है।

3.2.5.6.

कृत्रिम वृद्धि विनियामकों तथा कृत्रिम रंगों का प्रयोग करना वर्जित है।

3.2.5.7.

आनुवांशिक रूप से निर्मित किये गये जीवों तथा उत्पादों का प्रयोग करना वर्जित है।

3.2.5.8.

प्रत्यायित प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेंगे कि कीटों, परजीवियों तथा संक्रामक एजेंटों के संचरण की रोकथाम करने हेतु सभी उपायों को लागू किया जा रहा है।

3.2.6 संदूषण नियंत्रण

सामान्य सिद्धांत

फार्म के भीतर तथा बाहर से संदूषण को न्यूनतम करने हेतु समस्त प्रासंगिक उपायों को लागू किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

प्रदूषण का खतरा अथवा खतरे का सन्देह होने की स्थिति में, प्रमाणीकरण कार्यक्रम को भारी धातुओं तथा अन्य प्रदूषकों के अधिकतम अनुप्रयोग स्तरों हेतु सीमाओं को निर्धारित करना चाहिये।

भारी धातुओं तथा अन्य प्रदूषकों के संचयन को सीमित रखा जाना चाहिये।

मानक

3.2.6.1.

संदूषण का युक्तिसंगत सन्देह होने की स्थिति में प्रमाणीकरण कार्यक्रम को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि संदूषण के स्तर को

निर्धारित करने हेतु प्रासंगिक उत्पादों तथा प्रदूषण के संभावित स्रोतों (मृदा और जल) का एक विश्लेषण किया जाये।

3.2.6.2.

संरक्षित संरचना आवरण, प्लास्टिक घासपात, कच्ची ऊन, कृमि जाल तथा साइलो संरक्षण रैपिंग हेतु, केवल पोलिइथिलीन तथा पोलिप्रोपाइलीन अथवा अन्य पोलिकाबोनेट्स पर आधारित उत्पादों का प्रयोग करने की अनुमति दी गयी है। उपयोग के पश्चात् इनको मृदा से अलग हटा देना होगा और कृषि-भूमि पर इनको जलाया नहीं जायेगा। पोलिक्लोराइड आधारित उत्पादों का प्रयोग वर्जित किया गया है।

3.2.7 मृदा तथा जल परिरक्षण

सामान्य सिद्धांत

मृदा तथा जल संसाधनों को एक पोषणीय ढंग से हैण्डल किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

मृदा के क्षरण, खारेपन, जल के अत्यधिक तथा अनुचित प्रयोग और भूमिगत एवं पृष्ठ जल के प्रदूषण की रोकथाम हेतु प्रासंगिक उपायों को लागू किया जाना चाहिये।

मानक

3.2.7.1.

जैविक पदार्थ को जलाने, उदाहरणार्थ काठने और जलाने, घासफूस जलाने के माध्यम से भूभाग को साफ करने को न्यूनतम रखा जाना चाहिये।

3.2.7.2.

आदिम जंगल को साफ करना वर्जित है।

3.2.7.3.

क्षरण की रोकथाम हेतु उपयुक्त उपायों को लागू किया जायेगा।

3.2.7.4.

जल संसाधनों का अत्यधिक शोषण तथा अवक्षय की अनुमति प्रदान नहीं की जायेगी।

3.2.7.5.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम को ऐसी समुचित संग्रहण दरों की आवश्यकता होगी जिनके परिणामस्वरूप भूमिगत तथा पृष्ठ जल का निम्नीकरण तथा प्रदूषण उत्पन्न नहीं हो।

3.2.7.6.

मृदा तथा जल के खारेपन की रोकथाम हेतु समुचित उपायों को लागू किया जायेगा।

3.2.8 वनस्पति मूल की बोयी नहीं गई सामग्री तथा शहद का संग्रहण

सामान्य सिद्धांत

संग्रहण के कृत्य के द्वारा प्राकृतिक क्षेत्रों के अनुरक्षण में सकारात्मक योगदान किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

उत्पादों की कटाई अथवा इकट्ठा करते समये, पर्यावरण प्रणाली के अनुरक्षण तथा पोषणीयता को बनाये रखने पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

मानक

3.2.8.1.

वन्य फसल उत्पादों को केवल तभी जैविक प्रमाणित किया जाना चाहिये यदि उन्हें एक सुस्थिर तथा पोषणीय विकासमान वातावरण में उत्पन्न गया हो। उत्पादों की कटाई अथवा संग्रहण को पर्यावरणप्रणाली की पोषणीय पैदावार से अधिक नहीं होना चाहिये, अथवा वनस्पति अथवा पशु प्रजातियों के अस्तित्व के लिये खतरा उत्पन्न नहीं करना चाहिये।

3.2.8.2.

उत्पादों को केवल तभी जैविक प्रमाणित किया जायेगा यदि उन्हें स्पष्ट रूप से परिभाषित एक ऐसे संग्रहण क्षेत्र से प्राप्त किया गया है, जिसका वर्जित तत्वों के साथ कोई संपर्क नहीं हुआ है, तथा जो निरीक्षण के अधीन है।

3.2.8.3.

संग्रहण क्षेत्र पारंपरिक कृषि-क्षेत्र, प्रदूषण तथा संदूषण से समुचित दूरी पर स्थित होगा।

3.2.8.4.

उत्पादों की कटाई अथवा संग्रहण को संचालित करने वाले प्रचालक को स्पष्ट रूप से अभिनिर्धारित किया जायेगा तथा वह प्रश्नाधीन संग्रहण क्षेत्र के साथ परिचित होगा।

3.3. पशुपालन

3.3.1. पशुपालन प्रबन्धन

सामान्य सिद्धांत

पशुपालन में प्रबंधन तकनीकों को प्रश्नाधीन फार्म पशुओं की शारीरिक तथा जाति स्वभाव संबंधी आवश्यकताओं द्वारा विनियमित किया जाना चाहिये। इसमें निम्नलिखित बिन्दु सम्मिलित हैं :

- कि पशुओं को अपनी मूलभूत व्यवहारात्मक आवश्यकताओं को संचालित करने का अवसर मिलना चाहिए।
- कि समस्त प्रबन्धन तकनीकों, जिनमें वे तकनीकें भी शामिल हैं जिनका संबंध उत्पादन स्तरों तथा वृद्धि की गति से होना चाहिये, को पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य तथा कल्याण पर केन्द्रित होना चाहिये।

सिफारिशें

कल्याणकारी कारणों को देखते हुए झुण्ड अथवा समूह के आकार का पशु के व्यवहारात्मक पैटर्न पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ने देना चाहिये।

मानक

3.3.1.1.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेगा कि पशु वातावरण का प्रबंधन पशुओं की व्यवहारात्मक आवश्यकताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखेगा तथा निम्नलिखित बातों का प्रावधान करेगा :

- पर्याप्त स्वतंत्र विचरण
- पशुओं की आवश्यकताओं के अनुसार पर्याप्त ताजी हवा तथा नैसर्गिक प्रकाश
- पशुओं की आवश्यकताओं के अनुसार अत्यधिक प्रकाश, तापमानों, वर्षा तथा हवा से बचाव
- पशुओं की आवश्यकताओं के अनुसार पर्याप्त लेटने तथा/अथवा विश्राम की जगह जिन पशुओं को लेटने के लिये बिस्तर की जरूरत पड़ती हो, उनके लिये प्राकृतिक सामग्रियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिये।
- पशुओं की आवश्यकताओं के अनुसार ताजे पानी तथा चारे तक पर्याप्त पहुँच
- प्रजातियों की जैविक तथा जाति स्वाभावपरक आवश्यकताओं के अनुसरण में व्यवहार की अभिव्यक्ति हेतु पर्याप्त सुविधाएँ निर्माण सामग्रियों अथवा उत्पादन उपकरण हेतु ऐसे किसी भी यौगिक का प्रयोग नहीं किया जायेगा जो कि मनुष्य अथवा पशु के स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हो।

3.3.1.2.

सभी पशुओं की आयु तथा अवस्था, जिसको प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाएगा, को ध्यान में रखते हुए, उनको पशु के प्रकार तथा ऋतु के लिये उपयुक्त खुली हवा तथा/अथवा चराई तक पहुँच प्रदान की जायेगी।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित मामलों में अपवाद स्वरूप छूट प्रदान करेगा जहाँ :

- विशिष्ट फार्म अथवा अधिवास संरचना इस प्रकार की पहुँच में रूकावट पैदा करती हो, बशर्ते कि पशु कल्याण को सुनिश्चित किया जा सकता हो।
- ऐसे भूभाग जहाँ पर चराई की अपेक्षा ढोकर लाये गये ताजे चारे को पशुओं को खिलाना भूमि संसाधनों के उपयोग का अधिक पोषणीय तरीका हो, बशर्ते कि पशुओं के कल्याण की अवहेलना नहीं की जा रही हो।

ऐसे प्रत्येक अपवाद हेतु निर्धारित किये गये प्रतिबन्धों में एक समय सीमा को सदैव शामिल किया जायेगा।

मुर्गियों तथा खरगोशों को पिंजरों में कैद नहीं किया जायेगा।

भूमिहीन पशुपालन प्रणालियों को अनुमति प्रदान नहीं की जायेगी।

3.3.1.3.

यदि कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था के द्वारा प्राकृतिक दिवस की लंबाई को बढ़ाया गया हो, तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रजातियों, भौगोलिक अवधारणाओं तथा पशुओं के सामान्य स्वास्थ्य के संदर्भ में अधिकतम घण्टों को विनिर्दिष्ट करेगा।

3.3.1.4.

झुण्ड में रहने वाले पशुओं को अकेले में नहीं रखा जायेगा।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा अपवादों, उदाहरण स्वरूप, नर पशुओं, छोटे-छोटे जोत-क्षेत्रों, रुग्ण पशुओं अथवा गर्भवती मादाओं के लिए छूट प्रदान की जा सकती है।

3.3.2 रूपान्तरण अवधि की लंबाई

सामान्य सिद्धांत

जैविक पशुपालन की स्थापना हेतु एक अंतरिम अवधि, रूपान्तरण अवधि की आवश्यकता होती है।

सिफारिशें

संपूर्ण फार्म, पशुधन सहित, को इस प्रलेख में निर्धारित किये गये मानकों के अनुसार रूपान्तरित किया जाना चाहिये। रूपान्तरण को एक समयावधि के भीतर पूरा किया जा सकता है।

उत्पादन उद्यम की शुरुआत में ही स्थानापन्न मुर्गीपालन को जोत-क्षेत्र पर ले आना चाहिये।

मानक

3.3.2.1.

पशुउत्पादों को “जैविक खेती के उत्पाद” के रूप में केवल उसी स्थिति में बेचा जा सकता है जबकि फार्म अथवा उसका एक संबंधित भाग कम से कम बारह महीनों के लिये रूपान्तरण के अधीन रहा हो तथा बशर्ते कि समुचित समय के लिये जैविक पशु उत्पादन मानकों का पालन किया जाता रहा हो।

3.3.2.2.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा समय की उस लंबाई को विनिर्दिष्ट किया जायेगा जिसमें पशु उत्पादन मानकों को पूरा कर लिया जाना चाहिये। डेयरी तथा अण्डा उत्पादन के संबंध में यह अवधि 30 दिनों से कम नहीं होगी।

3.3.2.3.

यदि जैविक मानकों को 12 महीनों तक पूरा किया जाता रहा हो तो रूपान्तरण के समय पर फार्म पर मौजूद पशुओं को जैविक माँस के रूप में बेचा जा सकता है।

3.3.3 आयातित पशु

सामान्य सिद्धांत

सभी जैविक पशुओं का जन्म तथा पालनपोषण जैविक जोत-भूमि पर होना चाहिये।

सिफारिशें

जैविक पशुपालन को पारंपरिक पालनपोषण प्रणालियों पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। पशुधन का व्यापार अथवा विनिमय करते समय, प्राथमिकता के रूप में इसे जैविक फार्मों के बीच में अथवा विशिष्ट फार्मों के बीच दीर्घावधि सहयोग के एक भाग के रूप में किया जाना चाहिये।

मानक

3.3.3.1.

जैविक पशुधन के उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में, प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित आयु सीमाओं के अनुसार आयातित पारंपरिक पशुओं के लिये अनुमति प्रदान करेगा :

- माँस उत्पादन हेतु 2 दिन की आयु के चूजे
- अण्डा उत्पादन हेतु 18 सप्ताह की आयु की मुर्गियाँ
- किसी अन्य मुर्गीपालन हेतु 2 सप्ताह की आयु की मुर्गियाँ
- सुअरके छह सप्ताह की आयु के तथा दुध छुड़ाये हुए बच्चे
- 4 सप्ताह तक की आयु के ऐसे बछड़े जिन्होंने नवदुग्ध पी लिया हो तथा जिन्हें आहार दिया गया हो जिसमें मुख्य रूप से पूर्ण दूध शामिल था।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रत्येक प्रकार के पशु के लिये गर्भधारण से लेकर प्रमाणित जैविक पशुओं के क्रियान्वयन हेतु समय सीमाओं (जो पाँच वर्षों से अधिक की नहीं होगी) को निर्धारित करेंगे।

3.3.3.2.

प्रजनन पशुधन को पारंपरिक फार्मों से लाया जा सकता है परन्तु उनकी अधिकतम संख्या एक वर्ष में फार्म पर समान प्रजातियों के वयस्क पशुओं के 10% तक ही हो सकती है।

आयातित प्रजनन पशुधन के लिये प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित मामलों में तथा स्पष्ट समय सीमाओं के साथ 10% से उच्चतर वार्षिक अधिकतम की अनुमति प्रदान करेगा :

- अनपेक्षित गंभीर प्राकृतिक अथवा मनुष्य निर्मित घटनाएँ
- फार्म का काफी बड़े पैमाने पर विस्तार

- फार्म पर नये प्रकार के पशु उत्पादन की स्थापना
- लघु जोत-क्षेत्र

3.3.4 नस्लों तथा प्रजनन

सामान्य सिद्धांत

ऐसी नस्लों का चुनाव करना चाहिये जो स्थानीय दशाओं के प्रति अनुकूलित हों।

प्रजनन लक्ष्यों को पशु के प्राकृतिक व्यवहार के प्रतिकूल नहीं होना चाहिये तथा उन्हें उत्तम स्वास्थ्य की ओर उन्मुख किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

प्रजनन में ऐसी विधियों को शामिल नहीं किया जाना चाहिये जोकि कृषि प्रणाली को उच्च प्रौद्योगिकीय तथा पूँजी बहुल विधियों पर निर्भर बना दें।

प्रजनन तकनीकों को प्राकृतिक होना चाहिये।

मानक

3.3.4.1.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेगा कि प्रजनन प्रणालियाँ ऐसी नस्लों पर आधारित हैं जोकि प्राकृतिक रूप से मैथुन तथा प्रसव दोनों कामों को कर सकती हों।

3.3.4.2.

कृत्रिम गर्भाधान की अनुमति प्रदान की गयी है।

3.3.4.3.

जैविक कृषि में भ्रूण अन्तरण तकनीकों की अनुमति प्रदान नहीं की गयी है।

3.3.4.4.

हार्मोन संबंधी ऊष्मा उपचार तथा अभिप्रेरित प्रसव की अनुमति केवल उसी स्थिति में प्रदान की गयी है जबकि उसे चिकित्सीय कारणों से तथा पशुचिकित्सिक की सलाह पर वैयक्तिक पशुओं पर इस्तेमाल किया जा रहा हो।

3.3.4.5.

आनुवांशिक रूप से निर्मित प्रजातियों अथवा नस्लों के उपयोग की अनुमति प्रदान नहीं की गयी है।

3.3.5 अंग काटना

सामान्य सिद्धांत

पशुओं की पृथक् विशेषताओं का सम्मान किया जाना चाहिये।

सिफारिशें

ऐसी प्रजातियों का चयन किया जायेगा जिनके अंग काटने की आवश्यकता नहीं हो।

अंग काटने की अपवादस्वरूप अनुमति केवल पशु की पीड़ा को कम से कम रखने के उद्देश्य से ही दी जा सकती है।

मानक

3.3.5.1.

अंग काटने की अनुमति प्रदान नहीं की गयी है।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित अपवादों को अनुमति प्रदान करेगा :

- बधिया करण
- मेमनों की दुम काटना
- सींगों को काटना
- नाथना
- म्यूलसिना

पीड़ा को न्यूनतम रखा जाये तथा जहाँ भी उपयुक्त हो, तो बेहोश कर देनेवाली दवाईयों का प्रयोग किया जाये।

3.3.6 पशुपोषण

सामान्य सिद्धांत

समस्त चारा स्वयं फार्म से ही आना चाहिये अथवा क्षेत्र के भीतर ही पैदा किया जाना चाहिये।

पशुओं को दैनिक भोजन एक ऐसे ढंग से दिया जाना चाहिये जिससे कि वे अपने प्राकृतिक आहार व्यवहार तथा पाचन संबंधी आवश्यकताओं को निष्पादित कर सकें।

सिफारिशें

दैनिक भोजन को पशुओं की पोषक आहार संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार संतुलित किया जाना चाहिये।

जैविक खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के उत्पादों का प्रयोग किया जायेगा।

जैविक पशुधन उत्पादन में रंजक एजेंटों का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

मानक

3.3.6.1.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम चारा तथा चारा अवयवों हेतु मानकों को तैयार करेगा।

3.3.6.2.

चारे का प्रधान भाग (कम से कम 50% से अधिक) स्वयं फार्म यूनिट से प्राप्त किया जायेगा अथवा क्षेत्र में अन्य जैविक फार्मों के सहयोग से उत्पन्न किया जायेगा।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम स्थानीय अवस्थाओं के संबंध में क्रियान्वयन हेतु समय सीमा के एक समूह के अधीन अपवादों को छूट प्रदान करेगा।

3.3.6.3.

केवल गणना प्रयोजन हेतु, जैविक प्रबन्धन के प्रथम वर्ष के दौरान फार्म यूनिट पर उत्पन्न किये गये चारे को जैविक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसका तात्पर्य केवल ऐसे पशुओं हेतु चारे से है जिनको स्वयं फार्म यूनिट के भीतर पैदा किया गया हो तथा ऐसे चारे को जैविक के रूप बेचा अथवा अन्यथा नहीं विपणन किया जायेगा (4.2.4 के अनुरूप)।

3.3.6.4.

यदि जैविक खेती स्रोतों से कतिपय आहारों को प्राप्त करना असंभव सिद्ध हो जाता है, तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम फार्म पशुओं के द्वारा खाये जाने वाले चारे की एक प्रतिशतता को पारंपरिक फार्म से प्राप्त करने की अनुमति प्रदान करेगा। ऐसे आहारों की अधिकतम प्रतिशतताओं को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है तथा उसकी प्रत्येक पशु श्रेणी हेतु औसत दैनिक भोजन के रूप में गणना की जायेगी। इन अधिकतम प्रतिशतताओं का पूरे वर्ष भर अनुपालन किया जायेगा।

जुगाली करनेवाले (शुष्क पदार्थ ग्रहण)	15%
--------------------------------------	-----

जुगाली नहीं करनेवाले (शुष्क पदार्थ ग्रहण)	20%
---	-----

5 वर्षों के भीतर इन प्रतिशतताओं को निम्नलिखित रूप से घटा दिया जायेगा :

जुगाली करने वाले (शुष्क पदार्थ)	10%
---------------------------------	-----

जुगाली नहीं करने वाले (शुष्क पदार्थ)	15%
--------------------------------------	-----

प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित मामलों में इन प्रतिशतताओं में विशिष्ट समय सीमाओं तथा शर्तों के साथ छूट प्रदान करेगा :

- आकस्मिक गंभीर प्राकृतिक अथवा मानव-निर्मित घटनाएँ
- चरम जलवायु अथवा मौसम संबंधी दशाएँ
- ऐसे क्षेत्र जहाँ जैविक खेती विकास के प्रारंभिक चरणों में हो।

3.3.6.5.

फार्म पशुओं को दिये जाने वाले चारे में निम्नलिखित उत्पादों को शामिल अथवा जोड़ा नहीं जायेगा :

- कृत्रिम वृद्धि उत्प्रेरक अथवा उद्दीपक
- कृत्रिम क्षुधावर्धक
- परिरक्षक, केवल एक प्रसंस्करण सहायक के रूप में प्रयुक्त किये जाने को छोड़कर
- कृत्रिम रंजक एजेंट्स
- यूरिया
- जुगाली करने वाले पशुओं को फार्म पशु उपजात (उदाहरणार्थ कसाई खाना के अवशिष्ट पदार्थ)
- बीट, गोबर अथवा अन्य खाद (सभी प्रकार का मल) भले ही उसे प्रौद्योगिकीय रूप से संसाधित किया गया हो

- चारा जिसमें विलायक (उदाहरणार्थ हेक्जेन), कर्षण (सोया तथा तोरी के बीजों का आहार) अथवा अन्य किसी रासायनिक एजेन्टों को मिलाया गया हो
- शुद्ध अमीनो एसिड्स
- आनुवांशिक रूप से निर्मित जीव अथवा उनके उत्पाद

इसमें जैविक तथा पारंपरिक आहार तत्व दोनों ही शामिल हैं।

3.3.6.6.

प्राकृतिक मूल के विटामिनों, सूक्ष्ममात्रिक तत्वों तथा संपूरकों का उपयुक्त प्रमात्रा तथा गुणवत्ता में उपलब्ध होने की स्थिति में प्रयोग किया जायेगा।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम संश्लेषित अथवा अप्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त विटामिनों तथा खनिजों के प्रयोग हेतु शर्तों को परिभाषित करेगा।

3.3.6.7.

जुगाली करनेवाले सभी पशुओं को प्रतिदिन मोटा चारा खिलाया जायेगा।

3.3.6.8.

निम्नलिखित चारा परिरक्षकों का प्रयोग किया जा सकता है :

- बैक्टेरिया, फफूंद तथा एन्जाइम्स
- खाद्य उद्योग के उपजात (यथा शीरा)
- वनस्पति आधारित उत्पाद

विशेष मौसम दशाओं में कृत्रिम रासायनिक चारा परिरक्षकों के प्रयोग की अनुमति प्रदान की जायेगी। प्रमाणीकरण कार्यक्रम संश्लेषित अथवा अथवा अप्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त तत्वों यथा एसिटिक, फॉर्मिक और प्रोपायोनिक एसिड, विटामिनों तथा खनिज के प्रयोग हेतु शर्तों को विनिर्दिष्ट करेगा।

3.3.6.9.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम संबंध पशु प्रजातियों के प्राकृतिक व्यवहार को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम दुधछुटाई समयावधियों को निर्धारित करेगा।

3.3.6.10.

स्तनधारी पशुओं के शिशुओं को ऐसी प्रणालियों का प्रयोग करते हुए पाला जायेगा जो कि जैविक दुध, विशेषकर उनकी अपनी प्रजातियों से प्राप्त, पर निर्भर करती हों।

आपात स्थितियों में प्रमाणीकरण कार्यक्रम गैर-जैविक कृषि प्रणालियों से प्राप्त दूध अथवा डेयरी आधारित दूध स्थानापन्नों का प्रयोग करने की छूट प्रदान करेगा बशर्ते कि उनमें एन्टीबायोटिक्स अथवा कृत्रिम योज्य अन्तर्विष्ट नहीं हों।

3.3.7 पशुचिकित्सा दवाइयाँ

सामान्य सिद्धांत

प्रबंधन पद्धतियाँ को पशुओं के कल्याण, रोगों के विरुद्ध अधिकतम प्रतिरोधी क्षमता तथा संक्रमणों की रोकथाम की ओर उन्मुख होना चाहिये।

रूग्ण तथा घायल पशुओं को तुरंत तथा समुचित चिकित्सा उपलब्ध कराई जानी चाहिये।

सिफारिशें

प्राकृतिक दवाइयों तथा विधियों पर जोर दिया जायेगा जिनमें होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी दवाई तथा एक्यूपंचर शामिल हैं।

बीमारी पैदा होने की स्थिति में लक्ष्य यह पता लगाना होना चाहिये कि ऐसा होने का कारण क्या था तथा प्रबंधन पद्धतियों को बदलकर भविष्य में ऐसी बीमारी के दोबारा पैदा होने से रोकथाम करनी चाहिये।

जहाँ भी उचित हो, तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम दवाइयों के प्रयोग की न्यूनतम करने के लिये फार्म के पशुचिकित्सा रिकार्डों के आधार पर शर्तों को निर्धारित करेगा।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम को दवाइयों की एक सूची तैयार करनी चाहिये जिसमें उनको नहीं खिलाने की अवधियों को निर्दिष्ट किया गया हो।

मानक

3.3.7.1.

बीमारी की उपचार पद्धति का चयन करते समय पशुओं के कल्याण को प्राथमिक वरीयता दी जाती है। पारंपरिक पशुचिकित्सा

दवाइयों का प्रयोग करने की छूट केवल उसी स्थिति में दी जायेगी जबकि कोई अन्य युक्ति संगत विकल्प मौजूद नहीं हो।

3.3.7.2.

जहाँ पर परंपरागत पशुचिकित्सा दवाइयों का प्रयोग किया जा रहा हो, तो रोके रखने की अवधि कानूनी अवधि से (कम से कम) दो गुनी होगी।

3.3.7.3.

निम्नलिखित पदार्थों का प्रयोग करना वर्जित है :

- कृत्रिम वृद्धि उत्प्रेरक
- उत्पादन उद्दीपन अथवा प्राकृतिक वृद्धि को दबाने हेतु कृत्रिम मूल के पदार्थ
- ऊष्मा प्रेरण अथवा ऊष्मा समक्रमण हेतु हॉर्मोन्स जब तक कि किसी वैयाक्तिक पशु में पशुचिकित्सा संकेतों से औचित्यपूर्ण सिद्ध की गयी प्रजनन विकृतियों के विरुद्ध उनका प्रयोग नहीं किया जा रहा हो।

3.3.7.4.

टीकों का प्रयोग केवल उसी स्थिति में किया जायेगा जबकि फार्म के क्षेत्र में बीमारियों की एक समस्या मौजूद हो अथवा होने की आशा हो और जहाँ पर इन बीमारियों को अन्य प्रबंधन तकनीकों के द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता हो। प्रमाणीकरण कार्यक्रम ऐसे मामलों हेतु शर्तों को परिभाषित करेगा।

कानूनी तौर पर अनिवार्य टीकों की अनुमति प्रदान की गयी है।

आनुवांशिक रूप से निर्मित टीकों का प्रयोग वर्जित किया गया है।

3.3.8 परिवहन तथा पशु वध

सामान्य सिद्धांत

परिवहन तथा पशुवध से पशु को न्यूनतम कष्ट होना चाहिये। यात्रा की दूरी तथा आवृत्ति को भी न्यूनतम रखा जाना चाहिये।

परिवहन के माध्यम को प्रत्येक पशुकी दृष्टि से उपयुक्त होना चाहिये

सिफारिशें

परिवहन के दौरान पशुओं का नियमित रूप से निरीक्षण किया जाना चाहिये।

मौसम की दशाओं तथा परिवहन की अवधि पर निर्भर करते हुए परिवहन के दौरान पशुओं को पानी पिलाया तथा चारा खिलाया जाना चाहिये।

निम्नलिखित बिन्दुओं का विशेष रूप से ध्यान रखते हुए, पशुओं को यथासंभव कम से कम तकलीफ दी जानी चाहिये :

- प्रत्येक पशु का मृत पशुओं अथवा मारने की प्रक्रियाधीन पशुओं के साथ (औंस, कान अथवा गंध से) संपर्क
- वर्तमान समूह सम्बन्ध
- कष्ट को कम करने हेतु विश्राम करने का समय

प्रत्येक पशु को खून बहाकर मारते समय उसे अचेत कर देना चाहिये। अचेत कर देने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले उपकरण को सही ढंग से काम करने की स्थिति में होना चाहिये। सांस्कृतिक रिवाजों के अनुसार अपवादस्वरूप छूट प्रदान की जा सकती है। यदि पशुओं को पहले से अचेत किया बिना ही उनके खून को बहाया जाता है, तो इस काम को एक शांत वातावरण में पूरा किया जाना चाहिये।

मानक

3.3.8.1.

प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के शुरु से लेकर अंत तक, पशु की देखभाल के लिये जिम्मेदार व्यक्ति उपस्थित रहेगा।

3.3.8.2.

परिवहन तथा पशुवध के दौरान शांत तथा नरम तरीके से हैंडिलिंग की जानी चाहिये। बिजली की छड़ों और ऐसे उपकरणों का प्रयोग वर्जित होगा।

3.3.8.3.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए पशुवध तथा परिवहन मानकों को निर्धारित करेगा :

- पशु तथा इन्वार्ज व्यक्ति को होने वाला कष्ट
- पशु की फिटनेस
- लादना तथा नीचे उतारना
- पशुओं के विभिन्न समूहों अथवा भिन्न लिंग के पशुओं को एक साथ मिला देना

- परिवहन के माध्यम तथा हैण्डिलिंग उपकरण की गुणवत्ता तथा उपयुक्तता
- तापमान तथा सापेक्षिक आर्द्रता
- भूख तथा प्यास
- प्रत्येक पशु की विशिष्ट आवश्यकताएँ

3.3.8.4.

परिवहन से पहले अथवा उसके दौरान कोई रासायनिक संश्लेषित प्रशान्तक अथवा उद्दीपक नहीं दिये जायेंगे।

3.3.8.5.

सभी चरणों के दौरान प्रत्येक पशु अथवा पशुओं के समूह की पहचान करना संभव होना चाहिये।

3.3.8.6.

यदि परिवहन धुरी के द्वारा किया जाना हो, तो वधगृह तक की यात्रा का समय आठ घण्टों से अधिक का नहीं होना चाहिये।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रत्येक मामले पर अलग से विचार करने के बाद छूट प्रदान कर सकता है।

3.3.9 मधुमक्खी पालन

सामान्य सिद्धांत

संग्रहण क्षेत्र को जैविक तथा/अथवा वन्य होना चाहिये तथा कालोनी की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा उत्तम स्वास्थ्य बनाये रखने में सक्षम होने के लिये यथासंभव वैविध्यपूर्ण होना चाहिये।

आपूर्ति किया जाने वाला भोजन पूर्ण रूप से जैविक होना चाहिये।

मधुमक्खीपालन को पशुपालन का ही एक भाग माना जाता है। अतएव सामान्य सिद्धांत मधुमक्खीपालन पर भी लागू होते हैं।

सिफारिशें

कालोनियों को भोजन खिलाने को जलवायु परक दशाओं के कारण अस्थायी भोजन संकट से निबटने हेतु एक अपवाद के रूप में देखा जायेगा।

बुनियादी छत्ते को जैविक मोम से बनाया जाना चाहिये।

यदि मधुमक्खियों को वन्य क्षेत्रों में पाला जाता है, तो देशी कीट जनसंख्या का ध्यान रखा जाना चाहिये।

मानक

3.3.9.1.

छत्तों को जैविक ढंग से प्रबंधित क्षेत्रों तथा/अथवा वन्य प्राकृतिक क्षेत्रों में स्थापित किया जायेगा। छत्तों को खेतों अथवा अन्य ऐसे क्षेत्रों के पास नहीं रखा जाना चाहिये जहाँ पर रासायनिक कीटनाशकों अथवा शाकनाशकों का प्रयोग किया जाता हो।

प्रमाणीकरण निकायों के द्वारा प्रत्येक मामले पर अलग से विचार करने के बाद छूट प्रदान की जा सकती है।

3.3.9.2.

ऋतु से पहले अंतिम कटाई के पश्चात् जब चारा खोजकर खाने की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती, केवल तभी चारा खिलाया जाना चाहिये।

3.3.9.3.

प्रत्येक मधुमक्खी छत्ते को प्रधान रूप से प्राकृतिक सामग्रियों से निर्मित होना चाहिये। संभावित विषैले प्रभावों से युक्त निर्माण सामग्रियों का प्रयोग करना वर्जित है।

3.3.9.4.

ऐसे मधुमक्खी छत्तों में स्थायी सामग्रियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये जिनमें शहद के फैलाव की संभावना हो तथा जहाँ मृत मधुमक्खियों के माध्यम से अवशिष्टों को वितरित किया जा सकता हो।

3.3.9.5.

पंखों को काटने की अनुमति नहीं है।

3.3.9.6.

मधुमक्खी पालन में पशुचिकित्सा दवाइयों का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

मधुमक्खियों के साथ काम करते समय (यथा शहद जमा करते समय), निषिद्ध पदार्थों से युक्त किसी विकर्षक का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

3.3.9.7.

कीट तथा रोगनियंत्रण हेतु तथा छत्तों के रोगाणुनाशन हेतु निम्नलिखित उत्पादों की अनुमति प्रदान की जायेगी :

- कास्टिक सोडा
- दुग्धिक, ऑक्सैलिक, एसिटिक एसिड
- फार्मिक एसिड
- सल्फर
- ईथारिक एसिड
- बैसिलस थ्युरिनिन्सिस

3.4. खाद्य प्रसंस्करण तथा हैण्डिलिंग

3.4.1 सामान्य

सामान्य सिद्धांत

उत्पाद की गुणवत्ता तथा सत्य निष्ठता को बनाये रखने हेतु जैविक उत्पादों की हैण्डिलिंग तथा प्रसंस्करण को सर्वश्रेष्ठ रूप में किया जाना चाहिये तथा उसे कीटों और रोगों के विकास को न्यूनतम बनाये रखने की ओर उन्मुख रहना चाहिये।

सिफारिशें

जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण तथा हैण्डिलिंग को गैर-जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण तथा हैण्डिलिंग से अलग समय तथा स्थान पर पृथक् रूप से किया जाना चाहिये।

प्रदूषण स्रोतों की पहचान की जायेगी तथा संदूषण से बचाव किया जायेगा।

सुवासित अकों को भौतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से आहार (अधिमानतः जैविक) से प्राप्त किया जायेगा।

मानक

3.4.1.1.

जैविक उत्पादों को गैर-जैविक उत्पादों के साथ मिल जाने से बचाया जाना चाहिये।

3.4.1.2.

संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान सभी उत्पादों को समुचित रूप से अभि-निर्धारित किया जायेगा।

3.4.1.3.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रदूषकों तथा संदूषकों की रोकथाम तथा नियंत्रण हेतु मानकों को निर्धारित करेगा।

3.4.1.4.

जैविक तथा गैर-जैविक उत्पादों को एक साथ भण्डारित अथवा परिवहित नहीं किया जायेगा सिवाय उस स्थिति को छोड़कर जब कि उनकी लेबलिंग की गयी हो तथा भौतिक रूप से पृथक् करके रखा गया हो।

3.4.1.5.

प्रमाणीकरण कार्यक्रम उन सभी सुविधाओं को विसंदूषित, स्वच्छ अथवा विसंक्रमित करने हेतु अनुमत अथवा संस्तुत साधनों तथा उपायों को विनियमित करेगा जिनमें जैविक उत्पादों को रखा, हैण्डिल, संसाधित अथवा भण्डारित किया गया हो।

3.4.1.6.

परिवेशी तापमान पर भण्डारण के साथ-साथ, भण्डारण की निम्नलिखित विशेष दशाओं की अनुमति प्रदान की गई है (परिशिष्ट 4 देखिये) :

- नियंत्रित वातावरण
- वातानुकूलन
- प्रशीतन
- शुष्कन
- आद्रता नियंत्रण

पकाने हेतु इथाइलिन गैस का प्रयोग करने की अनुमति दी गयी है।

3.4.2 कीट तथा रोग नियंत्रण

सामान्य सिद्धांत

उत्तम विनिर्माण पद्धतियों का प्रयोग करके कीटों की रोकथाम की जानी चाहिये। इनमें आम स्वच्छता तथा साफ-सफाई सम्मिलित है।

अतएव कीट नियंत्रक एजेंटों के द्वारा उपचार क्रिया को अंतिम विकल्प के रूप में देखा जाना चाहिये।

सिफारिशें

संस्तुत उपचारों में भौतिक अवरोध, ध्वनि, अल्ट्रासाउंड, प्रकाश, तथा पराबैंगनी प्रकाश, फंदें (फेरोमोन फंदा तथा स्थिर चारा फंदा सहित),

तापमान नियंत्रण, नियंत्रित वातावरण तथा डायटमी पृथ्वी हैं। कीट निवारण तथा कीट नियंत्रण हेतु एक योजना को विकसित किया जाना चाहिये।

मानक

3.4.2.1.

कीट प्रबंधन तथा नियंत्रण हेतु निम्नलिखित उपायों का प्राथमिकता के क्रम में प्रयोग किया जाना चाहिये

- निवारक विधियाँ यथा अधिवास तथा सुविधाओं तक पहुँच में व्यवधान, उन्मूलन
- यांत्रिक, भौतिक तथा जैविक विधियाँ
- राष्ट्रीय मानकों के परिशिष्टों में अन्तर्विष्ट कीटनाशक पदार्थ
- फंदों में प्रयोग किये जाने वाले अन्य पदार्थ प्रदीपन निषिद्ध है।

3.4.2.2.

जैविक उत्पादों तथा निषिद्ध पदार्थों (यथा कीटनाशकों) के मध्य कभी भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संपर्क नहीं होगा। सन्देह की स्थिति में, यह सुनिश्चित किया जायेगा कि जैविक उत्पादों में कोई भी अवशिष्ट मौजूद नहीं हो।

3.4.2.3.

स्थायी अथवा कार्सिनोजनक कीटनाशकों तथा रोगाणुनाशकों की अनुमति प्रदान नहीं की गयी है। प्रमाणीकरण कार्यक्रम यह निश्चित करने हेतु नियमों को निर्धारित करेगा कि कौन-कौन से संरक्षण एजेंटों तथा रोगाणुनाशकों का प्रयोग किया जा सकता है।

3.4.3 अवयव, योज्य तथा प्रसंस्करण सहायक

सामान्य सिद्धांत

कृषि मूल के अवयवों के 100% भाग को जैविक प्रमाणित होना चाहिये।

सिफारिशें

इनजॉइमों तथा अन्य सूक्ष्म-जैविक उत्पादों के उत्पादन हेतु प्रयुक्त साधन को जैविक अवयवों से निर्मित होना चाहिये।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखेगा :

- पोषक मूल्य को बनाये रखना
- समान उत्पादों की मौजूदगी अथवा पैदा करने की संभावना।

मानक

3.4.3.1

यदि जैविक कृषि मूल का कोई अवयव पर्याप्त गुणवत्ता अथवा प्रमात्रा में उपलब्ध नहीं हो, तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम ऐसे मामलों में सावधिक पुनर्मूल्यांकन के अध्यधीन गैर जैविक कच्ची सामग्रियों के प्रयोग को प्राधिकृत कर सकता है। ऐसे गैर-जैविक कच्चे माल को आनुवंशिक रूप से निर्मित नहीं किया जायेगा।

3.4.3.2

किसी उत्पाद के भीतर एक ही अवयव को जैविक तथा गैर-जैविक दोनों मूलों से प्राप्त नहीं किया जायेगा।

3.4.3.3.

जैविक उत्पादों में जल तथा नमक का प्रयोग किया जा सकता है।

3.4.3.4.

खनिजों (सूक्ष्मांत्रिक तत्वों सहित), विटामिनों तथा समान एकान्तिक अवयवों का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम ऐसे मामलों में छूट प्रदान कर सकता है जहाँ पर कानूनी तौर से प्रयोग करने की आवश्यकता हो अथवा जहाँ गंभीर आहार संबंधी अथवा पोषण संबंधी कमी को प्रदर्शित किया जा सकता है।

3.4.3.5.

खाद्य प्रसंस्करण में आम तौर से प्रयुक्त होने वाले सूक्ष्म-जीवों तथा इनजॉइमों की विरचनों, परन्तु आनुवंशिक रूप से निर्मित सूक्ष्म-जीवों तथा उनके उत्पादों के अपवाद को छोड़कर, का प्रयोग किया जा सकता है।

3.4.3.6

योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों के प्रयोग को सीमित रखा जायेगा।

3.4.4 प्रसंस्करण विधियाँ**सामान्य सिद्धांत**

प्रसंस्करण विधियों को यांत्रिक, भौतिक तथा जैविक प्रक्रियाओं पर आधारित होना चाहिये।

किसी भी जैविक अवयव के प्रसंस्करण के प्रत्येक चरण के शुरु से लेकर अंत-तक उसकी महत्वपूर्ण गुणवत्ता को बनाये रखा जाना चाहिये।

सिफारिशें

योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों की संख्या तथा प्रमात्रा को सीमित करने हेतु प्रसंस्करणविधियों का चुनाव किया जायेगा।

मानक**3.4.4.1**

निम्नलिखित प्रकार की प्रक्रियाओं का अनुमोदन किया गया है :

- यांत्रिक तथा भौतिक
- जैविक
- धूमन
- निष्कर्षण
- संघनन
- छनाई

3.4.4.2

निष्कर्षण केवल पानी, इथनोल, वनस्पति तथा पशु तेलों, सिरका, कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन अथवा कार्बोक्सीलिक एसिड के साथ ही किया जायेगा। इन्हें प्रयोजन हेतु उपयुक्त खाद्य ग्रेड गुणवत्ता से युक्त होना चाहिये।

3.4.4.3.

प्रदीपन की अनुमति नहीं है।

3.4.4.4

छनाई पदार्थों को एस्वेस्टॉस से निर्मित न ही होना चाहिये और नहीं उनमें ऐसे पदार्थ व्याप्त होने चाहिये जिनका उत्पाद पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना हो।

3.4.5 पैकेजिंग**सामान्य सिद्धांत**

पैकेजिंग हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली सामग्री को पर्यावरण-अनुकूल होना चाहिये।

सिफारिशें

अनावश्यक पैकेजिंग सामग्रियों का प्रयोग करने से बचना चाहिये।

जहाँ भी संभव हो, तो पुनःचक्रण तथा पुनःप्रयोग योग्य प्रणालियों का प्रयोग किया जाना चाहिये।

जैविक रूप से नष्ट हो सकने वाली पैकेजिंग सामग्रियों का प्रयोग किया जाना चाहिये।

मानक**3.4.5.1**

पैकेजिंग हेतु प्रयुक्त सामग्री को भोजन का संदूषण नहीं करना चाहिये।

3.4.5.2

प्रमाणीकरण कार्यक्रम पैकेजिंग सामग्री के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने हेतु एक नीति को तैयार करेगा।

3.5 लेबलिंग**सामान्य सिद्धांत**

लेबलिंग को उत्पाद की जैविक अवस्थिति के संबंध में स्पष्ट तथा सही जानकारी संप्रेषित करनी चाहिये।

सिफारिशें

यदि समस्त मानक आवश्यकताओं को पूरा किया गया हो, तो उत्पादों को "जैविक कृषि की उपज" अथवा इससे मिलते-जुलते विवरण के रूप में बेचा जा सकता है।

लेबल पर उत्पाद के उत्पादन अथवा प्रसंस्करण के लिये कानूनी रूप से उत्तरदायी व्यक्ति अथवा कम्पनी का नाम तथा पूरा पता लिखा होना चाहिये।

उत्पाद लेबलों में ऐसी प्रसंस्करण पद्धतियों को सूचीबद्ध किया जाना चाहिये जोकि उत्पाद गुणधर्मों को एक ऐसे रूप में प्रभावित करती है जोकि तत्काल रूप से प्रकट नहीं होता है।

अनुरोध करने पर अतिरिक्त उत्पाद जानकारी को उपलब्ध कराया जायेगा। योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों के सभी संघटकों की घोषणा की जायेगी।

वन्य उत्पादन से प्राप्त किये गये अवयवों अथवा उत्पादों की इस रूप में से घोषणा की जायेगी।

मानक

3.5.1.1.

उत्पाद के उत्पादन अथवा प्रसंस्करण हेतु कानूनी रूप से उत्तरदायी व्यक्ति अथवा कम्पनी की आसानी पूर्वक पहचान की जा सकेगी।

3.5.1.2.

यदि सभी मानक आवश्यकताओं को पूरा कर दिया गया हो, तो एकल अवयव उत्पादों को “जैविक कृषि की उपज” अथवा इससे मिलते जुलते विवरण के रूप में लेबल किया जा सकता है।

3.5.1.3.

ऐसे मिश्रित उत्पादों को निम्नलिखित रूप (कच्चा माल भार) में लेबल किया जा सकता है जिनके सभी अवयव, योज्यों सहित, जैविक मूल के नहीं हो :

- यदि अवयवों का न्यूनतम 95% प्रमाणित जैविक मूल का है, तो उत्पादों को “प्रमाणित जैविक” अथवा समान रूप में लेबल किया जा सकता है और उस पर प्रमाणीकरण कार्यक्रम का लोगो छपा होना चाहिये।
- जहाँ 95% से कम परन्तु 70% से ज्यादा अवयव प्रमाणित जैविक मूल के हों, तो उत्पादों को “जैविक” नहीं कहा जा सकता है। “जैविक” शब्द का प्रयोग “जैविक अवयवों से निर्मित” जैसे कथनों में प्रधान डिस्प्ले पर किया जा सकता है बशर्ते कि जैविक अवयवों के अनुपात के बारे में स्पष्ट कथन किया गया हो। एक ऐसे संकेत का प्रयोग किया जा सकता है कि इस उत्पाद को प्रमाणीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत शामिल किया गया है, जिसको जैविक अवयवों के अनुपात के वर्णन के पास ही लिखा जाना चाहिये।

3.5.1.4.

जैविक अवयवों की प्रतिशतता गणनाओं में मिलाये गये पानी तथा नमक को शामिल नहीं किया जायेगा।

3.5.1.5.

रूपान्तरण उत्पादों हेतु लेबल को जैविक उत्पादों हेतु लेबल से स्पष्ट रूप से भिन्न होना चाहिये।

3.5.1.6.

किसी बहु-अवयवी उत्पाद की सभी कच्ची सामग्रियों को उनकी भार प्रतिशतता के क्रम में उत्पाद लेबल पर सूचीबद्ध किया जाना चाहिये। यह स्पष्ट होना चाहिये कि कौन-सी कच्ची सामग्री जैविक प्रमाणित मूल की है और कौन-सी नहीं। समस्त योज्यों को उनके पूरे नामों के साथ सूचीबद्ध किया जाना चाहिये।

यदि जड़ी-बूटियाँ और/या मसाले उत्पाद के कुलभार के 2% से भी कम हो, तो उनकी प्रतिशतता का उल्लेख किये बिना ही उनको “मसाले” अथवा “जड़ी-बूटियों” के रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है।

3.5.1.7.

जैविक उत्पादों को GE (आनुवांशिक रूप से निर्मित) अथवा GM (आनुवांशिक संशोधन) मुक्त के रूप में लेबल नहीं किया जायेगा जिससे कि तैयार उत्पाद के बारे में संभावित भ्रामक दावों की रोकथाम की जा सके। उत्पाद लेबलों पर आनुवंशिक निर्मिति के किसी उल्लेख को उत्पादन विधि तक ही सीमित रखा जायेगा।

3.6. भण्डारण तथा परिवहन

सामान्य सिद्धांत

जैविक उत्पाद के भण्डारण तथा परिवहन के दौरान उत्पाद सत्यनिष्ठा को बनाये रखा जाना चाहिये।

सिफारिशें

जैविक उत्पादों को गैर-जैविक उत्पादों के साथ मिल जाने से हर समय बचाया जाना चाहिये।

जैविक उत्पादों को ऐसी सामग्रियों और पदार्थों के संपर्क में आने से हर समय बचाना चाहिये जिनका जैविक खेती तथा हैण्डिलिंग में प्रयोग करने की अनुमति नहीं है।

मानक**3.6.1.**

यदि यूनिट के केवल एक भाग को ही प्रमाणित किया गया हो और अन्य उत्पाद गैर-जैविक हों, तो जैविक उत्पादों की पहचान को बनाये रखने हेतु उनको पृथक् रूप से भण्डारित तथा हैण्डिल किया जाना चाहिए।

3.6.2.

जैविक उत्पाद के थोक भण्डार गृहों को पारंपरिक उत्पादों के भण्डारगृहों से अलग होना चाहिये तथा इस आशय हेतु उनको स्पष्ट तौर से लेबल किया जाना चाहिये।

3.6.3.

जैविक उत्पाद हेतु भण्डारण क्षेत्रों तथा परिवहन आदानों को ऐसी विधियों तथा सामग्रियों का प्रयोग करके साफ करना चाहिये जिनकी जैविक उत्पादन में अनुमति प्रदान की गयी हो। किसी भी ऐसे कीटनाशक अथवा अन्य किसी उपचार से संभाव्य संदूषण रोकथाम हेतु उपायों को लागू किया जाना चाहिये जिनको परिशिष्ट - 2 में सूचीबद्ध नहीं किया गया हो।

परिशिष्ट I**उर्वरण तथा मृदा अनुकूलन में प्रयोगार्थ उत्पाद**

जैविक कृषि में मृदा उर्वरता को ऐसी जैविक सामग्री के पुनः चक्रण के माध्यम से बनाये रखना संभव हो सकता है जिनके पोषक तत्वों को मृदा सूक्ष्म जीवों तथा बैक्टीरिया की कार्यवाही के द्वारा फसलों के लिये उपलब्ध कराया जाता है।

इनमें से अधिकतर इनपुट्स के प्रयोग के जैविक उत्पादन में सीमित किया गया है। इस परिशिष्ट में “सीमित” का अभिप्राय यह है कि प्रमाणीकरण कार्यक्रम के द्वारा प्रयोग हेतु शर्तों तथा पद्धति को निर्धारित किया जायेगा। संदूषण, पोषण असंतुलनों के जोखिम तथा प्राकृतिक संसाधनों के रिक्तीकरण आदि कारणों को ध्यान में रखना होगा।

जैविक फार्म यूनिट पर उत्पादित पदार्थ

- | | |
|--|-------|
| • फार्मयार्ड तथा मुर्गीखाना खाद, गारा, मूत्र | अनुमत |
| • फसल अवशिष्ट तथा हरित खाद | अनुमत |
| • भूसा तथा अन्य घासपात | अनुमत |

जैविक फार्म यूनिट से बाहर उत्पादित पदार्थ

- | | |
|---|-------|
| • परिरक्षकों से रहित लहू आहार, मांस आहार, अस्थि आहार तथा पिच्छ आहार | सीमित |
| • किसी भी कार्बन आधारित अवशिष्टों (मुर्गी सहित पशुओं का मल) से निर्मित कम्पोस्ट | सीमित |
| • फार्मयार्ड खाद, गारा, मूत्र | सीमित |

(अधिमानत: नियंत्रित किण्वन तथा/अथवा
उपयुक्त विलयन के पश्चात्)
“फैक्टरी” खेती स्रोतों को अनुमति
प्रदान नहीं की गयी है।

- | | |
|--|------------|
| • मछली तथा परिरक्षकों रहित मच्छली उत्पाद | सीमित |
| • ग्वानो | सीमित |
| • मानव मल | अनुमत नहीं |
| • जीवाणु, वनस्पति अथवा पशु मूल के जैविक रूप से नष्ट हो सकने वाली सामग्री के खाद्य तथा वस्त्र उद्योगों के कृत्रिम योज्यों से रहित उपजात | सीमित |
| • कृत्रिम योज्यों से रहित पांस (मृदा अनुकूलन हेतु निषिद्ध) | |
| • बुरादा, लकड़ी की छीलन, लकड़ी बशर्ते कि वह अशोधित लकड़ी से उत्पन्न हो | |
| • समुद्री शैवाल, तथा भौतिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न समुद्री शैवाल उत्पाद, जल द्वारा अथवा जलीय एसिड और/या क्षारीय एसिड द्वारा निष्कर्षण | सीमित |

• मलजल गारा तथा पृथक् स्रोतों से शहरी कम्पोस्ट जिनकी संदूषण हेतु निगरानी की गयी हो	सीमित
• भूसा	सीमित
• वर्मिकास्टस्	सीमित
• पशु चारकोल	सीमित
• कम्पोस्ट तथा प्रयुक्त मशरूम तथा कृमिरूपी पदार्थ	सीमित
• जैविक घर संदर्भ से कम्पोस्ट	सीमित
• वनस्पति अवशिष्टों से कम्पोस्ट	सीमित
• तेल ताड़, नारियल तथा कोको से उत्पन्न उपजात (खाली फल गुच्छों, ताड़ तेल मिल बहिःस्त्राव (पोम), कोको पांस तथा खाली काको शिबु सहित)	सीमित
• जैविक कृषि के अवयवों का प्रसंस्करण करने वाले उद्योगों के उपजात	सीमित

खनिज

• बेसिक धातुमल	सीमित
• चूनेदार तथा मैग्नेशियम शैल	सीमित
• कैल्सीभूत शैल प्रवाल	
• कैल्शियम क्लोराइड	
• नेटवर्क मूल के कैल्शियम कार्बोनेट (चाक, चूना-पत्थर, जिप्सम और फॉस्फेट चाक)	
• निम्न क्लोरीन धारिता युक्त खनिज पोटेशियम (यथा पोटेश का सल्फेट, काइनाइट, सिल्वीनाइट, पाटेनकली)	सीमित
• प्राकृतिक फॉस्फेटस् (यथा शैल फॉस्फेटस्)	सीमित
• चूर्ण शैल	सीमित
• सोडियम क्लोराइड	
• सूक्ष्म मात्रिक तत्त्व (बेरोन, In, Fe, Mn, मॉलीबोलेरम, Zn)	सीमित
• अशोधित लकड़ी से काष्ठराख	सीमित
• पोटेशियम सल्फेट	सीमित
• मैग्नेशियम सल्फेट (इप्सॉन नमक)	
• जिप्सम (कैल्शियम सल्फेट)	
• धानी तथा धानी अर्क	अमोनियम धानी शामिल नहीं है
• एल्युमिनियम कैल्शियम फॉस्फेट	सीमित
• सल्फर	सीमित
• पत्थर-चक्की	सीमित
• मिट्टी (बेन्टोनाइट, परलाइट, जियोलाइट)	

सूक्ष्मजैविक विरचनें

- जीवाणुज विरचनें (जैव उर्वरक)
- बायोडायनैमिक विरचनें
- वनस्पति विरचनें तथा वनस्पति मूलक अर्क
- कृमिरूप
- पांस

“फैक्टरी” कृषि से अभिप्राय औद्योगिक प्रबंधन प्रणालियों से है जोकि ऐसे पशुचिकित्सा तथा आहार इनपुट्स पर बहुत अधिक निर्भर होती हैं जिनको जैविक कृषि में अनुमति प्रदान नहीं की गयी है।

परिशिष्ट 2**वनस्पति कीट तथा रोग नियंत्रण हेतु उत्पाद**

जैविक कृषि में वनस्पति उत्पादन में कीटों तथा रोगों के नियंत्रण हेतु कतिपय उत्पादों का प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की गयी है। ऐसे उत्पादों का प्रयोग केवल तभी किया जाना चाहिये जबकि ऐसा करना नितांत आवश्यक हो तथा पर्यावरणीय प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उनका चयन किया जाना चाहिये।

इनमें से अनेक उत्पादों को जैविक उत्पादन में प्रयोग हेतु सीमित किया गया है। इस परिशिष्ट में “सीमित” का अभिप्राय यह है कि प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा प्रयोग हेतु शर्तों तथा पद्धति को निर्धारित किया जायेगा।

I. वनस्पति तथा पशु मूल के पदार्थ

- | | |
|--|-------|
| • अज़ादी राक्ता इन्डिका (नीम विरचनें (नीम तेल)) | सीमित |
| • <i>Derris elliptica</i> , <i>Lonchocarpus</i> , <i>Thephrosia</i> spp.
से रोटोनोन की निर्मिति | सीमित |
| • जेलेटिन | |
| • प्रोपोलिस | सीमित |
| • वनस्पति आधारित विकर्षक नीम विरचनें, अज़ा दिराच्चा इन्डिका से (अज़ादी राक्तिन)) | |
| • <i>Chrysanthemum cinerariaefolium</i> से निचोड़े गये पायरीथ्रिन्स के
आधार पर निर्मिति, जिसमें संभवतया एक योगवाही पायरीथ्रम सिनेराफोलियम अन्तर्विष्ट होता है | सीमित |
| • क्वास्सिया अमारा से निर्मिति | सीमित |
| • कीड़ा कीटों के पराजीवी शिकारियों को छोड़ा जाना | सीमित |
| • रायनिया प्रजातियों से निर्मिति | सीमित |
| • तंबाकू चाय (शुद्ध निकोटिन निषिद्ध है) | सीमित |
| • लेसिथिन | सीमित |
| • केसैइन | सीमित |

- शैल प्रवाल, शैल प्रवाल भोजन, शैल प्रवाल अर्क, समुद्री नमक तथा खारा पानी सीमित
- मशरूम का अर्क (शिटाके फफूंद)
- ऐस्पर्जिलस से किण्वित उत्पाद सीमित
- प्राकृतिक अम्ल (सिरका) सीमित
- II. खनिज**
- क्लोराइड ऑफ लाइम/सोडा सीमित
- बरगन्डी मिक्सचर सीमित
- मिट्टी (यथा बेन्टोनाइट, परलाइट, वर्मिक्यूलाइट, जिओलाइट) सीमित
- फफूंद नाशक के रूप में कॉपर सॉल्ट्स/इनऑर्गेनिक साल्ट्स (बोर डीयूक्स मिक्स, कॉपर हाइड्रोऑक्साइड, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड) सीमित
- मिनरल पाउडर्स (स्टोन मील, सिलिकेट्स) अनुमत्त नहीं
- डायटमी पृथ्वी सीमित
- हल्के खनिज तेल सीमित
- परमैंगनेट ऑफ पोटेश सीमित
- लाइम सल्फर (कैल्शियम पोलिसल्फाइड) सीमित
- सिलिकेट्स सीमित
- सोडियम बाइकार्बोनेट
- सल्फर (फफूंद नाशक, माइट नाशी, विकर्षक के रूप में) सीमित
- III. जैविक कीट नियंत्रण हेतु प्रयुक्त सूक्ष्मजीव**
- वायरल, फफूंदयुक्त तथा जीवाणुयुक्त विरचनें (जैविककीट नाशक) सीमित
- IV. अन्य**
- रोगाणुहीन कीड़े सीमित
- कार्बनडायऑक्साइड तथा नाइट्रोजन गैस सीमित
- मुलायम साबुन (पोटाशियम साबुन)
- इथाइल एल्कोहल अनुमत्त नहीं
- जड़ीबूटीयुक्त तथा बायोडायनैमिक विरचनें
- रोगाणुहीन कीट नर अनुमत्त नहीं
- V. फंदे**
- रंगीन फन्दे
- यांत्रिक फन्दे
- फीरोमोन्स - केवल फन्दों तथा अवसर्जकों में ही

परिशिष्ट 3

जैविक कृषि हेतु अतिरिक्त इनपुट्स का मूल्यांकन करने हेतु पद्धति

परिशिष्ट 1 तथा 2 में जैविक कृषि में मृदा के उर्वरण तथा वनस्पति कीटों तथा रोगों के नियंत्रण हेतु उत्पादों का उल्लेख किया गया है। परन्तु जैविक कृषि में प्रयोग किये जाने हेतु उपयोगी तथा उपयुक्त सिद्ध हो सकने वाले ऐसे अनेक अन्य उत्पाद भी मौजूद हो सकते हैं जिन्हें इन शीर्षों के अंतर्गत शामिल नहीं किया गया हो। परिशिष्ट 3 में जैविक उत्पादन में ऐसे अन्य इनपुट्स का मूल्यांकन करने हेतु पद्धति की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है।

मृदा के उर्वरण तथा अनुकूलन प्रयोजनों हेतु अनुमत्त पदार्थों की सूची को संशोधित करने के लिये निम्नलिखित पड़ताल सूची का प्रयोग किया जाना चाहिये :

- सामग्री मृदा उर्वरता को हासिल करने अथवा बनाये रखने या विशिष्ट पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने, ऐसे विशिष्ट मृदा-अनुकूलन तथा आवर्तन प्रयोजनों हेतु अनिवार्य है जिनको अध्याय 4 में वर्णित पद्धतियों अथवा परिशिष्ट 1 में सम्मिलित अन्य उत्पादों के द्वारा संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।

और

- अवयव वनस्पति, पशु, जीवाणु अथवा खनिज मूल के हैं जो निम्नलिखित प्रक्रियाओं से होकर गुजर सकते हैं :
- भौतिक (यांत्रिक, ऊष्मीय)
- इन्जायमी
- रोगाणुक (कम्पोस्टिन्ना, पाचन)

और

- उनके उपयोग के परिणामस्वरूप पर्यावरण, मृदा जीवों सहित, पर अस्वीकार्य प्रभावों अथवा संदूषण का असर नहीं पड़ता है अथवा उसमें कोई वृद्धि नहीं होती है
- उनका प्रयोग करने से तैयार उत्पाद की गुणवत्ता तथा सुरक्षा पर कोई अस्वीकार्य प्रभाव नहीं पड़ता है।

वनस्पति रोग अथवा कीट तथा खरपतवार नियंत्रण के प्रयोजन हेतु अनुमत्त पदार्थ सूची को संशोधित करने हेतु निम्नलिखित पड़ताल सूची का प्रयोग किया जाना चाहिये :

- सामग्री ऐसे हानिकारक जीव अथवा किसी विशेष रोग के नियंत्रण हेतु अनिवार्य है जिनके लिये कोई अन्य जैविक, भौतिक अथवा वनस्पति प्रजनन विकल्प तथा/अथवा प्रभावकारी प्रबंधन तकनीकें उपलब्ध नहीं हैं

और

- पदार्थों (सक्रिय यौगिक) को वनस्पति, पशु रोगाणुक अथवा खनिज मूल का होना चाहिये जोकि निम्नलिखित प्रक्रियाओं में से होकर गुजर सकते हैं :
- भौतिक
- इन्जायमी
- रोगाणुक

तथा

- उनके उपयोग के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर कोई अस्वीकार्य प्रभाव अथवा संदूषण का असर नहीं पड़ता है अथवा उसमें कोई वृद्धि नहीं होती है।
- यदि अपने प्राकृतिक फॉर्म पर उत्पाद पर्याप्त प्रमात्राओं में उपलब्ध नहीं हो, तो प्राकृतिक समरूप उत्पादों, यथा फीरोमोन्स, जोकि रासायनिक रूप से संश्लेषित होते हैं, पर विचार किया जा सकता है बशर्ते कि उनके उपयोग हेतु शर्तों के परिणामस्वरूप पर्यावरण अथवा उत्पाद के संदूषण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धि नहीं होती हो।

मूल्यांकन

जब भी किसी इनपुट का मूल्यांकन किया जाना हो, तो सर्वप्रथम प्रमाणीकरण कार्यक्रमों द्वारा यह पता लगाने हेतु जांच की जानी चाहिये कि क्या वह निम्नलिखित छह मापदण्डों को पूरा करता है अथवा नहीं। जैविक कृषि में उपयोग हेतु उपयुक्त होने के रूप में स्वीकार किये जाने से पहले किसी भी इनपुट का निम्नलिखित सभी 6 आवश्यकताओं को पूरा करना जरूरी होता है।

इनपुट्स का नियमित रूप से मूल्यांकन तथा विकल्पों के साथ उनकी तुलना करते रहना चाहिये। नियमित मूल्यांकन की इस प्रक्रिया का परिणाम जैविक उत्पादन के मनुष्यों, पशुओं, पर्यावरण तथा परिस्थितिकी के लिये अधिकाधिक अनुकूल बनते जाने के रूप में सामने आना चाहिये।

1. अनिवार्यता

प्रत्येक इनपुट की अनिवार्यता को स्थापित करना अनिवार्य है। उत्पाद का जिस संदर्भ में प्रयोग किया जायेगा, उसी के अनुसार इसकी जांच की जायेगी।

किसी इनपुट की अनिवार्यता को सिद्ध करने हेतु पैदावार, उत्पाद गुणवत्ता, पर्यावरणीय सुरक्षा, पारिस्थितिक संरक्षण, प्राकृतिक दृश्य, मानवीय तथा पशु कल्याण आदि मानदण्डों के आधार पर तर्कों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

किसी इनपुट के प्रयोग को निम्नलिखित बिन्दुओं तक सीमित किया जा सकता है :

- विशिष्ट फसलें (विशेषकर बारहमासी फसलें)
- विशिष्ट क्षेत्र
- विशिष्ट दशाएं जिनके अधीन इनपुट का उपयोग किया जायेगा।

2. उत्पादन की प्रकृति तथा ढंग

प्रकृति

इनपुट की उत्पत्ति सामान्यतया (वरीयता के क्रममें) :

- जैविक - वनस्पतिमूलक, पशुमूलक, रोगाणुक मूलक
- खनिज मूलक हनी चाहिये।

ऐसे गैर-प्राकृतिक उत्पादों का भी प्रयोग किया जा सकता है जो रासायनिक रूप से संश्लेषित तथा प्राकृतिक उत्पादों के समरूप हों।

जहां भी विकल्प मौजूद हो, तो उस स्थिति में पुनर्नवीकरणीय इनपुट्स को वरीयता दी जाती है। खनिज मूल के इनपुट्स दूसरी सर्वोत्तम पसंद होते हैं तथा तीसरी पसंद ऐसे इनपुट्स होते हैं जोकि रासायनिक रूप से प्राकृतिक उत्पादों के समरूप होते हैं। रासायनिक रूप से समरूप उत्पादों की अनुमति प्रदान करते समय कतिपय पारिस्थितिक, तकनीकी अथवा आर्थिक तर्कों पर विचार करना जरूरी हो सकता है।

उत्पादन का ढंग

इनपुट्स के अवयवों को निम्नलिखित प्रक्रियाओं में से होकर गुजरना पड़ सकता है :

- यांत्रिक
- भौतिक
- इन्जॉयमी
- सूक्ष्म जीवों की कार्यवाही
- रासायनिक (एक अपवाद के रूप में तथा सीमित)

संग्रहण

इनपुट से युक्त कच्ची सामग्रियों के संग्रहण से प्राकृतिक अधिवास के स्थायित्व तथा संग्रहण क्षेत्र के भीतर किसी भी प्रजाति के अनुरक्षण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये।

3. पर्यावरण

पर्यावरणीय सुरक्षा

इनपुट का पर्यावरण पर कोई हानिकारक अथवा स्थायी नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। न ही इनपुट को पृष्ठ अथवा भूमिगत जल, वायु या मृदा के अस्वीकार्य प्रदूषण को बढ़ाना चाहिये। प्रसंस्करण, प्रयोग तथा विभंग के दौरान सभी चरणों का मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिये।

इनपुट की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार किया जाना अनिवार्य है :

अवक्रमणीयता

सभी इनपुट्स को अपने खनिज रूप में अवक्रमणीय होना चाहिये।

गैर-लक्ष्य जीवों के लिये उच्च गंभीर विषाक्तता से युक्त इनपुट्स की अधिकतम पांच दिनों की अर्धआयु होनी चाहिये।

यदि विषाक्त नहीं माने जाने वाले प्राकृतिक पदार्थों का इनपुट्स के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो उनके लिये एक सीमित समयावधि के भीतर अवक्रमणीय होना जरूरी नहीं है।

गैर-लक्ष्य जीवों के लिये गंभीर विषाक्तता

यदि इनपुट्स में गैर-लक्ष्य जीवों के लिये सापेक्षिक रूप से उच्च गंभीर विषाक्तता मौजूद हो, तो उनके प्रयोग को सीमित करना आवश्यक है। इन गैर-लक्ष्य जीवों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने हेतु उपायों को लागू किया जाना चाहिये। अनुपयोग हेतु अधिकतम प्रमात्राओं को

निर्धारित किया जाना चाहिये। यदि उपयुक्त उपायों को लागू करना संभव नहीं हो तो इनपुट के प्रयोग की अनुमति प्रदान नहीं की जानी चाहिये।

दीर्घावधि चिरकालिक विषाक्तता

जीवों, अथवा जीवों और इनपुटस्की प्रणालियों में संचायित हो जाने वाले ऐसे इनपुटस्का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये जिनमें उत्परिवर्तनीय अथवा कैसरजनक गुणधर्म मौजूद हों, या उनके मौजूद होने का सन्देह हो। यदि ऐसा कोई जोखिम हो, तो उस जोखिम को एक स्वीकार्य स्तर तक घटाने तथा दीर्घस्थायी नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों की रोकथाम करने हेतु समुचित उपायों को लागू किया जाना चाहिये।

रासायनिक रूप से संश्लेषित उत्पाद तथा भारी धातुएं

इनपुट में मनुष्य निर्मित रसायनों (जेनोबायोटिक उत्पादों) की हानिकारक प्रमाणाएं अन्तर्विष्ट नहीं होनी चाहिये। रासायनिक रूप से संश्लेषित उत्पादों को केवल तभी स्वीकार किया जा सकता है जबकि वे प्राकृतिक उत्पादों के समरूप हों।

खनिज इनपुटस् में यथासंभव नगण्य भारी धातुएं अन्तर्विष्ट होनी चाहिये। किसी विकल्प का अभाव होने तथा जैविक कृषि में लंबे समय से चले आ रहे पारंपरिक उपयोग के कारण, कॉपर तथा कॉपर सॉल्ट इस समय एक अपवाद के रूप में विद्यमान है। तथापि, जैविक कृषि में किसी भी रूप में कॉपर के प्रयोग को अस्थायी माना जाना चाहिये तथा पर्यावरणीय प्रभाव के संबंध में उसके प्रयोग को सीमित किया जाना चाहिये।

4. मानव-स्वास्थ्य तथा गुणवत्ता

मानव स्वास्थ्य

इनपुट्स को मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक नहीं होना चाहिये। प्रसंस्करण, प्रयोग तथा अवक्रमण के दौरान सभी चरणों को ध्यान में रखा जाना चाहिये। किसी भी प्रकार के जोखिम को घटाने हेतु उपायों को लागू किया जाना चाहिये तथा जैविक उत्पादन में प्रयुक्त इनपुट्स हेतु मानकों को निर्धारित किया जाना चाहिये।

उत्पाद गुणवत्ता

इनपुट्स का उत्पाद की गुणवत्ता-यथा स्वाद, शक्ल तथा गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये।

5. नैतिक पहलू - पशु कल्याण

इनपुट्स का फॉर्म पर रखे गये पशुओं के प्राकृतिक व्यवहार अथवा शारीरिक कार्यकलापों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये।

6. आर्थिक सामाजिक पहलू

उपभोक्ताओं की अनुभूति: जैविक उत्पादों के उपभोक्ताओं द्वारा इनपुट्स का कोई विरोध अथवा बहिष्कार नहीं होना चाहिये। उपभोक्ताओं की दृष्टि में कोई इनपुट पर्यावरण अथवा मानव-स्वास्थ्य की दृष्टि से असुरक्षित हो सकता है, भले ही वैज्ञानिक रूप से ऐसा प्रमाणित नहीं हो पाया हो। इनपुट्स को किसी भी उत्पाद के प्राकृतिक अथवा जैविक-यथा आनुवांशिक रूप से निर्माण - के बारे में आम राय अथवा विचार के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिये।

परिशिष्ट 4

खाद्य प्रसंस्करण में प्रयुक्त गैर-कृषि परक मूल के अनुमोदित अवयवों तथा प्रसंस्करण सहायकों की सूची

खाद्य योज्य तथा संवाहक

अंत संख्यांकन प्रणाली	उत्पाद	उत्पाद समूह	परिसीमन/टिप्पणी
INS 170	कैल्शियम कार्बोनेट	GA	
INS 220	सल्फर डायऑक्साइड	W	
INS 224	पोटाशियम मेटाबाइसल्फाइड	W	
INS 270	लैक्टिक एसिड	FV	सांद्रित फल/वनस्पति रस एवं किण्वित वनस्पति उत्पाद, गुलमे, किण्वित वनस्पति उत्पाद
INS 296	मैलिक एसिड	-	
INS 290	कार्बन डायऑक्साइड	GA	
INS 300	एस्कॉर्बिक एसिड	FV	यदि प्राकृतिक रूप में उपलब्ध नहीं हो
INS 306	टीकोफीरोल्स, मिश्रित		
	प्राकृतिक सांद्र	GA	
INS 322	लेसिथिन	GA	विरंजकों तथा जैविक विलायकों के प्रयोग के बिना उत्पन्न
NS 330	साइट्रिक एसिड	FV	सांद्रित फल/वनस्पति रस, जैम, किण्वित वनस्पति उत्पादन
		W	1 gm/1 तक सीमित
NS 335	सोडियम साइट्रेट्स	ME	
NS 336	पोटाशियम साइट्रेट्स	ME	
NS 400	एलीजिनिक एसिड		
NS 401	सोडियम एलीजिनेट		
NS 402	पोटाशियम		
NS 333	कैल्शियम साइट्रेट्स	ME	
NS 334	टार्टरिक एसिड	W	
NS 335	सोडियम टार्ट्रेट	CO/CB	
NS 336	पोटाशियम टार्ट्रेट	C/CO/CB	
NS 341	मोनो कैल्शियम फॉस्फेट	C	केवल आटा बनाने हेतु
NS 342	एमोनियम फॉस्फेट	W	0.3gm/1 तक सीमित
NS 406	अगर	GA	
NS 407	कैराजीन	GA	दुग्ध उत्पाद
NS 410	लोकस्ट बीनगम	GA	दुग्ध उत्पाद/मांस उत्पादन
NS 412	गौर गम	GA	

खाद्य योज्यों में संवाहक अन्तर्विष्ट हो सकते हैं जिनका मूल्यांकन किया जाना चाहिये।

NS 413	द्रागकान्थ गम	GA	
NS 414	अरैबिक गम	MI/F/CO	दुग्ध, वसा तथा मिष्ठान उत्पाद
NS 415	जैन्थान गम	F/FV/CB	
NS 416	कराया गम		
NS 440	पेक्टिन	GA	अपरिष्कृत (दुग्ध उत्पाद)
NS 500	सोडियम कार्बोनेट्स	CO/CB	दुग्ध उत्पाद निष्प्रभावक पदार्थ
NS 501	पोटेशियम कार्बोनेट्स	C/CO/CB	अंगूर रेजिन का शुष्कीकरण
NS 503	अमोनियम कार्बोनेट्स	C/CO/CB	
NS 504	मैग्नेशियम कार्बोनेट्स	C/CO/CB	
NS 508	पोटेशियम क्लोराइड	FV/SA	केवल जमा हुआ व डिब्बाबंद फल/सब्जियां, शाकाहारी गुलमे, केचप, सरसों
NS 509	कैल्शियम क्लोराइड	MI/F/FV/SO	दुग्ध उत्पाद/मांस उत्पाद/वसा उत्पाद/फल एवं सब्जियां/सोयाबीन उत्पाद
NS 511	मैग्नेशियम क्लोराइड	SO	सोयाबीन उत्पाद
NS 516	कैल्शियम सल्फेट	CB/SO	सीमित
		C	केवल नानवाई के खमीर में
NS 517	अमोनियम सल्फेट	W	0.3 gm/1 तक सीमित
NS 524	सोडियम हाइड्रोऑक्साइड	C	
NS 939	आर्गोन	GA	
NS 941	नाइट्रोजन	GA	
NS 948	ऑक्सीजन	GA	

उपर्युक्त सारणियों में प्रयुक्त संक्षिप्तारणों की कुंजी-सूची

GA- ग्रीसिंग/रिलीजिंग एजेंट	M- मिल्क प्रोडक्ट्स	F- फैट प्रोडक्ट्स
ME- मोट प्रोडक्ट्स	C- सीरियल प्रोडक्ट्स	FV- फ्रूट/वेजीटेबल प्रोडक्ट्स
W- वाइन	S- शुगर	CO- कन्फेक्शनरी
CB- केक्स एण्ड बिस्किट्स		SO- सोयाबीन प्रोडक्ट्स

सुगन्धित एजेन्ट्स

- तेल, पानी, इथानोल, कार्बन डाइऑक्साइड जैसे विलायकों तथा यांत्रिक और भौतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न वाष्पशील (अनिवार्य) तेल
- प्राकृतिक घूम सुगंध
- प्राकृतिक सुगंधकारी विरचनों को NSOP दिशानिर्देशों (परिशिष्ट 3) पर आधारित योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों के मूल्यांकन हेतु राष्ट्रीय पद्धति के आधार पर अनुमोदित किया जाना चाहिये।

सूक्ष्म-जीवों की विरचनें

- खाद्य प्रसंस्करण में सूक्ष्म-जीवों की विरचनों का प्रयोग करने को स्वीकृति प्रदान की गयी है। आनुवांशिक रूप से परिष्कृत जीवों का बहिष्करण किया गया है।
- विरंजकों तथा जैविक विलायकों के बिना उत्पन्न किया गया नानबाई खमीर।

परिशिष्ट 5

प्रसंस्करण सहायक तथा अन्य उत्पाद

अंत संख्यांकन प्रणाली	उत्पाद	उत्पाद समूह	परिसीमन/टिप्पणी
INS 153 INS 170	काछराख कैल्शियम कार्बोनेट	GA	पारंपरिक पनीर दुग्ध उत्पाद, रंजक एजेंटों के रूप में नहीं।
INS 181	टास्त्रिन	W	
INS 184	टास्त्रिक एसिड	W	छनाई सहायक
INS 220	सल्फर डाइआक्साइड	W	
INS 270	लैक्टिक एसिड	ME	दुग्ध उत्पाद, स्कंदन एजेंट, पनीर, गुलमे हेतु समद्री नमक का pH विनियमन, आवरण
INS 270 INS 290	कार्बन डाइआक्साइड लेसिथिन	GA CO/CB	चिकनाई एजेंट, विरंजक अथवा जैविक विलायकों के प्रयोग के बिना उत्पन्न/दुग्ध उत्पाद/दुग्ध आधारित शिशु आहार/वसा उत्पाद/सलाद का मसाला
INS 501 INS 513	पोटाशियम कार्बोनेट सलफ्यूरिक एसिड	FV/W S	चीनी उत्पादन में पानी का PH समायोजन/चीनी क्रिस्टलीकरण प्रक्रिया हेतु सोप्रोपानोल सीमित स्कंदन एजेंट
INS 516	कैल्शियम सल्फेट	GA	चीनी उत्पादन के विरुद्ध PH समायोजन
INS 524	सोडियम हाइड्रॉक्साइड	S	
INS 334-7	टारटरिक एसिड व साल्ट्स	W	
INS 500	सोडियम कार्बोनेट	S	
INS 511	मैग्नेशियम क्लोराइड	SO	सोयाबीन उत्पादों हेतु
INS 551	सिलिकॉन डायआक्साइड	W/T/FV	जड़ीबूटियों तथा मसालों के लिये एन्टीकेकिना एजेंट के रूप में एक जैल अथवा कोलायडीय विलयन
INS 553	टॉल्क	GA	
INS 901	बीजवैक्स	GA	निर्मोचन एजेंट
INS 902	कार्बोनील वैक्स	GA	निर्मोचन एजेंट
INS 941	नाइट्रोजन एक्टोवैटिड कार्बन एम्बेस्टरम मुक्त छनाई सामग्रियाँ बेन्टोनाइट	GA GA GA FV/W	

केसीन	W	
हायटमी पृथ्वी	S/FV	
एग वाइट एल्बुमेन	W	
एथानोल	GA	विलायक
जेलेटिन	FV/W	
इसिन्लास	W	
कायोलीन	GA	प्रोपोलिस का निष्कर्षण
परलाइट	GA	
साल की विरचनें	S	
वनस्पति तेल	GA	चिकनाई अथवा निर्मोचन एजेंट
पादप अकों के रूप में ग्लिसिरोल		सीमित
चुकन्दर शर्करा		सीमित

सूक्ष्म जीवों तथा इन्जायमों की विरचनें

जैविक खाद्य उत्पादों हेतु योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों के मूल्यांकन के लिये राष्ट्रीय पद्धति के आधार पर अनुमोदन के साथ इनका प्रसंस्करण सहायकों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

उपर्युक्त सारभियों में प्रयुक्त संक्षिप्तानुसारों की कुंजी-सूची:

GA- ग्रीसिन/रिलीजिन एजेंट	M- मिल्क प्रोडक्ट्स	F- फैट प्रोडक्ट्स
ME- मोट प्रोडक्ट्स	C- सीरियल प्रोडक्ट्स	FV- फ्रूट/वेजीटेबिल प्रोडक्ट्स
W-वाइन	S- शुगर	CO- कन्फेक्शनरी
CB-केकस् एण्ड बिस्किट्स		SO- सोयाबीन प्रोडक्ट्स

अवयव

- पेयजल
- नमक
- खनिज (सूक्ष्ममात्रिक तत्वों सहित) तथा विटामिन जहाँ पर कानूनी रूप से इनका प्रयोग करना अनिवार्य हो अथवा जहाँ पर मंजीर आहार संबंधी अथवा पोषण संबंधी कमी को निरूपित किया जा सके।

परिशिष्ट 6

जैविक खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग हेतु अनुमोदित उत्पाद

जैविक खेती में खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग हेतु कतिपय उत्पादों का प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की गयी है, तथापि इनमें से अनेक को जैविक उत्पादन में प्रयोगार्थ सीमित किया गया है। इस परिशिष्ट में "सीमित" का अमिप्राय यह है कि प्रयोग हेतु शर्तों तथा पद्धतियों को प्रत्यायित प्रमाणीकरण कार्यक्रम के द्वारा निर्धारित किया जायेगा।

जैविक खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग हेतु प्लास्टिकों का प्रयोग

क्रम. संख्या	उत्पाद	परिसीमन
1.	4,4'-Bis(2-benzoxazoly)stilbene	सीमित
2.	9,9-Bis(methoxymethy) fluorine	सीमित
3.	Carbonic acid, copper salt	सीमित
4.	Diethyleneglycol	सीमित
5.	2-(4,6-Diphenyl-1,3,5-triazin-2-yl)-5-(hexyloxy)phenol	सीमित

6.	Ethylenediaminetetraacetic acid, copper salt	सीमित
7.	2-(2-Hydroxy-3,5-di-tert-butyl-phenyl-5-chlorobenzotriazole	सीमित
8.	2-Methyl-4-isothiazolin-3-one	सीमित
9.	Phosphoric acid, trichlorooctylester	सीमित
10.	Polyesters of 1,2 propanediol and/or 1,3-and 1,4 butanediol and/or Polypropyleneglycol with adipic acid, also end-capped with acetic acid or fatty acids C10-C18 or n-octanol and/or n-decanol	सीमित
11.	1,1,1-Trimethylpropane	सीमित
12.	3-hydroxybutanoic acid 3-hydro xypentanoic acid, copolymer	सीमित

परिशिष्ट 7

पशु पोषण हेतु अनुमोदित चारा सामग्रियों, चारा योज्यों तथा प्रसंस्करण सहायकों की सूची

1. वनस्पति मूल की चारा सामग्रियां

- अनाज के दाने, उनके उत्पाद तथा उपजात
- तिलहनें, तैल फल, उनके उत्पाद तथा उपजात
- फली बीज, उनके उत्पाद तथा उपजात
- कन्द जड़ें, उनके उत्पाद तथा उपजात
- अन्य बीज तथा फल
- रातिब तथा मोटा चारा
- शीरा

बंधक एजेन्ट के रूप में

2. पशु मूल के रूप में चारा सामग्री

- दूध तथा दुग्ध उत्पाद
- मछली, अन्य समुद्री जीव, उनके उत्पाद तथा उपजात

3. खनिज मूल की चारा सामग्री

सीमित

- समुद्री नमक, खनिज नमक
- सोडियम सल्फेट
- सोडियम कार्बोनेट
- सोडियम बाइकार्बोनेट
- सोडियम क्लोराइड
- कैल्शियम कार्बोनेट
- कैल्शियम लैक्टेट
- कैल्शियम ग्लूकोनेट
- बोन डायकैल्शियम फास्फेट अवशेष
- डिफ्लूयोरिनेटिड डायकैल्शियम फास्फेट
- डिफ्लूयोरिनेटिड मोनोकैल्शियम फास्फेट
- एन्हाइड्रस मैग्नेशिया
- मैग्नेशियम सल्फेट
- मैग्नेशियम क्लोराइड
- मैग्नेशियम कार्बोनेट

खाद्य योज्य

4. सूक्ष्म मायिक तत्त्व

- आयरन
- आयोडीन
- कोबाल्ट
- मैन्गनीज़
- जिंक
- मोलीब्डेनम
- सेलेनियम

5. विटामिन

6. इन्जाइम्स

7. सूक्ष्म जीव

8. परिरक्षक

- E-336 फार्मिक एसिड
- E-260 एसिटिक एसिड
- E-270 लैक्टिक एसिड
- E-280 प्रोपायोनिक एसिड

9. बन्धकों, पिंड-रोधी एजेंट तथा स्कंपक पदार्थ

- E-551 b कोलोइडल सिलिका
- E-551 c कीसल गुर
- E-553 सूपियो लाइट
- E-558 बन्टोनाइट
- E-559 कायोलिनिटिक मिट्टी
- E-561 वर्मोक््यूलाइट
- E-599 परलाइट

10. साइलो-संरक्षण हेतु प्रसंस्करण सहायक

- समुद्री नमक
- मोटा खनिज नमक
- इन्जाइम्स
- खमीर
- चीनी
- चुकंदर का गूदा
- धान्य आटा
- शीरा
- लैक्टिक

सीमित

सीमित

सीमित

साइलो-संरक्षण हेतु

परिशिष्ट 8

पशुधन इमारतों तथा भवनों की सफाई एवं विसंक्रमण हेतु प्राधिकृत उत्पाद

- पोटेशियम तथा सोडियम साबुन
- पानी तथा भाप
- चूने का दूध
- चूना
- अनबुझा चूना
- सोडियम हाइपोक्लोराइट (यथा लिक्विड ब्लिच में रूप में)
- कास्टिक पोटाश
- हाइड्रोजन पैराऑक्साइड
- पौधों के प्राकृतिक अर्क
- साइट्रिक, पैरासीटिक एसिड, फॉर्मिक, लैक्टिक, ऑक्सैलिक तथा एसिटिक एसिड
- शराब
- नाइट्रिक एसिड (डेयरी उपकरण)
- फास्फोरिक एसिड (डेयरी उपकरण)
- फॉर्मैल्डिहाइड
- सोडियम कार्बोनेट

अनुभाग-4

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों का प्रत्यायन

क. प्रत्यायन संबंधी विनियम

1. संक्षिप्त शीर्षक एवं आरम्भ

- (क) जैविक उत्पादन के लिए बनाए गए राष्ट्रीय जैविक कार्यक्रम के अन्तर्गत इन विनियमों को प्रत्यायन विनियम 2001 का नाम दिया जाएगा
- (ख) सरकारी राजपत्र में प्रकाशित की गई तिथि से इन्हें लागू माना जाएगा।
- (ग) ये विनियम भारत के भीतर उन सभी प्रमाणकर्ता एजेन्सियों पर लागू होंगे जो इन विनियमों के आरम्भ से पहले से ही, इन प्रत्यायन एजेन्सियों के अन्तर्गत जैविक फसलों/उत्पादों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण का जैविक के रूप में प्रमाणीकरण करने के काम का विचार रखती हैं अथवा पहले से ही इसमें कार्यरत हैं।

2. प्रत्यायन का स्कोप

- (क) ये विनियम उन सभी प्रमाणकर्ता एजेन्सियों पर लागू होंगे, चाहे वे वैयक्तिक, फर्म अथवा सहकारी समितियाँ हों जो या तो पहले से ही जैविक फसलों/उत्पादों के प्रमाणीकरण के कार्य में लगी हुई हों अथवा इस कार्य को करने का विचार रखती हों, इन्हें ISO/IEC गाईड 65 का अनुसरण करना होगा।
- (ख) जैविक उत्पादों के सम्बन्ध में किसी भी प्रमाणकर्ता एजेन्सी द्वारा दिया गया प्रमाणपत्र तब तक वैध नहीं माना जाएगा जब तक वह एजेन्सी (वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्राधिकृत प्रत्यायन निकाय) द्वारा प्रत्यायित नहीं होगी।
- (ग) यदि प्रत्यापित एजेन्सी सन्तुष्ट हो जाती है कि ऐसा करना सार्वजनिक हित में आवश्यक अथवा लाभप्रद है, तो वह केन्द्रीय सरकार की स्वीकृति से, सरकारी राजपत्र में अधिसूचना जारी करने के पश्चात्, इन विनियमों के स्कोप के अन्तर्गत लाये जाने वाले किन्हीं भी अन्य उत्पादों अथवा पद्धतियों को उसमें जोड़ सकती है अथवा निकाल सकती है।
- (घ) प्रत्यायन निकाय इन विनियमों की धारा 3 के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट किये गये उन मानदण्डों का अनुसरण करेगा जिन्हें निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के लिये बनाए गए प्रत्यायन मानदण्डों में पारिभाषित किया गया है।
- (ङ) इन विनियमों की धारा 3 के अन्तर्गत निर्धारित आवश्यक प्रक्रिया का अनुसरण करने पश्चात् भारत सरकार जब भी इसे उपयुक्त समझे, प्रत्यायन मापदण्डों की पुनरीक्षा का सम्पूर्ण अधिकार उसके पास रहेगा।

3. प्रत्यायन समिति

- क) राष्ट्रीय संचालन समिति राष्ट्रीय प्रत्यायन निकाय के रूप में भी काम करेगी। एजेन्सी के मूल्यांकन के बाद, प्रत्यायन निकाय निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेन्सी के प्रत्यायन पर विचार करेगा।
- ख) प्रत्यायन समिति में कृषि मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय, वस्तु बोर्डों के प्रतिनिधि होंगे। इसका अध्यक्ष राष्ट्रीय संचालन समिति का अध्यक्ष होगा। वाणिज्य सचिव अपीलीय प्राधिकारी होगा।
- ग) समिति जब भी आवश्यक हुआ अपनी बैठक करेगी और ऐसी बैठक में कोरम 6 होगा। यदि आवश्यक हुआ तो प्रत्यायन के मुद्दों पर समिति उन्हें परिचालित करके भी निर्णय ले सकती है।
- घ) उक्त प्रत्यायन समिति को अचानक क्षेत्र निरीक्षण करने तथा प्रमाणीकृत प्रचालकों (उत्पादक समूहों) के फार्मों से लिये गये नमूनों के विश्लेषण का अधिकार होगा।

4. प्रत्यायन के लिए आवेदन

- (क) एक एजेन्सी के रूप में प्रत्यायन अथवा इसका पुनर्नवीकरण चाहने वाले आवेदनकर्ता को एक निर्धारित फॉर्म में, जो एपिडा के पास उपलब्ध होगा, आवेदन करके प्राधिकृत अधिकारी को देना होगा। इस आवेदन-पत्र के साथ विनियमों में विनिर्दिष्ट, इस उद्देश्य के लिए निर्धारित शुल्क का भुगतान करना होगा।
- (ख) जब प्रमाणकर्ता एजेन्सी बहुविध परियोजनाओं, जिनमें से कुछ विभिन्न प्रत्यायन एजेन्सियों के अन्तर्गत आती हैं, को शामिल करने के लिये किसी एक प्रत्यायन एजेन्सी के पास प्रत्यायन के लिए आवेदन करती है तब उस आवेदन पर विचार करते समय वह प्रत्यायन एजेन्सी उस अन्य प्रत्यायन एजेन्सी के तकनीकी विशेषज्ञ को भी संबद्ध कर सकती है जिसके अन्तर्गत ये उत्पाद विशेष आते हैं।

5. प्रत्यायन शुल्क

- (क) आवेदनकर्ता को प्रथम वर्ष के प्रत्यायन के लिये आवेदन-पत्र के साथ-साथ 15,000/- रुपये का आवेदन शुल्क भी जमा कराना होगा। यह शुल्क एपीडा के पक्ष में जारी एक बैंक ड्राफ्ट के रूप में होना चाहिए जो नई दिल्ली में देय होगा। तथापि, प्रत्यायन निकाय के पास समय-समय पर इस शुल्क की पुनरीक्षा करने का अधिकार होगा।

परन्तु यह भी कि यदि प्रत्यायन निकाय प्रत्यायन को अस्वीकृत कर देता है तो भुगतान किए गए शुल्क में से 25% को प्रक्रियागत व्यय के रूप में काटकर शेष रकम लौटा दी जायेगी।

- (ख) यदि विभिन्न चिह्नित प्रत्यायन एजेन्सियों के अन्तर्गत, निरीक्षण तथा प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों के कई कार्यक्रम एक साथ चल रहे हों तो उन्हें किसी एक प्रत्यायन एजेन्सी को 15,000 रु. का शुल्क भेजना होगा जिसे विभिन्न प्रत्यायन एजेन्सियों को सन्दर्भ सम्प्रेषित कर दिया जायेगा।
- (ग) प्रत्यायन प्रमाणपत्र, इसके जारी करने की तिथि से, 3 वर्ष तक की अवधि के लिए वैध होगा।
- (घ) प्रत्यायन प्रमाणपत्र के पुनर्नवीकरण के लिए 3 वर्ष तक की अवधि के लिए 10,000/- रु. का पुनर्नवीकरण शुल्क लिया जायेगा जिसको आवेदन के साथ भेजा जाएगा।

6. प्रत्यायन संख्या का आवंटन

सभी प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को एक निर्दिष्ट प्रत्यायन संख्या आवंटित की जायेगी जो अहस्तांतरीय होगी एवं वह संख्या पुनः किसी और को नहीं दी जायेगी।

7. प्रत्यायन की स्वीकृति/अस्वीकृति

- (क) निर्धारित शुल्क के साथ हर प्रकार से उचित रूप में भरे गए आवेदन पत्र की प्राप्ति पर, प्रत्यायन निकाय की ओर से एपीडा सभी आवेदनों की प्रारम्भिक जांच करेगी। यदि आवेदन को हर प्रकार से उपयुक्त पाया जाता है तो एपीडा प्रत्यायन निकाय द्वारा मनोनीत एक मूल्यांकन टीम द्वारा क्षेत्र के मूल्यांकन की व्यवस्था करेगा। प्रत्यायन निकाय मूल्यांकन टीम द्वारा प्रस्तुत मूल्यांकन रिपोर्ट की समीक्षा करने के बाद आवेदन पर विचार करेगा। यदि आवेदनकर्ता निरीक्षण और प्रमाणीकरण के लिए उचित टैरिफ के साथ निर्धारित मापदण्डों पर खरा उतरता है तो समिति प्रमाणकर्ता एजेन्सी को स्वीकृति दे देगी।
- (ख) समिति, यदि इसे उचित समझे तो, आवेदनकर्ता को मूल्यांकन के दौरान पाई गई कमियों (टैरिफ, श्रमबल संसाधनों और परिचालनों की अपर्याप्तता) को पूरा / दूर करने का अवसर प्रदान कर सकती है।
- (ग) अस्वीकृत किए जाने की स्थिति में, आवेदनकर्ता को कारणों की जानकारी देते हुए लिखित में सूचना भेज दी जाएगी।
- (घ) प्रत्यायन प्रमाणपत्र, जारी होने की तिथि से, तीन वर्ष की अवधि के लिए वैध होगा।

8. प्रत्यायन संविदा

- (क) प्रत्यायन की स्वीकृति होने पर, एपीडा, प्रत्यायन निकाय की ओर से, प्रमाणकर्ता एजेन्सी को निर्धारित प्रत्यायन संविदा की एक प्रतिलिपि के साथ स्वीकृति की सूचना देगी। प्रमाणकर्ता एजेन्सी, स्वीकृति प्राप्ति के पन्द्रह दिनों के भीतर एक गैर-न्यायिक स्टाम्प पेपर पर संविदा निष्पादित करके उसके मूल्य की सूचना आवेदनकर्ता को भेज देगी।
- (ख) प्रमाणकर्ता एजेन्सी के प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित संविदा की प्राप्ति पर, इसकी प्राप्ति की तिथि के 15 दिन की अवधि के भीतर प्रत्यायन एजेन्सी, एपीडा प्रत्यायन प्रमाणपत्र जारी करेगी।

9. प्रत्यायन का अद्यतनीकरण एवं पुनर्नवीकरण

प्रत्यायन के पुनर्नवीकरण के लिए प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों को आरम्भिक प्रत्यायन प्रक्रिया के समान ही एक वार्षिक अद्यतनकारी प्रक्रिया का पालन करना होगा।

- (क) प्रत्यायन निकाय की ओर से एपीडा को यह अधिकार होगा कि वह पुनर्नवीकरण के आवंटन के साथ 10,000/- रु. की धनराशि का भुगतान करके 3 वर्ष की अवधि के लिए प्रमाण पत्र का पुनर्नवीकरण करा सकेगी। प्रमाणकर्ता एजेन्सी को यह आवेदन प्रत्यायन अवधि की समाप्ति से 30 दिन पहले करना होगा।
- (ख) प्रमाणकर्ता एजेन्सी को प्रत्यायन के पुनर्नवीकरण संबंधी आवेदन को निर्धारित शुल्क के साथ यह सुनिश्चित करके भेजना होगा कि वह प्राधिकृत अधिकारी तक प्रत्यायन अवधि की समाप्ति के 30 दिन पहले तक पहुँच जाए।
- (ग) तथापि, किसी स्थिति में विलम्ब होने पर यदि यथोचित कारण दिखाए जाएँ तो एपीडा के चेयरमैन को यह अधिकार होगा कि वह उक्त पुनर्नवीकरण आवेदन को भेजने में हुए विलम्ब को माफ कर दे। पुनर्नवीकरण उस निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के पूर्व कार्य-निष्पादन पर आधारित होगा और ऐसे आवेदनों का पुनर्नवीकरण करना अथवा उसे अस्वीकार करने का अधिकार प्रत्यायन एजेन्सियों के पास होगा और यह उनके पूर्ण स्वविवेक पर निर्भर होगा।

- (इ) पुनर्नवीकरण के लिए दिए गए किसी आवेदन को अस्वीकार करने की स्थिति में, प्रत्यायन एजेन्सी इन्हें अस्वीकार करने के कारणों को लिखित रूप में देगी।
- (च) इस प्रकार किसी अस्वीकृति पर की गई अपील पर संबंधित प्रत्यायन एजेन्सियों का चेयरमैन इन पर निर्णय लेने के लिये अपीलीय प्राधिकारी होगा।
- (छ) ऐसी अपीलों की सुनवाई के लिये भारत सरकार का वाणिज्य मन्त्रालय समर्थ प्राधिकारी होगा। ऐसी अपीलों के लिए गए निर्णय अंतिम होंगे एवं दोनों पक्षों पर बाध्यकारी होंगे।

10. दिशा निर्देश जारी करने संबंधी शक्तियाँ

- (क) प्रत्यायन निकाय की ओर से एपीडा को ये शक्तियाँ होंगी कि वह समय-समय पर निरीक्षण एवं प्रमाणकरण कार्यक्रमों के लिए प्रमाणकर्ता एजेन्सियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करें।

11. लोगो

प्रमाणीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रयुक्त लोगो को “India Organic” कहा जायेगा। यह सभी प्रमाणीकृत जैविक उत्पादों पर सील होगी जो यह जतायेगी कि वह उत्पाद मूल रूप से भारत में तैयार किया गया और उसका मूल स्थान भारत है।

12. लोगो का प्रयोग

सभी प्रत्यायित एजेन्सियों को यह अधिकार होगा कि वे प्रमाणित जैविक उत्पादों के लिए इस लोगो का प्रयोग कर सकें। इस लोगो का प्रयोग इन विनियमों के अन्तर्गत निर्धारित नियमों एवं शर्तों पर खरा उतरने के आधार पर होगा। किसी भी व्यक्ति द्वारा मार्केट किए गए उत्पादों पर राष्ट्रीय जैविक लोगो छपाया जा सकता है, बशर्ते कि किसी प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा इसका आवश्यक प्रमाणीकरण किया गया हो।

13. प्रत्यायन का निलम्बन/अवसान

इन विनियमों के अन्तर्गत किसी खण्ड अथवा समय-समय पर भारत सरकार अथवा प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा जारी निर्देशों का उल्लंघन करने की स्थिति में किसी एजेन्सी को दिया गया प्रत्यायन प्रमाणपत्र या तो विशिष्ट अवधि के लिए निलम्बित होने अथवा स्थाई तौर पर समाप्त होने के लिए बाध्य होगा।

प्रावधान है कि निलम्बन होने की स्थिति में, प्रत्यायन एजेन्सी के पास यह शक्तियाँ होंगी कि प्रचालक के हितों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से प्रमाणीकरण के कार्य को जारी रखने के लिए किसी अन्य प्रमाणीकरण एजेन्सी को मनोनीत कर सके।

14. अपील एवं अपीलों पर दिए गए निर्णय की पुनरीक्षा

- क) प्रत्यायन प्रमाणपत्र के निलम्बन और/अथवा अवसान के सम्बन्ध में की गई अपील सम्बन्धित प्रत्यायन एजेन्सी के चेयरमैन के पास रहेगी। प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा निलम्बन/अवसान की तिथि के 30 दिन के भीतर यह अपील दायर की जायेगी।
- ख) अपीलीय प्राधिकारी के निर्णय की पुनरीक्षा करने के लिए भारत सरकार का वाणिज्य मन्त्रालय समर्थ प्राधिकारी होगा। अपील पर दिए गए निर्णय की तिथि के 30 दिनों के भीतर पुनरीक्षा दायर की जायेगी। तथापि, उचित कारण बताए जाने पर अपील/पुनरीक्षा दायर करने की अवधि के बारे में सम्बन्धित प्राधिकारी द्वारा छूट प्रदान की जा सकती है।

15. विनियम में संशोधन

प्रत्यायन निकाय, राष्ट्रीय संचालन समिति की पूर्व स्वीकृति से, इन विनियमों में अन्तर्विष्ट खण्डों में कुछ जोड़ सकती हैं, निकाल सकती हैं, संशोधन अथवा परिवर्तन कर सकती हैं।

16. अधिकार क्षेत्र

इन विनियमों, दिशा-निर्देशों और अथवा शर्तों और समय-समय पर प्रत्यायन एजेन्सियों एवं भारत सरकार द्वारा जारी किए गए निर्देशों के कारण यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है तो केवल प्रत्यायन निकाय के प्रादेशिक अधिकार क्षेत्र में स्थित न्यायालय ही इनका निपटारा करने का अधिकार क्षेत्र रखते हैं।

17. प्रत्यायन के लिए श्रेणियाँ

उत्पादों की प्रत्येक श्रेणी के लिए प्रत्यायन निम्न रूप में दिया जायेगा :

- क) जैविक कृषि-सम्बन्धी उत्पादन
- ख) जैविक प्रसंस्करण प्रचालन
- ग) वन्य उत्पाद
- घ) वन प्रदेश
- ङ) जैविक पशु उत्पादन एवं प्रसंस्करण

प्रत्यायन के लिए आवेदन कर रही प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ, जैविक कृषि सम्बन्धी गतिविधियों/उत्पादन में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हो एवं उनके कार्यक्रम कम से कम एक वर्ष से चल रहे हों।

18. विनिमय

18.1 राष्ट्रीय

किसी भी प्रत्यायित प्रमाणकर्ता एजेन्सी द्वारा राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अनुसार जैविक के रूप में प्रमाणित उत्पादों को अन्य प्रमाणकर्ता एजेन्सियों द्वारा भी जैविक के रूप में मान्यता दी जाएगी।

18.2 अन्तर्राष्ट्रीय

आयातित जैविक उत्पादों के लिये, प्रत्यायन निकाय स्वीकृति देने के लिए प्राधिकारी होगा। उसका निर्णय निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों की सिफारिशों पर अथवा समतुल्यता अनुबन्ध होने की स्थिति में ऐसे अनुबन्ध पर आधारित लाइसेंस देने, पर आधारित होगा। यह ऐसी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों की एक सूची को अधिसूचित करेगी। निर्यातक देशों के जैविक मानकों के अंतर्गत प्रमाणीकृत जैविक उत्पादों का आयात के लिए पुनः प्रमाणित होना आवश्यक है। यदि कोई निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी किसी आयातित उत्पाद अथवा आयातित प्रमाणित अवयवों से बने उत्पादों को पुनः प्रमाणित करने की इच्छा रखती है तो उसे प्रमाणीकरण कार्यक्रम में ऐसे उत्पादों एवं उनके प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को शामिल करने के लिए प्रत्यायन निकाय को आवेदन करना होगा।

19. मानक

19.1 जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानक

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ, एफ टी डी आर अधिनियम के तहत अधिसूचित राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत जैविक उत्पादों के लिए राष्ट्रीय मानकों का अनुसरण करेंगी। तकनीकी समिति, समय-समय, पर इन मानकों की समीक्षा करेगी। आवश्यकता पड़ने पर परिशोधन एवं संशोधन किए जाएंगे। संशोधन राष्ट्रीय संचालन समिति को विचारार्थ प्रस्तावित किये जायेंगे। राष्ट्रीय समिति की स्वीकृति के बाद संशोधन राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत किये जायेंगे। प्रत्यायित निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेन्सियों को संशोधनों/परिशोधनों के प्रभावी होने से पहले तक तैयारी की (फेज-इन) अवधि दी जायेगी।

19.2 जैविक उत्पादन एवं प्रसंस्करण हेतु दिशा-निर्देश

सम्बन्धित विभाग (कृषि मंत्रालय और वस्तु बोर्ड), विनिर्दिष्ट फसलों के लिए जैविक उत्पादों हेतु बनाए गए राष्ट्रीय मानकों के अनुसार दिशा-निर्देश तैयार करेंगी एवं स्वीकृति हेतु उन्हें राष्ट्रीय संचालन समिति के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

19.3 पद्धतियों का पैकेज

कृषि मंत्रालय और वाणिज्य मंत्रालय, जैविक उत्पादों के लिए राष्ट्रीय मानकों के अनुसार विशिष्ट फसलों के लिये पद्धतियों का एक ऐसा पैकेज तैयार करेंगी जो क्षेत्र के लिए निर्दिष्ट होगा।

20 प्रमाणपत्रों को जारी करना

प्रत्यायित निरीक्षण प्रमाणीकरण एजेन्सी निरीक्षण की रिपोर्टों के आधार पर राष्ट्रीय जैविक मानकों के अनुपालन को प्रमाणित करने हेतु फार्म स्कोप प्रमाण-पत्र, उत्पाद प्रमाण-पत्र तथा कारोबार प्रमाणपत्र जारी करेंगी जो निरीक्षण रिपोर्ट पर आधारित राष्ट्रीय जैविक मानकों के अनुसार होंगी।

ख) प्रत्यायन मापदण्ड

इस दस्तावेज़ में परिभाषित मापदण्ड, जैविक उत्पादन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम संबंधी भारत सरकार की राष्ट्रीय संचालन समिति की अनुशंसाओं पर आधारित हैं। इन मापदण्डों एवं जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अन्तर्गत उन एजेन्सियों द्वारा पूरी की जाने वाली अर्हताएँ आ जाती हैं जो ISO गाईड 65 के अन्तर्गत अपने लिए एवं अपने द्वारा चालित जैविक कार्यक्रमों के लिए प्रत्यायन चाहती हैं। जैविक कार्यक्रमों हेतु प्रत्यायन मापदण्डों के अन्तर्गत प्रमाणीकरण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, निरीक्षण प्रक्रिया का विवरण, प्रमाणीकरण विधि और प्रमाणीकरण से सम्बन्धित शिकायतों का निपटारा इत्यादि भी आते हैं।

1. मापदण्डों को लागू करना

प्रत्यायित कार्यक्रमों को स्वीकृत करने के लिए इन मापदण्डों का अनुसरण करना होगा जो इन कार्यक्रमों के अनुसार जैविक कृषि, उत्पाद एवं

प्राक्रयाओं को प्रमाणित करते हैं। तथापि, प्रत्यायन एजेन्सी, प्रत्यायन के पश्चात् एक विनिर्दिष्ट समयावधि के भीतर कुछ मापदण्डों को पूरा करने संबंधी कुछ शर्तों को रखते हुए अस्थायी प्रत्यायन प्रदान कर सकती है। निम्न कारकों पर समय-सीमा निर्भर करेगी :

- मापदण्ड से विचलन की डिग्री
- प्रमाणीकरण कार्यक्रम के भीतर उपलब्ध संरक्षण, मापदण्डों का अनुसरण न करने संबंधी समस्याओं को शायद कम कर सकेगा।
- क्षेत्र में जैविक कृषि का आम विकास
- विनियामक ढांचा जिसके भीतर प्रमाणीकरण कार्यक्रम संचालित होता है।
- अन्य विशेष परिस्थितियाँ

ये शर्तें एवं समय सारणी, प्रत्यायन संविदा का हिस्सा होंगी।

यदि अनुसरण न करने की संख्या एवं डिग्री काफी अधिक है तो प्रत्यायन एजेन्सी या तो प्रत्यायन प्रमाणपत्र को अस्वीकार कर देगी अथवा प्रत्यायन को रोक लेगी, आवेदनकर्ता के कार्यक्रम द्वारा की गई कार्यवाही को लम्बित रखते हुए, मापदण्डों के साथ शिकायतों की ओर ध्यान दिया जायेगा।

यदि प्रत्यायन एजेन्सी यह निर्णय लेती है कि किसी कार्यक्रम की सभी नीतियों और निष्पादन के सन्दर्भ में, अनुसरण न किया जाना एक मापदण्ड विशेष के भीतर है एवं अधिक गम्भीर परिणाम नहीं दिखाएगा तो यह प्रत्यायन की शर्त रखे बिना उस मापदण्ड विशेष का अक्षरशः पालन करने की अनुशंसा कर सकती है। तथापि, पुनर्मूल्यांकन करने पर अथवा कार्यक्रम में परिवर्तन करते समय उस अनुशंसा को अत्यावश्यक शर्त में बदला जा सकता है।

2. प्रत्यायन मापदण्डों की समीक्षा

इच्छुक पक्षों अथवा अन्य स्रोतों से प्रत्यायन एजेन्सियों को किए गए प्रस्तावों के आधार पर प्रत्यायन मापदण्डों का समय-समय पर आवश्यकतानुसार समीक्षा भी की जा सकती है।

यदि प्रत्यायन कार्यक्रम को विकास अन्तराष्ट्रीय सौहाद्रीकरण क्रिया कलापों और अन्य तर्कसंगत कारकों के अनुसार प्रत्यायन मापदण्डों में परिवर्तन करना एक आवश्यकता लगे तो इसे करने का अधिकार वाणिज्य मंत्रालय के पास रहता है। प्रत्यायन मापदण्डों में संशोधन करने की प्रक्रिया में सभी आवेदनकर्ताओं, प्रत्यायित प्रमाणीकरण कार्यक्रमों, अन्य इच्छुक पक्षों एवं विनियामक प्राधिकारियों से परामर्श किया जा सकता है। मापदण्डों में परिवर्तन करने संबंधी अन्तिम निर्णायक प्राधिकारी वाणिज्य मंत्रालय ही होगा। सभी आवेदनकर्ताओं और प्रत्यायित प्रमाणीकरण कार्यक्रमों और एजेन्सियों को किसी भी प्रकार के परिवर्तनों को सूचित कर दिया जायेगा। संशोधित मापदण्डों का क्रियान्वयन अधिसूचना जारी करने के दिन से आरम्भ होगा। आवेदनकर्ता कार्यक्रमों, जिनका मूल्यांकन संशोधित मापदण्डों के क्रियान्वयन के आरम्भ होने की तिथि से पहले हो चुका होगा, उनके संबंध में पूर्व मापदण्डों के अनुसार मूल्य निर्धारण किया जायेगा।

3. सामान्य प्रत्यायन मापदण्ड

प्रत्यायित निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ निम्नलिखित के आधार पर संचालन करेंगी :

3.1 सामर्थ्य

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास पर्याप्त संसाधन, सुदृढ़ वित्तीय प्रबन्ध होगा और वे अपने अधिकारियों एवं कर्मचारी वर्ग को दिए गए पर्याप्त प्रशिक्षण एवं उनके अनुभवों पर आधारित व्यावसायिक सामर्थ्य दिखाएंगे।

3.2 स्वतन्त्रता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास ऐसे संघटन एवं पद्धतियाँ होंगी जिससे वे निहित स्वार्थों अथवा अन्य कारणों के गलत प्रवाह में न आकर स्वतन्त्र रूप से कार्य कर पाएंगे।

3.3 जवाबदेही एवं ज़िम्मेदारी

प्राधिकार का एक स्पष्ट अनुक्रम होगा जिसके प्रति एजेन्सी के अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग को जवाबदेह रहना होगा। एजेन्सी को अपने अधिकारियों एवं कर्मचारी वर्ग द्वारा किए जा रहे सभी क्रियाकलापों एवं/अथवा प्रणाली के भीतर किए जा रहे सभी कार्यों की ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

3.4 वस्तुपरकता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सी पक्षपातहीन होगी। जैसाकि राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम की धारा 4 के अन्दर दर्ज़ है, निरीक्षण एवं

प्रमाणीकरण, तर्कसंगत कारकों के वस्तुपरक मूल्य निर्धारण पर आधारित होगा। कार्यक्रम में अपील पर विचार करने सम्बन्धी पद्धति होगी।

3.5 विश्वसनीयता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह सुनिश्चित करने के लिए सभी पर्याप्त उपाय करेंगी कि इसके लाइसेंसों, प्रमाण पत्रों एवं अनुरूपता के चिन्हों का वुरूपयोग न हो।

3.6 गुणवत्ता सुधार एवं आन्तरिक समीक्षा

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ, लगातार गुणवत्ता सुधार एवं इसके विकास तथा कार्य-निष्पादन के मूल्यांकन के लिए समुचित पद्धतियों के लिए पर्याप्त व्यवस्था करेंगी। इसके पास शिकायतों से निबटने के लिए एवं प्रमाणीकरण प्रक्रिया से सम्बन्धित उपचारात्मक कार्यवाही करने संबंधी पद्धतियाँ होंगी।

3.7 सूचना तक पहुँच

उत्पादन मानक, संस्थागत ढाँचे, वित्तीय साधन, प्रमाणीकरण करने संबंधी नियम एवं पद्धतियाँ, कर्मचारीवर्ग के लिए प्रशिक्षण व्यवस्था, पद्धतिगत रिकार्ड, और अन्य इसी प्रकार की सूचना, जैसे उचित हो, प्रकाशित अथवा उपलब्ध कराई जाएगी। प्रमाणित उत्पादकों की एक सूची भी प्रकाशित की जायेगी।

3.8 गोपनीयता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों को समिति एवं संविदागत एजेन्सियों के साथ-साथ सभी संस्थागत स्तरों पर विनिर्दिष्ट चाल (प्रमाणीकरण क्रियाकलापों की प्रक्रिया में प्रमाणित) संबंधी सूचना की गोपनीयता को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त व्यवस्था करनी होगी।

3.9 सहभागिता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ, प्रभावित पक्षों से निवेश सशक्त करने के लिए पर्याप्त पद्धतियाँ उपलब्ध कराएंगी।

3.10 गैर-प्रभेदन

जिन नीतियों एवं पद्धतियों के अन्तर्गत निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ कार्य करती हैं वे तथा उनका प्रशासन गैर-प्रभेदकारी होगा और जाति, राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, धार्मिक सम्बन्ध, लिंग, उम्र अथवा वैवाहिक स्थिति संबंधी किसी उल्लेख के बिना संचालित होगा।

4. प्रत्यायन के लिए विनिर्दिष्ट मापदण्ड

प्रत्येक तर्कसंगत मापदण्ड के लिए, प्रमाणीकरण कार्यक्रम का मूल्यांकन नीतियों और पद्धतियों के न केवल सैद्धान्तिक विषय सूची अपितु उनके व्यवहार्य कार्यान्वयन का भी मूल्य निर्धारण करता है। इससे एक ऊँचे स्तर का सामर्थ्य, दृढ़ता एवं प्रभावीपन प्रदर्शित होगा। प्रमाणीकरण कार्यक्रम के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन संबंधी सामान्य अर्हताएँ ISO गाईड 61 पर आधारित होंगी।

यह पहचान की गई है कि आर्थिक रूप से कम समृद्ध क्षेत्रों में नए कार्यक्रमों अथवा पहले ही चल रहे कार्यक्रमों में सभी “औपचारिक” मापदण्डों को पूरा करने में कठिनाई आती है। सांस्कृतिक और सामाजिक स्थितियों एवं परम्पराओं के अनुसार उचित बनाने के लिए इनमें कुछ परिवर्तन करने पड़ सकते हैं। ऐसे मामलों में, प्रत्यायन एजेन्सी यह देखते हुए कि जैविक उत्पादन एवं प्रमाणीकरण की अखण्डता बनी रहती है और सामान्य मापदण्ड पूरे किए जा रहे हैं, प्रमाणीकरण के लिए ऐसे कारकों पर विचार कर सकती है।

5. निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के लिए सामान्य प्रावधान

5.1 पद्धतियों को लागू करना

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ अपनी पद्धतियों को व्यवहार्य रूप में लागू करने में एक ऊँचे स्तर की योग्यता, दृढ़ता एवं प्रभावीपन दिखाएंगी।

5.2 विनियमों का अक्षरशः पालन

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों को तर्कसंगत सरकारी एवं क्षेत्रीय विनियमों का अक्षरशः पालन करना चाहिए।

5.3 पंजीकरण

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ को अपने कानूनी एवं शासकीय स्थिति दर्शाने वाले दस्तावेज़ सदा प्रदर्शित करने होंगे।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ अपने पास ऐसे दस्तावेज़ रखेंगी जो इसके स्वामित्व अथवा यदि कोई प्रमाणीकरण चिन्ह है तो उसके नियन्त्रण को दर्शाए।

5.4 संरचना

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों को अपने संचालन के संघटन के दस्तावेज़ रखने होंगे, जो निष्पक्षता को बनाए रखें जिसमें निरीक्षण एवं

प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के संचालन की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए भी प्रावधान होंगे। यह संघटन उन सभी पक्षों की सहभागिता को सशक्त करेगा जो प्रमाणीकरण प्रणाली की अन्तर्लेखा एवं कार्यप्रणाली संबंधी नीतियों एवं सिद्धान्तों के विकास में महत्वपूर्ण रूप से संबंधित हैं।

जब क्रियाकलापों को समितियों को विकेन्द्रीकृत कर दिया जाता है तो ऐसी समितियों की जिम्मेदारियाँ एवं पद्धति सम्बन्धी नियम स्पष्ट होंगे। निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी के पास निरीक्षण, प्रमाणीकरण एवं अपीलों का स्पष्ट विभाजन होगा।

5.5 हितों के विवाद संबंधी विनियम

5.5.1 हित संबंधी घोषणाएँ

प्रमाणीकरण, निरीक्षण एवं अपीलों से सम्बद्ध सभी व्यक्तियों के हितों संबंधी घोषणा को लिखित रूप में निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यालय की फाईल में रखा जाएगा।

5.5.2 हस्ताक्षरित इकरारनामा

वे सभी व्यक्ति जो प्रमाणीकरण से सम्बद्ध हैं और प्रचालक के साथ उनके परिवार, व्यापार, व्यवसाय का कोई सम्बन्ध अथवा किसी प्रकार का परामर्शदाता सम्बन्धी कोई सम्पर्क है तो उन्हें निरीक्षण अथवा अन्य निर्णय-निर्धारण से दूर रहना होगा।

5.5.3 अपवर्जन (अलग करना)

वे सभी व्यक्ति जिनके निहित हित हैं अथवा उनके हितों में विवाद होने की सम्भावना है, तो इस प्रकार के विवाद की सम्भावना संबंधी प्रमाणीकरण प्रक्रिया के सभी चरणों में उन्हें कार्य, चर्चाओं, एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया से अलग रखना होगा।

5.5.4 शुल्क का भुगतान

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों को प्रचालक से प्रमाणीकरण शुल्क लेने का अधिकार होगा। तथापि, इस शुल्क का भुगतान करने से ही प्रचालक को वास्तविक रूप में प्रमाणपत्र पाने का अधिकार नहीं मिल जाएगा तथा प्रमाणपत्र प्रदान करना, इस शुल्क के भुगतान पर निर्भर नहीं करेगा। घरेलू तथा निर्यात संबंधी निरीक्षण और प्रमाणीकरण के सभी वित्तीय लेन-देन भारतीय मुद्रा में किये जायेंगे।

5.6 गोपनीयता

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों को अपने संघटन के हर स्तर पर प्रमाणीकरण क्रियाकलापों की प्रक्रिया में प्राप्त सूचना की गोपनीयता को सुनिश्चित करने हेतु पर्याप्त व्यवस्था करनी होगी, जिसमें एक गोपनीयता नीति की स्थापना एवं सभी कर्मचारी वर्ग द्वारा गोपनीयता इकरारनामे पर हस्ताक्षर करवाने की आवश्यकता भी शामिल होगी।

5.7 प्रमाणीकरण एजेन्सी के अन्य प्रकार्य

5.7.1 सामान्य

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ ऐसा कोई उत्पाद अथवा सेवा उपलब्ध नहीं करवाएंगी जिससे प्रमाणीकरण प्रक्रिया एवं निर्णय की गोपनीयता, वस्तुपरकता अथवा निष्पक्षता के साथ समझौता होता हो। ऐसा तब तक नहीं करेंगी जब तक इन्हें इस प्रकार से अलग न कर दिया जाए कि ऐसा कोई समझौता हो ही न सके। निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ यह सुनिश्चित करेंगी कि सम्बन्धित एजेन्सियों के क्रियाकलापों से इनके प्रमाणीकरण की गोपनीयता, वस्तुपरकता और निष्पक्षता प्रभावित न हो।

5.7.2 प्रचालकों को उपलब्ध कराई जा रही सलाहकार सेवाएँ

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्यायित निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेंसियाँ प्रचालकों को परामर्श सेवाएं उपलब्ध नहीं करायेंगी।

प्रमाणीकरण प्रक्रिया के एक भाग के रूप में जिन क्षेत्रों में कुछ कमियाँ हैं उनकी पहचान करने के लिए और उनमें सुधार लाने संबंधी प्रस्तावों के लिए उत्पादन का पूर्व-मूल्यांकन किया जा सकता है।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ, प्रमाणित प्रचालकों को जैविक मानकों के अनुरूप काम करने संबंधी सलाह दे सकती हैं और यह सूचना, बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के होगी।

न्यूज़लेटर्स, विचार-गोष्ठियों इत्यादि के माध्यम से सभी प्रमाणित प्रचालकों को गैर-प्रभेदी रूप में आम सूचना, प्रशिक्षण एवं सलाह दी जा सकती है।

5.7.3 मार्केटिंग क्रियाकलाप

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास व्यवसाय, संवर्द्धनकारी क्रिया-कलापों एवं अन्य मार्केट संबंधी क्रियाकलापों से उत्पन्न पूछताछ के फलस्वरूप प्राप्त निरूपण के संबंध में एक नीति होगी।

ऐसी नीति में कम से कम यह शामिल होगा :

- सभी प्रमाणित प्रचालकों के साथ समान संव्यवहार
- कि निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ वास्तविक बिक्री, उनके मूल्य निर्धारण एवं किसी प्रत्यक्ष व्यावसायिक क्रिया कलापों में संलग्न नहीं होंगी।
- कि निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ प्रवर्तकों की व्यक्तिगत ज़रूरतों पर आधारित व्यक्तिगत आवेदन नहीं मंगाएँगी।

5.8 अभिगमन की न्याय्यता एवं गैर-प्रभेदन

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ उन सभी आवेदनकर्ताओं को अपनी सेवाएं आसानी से उपलब्ध कराएँगी जिनके क्रियाकलाप आवेदन के घोषित क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

प्रमाणीकरण संबंधी अर्हताएँ, निरीक्षण एवं निर्णय, दिए जा रहे प्रमाणीकरण के स्कोप तक ही सीमित होंगे। सेवाओं संबंधी उपलब्धता, आपूर्तिकर्ता के आकार अथवा किसी संस्था अथवा समूह की सदस्यता पर प्रतिबन्धित नहीं होगी और न ही जारी किए जा रहे प्रमाण पत्रों की संख्या पर प्रमाणीकरण सप्रतिबन्ध होगा।

किसी विशेष समूहों के प्रचालकों अथवा सदस्यता के आधार पर शुल्क संबंधी ढांचे में कोई अनुचित भेद-भाव नहीं किया जाएगा।

व्यावसायिक आस्थाओं का ध्यान किए बिना, आवेदन सभी प्रचालकों के लिए खुला होगा।

5.9 सदस्यता संस्थाएँ

सदस्यता संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों की सदस्यता एवं प्रमाणीकरण के लिए समान अर्हताएं होंगी, अथवा निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों को सदस्यता संबंधी अर्हताओं के बिना एक स्पष्टतया अलग क्रियाकलाप के रूप में चलाया जायेगा।

5.10 सार्वजनिक सूचना

निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ अपने प्रमाणीकरण के स्कोप एवं मानकों की विषय सूची के बारे में जनता को सक्रिय रूप से सूचित करेंगी। निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास सार्वजनिक सूचना के लिए नीति का एक दस्तावेज़ होगा। इसमें कम से कम यह शामिल होगा :

- नीतियाँ, जिन के बारे में सूचना सार्वजनिक हैं और वे जिनके बारे में नहीं हैं।
- निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के मानक एवं एक सामान्य वर्णन, जनता को उपलब्ध कराया जायेगा।
- निरीक्षण एवं प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास प्रमाणित प्रचालकों की एक चालू सार्वजनिक सूची होगी जिसमें उनके नाम तथा पते (स्थापन) शामिल होंगे। उप-लाइसेंसधारी उत्पादन का भी एक सूचीकरण अवश्य उपलब्ध होना चाहिए हालांकि यह एक सामान्य सूची हो सकती है जिसका मुख्य लाइसेंस से कुछ सम्बन्ध नहीं है।
- अपने प्रमाणीकरण क्रियाकलापों के बारे में सार्वजनिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना, जो अधिमानतः वार्षिक रिपोर्ट की पुस्तक के रूप में होना चाहिए।

6 प्रबन्ध

6.1 सामान्य

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों के पास :

- प्रमाणीकरण व्यवस्था के संचालन के लिए आवश्यक वित्तीय स्थायित्व एवं संसाधन होंगे।
- वे पर्याप्त संख्या में कर्मचारी की नियुक्ति अथवा उन्हें संविदा पर रखेगी, जिसमें निरीक्षक भी शामिल होंगे, जिनके पास किए गए कार्य के प्रकार, कैलाव और मात्रा के सम्बन्ध में प्रमाणीकरण संबंधी प्रक्रियाओं को निष्पादित करने के लिए आवश्यक शिक्षा, प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी एवं अनुभव होगा।
- की गई पूछताछ, शिकायतों इत्यादि पर एक उचित समय-सीमा के भीतर प्रतिक्रिया करने के लिए संसाधन होंगे।
- अपने प्रशासन के विवरण का एक लिखित दस्तावेज़ होगा, जिसमें अधिकारियों एवं जिम्मेदारियों के बारे में भी लिखा होगा।

6.2 कर्मचारीगण

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों के पास अपने कर्मचारीगण को काम पर लगाने के लिए नियुक्ति अर्हताओं का लिखित दस्तावेज़ होगा जो

जैविक कृषि तथा/अथवा प्रसंस्करण संबंधी आवश्यक शिक्षा, प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी एवं अनुभव के बारे में होगा।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा सभी कर्मचारीगण की योग्यताओं ; प्रशिक्षण एवं अनुभव सम्बन्धी दस्तावेजीय सूचना रखनी होगी। कर्मचारीगण को उनके कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों सम्बन्धी स्पष्ट, अद्यतन लिखित हिदायतें उपलब्ध कराई जाएगी।

6.3 उपसंविदा

जब एक निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी प्रमाणीकरण (उदाहरण के तौर पर, निरीक्षण) से जुड़े कार्य को किसी बाह्य एजेंसी अथवा व्यक्ति को उप संविदा पर सौंपती है, तो एक अनुबंध तैयार किया जायेगा जिसमें गोपनीयता एवं हितों से जुड़े विवादों सम्बन्धी व्यवस्था की जायेगी और इस पर दोनों पक्षों के यथोचित होंगे।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी को ऐसे किसी भी अनुबंध को कार्यरूप देने से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि जिस एजेन्सी अथवा व्यक्ति के साथ उपसंविदा की जा रही है, वह सुयोग्य है एवं इन मापदण्डों के लागू होने योग्य प्रावधानों के अनुसार योग्यता रखता है।

उप संविदा पर दिए गए ऐसे कार्य के लिए निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगी।

6.4 अभिलेखों का प्रस्तुतीकरण एवं दस्तावेज नियन्त्रण

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों को प्रमाणीकरण प्रणाली से संबंधित अभिलेखों के प्रस्तुतीकरण के नियन्त्रण हेतु एक प्रणाली स्थापित करनी होगी एवं यह सुनिश्चित करना होगा कि :

- उचित अभिलेख की चालू प्रतियाँ आवश्यक स्थापनों पर उपलब्ध हों।
- प्राधिकृत व्यक्तियों के द्वारा दस्तावेज में किए परिवर्तनों को सही किया गया है।
- सभी परिवर्तनों को इस रूप में प्रसंस्कृत किया जाएगा जिससे प्रत्यक्ष एवं तुरन्त कार्यवाही सुनिश्चित होगी।
- उल्लंघित दस्तावेजों का प्रयोग पूरे संगठन एवं इसकी एजेन्सियों से समाप्त हो जाए।
- सभी प्रभावित पक्षों को परिवर्तनों के बारे में अधिसूचित कर दिया जाएगा।
- वास्तविक संशोधन किए जाने पर दस्तावेजों को पुनः जारी किया जाएगा।
- सम्बन्धित मुद्दों सहित पर्याप्त दस्तावेजों का एक रजिस्टर बना कर रखा जाएगा।

6.5 रिकॉर्ड्स

सभी रिकॉर्ड्स को 5 वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिए सम्भालकर रखा जाएगा, और सुरक्षित रखा जाएगा तथा प्रवर्तक के विश्वास में रखा जाएगा।

निरीक्षण रिपोर्ट्स, प्रमाणीकरण संबंधी निर्णयों, प्रमाणपत्रों एवं आवश्यक रिकॉर्ड्स पर प्राधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर होंगे। निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि :

- जो कर्मचारीगण किसी निरीक्षित क्षेत्र के लिए उत्तरदायी है उसे निरीक्षण के प्रमाण की सूचना दी जाएगी।
- सुधारात्मक कदम समय पर एवं उचित रूप में लिए जाएंगे।
- निरीक्षण के परिणामों का दस्तावेज बनाया जाएगा।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी का प्रबन्ध परिभाषित अवकाश पर प्रणाली की समीक्षा करेगा एवं ऐसी समीक्षाओं का रिकॉर्ड रखा जाएगा।

7. मानक

7.1 सामान्य

निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों को जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुसार चलना होगा। मानक इस प्रकार प्रस्तुत किए जाएंगे जो प्रचालकों की भाषा, क्षमता एवं जानकारी के अनुसार ढाले जाएंगे। निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सियों द्वारा सभी प्रमाणित उत्पादन प्रणालियों अथवा उत्पाद श्रेणियों के मानकों को प्रकाशित किया जाएगा।

7.2 मानक पुनरीक्षा

- मानकों की पुनरीक्षा नियमित तौर पर की जायेगी।
- इस पुनरीक्षा की जिम्मेवारी जैविक उत्पादन हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम संबंधी राष्ट्रीय संचालन समिति की होगी।
- मानकों के क्रियान्वयन की तिथि मानकों में इंगित की जायेगी।
- जहाँ पर भी आवश्यक हो, मानकों में बड़े परिवर्तन क्रियान्वित करने के लिए प्रचालकों एक समयावधि की अनुमति दी जायेगी।
- प्रचालकों द्वारा क्रियान्वयन करने की अन्तिम तिथि स्पष्ट रूप से बताई जायेगी।

8. निरीक्षण

8.1 सामान्य

निरीक्षक के पास प्रचालक के लेखा एवं अन्य अभिलेखों के प्रस्तुतीकरण समेत सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। निरीक्षण के लिए नीतियों एवं पद्धतियों को अभिलेखित किया जायेगा और इसमें शामिल होंगे :

- निरीक्षकों को काम सुपुर्द करने का आधार
- प्रचालकों द्वारा निरीक्षण के लिए आपत्ति करने के उचित कारण
- निरीक्षण संबंधी दौरों के लिए दिशा-निर्देश
- निरीक्षण विधियाँ एवं आवृत्ति
- निरीक्षण संबंधी अर्हताएं
- नमूना संबंधी अर्हताएं
- रिपोर्ट तैयार करने के लिए दिशा-निर्देश

8.2 काम सौंपना

निरीक्षक को, निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों द्वारा काम सौंपा जाएगा। निरीक्षक को काम सौंपने से पहले, निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण एजेन्सी :

- यह सुनिश्चित करेगी कि वास्तविक निरीक्षण के लिए जरूरी पर्याप्त विशेषज्ञता हो।
- किसी भी प्रकार के सम्भाव्य हित संबंधी विवाद को समाप्त करेगी। प्रचालकों के पास न तो निरीक्षकों का चयन करने का और न ही किसी की सिफारिश का अधिकार होगा।

प्रचालकों को यह अधिकार होगा कि निरीक्षण दौरे से पहले उन्हें निरीक्षक की पहचान संबंधी सूचना दी जाए और यदि किसी प्रकार का हित-विवाद सम्भावित है तो वे आपत्ति कर सकें। अचानक हुए निरीक्षणों पर यह लागू नहीं होता। एक ही प्रचालक के लिए एक ही निरीक्षक द्वारा लगातार निरीक्षण से बचना चाहिए।

8.3 निरीक्षण दौरा एवं रिपोर्ट

निरीक्षकों को समुचित तैयारी करने के लिए प्रचालकों के बारे में पर्याप्त सूचना उपलब्ध कराई जाएगी। जिसमें, अन्य बातों के अलावा, पूर्व के निरीक्षण निष्कर्ष, क्रियाकलापों/प्रक्रियाओं का विवरण, नक्शे/योजनाएं, उत्पाद संबंधी विनिर्दिष्टताएं, और प्रयुक्त निवेश, पूर्व की विसंगतियाँ, उत्पन्न, शर्तें और अनुशासनात्मक उपाए शामिल हैं।

दौरा और निरीक्षण के दौरान प्रयुक्त प्रश्नावली, और निरीक्षण से निकलने वाली रिपोर्ट व्यापक होंगी और उसमें उत्पादन मानकों के सभी प्रासंगिक पहलूओं को शामिल किया जाएगा तथा सूचना को पर्याप्त रूप से पुष्ट किया जाएगा।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों की पहुँच किसी भी गैर-जैविक उत्पादन एकक, अथवा स्वामित्व या प्रबन्ध से जुड़े हुए एकक तक होगी। निरीक्षण में, अभिलेख पुनरीक्षा समेत, ऐसे एकक शामिल होने चाहिए, जब ऐसा करने के लिए पर्याप्त कारण हो, जैसाकि एक ही प्रकार के उत्पादों का उत्पादन इत्यादि। निरीक्षण रिपोर्ट एवं निरीक्षण में, जहाँ तक सम्भव हो सके, गैर-प्रभेदक एवं वस्तुपरक निरीक्षण पद्धति को सुगम बनाने के लिए एक विनिर्दिष्ट प्रोटोकॉल का अनुसरण करना होगा।

रिपोर्ट्स इस प्रकार तैयार की जाएंगी जिससे निरीक्षक उन क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक कार्य और विश्लेषण कर पाए जहाँ शायद अनुपालन आंशिक हो या मानक, इत्यादि, स्पष्ट न हों। निरीक्षण रिपोर्ट्स में उसकी समुचित सूचना दी जाएगी जिनकी वास्तविक पड़ताल हुई, जिसमें निम्न शामिल तो हैं, पर उस तक सीमित नहीं है :

- निरीक्षण की तिथि एवं समय,
- व्यक्ति जिनका साक्षात्कार किया गया हो,
- फसलें/उत्पाद, जिनका प्रमाणीकरण के लिए आग्रह किया गया हो,
- क्षेत्र एवं सुविधाएँ जिन्हें देखा गया,
- पुनरीक्षित अभिलेख

इसके साथ रिपोर्ट में निम्न भी होगा :

- निरीक्षक की टिप्पणियाँ
- मानकों के अनुपालन का मूल्यांकन, और प्रमाणीकरण अर्हताएँ।

8.4 विधियाँ एवं आवृत्ति

निरीक्षण विधियाँ एवं आवृत्ति, अन्यो के साथ, निम्न द्वारा भी निर्धारित की जाएंगी :

- उत्पादन की आवृत्ति
- उत्पादन की किस्म
- संचालन का आकार
- पूर्व निरीक्षणों के परिणाम एवं प्रचालक का अनुपालन संबंधी रिकॉर्ड।
- कार्यक्रम द्वारा प्राप्त की गई कोई शिकायत।
- क्या एकक अथवा प्रचालक केवल प्रमाणित उत्पादन में जुटा है।
- दूषण एवं खिसकने का जोखिम।
- उत्पादन की जटिलता।

8.4.1 निरीक्षण की आवृत्ति

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों के पास निरीक्षण की आवृत्ति संबंधी लिखित नीति होगी और इसके साथ-साथ इसमें निम्न भी सम्मिलित होगा :

- लाईसेंसधारी प्रचालकों का निरीक्षण, वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य होगा।
- जिन प्रचालकों को उप संविदा दी गई है उनका निरीक्षण वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य होगा।
- उपरिलिखित 6.4 में उल्लिखित कारकों के संबंध में अधिक निरीक्षणों का प्रावधान होगा।
- अचानक किए जाने वाले निरीक्षणों की न्यूनतम संख्या (प्रतिशतता) के साथ उस आधार का भी निर्धारण किया जाएगा जिसपर उन प्रचालकों का चयन होगा जिनके निरीक्षण किए जाएंगे।
- वह तरीका जिसमें “अतिरिक्त” निरीक्षण का व्यय वहन करना होगा।
- निरीक्षणों का समय इतना नियमित नहीं होगा कि उसका अनुमान लगाया जा सके।

8.4.2. निरीक्षण विधियाँ

निरीक्षण में नियमित रूप से शामिल होंगे, किन्तु उस तक सीमित नहीं होंगे :

- सुविधाओं, क्षेत्रों, इत्यादि का दौरा।
- रिकॉर्ड्स एवं लेखों की पुनरीक्षा।
- निवेश/निर्गम सन्तुलन उत्पादन अनुमानों, इत्यादि की गणना।
- प्रचालक की उत्पादन प्रणाली का मूल्यांकन।
- जिम्मेदार व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार।

8.5 विश्लेषण एवं अवशेष परीक्षण

जैविक प्रमाणीकरण में परीक्षण एक प्रमुख साधन है बशर्ते यह उन योग्य संस्थाओं द्वारा किया जाए जो आई एस ओ 17025 के अनुसार प्रत्यायित हैं एवं उनके पास स्तरीय परीक्षण के लिए पर्याप्त सुविधाएँ हैं। प्रयोगशालाओं के मूल्यांकन के पश्चात् प्रत्यायन निकाय मिट्टी, जैविक उत्पादों और जैविक उर्वरकों आदि के अवशेष के परीक्षण के लिए प्रयोगशालाओं को प्राधिकृत करेगा। परीक्षण करने वाली प्रयोगशाला को पेस्टनाशी पदार्थों, भारी धातुओं और अन्य प्रतिबंधित पदार्थों के अवशेष परीक्षण के लिए प्रचालन नियमावली और पद्धतियाँ रखनी होंगी।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों के पास अवशेष परीक्षण, लक्षण परीक्षण एवं अन्य विश्लेषण पर अभिलेखित नीतियाँ एवं पद्धतियाँ होंगी।

इन नितियों में, इसके साथ-साथ निम्न भी अवश्य समाविष्ट होगा :

- ऐसे मामलों का संकेत जिसमें यदि कहीं ऐसे पदार्थ के प्रयोग की आशंका हो जो मानकों द्वारा प्रतिबन्धित है तो विश्लेषण के लिए नमूने लिए जाएंगे।
- किसी आकस्मिक नमूना लेने की आवश्यकता का संकेत।
- नमूना लेने की ज़रूरतों एवं विधियों के संबंध में निरीक्षकों को दिशा-निर्देश।
- नमूना लेने के बाद की पद्धतियाँ।
- नमूना लेने के भुगतान के लिए उत्तरदायित्व का संकेत।

8.6 आंशिक रूपान्तरण के लिए निरीक्षण पद्धति एवं समानान्तर उत्पादन

आंशिक रूपान्तरण एक वह चरण अथवा स्थिति है जब परम्परागत, रूपान्तरण और/अथवा जैविक उत्पादन या प्रसंस्करण एक ही एकक के होते हैं।

समानान्तर उत्पादन को एक ऐसे उत्पादन के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ एक ही एकक, समान उत्पादों का एक प्रमाणित जैविक स्तर और गैर-प्रमाणित जैविक स्तर में उसका उत्पादन, पालन, देख-रेख तथा प्रसंस्करण करता है। ऐसी स्थिति में जिसमें एक ही उत्पाद का “जैविक” उत्पादन एवं “रूपान्तरण” उत्पादन हो वह भी समानान्तर उत्पादन है।

8.6.1 उत्पादन एवं प्रसंस्करण में आंशिक रूपान्तरण के लिए प्रावधान

आंशिक रूपान्तरण होने की स्थिति में, निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियाँ विशेष निरीक्षण पद्धतियों का विकास करेंगी। आंशिक रूपान्तरण की स्थितियों में प्रमाणीकरण केवल तभी दिया जाएगा यदि ऐसे सुरक्षा उपाय होंगे जिससे उत्पाद मिश्रित अथवा दूषित न हो सकें।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियाँ सुनिश्चित करेंगी :

- कि अलग से सम्भालकर रखने के लिए पर्याप्त भण्डारण क्षमता उपलब्ध हो,
- कि उत्पादन के सम्बन्ध अभिलेखों का प्रस्तुतीकरण अच्छे से किया जाए एवं यह प्रमाणित एवं गैर प्रमाणित उत्पादन के मध्य एक स्पष्ट अन्तर करें,
- कि निरीक्षण को क्रान्तिक समय पर किया जाना चाहिए,
- कि निरीक्षण उचित समय के अनुकूल हो,
- कि सही उत्पादन अनुमान उपलब्ध हों।

8.6.2 समानान्तर उत्पादन के लिए प्रावधान

यदि कोई फार्म समानान्तर उत्पादन में संलग्न है तो आंशिक रूपान्तरण की मांग के अतिरिक्त, प्रमाणीकरण कार्यक्रम को आगे निम्न की आवश्यकता पड़ेगी :

- सीमांकन के लिए बफर-ज़ोन रखे जाते हैं।
- फसलें देखने से ही अन्तर करने योग्य हो अथवा
- फसलों को इस प्रकार काटा जाए कि सम्बन्धित फसलों (अर्थात् कटाई के मध्य निरीक्षण, कटाई के समय अतिरिक्त निरीक्षण) की वास्तविक कटाई के सत्यापन के लिए विश्वसनीय पद्धतियाँ हों।

प्रमाणीकरण कार्यक्रम प्रत्येक अलग-अलग स्थिति के लिए ऐसी प्रणाली को स्वीकृत करेगा।

यदि समानान्तर उत्पादन, पशुधन कृषिकर्म और मधुमक्खी पालन में अनुमत है तो प्रमाणीकरण कार्यक्रम को उस प्रकार के उत्पादन अभिलेखित पद्धतियों एवं निरीक्षण पद्धतियों का विकास अवश्य करना होगा।

8.7 आनुवांशिक रूप से निर्मित उत्पाद के प्रयोग के लिए निरीक्षण

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों को आनुवांशिक रूप से निर्मित उत्पादों के सम्भावित प्रयोग के लिए निरीक्षण प्रणाली का क्रियान्वयन करना होगा। जब ऐसे उत्पादों के प्रयोग की पहचान किसी चरण पर की जाती है, तो प्रमाणीकरण, नहीं दिया जाता।

निरीक्षण एवं प्रमाणीकर्ता एजेन्सियों को कम से कम वार्षिक रूप से एक रजिस्टर में, जिसमें आनुवांशिक रूप से निर्मित उत्पादों तथा गैर आनुवांशिक रूप से निर्मित उत्पादों, जो प्रमाणीकरण के क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक हो, के आम नाम एवं उत्पाद नाम की सूची हो और उसे प्रकाशित एवं सभी पंचालकों एवं निरीक्षकों को परिचालित करना होगा।

हम निम्न को उसमें शामिल करेंगे जो किए जा रहे प्रमाणीकरण के लिए उचित होगा :

- बीज एवं बोने वाला स्टॉक
- पशु पालन
- उत्पादन निवेश
- पशुधन निवेश

- प्रसंस्करण संबंधी सहायता
- अवयव

जब उचित हो, प्रचालकों के लिए यह आवश्यक होगा कि सभी आपूर्तिकर्ताओं से हस्ताक्षरित वर्णन लें कि आनुवांशिक रूप से निर्मित उत्पादों की आपूर्ति नहीं की गई है।

9. प्रमाणीकरण

9.1 जिम्मेदार निकाय एवं प्रमाणीकरण संबंधी निर्णय

नोट: प्रमाणीकरण संबंधी निर्णय प्रचालकों की आरम्भिक स्वीकृति तक सीमित नहीं हैं, किन्तु उत्पादों की स्वीकृति, उत्पादन में परिवर्तन, अनुशासनात्मक उपाय इत्यादि से भी सम्बन्धित हैं।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह सुनिश्चित करेंगी कि प्रमाणीकरण के संबंध में प्रत्येक निर्णय ऐसे व्यक्ति (यों) के द्वारा लिया जाये जोकि उन व्यक्तियों से भिन्न हों जिन्होंने निरीक्षण अथवा मूल्यांकन को संपादित किया हो।

प्रमाणीकरण निर्णयों हेतु उत्तरदायी एजेन्सी में किसी एकल हित का प्राधान्य होने के बजाय विभिन्न पणधारियों का वैविध्य परिलक्षित होना चाहिये।

प्रमाणीकरण निर्णयों को एक लघु समिति अथवा अधिकारियों को सौंपे जाने की स्थिति में, निरीक्षण तथा प्रत्यायन एजेन्सियाँ रिपोर्टिंग तथा समीक्षा प्रकाश्यों को निरूपित करेंगी जोकि प्रमाणीकरण हेतु उत्तरदायी एजेन्सी को ऐसे निर्णयों हेतु अंतिम नियंत्रण तथा उत्तरदायित्व को निष्पादित करने में सक्षम बनाते हैं।

9.1.1 अपवाद

यदि अपवादों को छूट प्रदान की जाती है, तो अपवादों को छूट प्रदान करने हेतु स्पष्ट मापदण्डों तथा पद्धतियों को विकसित करना होगा।

- अपवादों को समय की दृष्टि से स्पष्ट रूप से सीमित किया जायेगा।
- किसी भी अपवाद हेतु औचित्य को समुचित रूप से रिकॉर्ड किया जायेगा।

9.2 प्रमाणीकरण प्रक्रिया

प्रमाणीकरण नीतियों तथा पद्धतियों में, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित सम्मिलित होंगे :

- अंतिम प्रमाणीकरण होने तक, आवेदन पर की जानेवाली कार्यवाही के समस्त प्रक्रियात्मक चरण;
- कि प्रमाणीकरण प्रक्रिया के शुरू से लेकर अंत तक सभी प्रचालकों तथा उनके उत्पादन की प्रमाणीकरण अवस्थिति को इंगित किया जाये;
- प्रमाणीकरण के विस्तारण तथा अद्यतनीकरण करने हेतु पद्धतियाँ, जिसमें वैयक्तिक उत्पादों का प्रमाणीकरण भी सम्मिलित है; (निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ प्रचालक से उत्पादों में किये गये संशोधन, विनिर्माण प्रक्रिया, क्षेत्रफल के विस्तार आदि के रूप में उत्पादन में किसी भी प्रकार के परिवर्तनों के बारे में सूचित किये जाने की माँग करेंगी। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह निधारित करेंगी कि क्या घोषित किये गये परिणामों की और अधिक जाँच करने की आवश्यकता है अथवा नहीं। उस स्थिति में, प्रचालक को तब तक इस प्रकार के परिवर्तनों के परिणामस्वरूप उत्पन्न प्रमाणित उत्पादों को जारी करने की अनुमति नहीं दी जायेगी जब तक कि निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों ने प्रचालक को तदनुसार सूचित नहीं कर दिया हो)।
- कि प्रमाणीकरण निर्णयों को रिकॉर्ड किया जायेगा तथा स्पष्ट रूप से प्रचालक को सूचित किया जायेगा;
- कि, यदि प्रमाणीकरण अस्वीकृत कर दिया गया हो, तो उसके कारणों को स्पष्ट रूप से वर्णित किया जायेगा;
- कि कार्यक्रम को शर्तों तथा प्रतिबन्धों को अधिरोपित करने में सक्षम होना चाहिये। ऐसी शर्तों तथा प्रतिबंधों के अनुपालन की निगरानी हेतु तंत्रों को सही ढंग से काम करना चाहिये।
- कि अन्य प्रमाणीकरण कार्यक्रमों द्वारा पहले से प्रमाणित किये गये आवेदकों की स्वीकृति हेतु मापदण्डों को प्रलेखित किया जायेगा। अन्य प्रमाणीकरण कार्यक्रम से सम्बद्ध रिकॉर्डों को उपलब्ध कराने का अनुरोध अवश्य किया जाना चाहिये।
- कि, प्रचालक द्वारा माँग किये जाने पर, सम्बद्ध रिकॉर्डों को किसी अन्य प्रमाणीकरण कार्यक्रम को भेजा जाना चाहिये।
- कि निरीक्षण रिपोर्टें तथा प्रमाणीकरण निर्णयों पर एक सम्योचित तरीके से कार्यवाही की जानी चाहिये।
- कि उल्लंघनों से संबंधित किसी भी मुद्दे पर उच्चतम प्राथमिकता के साथ कार्यवाही की जानी चाहिये।

समस्त नीतियों तथा पद्धतियों को प्रलेखित किया जायेगा।

9.3 अपील

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास अपने निर्णयों विरुद्ध की गयी अपीलों पर विचारार्थ पद्धतियाँ मौजूद होंगी।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ

- सभी अपीलों का रिकॉर्ड रखेंगी

- उपयुक्त अनुवर्ती कार्यवाहियाँ करेंगी
- की गयी कार्यवाही को प्रलेखित करेंगी।

जिस निर्णय के विरुद्ध अपील की गयी हो, उसके लिये अन्तरदायी व्यक्तियों को अपील के बारे में अंतिम निर्णय लेने में अन्तर्ग्रस्त नहीं किया जायेगा।

9.4 प्रमाणीकरण रिकार्ड्स तथा रिपोर्ट्स

9.4.1 प्रचालक फाइलें

प्रचालक फाइलें अद्यतन होगी तथा उनमें इतिहास तथा उत्पाद विनिर्दिष्टताओं सहित समस्त प्रासंगिक सूचना अन्तर्विष्ट होगी। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास समस्त प्रमाणित उत्पादन यूनिटों के लिये प्रासंगिक डेटा उपलब्ध होगा, जिसमें उप-ठेकेदार तथा उत्पादक समूहों के सदस्य भी सम्मिलित होंगे।

निरीक्षण रिपोर्ट्स तथा लिखित प्रलेखन पर्याप्त रूप से व्यापक सूचना को उपलब्ध करायेंगे जिससे कि निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ सक्षम तथा तथ्यपरक निर्णयों को लेने में समर्थ हो सकें।

फाइलों में उस रीति को निरूपित किया जायेगा जिसमें प्रत्येक प्रमाणीकरण पद्धति को लागू किया गया था तथा इसमें निरीक्षण रिपोर्ट्स और अधिरोपित अनुशासनात्मक उपायों के परिणाम भी सम्मिलित होंगे।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ समस्त प्रमाणित उत्पादन यूनिटों तथा समस्त प्रमाणित संसाधित उत्पादों की नियमित रूप से अद्यतन की गयी सूचियों को तैयार करेंगी।

9.4.2 रिकार्ड्स

संबंधित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों द्वारा निम्नलिखित हेतु रिकार्ड्स को तैयार किया जायेगा :

- उल्लंघन
- पूर्वादाहरण
- अपवाद
- अनुशासनात्मक उपाय

नोट : सामान्यतया इसका अभिप्राय यह होगा कि इस प्रकार की सूचना उत्पादक की फाइल के साथ-साथ एक पृथक् रिकार्ड, दोनों ही जगहों पर उपलब्ध होगी, अथवा एक डाटाबेस प्रणाली में पंजीकृत प्रणाली में पंजीकृत होगी।

9.4.3 वार्षिक प्रमाणीकरण रिपोर्ट

एक वार्षिक प्रमाणीकरण रिपोर्ट का संबंध निम्नलिखित से होगा :

- सम्पादित किये गये निरीक्षणों की संख्या
- प्रमाणित प्रचालकों की, प्रासंगिक समूहों में विभाजित, संख्या
- उल्लंघनों तथा अनुशासनात्मक उपायों की आवृत्ति तथा प्रकार
- छूटों की आवृत्ति तथा प्रकार
- शिकायतों की आवृत्ति तथा प्रकार
- अपीलों की आवृत्ति तथा प्रकार
- चिन्ता के अन्य क्षेत्र

9.5 प्रणाली की सत्यनिष्ठा

प्रमाणीकरण प्रणाली ऐसे लिखित अनुबंधों पर आधारित होगी जिनमें किसी प्रमाणित उत्पाद के उत्पादन की श्रृंखला में अन्तर्ग्रस्त सभी पार्टियों की जिम्मेदारियों को स्पष्ट किया गया हो।

प्रमाणित प्रचालक संविदाओं, अनुबंधों अथवा शपथ पत्रों पर हस्ताक्षर करेंगे जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ वे निम्नलिखित के लिखित वचनबद्ध होंगे :

- प्रमाणीकरण हेतु उत्पादन मानकों तथा अन्य प्रकाशित आवश्यकताओं का पालन करना
- निरीक्षण को स्वीकार करना
- सही सूचना की आपूर्ति करना
- प्रमाणीकरण कार्यक्रम को परिवर्तनों के बारे में सूचित करना

कार्यक्रम प्रचालकों को प्रमाणीकरण प्रणाली को अपनी इच्छानुसार अपनाने अथवा त्याग देने की अनुमति प्रदान नहीं करेगा।

9.5.1 अनुशासनात्मक उपाय

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास अनुशासनात्मक उपायों (प्रतिबन्धों) की एक प्रलेखित श्रृंखला मौजूद होगी जिसमें मानकों के छोटे-मोटे उल्लंघनों से निपटने हेतु उपाय भी सम्मिलित हैं।

ऐसे उपायों को लागू करने हेतु एक स्पष्ट पद्धति को लागू किया जाना चाहिये।

लागू किये गये अनुशासनात्मक उपायों को प्रभावकारी होना चाहिये।

9.5.2 प्रमाणीकरण को वापिस लिया जाना

जैविक सत्यनिष्ठा को प्रभावित करने वाले किसी भी उल्लंघन का पता चलने पर, निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह सुनिश्चित करेंगी कि संबंधित उल्लंघन से प्रभावित हुए उत्पादन माल की सम्पूर्ण ढेरी से प्रमाणीकरण के संकेत को हटा दिया जाना चाहिये।

जब भी प्रचालक द्वारा कोई उल्लंघन किया जाता है, तो निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ एक विनिर्दिष्ट अवधि के लिये प्रचालक से प्रमाणीकरण को वापिस ले लेंगी।

9.6 चिह्न तथा प्रमाणपत्र

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ प्रमाणीकरण के चिह्न, प्रत्यायन संख्या, राष्ट्रीय जैविक लोगो अथवा उसके अन्य उल्लेखों से संबंधित दिशानिर्देशों को स्थापित करेंगी। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ अपने लाइसेन्सों, प्रमाणपत्रों और प्रमाणीकरण चिह्नों के प्रयोग पर समुचित नियंत्रण स्थापित करेंगी।

प्रमाणीकरण के गलत उल्लेखों अथवा लाइसेन्सों, प्रमाणपत्रों या चिह्नों का भ्रामक प्रयोग किये जाने की स्थिति में उपयुक्त सुधारात्मक कार्यवाहियाँ की जायेंगी। गैर-प्रमाणित प्रचालकों द्वारा इनका प्रयोग करने की स्थिति में भी इनको लागू किया जायेगा।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के पास संविदाओं, प्रमाणपत्रों तथा प्रमाणीकरण चिह्नों को वापिस लिये जाने और रद्द किये जाने हेतु प्रलेखित पद्धतियाँ मौजूद होंगी।

9.6.1 पंजीकरण का प्रमाणपत्र

पंजीकरण के प्रमाणपत्र में निम्नलिखित सम्मिलित होगा :

- प्रचालक का नाम एवं पता
- प्रमाणीकरण कार्यक्रम का नाम एवं पता और प्रत्यायन संख्या
- प्रयोज्य मानकों का उल्लेख
- उत्पाद या उत्पाद श्रेणियाँ
- जारी करने की तिथि
- वैधता

9.6.2 संव्यवहार प्रमाणपत्र

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ केवल उसी स्थिति में संव्यवहार प्रमाणपत्रों को जारी करेंगी जबकि क्रेता समस्त आवश्यक विवरणों को उपलब्ध करा देता है। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ प्रमाणपत्र जारी करने से पहले यह प्रमाणित करने हेतु युक्तिसंगत उपायों को लागू करेंगी कि उपलब्ध करायी गयी सूचना सही है। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ कपटपूर्ण प्रयोग की रोकथाम करने हेतु समुचित उपायों को लागू करेंगी जिनमें यह सुनिश्चित करना भी सम्मिलित है कि प्रमाणपत्रों में पर्याप्त सूचना अन्तर्विष्ट है।

जारी किये गये संव्यवहार प्रमाणपत्रों की प्रतियों की इस ढंग से भण्डारित किया जायेगा जिससे कि प्रत्येक प्रचालक के संबंध में सूचना की आसानी से पुनः प्राप्ति तथा निरीक्षण करना संभव हो।

9.6.3 उत्पाद प्रमाणपत्र

प्रचालक द्वारा अनुरोध करने पर प्रमाणकर्ता क्रेता को उत्पाद प्रमाणपत्र जारी करेगा, जिसकी लागत को प्रचालक अथवा क्रेता, दोनों में से किसी एक के द्वारा वहन किया जायेगा। उत्पाद प्रमाणपत्र में निम्नलिखित अन्तर्विष्ट होगा :

- विक्रेता का नाम एवं विवरण
- क्रेता का नाम एवं विवरण
- उत्पाद की डिलीवरी की तिथि
- प्रमाणपत्र जारी करने की तिथि
- उत्पाद, उसकी प्रमाणा, तथा जहाँ पर भी लागू हो, तो उसकी गुणवत्ता तथा मौसम का एक स्पष्ट संकेत
- उत्पादों को ढेरी संख्याएं तथा अन्य पहचान (चिह्न)
- बीजक पत्र अथवा लदान पत्र का उल्लेख
- प्रमाणीकरण कार्यक्रम तथा प्रयोज्य मानक का एक संकेत
- प्रमाणकर्ता को ओर से एक वक्तव्य कि उत्पाद को प्रयोज्य मानकों के अनुसार उत्पादित किया गया है।

जहाँ पर भी लागू हो, वहाँ उत्पाद प्रमाणपत्रों पर कच्ची सामग्रियों के मौलिक प्रमाणीकरण, तथा अन्य कार्यक्रम से किसी अन्य प्रमाणीकरण को इंगित किया जायेगा।

जारी किये गये प्रचालक संव्यवहार प्रमाणपत्रों की प्रतियों को इस ढंग से भण्डारित किया जायेगा कि प्रत्येक प्रचालक के संबंध में सूचना को आसानी से पुनःप्राप्त करना संभव हो।

10 लाइसेन्स शुदा प्रचालक

10.1 लाइसेन्स धारकों को सूचना

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह सुनिश्चित करेंगी कि आवेदन के समय प्रत्येक प्रमाणित लाइसेन्स शुदा प्रचालक के पास :

- जैविक उत्पादों हेतु प्रयोज्य राष्ट्रीय मानकों का एक वर्तमान रूपान्तर
- निरीक्षण, प्रमाणीकरण तथा अपीलों की पद्धति का उपयुक्त विवरण का मौजूद हो।

वर्तमान प्रचालकों हेतु

- अनुचित विलंब के बिना मानकों तथा प्रासंगिक पद्धतियों में परिवर्तनों की अधिसूचना
- चालू प्रमाणपत्र अथवा प्रमाणीकरण अवस्थिति का अन्य कोई लिखित प्रमाण।
- वैध सबिदाएँ/लाइसेन्स

प्रचालकों को अपने उत्पादन के प्रमाणीकरण से संबंधित निरीक्षण निष्कर्षों तथा अन्य प्रलेखन की प्रतियाँ प्राप्त करने का अधिकार है बशर्ते कि दस्तावेज गोपनीय नहीं हो, यथा दाखिल की गयी शिकायतें, निरीक्षण रिपोर्टों के गोपनीय अनुच्छेद।

10.2 लाइसेन्सधारक द्वारा तैयार किये गये रिकार्ड्स तथा प्रलेखन

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ यह मांग करेंगी, कि प्रत्येक लाइसेन्स धारक उत्पादन के प्रकार के अनुकूल रिकार्ड कीपिंग प्रणाली को तैयार करेगा जिससे निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ आवश्यक सूचना को पुनः प्राप्त करने तथा उत्पादन, भण्डारण, प्रसंस्करण, खरीद तथा बिक्री को सत्यापन करने में सक्षम हो पायेंगी।

11. हैण्डिलिंग के सभी चरणों का निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण

निम्नलिखित सम्पूर्ण उत्पादन शृंखला के निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पर लागू होगा, तथा यह स्पष्ट करता है कि विभिन्न विशेष मामलों हेतु क्या लागू होगा।

उत्पाद की हैण्डिलिंग के प्रत्येक चरण का वर्ष में कम से कम दो बार निरीक्षण किया जायेगा।

इसका अभिप्राय यह है कि न केवल किसानों का, बल्कि भण्डारण यूनिटों, प्रसंस्करण यूनिटों, पैकेजिंग, शिपमेंट आदि का भी निरीक्षण किया जायेगा। इसका कोई भी अपवाद एक प्रलेखित जोखिम मूल्यांकन पर आधारित होगा तथा उसे इन मापदण्डों में अभिनिर्धारित परिस्थितियों तक सीमित रखा जायेगा।

किसी उत्पाद को बेचने वाले (बीजकपत्र तैयार करने) वाले व्यक्ति को पंजीकृत तथा प्रमाणित किया जायेगा। सामान्यतया यह तब तक लागू रहता है जब तक कि उत्पाद को उसके अंतिम पैकेज में डाला जाये उस पर अंतिम लेबल लगा दिया जाये।

11.1 पैक किये गये उत्पाद

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ उन उत्पादों के निरीक्षण हेतु एक प्रणाली को तैयार करने हेतु बाध्य नहीं हैं जिनको अंतिम ग्राहक पैकेज में पैक किये जाने के पश्चात् हैण्डिल किया जाता हो, और/अथवा संव्यवहार प्रमाणपत्र को जारी करने के पश्चात् और आगे भी हैण्डिल किया जाता हो। तथापि, निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ उस स्थिति में कार्यवाही करने हेतु बाध्य हैं जबकि यह विश्वास करने का कोई कारण हो कि ऐसे पश्चवर्ती चरणों में मानकों का उल्लंघन किया जाता है अथवा किया जा सकता है। बन्दरगाहों में धूमोकरण ऐसी स्थितियों का उदाहरण हो सकते हैं।

11.2 भण्डारण कम्पनियाँ

भण्डारण के प्रकार, उत्पाद, पैकिंग, विद्यमान भण्डारण रीतियों (यथा धूमोकरण) तथा भण्डारण के समय पर निर्भर करते हुए, निरीक्षण करना जरूरी अथवा गैर जरूरी हो सकता है। निरीक्षण की भावी आवश्यकताओं के बारे में निर्णय करने हेतु प्रथम निरीक्षण करना जरूरी होगा।

11.3 परिवहन कम्पनियाँ

सामान्यतया परिवहनको इस प्रकार से प्रमाणित नहीं किया जाता है, परन्तु यह परिवहन के बिन्दु पर उत्पाद का स्वामित्वधारण करने वाली पार्टी की जिम्मेदारी के अधीन रहता है।

12. वन्य उत्पादों का निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण

ये मापदण्ड केवल ऐसी निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों पर लागू किये जाते हैं जोकि जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों में परिभाषित वन्य उत्पादन को प्रमाणित करती हैं। सभी प्रासंगिक मापदण्ड वन्य उत्पादन के निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पर लागू किये जाते हैं। संग्रहण कर्ताओं को सामान्यतया उन आवश्यकताओं के अध्यधीन नहीं किया जाता है जोकि एक उत्पादक समूह में किसी किसान के मामले में लागू की जाती हैं, परन्तु प्रणाली की सत्यनिष्ठा की पूरी गारंटी दी जानी चाहिये।

जिम्मेदार प्रचालक के साथ भी किसी अन्य प्रमाणित पार्टी के समान ही व्यवहार किया जायेगा। प्रचालक संग्रहणकर्ताओं को ऐसे निर्देश जारी करेगा जोकि कम से कम :

- संग्रहण के क्षेत्र को परिभाषित करता हो
- उनको मानकों तथा प्रमाणीकरण की अन्य आवश्यकताओं के बारे में सूचित करता हो।

संग्रहणकर्ता ऐसे वक्तव्यों पर हस्ताक्षर करेंगे कि उन्होंने निर्देशों का पालन किया है। प्रचालक के पास सभी संग्रहणकर्ताओं, तथा प्रत्येक संग्रहणकर्ता से खरीदी गई प्रमाणाओं के रिकॉर्ड मौजूद होंगे। उत्पादन के क्षेत्र को ऐसे उपयुक्त नक्शों में उचित ढंग से अभिनिर्धारित किया जायेगा, जोकि इतने विशाल तथा पर्याप्त रूप से भिन्न हो - जिससे कि गैर प्रमाणित उत्पादन के साथ मिल जाने के जोखिम को कम किया जा सके। किसी भी स्थानीय एजेंटों (दलालों) को प्रचालक द्वारा समुचित ढंग से ठेका दिया जाना चाहिये।

तथापि, निरीक्षण नित्यचर्चा में, प्रचालक तथा सुविधाओं के औपचारिक निरीक्षण दौरों के अतिरिक्त, निम्नलिखित भी सम्मिलित होगा :

- संग्रहणकर्ताओं के साथ साक्षात्कार।
- प्रमाणित क्षेत्र के किसी उपयुक्त अनुपात का दौरा।
- स्थानीय एजेंटों से भेंट तथा साक्षात्कार
- संग्रहण के क्षेत्र के बारे में प्रासंगिक सूचना प्रदान करने वाले भू-स्वामियों तथा पार्टियों (पर्यावरणीय एजेंसियाँ, NGO आदि) से साक्षात्कार।

13. इनपुट विनिर्माण का निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण

अनेक निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेंसियाँ विनिर्माता को लोगो का प्रयोग करने के अधिकारों अथवा किसी भी रूप में लाइसेन्स के जारी किये बिना ही इनपुट विनिर्माण के अनुमोदन की प्रणाली की अपनाती हैं।

13.1 अनुमोदन प्रणालियाँ

यदि निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेंसियाँ सूचियों को जारी करती हैं अथवा औपचारिक प्रमाणीकरण के बिना उत्पादों को किसी अन्य तरीके से अनुमोदित करती हैं, तो वे कम से कम निम्नलिखित उपायों को अवश्य प्रलेखित करेंगी :

- आवेदन पद्धति, जिसमें आवेदक द्वारा प्रस्तुत किये गये अनिवार्य दस्तावेज भी सम्मिलित हैं;
- उत्पाद द्वारा कार्यक्रम के मानकों के अनुपालनका मूल्यांकन करने हेतु अपनायी जाने वाली पद्धति;
- निर्णय कर्ता प्राधिकारी;
- वह अवधि जिसके लिये अनुमोदन प्रदान किया है तथा संरचना में परिवर्तनों अथवा अन्य प्रासंगिक कारकों की विनिर्माता द्वारा रिपोर्ट किये जाने की आवश्यकताएँ;
- अनुमोदन की प्रकृति तथा गारंटी का एक स्पष्ट विवरण।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेंसियाँ किसी प्रकार का मंजूरी भुगतान प्राप्त नहीं करेंगी। अनुमोदन प्रणालियों द्वारा स्वयं उत्पाद के बारे में अनुमोदन का कोई संकेत प्रदान नहीं किया जायेगा।

13.2 प्रमाणीकरण प्रणालियाँ

जब भी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी प्रमाणपत्रों को जारी करती है अथवा इनपुट उत्पादों पर अपने प्रमाणीकरण चिह्न को प्रयोग करने की अनुमति प्रदान करती है, तो उपरोक्त 11.1 में वर्णित उपायों के अतिरिक्त, कार्यक्रम निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पद्धतियों को प्रलेखित करेगा जिसमें उक्त धारा 7 तथा 8 के अंतर्गत वर्णित प्रासंगिक आवश्यकताएँ भी सम्मिलित होंगी। यह स्पष्ट रूप से निम्नलिखित को इंगित करेगा :

- निरीक्षण आवृत्ति जोकि वार्षिक से कम हो सकती है।
- उत्पाद की संरचना के अतिरिक्त अन्य आवश्यकताएँ, जिनको निरीक्षण के दौरान मूल्यांकित किया जायेगा तथा प्रमाणीकरण निर्णय को लेते समय (राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के मानकों के अंतर्गत स्वीकार्य इनपुट के अनुपालन का पता लगाने के लिए उपादानों का स्रोत, प्रदूषण/संदूषण जोखिम, आदि) मूल्यांकित किया जायेगा।

14. प्रमाणीकरण हस्तान्तरण

14.1 सामान्य प्रमाणीकरण हस्तान्तरण (अन्य प्रमाणीकरण कार्यक्रमों की स्वीकृति)

ऐसे हस्तांतरण हेतु एक आधार को विकसित करना प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेंसियों का काम होगा। प्रत्यायन एजेंसी, किसी आगामी तिथि को, यह माँग करने का अधिकार अपने पास सुरक्षित रखती है कि प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेंसियाँ केवल राष्ट्रीय जैविक कार्यक्रम के द्वारा निर्धारित किये गये समतुल्य मापदण्डों अथवा पद्धतियों के अनुसार एक प्रमाणीकरण अथवा कार्यक्रमों के अंतर्गत शामिल किये गये उत्पादों को ही ऐसा हस्तांतरण करने की अनुमति प्रदान करेंगी।

संक्षिप्त काल में प्रत्यायन एजेंसी निम्नलिखित मापदण्डों के अनुसार प्रमाणीकरण हस्तांतरण की पद्धतियों का मूल्यांकन करेगी :

ऐसी मान्यता को प्रदान करने हेतु पद्धतियों तथा जिम्मेदारी को स्पष्ट रूप से प्रलेखित किया जायेगा। मूल्यांकन तथा किसी कार्यक्रम को शामिल करने के निर्णय को यह दर्शाने हेतु प्रलेखित किया जायेगा कि तथ्यपरक मापदण्डों का प्रयोग किया गया था। मान्यताप्राप्त प्रमाणीकरण कार्यक्रमों का एक औपचारिक रजिस्टर होगा।

रजिस्टर में सम्मिलन निम्नलिखित में से कम से कम किसी एक के आधार पर किया जायेगा :

- स्वीकृति प्रदान करने वाले कार्यक्रम अथवा किसी तीसरी पार्टी में से किसी एक के द्वारा संचालित किया गया ताजा तथा समुचित मूल्यांकन तथा रिपोर्ट ।
- प्रत्यायन विवरण
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के समतुल्य मानी गयी किसी अन्य प्रत्यायन प्रणाली के लिये प्रत्यायन एजेन्सी के लिये संतोषजनक रूप से यह निरूपित करना जरूरी होगा कि उल्लिखित कार्यक्रम प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रत्यायित कार्यक्रम के समतुल्य है ।
- निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा मूल्यांकन की प्रक्रियाधीन अन्य कार्यक्रमों को स्वीकार कर सकती हैं । इस प्रकार को अनुमति को केवल एक सीमित समयावधि के लिये अनुमति प्रदान की जायेगी ।

पंजीकृत निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों का सम्पूर्ण प्रलेखन उपलब्ध होगा जिसमें मानक, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पद्धतियाँ और मूल्य-निर्धारण रिपोर्ट्स भी सम्मिलित होंगी ।

अन्य निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के साथ एक संविदा तैयार की जायेगी जो कि पार्टियों की बाध्यताओं को विनियमित करेगी । यह एक बहुपक्षीय अनुबंध भी हो सकता है । ऐसी किसी संविदा में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित प्रावधान भी अन्तर्विष्ट होंगे :

- पारस्परिक मान्यता का स्कोप (सभी उत्पादों हेतु प्रयोज्य)
- प्रधान कार्यक्रम अथवा मानकों में परिवर्तनों के बारे में एक दूसरे को सूचित करने की बाध्यता
- प्रमाणित उत्पादन (प्रमाणित प्रचालकों की सूचियों) के बारे में एक दूसरे को सूचित करने की बाध्यता
- क्षतिपूर्ति
- प्रत्यायन की हानि को मामले में विनियामक अनुमोदन तथा समान परिस्थितियों के बारे में अन्य पार्टी को सूचित करने की बाध्यता
- अन्य पार्टी के कार्य-निष्पादन की समीक्षा करने का अधिकार
- प्रासंगिक सूचना तक पहुँच का अधिकार
- गोपनीयता का विनियमन
- विवाद निपटान के प्रावधान

हस्तान्तरण का पंजीकरण सावधिक समीक्षाओं तथा अद्यतनों के अधीन रहेगा ।

रजिस्टर के अनुसार प्रचालन करने वाले प्रसंस्करण कर्ताओं, व्यापारियों अथवा अन्य लाइसेन्सधारकों को मान्यताप्राप्त कार्यक्रमों की अवस्थिति में किसी भी प्रकार के परिवर्तनों के बारे में तत्काल रूप से सूचित किया जायेगा ।

14.2 पुनः प्रमाणीकरण

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ ऐसे उत्पादों अथवा प्रक्रियाओं को पुनःप्रमाणित नहीं कर सकती हैं जिनको एक ऐसी निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के द्वारा प्रमाणित किया गया हो जो कि राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अधीन प्रत्यायित नहीं हो ।

14.3 प्रमाणीकरण “भागीदारिताएँ”

ऐसी स्थितियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं जिनमें निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ अन्य निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियों के साथ “संयुक्त उद्यम” अथवा “भागीदारिताएँ” विकसित कर लेती हैं । प्रत्यायन एजेन्सी ऐसे मामलों में किसी भावी तिथि को प्रत्यायन हेतु मापदण्डों को निर्धारित करने के अधिकार को अपने पास सुरक्षित रखती है । इसी बीच, ऐसी किसी भागीदारिता को विकसित करते समय निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ “सामान्य प्रमाणीकरण हस्तान्तरण”, “वैयक्तिक प्रमाणीकरण हस्तान्तरण” तथा “उप-ठेका देने” हेतु मापदण्डों के प्रासंगिक पहलुओं को ध्यान में रखेंगी ।

15. शिकायतें

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ अपने प्रचालन के विरुद्ध तथा प्रमाणित प्रचालकों के विरुद्ध शिकायतों से निबटने हेतु नीतियों तथा पद्धतियों को तैयार करेंगी ।

शिकायतों का एक त्वरित तथा प्रभावी तरीके के साथ निपटान किया जायेगा । निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सियाँ प्रमाणीकरण से संबंधित सभी शिकायतों तथा उपचारात्मक कार्यवाहियों का एक रिकॉर्ड तैयार करेंगी ।

किसी शिकायत का निपटान हो जाने पर एक प्रलेखित संकल्प को तैयार किया जायेगा तथा उसे शिकायतकर्ता तथा संबंधित पार्टी के पास भेजा जायेगा ।

ग. प्रत्यायन पद्धतियाँ

1. पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय प्रत्यायन कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- आइ एस ओ गाइड 65 के अनुसार अन्तरराष्ट्रीय मानदंडों पर आधारित प्रत्यायन के लिए अनुमोदित मापदण्डों के अनुसार जैविक कृषि तथा उत्पादों हेतु निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के मूल्यांकन के साधनों को उपलब्ध कराना
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को प्रत्यायित करना
- मिट्टी, इनपुट और जैविक उत्पादों के अवशेष परीक्षण के लिए प्रयोगशालाओं में मौजूद सुविधाओं के मूल्यांकन के साधन उपलब्ध कराना
- परीक्षण प्रयोगशालाओं को प्रत्यायित करना

2. स्कोप

2.1 निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ

जैविक उत्पादन तथा/अथवा प्रसंस्करण प्रचालकों के निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण में संलिप्त निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के लिये प्रत्यायन किया जायेगा।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के लिये जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों में विनिर्दिष्ट समस्त प्रयोज्य मानकों, संरचानाओं तथा प्रचालन पद्धतियों और राष्ट्रीय जैविक कार्यक्रम के अनुसार प्रत्यायन मापदण्डों का अनुपालन करना अनिवार्य होगा। निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के कार्यक्रमों के लिये निम्नलिखित अनिवार्य है :

- मूल्यांकन से पूर्व एक वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिये प्रचालन में रहना।
- संदर्भ हेतु समस्त आवश्यक दस्तावेजों को उपलब्ध करना।

निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के मूल्यांकन में निरीक्षकों के मूल्यांकन तथा चयन प्रक्रिया को भी शामिल किया जायेगा। प्रत्यायन मापदण्डों

के अनुसरण में, प्रमाणीकरण एजेन्सी को ऐसी सभी सेवाओं के लिये पूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होगा जिनको उसने ठेके पर तीसरी पार्टियों को सौंप दिया हो। प्रत्यायन संविदा प्रस्ताव रूप से निरीक्षण तथा प्रमाणकर्ता एजेन्सी के साथ की जायेगी।

राष्ट्रीय प्रत्यायन कार्यक्रम के स्कोप में प्रमाणीकरण कार्यक्रमों को प्रदान की जानी वाली सलाहकार सेवाओं को शामिल नहीं किया जाता है।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की प्रत्यायन अवस्थिति केवल उत्पादन, उत्पादों तथा प्रसंस्करण की उन श्रेणियों के निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पर लागू होगी जिनको कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल किया गया है।

3. हितों का टकराव

प्रमाणीकरण, निरीक्षण तथा अपीलों में अंतर्ग्रस्त सभी व्यक्तियों द्वारा हितों की उद्घोषणा को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यालय की फाइल में रखा जायेगा। वे ऐसे किसी भी मामले में निरीक्षण अथवा अन्य निर्णय-प्रक्रिया से स्वयं को अलग रखने के एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करेंगे जिसमें प्रचालक के साथ उनका कोई परिवारिक या व्यावसायिक संबंध, व्यापार अथवा परामर्शी संबंध हो।

निरीक्षकों द्वारा शोध्य परामर्शी कार्य को संचालित किये जाने की स्थिति में, ऐसे बहिष्करण का निरीक्षण से पहले दो वर्षों के लिये लागू रहना अनिवार्य है।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ इस नैतिक समझौते की भी माँग करेंगी कि जो निरीक्षक उसके नियोजन में नहीं हो, वे नौकरी छोड़ने के बाद दो वर्षों तक संबंधित परामर्शक सेवाएँ प्रदान करने काम नहीं करेंगे।

संभाव्य विवादग्रस्त अथवा निहित स्वार्थ से युक्त सभी व्यक्तियों को संभाव्य टकराव संबंधित प्रमाणीकरण प्रक्रिया के सभी चरणों में कार्य, चर्चा तथा निर्णयों से बाहर रखा जायेगा।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ प्रचालक से प्रमाणीकरण शुल्क पाने की हकदार होंगी। तथापि, प्रमाणीकरण निर्णय का निष्कर्ष अपने आप में शुल्क के भुगतान से स्वतंत्र होगा।

4. मानक

4.1 सामान्य

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों का अनुपालन करेंगी। मानकों को प्रचालकों की भाषा, क्षमता तथा ज्ञान के अनुकूल एक तरीके में प्रस्तुत किया जायेगा। भारत सरकार की प्रत्यायन एजेन्सियों द्वारा समस्त उत्पादन प्रणालियों अथवा उत्पाद श्रेणियों हेतु मानकों को प्रकाशित किया जायेगा।

4.2. मानकों की समीक्षा

- मानकों की नियमित रूप से समीक्षा की जायेगी।
- समीक्षा हेतु उत्तरदायी निकाय राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम की राष्ट्रीय संचालन समिति होगी।

- मानकों के क्रियान्वयन की तिथि को मानकों में इंगित किया जायेगा।
- जहाँ पर भी प्रासंगिक हो, तो प्रचालकों को मानकों में किये गये प्रमुख परिवर्तनों को क्रियान्वित करने हेतु एक समयावधि की अनुमति प्रदान की जायेगी।
- प्रचालकों द्वारा क्रियान्वयन हेतु अंतिम समय सीमाओं को स्पष्ट रूप से वर्णित किया जायेगा।

5. प्रत्यायन संविदा अवधि

प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रत्यायन निर्णय को लिये जाते समय प्रत्यायन संविदा के कार्यकाल को निर्धारित किया जायेगा।

6. प्रत्यायन अवस्थिति का उपयोग

समस्त प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को एक विशिष्ट प्रत्यायन संख्या आवंटित की जायेगी जिसको हस्तान्तरित अथवा पुनः आवंटित नहीं किया जा सकता है। प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ अपने सभी दस्तावेजों, रिपोर्टों तथा पत्र व्यवहार में आवंटित संख्या का प्रयोग करेंगी।

7. शुल्क

प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की प्रचालनात्मक तथा विकास लागत को वहन करने हेतु शुल्कों को निर्धारित किया गया है। निम्नलिखित श्रेणियों में शुल्कों को वसूल किया जाता है :

- आवेदन शुल्क
- निर्धारण शुल्क
- वार्षिक शुल्क
- मूल्यांकन दौरा लागतें (यात्रा तथा अन्य व्यय)
- प्रमाणपत्र (कारोबार प्रमाणपत्र, उत्पाद प्रमाण पत्र और स्कोप प्रमाण-पत्र) जारी करने का शुल्क, निरीक्षण और प्रमाणीकरण शुल्क इनके प्रत्यायन निकाय द्वारा स्वीकृत होने के बाद लागू होगा।

8. संशोधन

यदि प्रत्यायन कार्यक्रम के विकास, अंतर्राष्ट्रीय समन्वयकारी क्रियाकलापों तथा अन्य प्रासंगिक कारकों को दृष्टि से अनिवार्य समझा जाये तो वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार नीति प्रलेख में निर्धारित प्रत्यायन मापदण्डों, पद्धतियों तथा राष्ट्रीय मानकों में परिवर्तन करने के अधिकार को अपने पास सुरक्षित रखता है। सभी आवेदकों तथा प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को प्रत्येक संशोधन के बारे में सूचित किया जायेगा। संशोधित मापदण्डों, मानकों तथा पद्धतियों का क्रियान्वयन उनकी अधिसूचना की तिथि से प्रभावी होगा। जिन प्रत्यायित आवेदक कार्यक्रमों को संशोधित मापदण्डों मानकों पद्धतियों के क्रियान्वयन की तिथि से पहले मूल्यांकित किया जा चुका हो, उनका पूर्ववर्ती शर्तों के अनुसार ही निर्धारण किया जायेगा।

9. प्रत्यायन कार्यक्रम की समीक्षा

राष्ट्रीय जैविक कार्यक्रम तथा नीति के अनुसरण में प्रत्यायन कार्यक्रम साबधिक आंतरिक समीक्षा के अध्यधीन रहेगा। संबंधित पार्टियों द्वारा प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष प्रस्तुत किये गये प्रस्तावों के आधार पर जब भी आवश्यकता होगी, तब यह समीक्षा की जायेगी।

10. शिकायतें

- निरीक्षण तथा प्रभावीकरण एजेन्सियाँ अपने प्रचालन के विरुद्ध तथा प्रमाणित प्रचालकों के विरुद्ध प्राप्त शिकायतों का निपटान करने हेतु नीतियों और पद्धतियों को तैयार करेंगी।
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों संबंधित से शिकायतों को प्रत्यायन एजेन्सी के कार्यालय को संबोधित किया जायेगा।
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियाँ प्रमाणीकरण से संबंधित सभी शिकायतों तथा उपचारात्मक कार्यवाहियों के एक रिकॉर्ड को तैयार करेंगी।
- शिकायतों को एक त्वरित तथा प्रभावी ढंग से निबटारा जायेगा और शिकायतकर्ताओं को निर्णय के बारे में सूचित किया जायेगा।
- प्रत्यायन एजेन्सी के निर्णय के साथ असन्तुष्ट होने की स्थिति में, शिकायतकर्ता इस मामले को वाणिज्य मंत्रालय के सचिव के पास ले जा सकता है।

11. आवेदन, मूल्यांकन तथा प्रत्यायन पद्धतियाँ

11.1 निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों के प्रत्यायन हेतु पद्धति

प्रत्यायन पद्धति में निम्नलिखित चरण सम्मिलित होंगे :

- आवेदन की स्क्रीनिंग तथा प्रलेखन

- कार्यक्रम का मूल्यांकन तथा निर्धारण
- प्रत्यायन

11.2 आवेदन तथा स्क्रिनिंग पद्धतियाँ

1. प्रमाणीकरण कार्यक्रम चलाने वाली प्रत्याशी निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेंसियां विहित शुल्क के साथ सभी आवेदन-पत्र फार्म-1 में एपीडा को देंगी।
2. अनुरोध प्राप्त करने पर एपीडा प्रत्यायन कार्यक्रम के बारे में तथा आवेदक द्वारा पूरी की जाने वाली आवश्यकताओं के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करेगा।
3. आवेदनों के साथ 15,000 रु. का शुल्क भी देय है जो कि एपीडा के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट के रूप में हो। आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेज भी दिये जाएं:
 - संगठन का लिखित प्रमाण वित्तीय स्थिति (कुल कारोबार), वार्षिक रिपोर्ट तथा कर्मचारियों की संख्या उनके बायो-डाटा के साथ
 - प्रमाणीकरण समितियों, मानक समितियों, निरीक्षकों आदि का ब्यौरा।
 - प्रचालन नियमावली, गुणवत्ता नियमावली की एक प्रति
 - प्रस्तावित टैरिफ
 - किसी अन्य देश अथवा कार्यक्रम द्वारा प्रत्यायन का लिखित प्रमाण
 - आवेदनों पर इस प्रयोजनार्थ समुचित रूप से प्राधिकृत संगठन-प्रमुख, भागीदार, निदेशक, प्रबन्धन्यासी के हस्ताक्षर हों तथा साथ में यथा स्थिति लिखित प्रमाण/मुख्तारनामा/संकल्प की प्रति।
4. आवेदन की प्राथमिक जांच एपीडा द्वारा की जायेगी। आवेदक से अतिरिक्त जानकारी/दस्तावेज देने को कहा जा सकता है।
5. एपीडा जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों तथा कार्यक्रमों के जैविक प्रत्यायन हेतु मापदण्डों के अनुसार दस्तावेजों की जाँच करेगा तथा एक स्क्रिनिंग रिपोर्ट को तैयार करेगा। यदि आवेदन-पत्र नियमानुसार है तो उसे मूल्यांकन के प्रयोजनार्थ प्राधिकृत मूल्यांकन समिति को अग्रेसर किया जाएगा।

11.3 प्रत्यायन के लिए आवेदन-पत्र का मूल्यांकन तथा निर्धारण

1. प्रमाणीकरण कार्यक्रमों का विस्तृत मूल्यांकन एक मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाएगा जिसमें तीन सदस्य वस्तु बोर्डों से होंगे तथा कृषि मंत्रालय और ईआईसी/ईआईए का एक-एक प्रतिनिधि उसमें होगा। यदि आवश्यक हुआ तो बाहर का कोई विशेषज्ञ भी उससे सम्बद्ध किया जा सकता है। यह मूल्यांकन आवेदक के कार्यालय के प्रत्यक्ष मूल्यांकन द्वारा तथा व्यक्तिगत चर्चा, प्रोजेक्ट के दौरे आदि के माध्यम से किया जायेगा। सदस्यों का चयन निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर किया जाएगा:
 - उसे जैविक खेती, मानकों, राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम से संबंधित नीतियों तथा अन्य अन्तरराष्ट्रीय मानकों का ज्ञान होना चाहिए।
 - जिस एजेंसी का मूल्यांकन किया जाना है, उसके साथ मूल्यांकन कर्ता का कोई संबंध नहीं होना चाहिये, अथवा पिछले दो वर्षों के दौरान कोई संबंध नहीं रहा होना चाहिये।
 - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी का उसी समिति के द्वारा लगातार दो बार से अधिक बार मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।
2. मूल्यांकन समिति के दौरे की तारीख के बारे में आवेदक को पहले से सूचित कर दिया जाएगा, आवेदक को दौरे की पुष्टि करनी होगी।
3. यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी द्वारा लिखित रूप में समनुदेशित मूल्यांकन समिति की उपयुक्तता को चुनौती देने हेतु गंभीर आधारों को प्रस्तुत किया जाता है तो, प्रत्यायन निकाय मूल्यांकन का पुनःआवंटन कर सकता है। मूल्यांकन समिति के संबंध में किसी समझौते पर नहीं पहुँच पाने की स्थिति में, इस मामले को निर्णय हेतु प्रत्यायन निकाय के पास भेजा जायेगा।
4. मूल्यांकन कर्ता (ओं) को स्क्रिनिंग रिपोर्ट तथा अन्य आवश्यक दस्तावेजों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है तथा उनको उपलब्ध कराया जाता है।
5. मूल्यांकन दौरे के प्रारंभ में, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी के कार्यालय में आवेदक कार्यक्रम के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की जायेगी। प्रमाणीकरण कार्यालय की फाइलों का विस्तारपूर्वक निरीक्षण भी किया जायेगा।
6. मूल्यांकन समिति अन्य बातों के साथ-साथ, निम्नलिखित बिन्दुओं की जाँच करेगी:
 - समस्त वैध दस्तावेज सभी दृष्टियों से पूर्ण हैं या नहीं।

- निरीक्षण रिपोर्ट्स व्यापक हैं तथा उनमें प्रदत्त जानकारी के आधार पर उचित प्रमाणीकरण निर्णयों को लेना संभव बनाती हैं।
 - प्रमाणीकरण निर्णय निरीक्षण रिपोर्टों में रिकॉर्ड किये गये अनुपालन की डिग्री के साथ सुसंगत हैं।
 - प्रमाणीकरण कार्यक्रम द्वारा शर्तें अथवा प्रतिबंधों को अधिरोपित किये जाने की स्थिति में, यह कि उनके क्रियान्वयन को उपयुक्त रूप से निगरानी की गई है तथा उन्हें प्रलेखित किया गया है।
 - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय आधारभूत मानकों तथा प्रत्यायन कार्यक्रमों हेतु राष्ट्रीय मापदण्डों के अनुसरण में प्रचालन कर रही है। स्क्रीनिंग रिपोर्ट द्वारा रेखांकित किये गये अनुपालन नहीं किये जाने की संभावना के मुद्दों को प्रमाणित अथवा स्पष्ट किया जायेगा।
 - कि, पुनः-मूल्यांकनों के मामले में, प्रत्यायन की शर्तों के अनुपालन को वार्षिक रिपोर्टों में सही ढंग से रिकॉर्ड किया गया है।
7. मूल्यांकन समिति को प्रचालकों की फाइलों तक पहुँच प्रदान की जायेगी तथा निरीक्षण हेतु एक नमूने का चुनाव करने दिया जायेगा। कार्यक्रम प्रबंधक द्वारा निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए, नमूना संस्था प्रदान की जायेगी :
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यक्रम में प्रमाणित उत्पादकों की संख्या;
 - प्रमाणित प्रचालनों के प्रकारों की संख्या;
 - निरीक्षकों की संख्या;
8. मूल्यांकन समिति नमूने में अभिनिर्धारित प्रचालकों का दौरा करेगी तथा जाँच निरीक्षणों को संचालित करेगी। मूल्यांकन समिति को समस्त पूर्ववर्ती निरीक्षणों, यदि कोई हो तो, तक पहुँच उपलब्ध कराये जाने की आवश्यकता होगी।
9. मूल्यांकन समिति, अन्य बातों के साथ-साथ, यह जाँच करेगी कि:
- प्रचालक की पद्धतियाँ प्रमाणीकरण कार्यक्रम के मानकों का अनुसरण करती हैं;
 - निरीक्षण फाइलें उत्पादन प्रणाली को सही ढंग से रिकॉर्ड करती हैं;
 - निरीक्षण प्रणाली अनुपालन नहीं किये जाने की स्थिति को पहचान करने में सक्षम है, और कार्यक्रम की प्रचालनात्मक नियमावली में वर्णित एप्रोच के अनुसार उसको क्रियान्वित किया जाता है;
 - प्रचालक के पास निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के उपयुक्त दस्तावेज मौजूद हैं;
10. मूल्यांकन दौरे के अंत में, मूल्यांकन समिति निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यालय में बैठक के निष्कर्षों का सारांश प्रस्तुत करेगी।
11. मूल्यांकन समिति स्क्रीनिंग रिपोर्ट में निष्कर्षों को समाविष्ट करेगी। इस संयुक्त रिपोर्ट, जिसे मूल्यांकन रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है, में निम्नलिखित बिन्दु भी सम्मिलित होंगे :
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी का इतिहास तथा संरचना;
 - जिस क्षेत्र में यह प्रचालन करती है, उसमें व्यवसायिक क्रियाकलाप से उसकी स्वतंत्रता;
 - जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के साथ मानकों की तुलना तथा समीक्षा
 - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण कार्यक्रम, जिसमें प्रलेखन भी सम्मिलित है, में अन्तर्गस्त पद्धतियाँ;
 - मूल्यांकन दौरे के निष्कर्ष, जिनमें प्रचालक दौरे तथा अनुपालन नहीं किये जाने के कोई उदाहरण, जिन्हें देखा गया हो, भी सम्मिलित हैं;
 - सिफारिशों तथा निष्कर्षों के साथ दौरे के प्रमुख खोजों का सारांश।
12. जब रिपोर्ट पूर्ण हो जाती है, तो मूल्यांकन समिति उसे प्रत्यायन निकाय के पास भेजती है, जो मूल्यांकित कार्यक्रम के कार्यालय के पास रिपोर्ट की स्वीकृति हेतु एक प्रति को भेजता है। मूल्यांकित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को रिपोर्ट में अशुद्धियों की पहचान करने तथा व्याख्यात्मक टिप्पणियों को प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया जाता है। रिपोर्ट में इनको आवेदक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के टिप्पणियों के रूप में; और जब उपयुक्त हो, तो मूल्यांकन समिति की राय के साथ सम्मिलित किया जायेगा।
13. मूल्यांकन समिति मूल्यांकन रिपोर्ट की समीक्षा करता है तथा निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों तथा प्रत्यायन मापदण्डों के अनुपालन का निर्धारण करता है। मूल्यांकन दस्तावेज में इनको नोट कर लिया जाता है।
14. मूल्यांकन समिति विसंगतियों के सारांश को उपचारात्मक कार्यवाही की सिफारिशों के साथ संकलित करता है।
15. मूल्यांकन समिति मूल्यांकन दस्तावेज को विसंगतियों के सारांश के साथ प्रत्यायन निकाय के समक्ष प्रस्तुत करती है।

16. यदि मूल्यांकन समिति इस बात से संतुष्ट हो जाती है कि निरीक्षण और प्रमाणीकरण कार्यक्रम राष्ट्रीय मानक और प्रत्यायन मानदंडों के अनुरूप है तो वह प्रत्यायन के लिए प्रत्यायन निकाय को सिफारिश करेगी।

11.4 प्रत्यायन पद्धतियाँ

1. प्रत्यायन निकाय आवेदक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के प्रत्यायन के संबंध में निर्णय करने के लिये उत्तरदायी होती है।
2. यदि प्रत्यायन निकाय को इस बात की संतुष्टि हो जाये कि आवेदक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी आवश्यकताओं को पूरा करती है, तो उसे प्रत्यायन अवस्थिति प्रदान की जायेगी। प्रत्यायन निकाय प्रत्यायन अवस्थिति को इस शर्त के साथ भी प्रदान कर सकता है कि एक सम्मत समय सारणी के अनुसार सुधारात्मक कार्यवाही आरंभ की जायेगी। वैकल्पिक रूप से, प्रत्यायन निकाय उस समय तक प्रत्यायन अवस्थिति प्रदान करने को रोक सकती है जब तक कि सभी शर्तों को पूरा नहीं कर दिया जाये।
3. आवेदक को निर्णय के बारे में लिखित सूचना दी जाती है। यदि प्रत्यायन निकाय यह निर्णय करता है कि आवेदक कार्यक्रम प्रत्यायन हेतु आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है, तो निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को पुनः आवेदन हेतु अनिवार्य सुधारों के बारे में सूचित किया जायेगा।
4. आवेदक प्रत्यायन निकाय के समक्ष औपचारिक रूप से अपील किये बिना ही विशिष्ट शर्तों की समीक्षा किये जाने का अनुरोध कर सकता है। ऐसे अनुरोधों को प्रत्यायन एजेन्सी को सम्बोधित किया जायेगा तथा उसमें इस बारे में पर्याप्त कारणों को सम्मिलित किया जायेगा कि अधिरोपित शर्त को अनुपयुक्त अथवा अनौचित्यपूर्ण क्यों माना गया है। प्रत्यायन निकाय अपने अंतिम निर्णय पर पहुँचने से पहले अतिरिक्त सूचना की माँग कर सकता है।
5. प्रत्यायित अवस्थिति केवल जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अंतर्गत आने वाले उत्पादन तथा प्रसंस्करण की श्रेणियों के प्रमाणीकरण हेतु तथा स्वयं प्रमाणीकरण एजेन्सी के लिये प्रदान की जाती है।
6. आवेदक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा अधिरोपित शर्तों तथा अनुपालन हेतु एक समयसारणी के बारे में एक बार सहमत हो जाने के पश्चात्, आवेदक के पास प्रत्यायन संविदा को भेजा जाता है जिसको हस्ताक्षरित करके और वार्षिक शुल्क के साथ वापिस भेजा जाना होता है। संविदा निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को संविदा में वर्णित शर्तों के अध्यधीन अपनी प्रत्यायन अवस्थिति का प्रयोग करने का लाइसेंस प्रदान करती है।
7. एक बार संविदा पर हस्ताक्षर किये जाने के बाद, एपीडा प्रत्यायन का प्रमाणपत्र जारी करती है, जिसमें कम से कम निम्नलिखित विवरण अन्तर्विष्ट होते हैं :
 - प्रत्यायन संख्या
 - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी का नाम एवं पता
 - उसके अंतर्गत आने वाले क्रियाकलापों की प्रकृति;
 - जारी करने की तिथि तथा समाप्ति की तिथि;
 - प्रत्यायन एजेन्सी के हस्ताक्षर।
8. निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेन्सी के साथ संविदा पर एपीडा के किसी अधिकारी के हस्ताक्षर होंगे।

11.5 वार्षिक निगरानी तथा समीक्षा मूल्यांकन

1. प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष एक वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है। इस वार्षिक रिपोर्ट में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यक्रम में नवीनतम विकासों यथा प्रमाणित प्रचालकों की संख्या, प्रचालन का भौगोलिक क्षेत्र तथा कर्मचारियों में परिवर्तनों आदि के संबंध में एक अपडेट तथा एक अनुपालन रिपोर्ट अन्तर्विष्ट होनी चाहिये जिसमें अधिरोपित शर्तों के अनुपालन की सूचना दी जाती है जिसको लिखित प्रमाणों से समर्थित किया गया हो।
2. एपीडा वार्षिक रिपोर्ट की समीक्षा करता है तथा प्रत्यायन निकाय द्वारा निर्णय लिए जाने हेतु वार्षिक रिपोर्ट का एक सारांश तैयार करता है।
3. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी ने प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा अधिरोपित शर्तों का अनुपालन किया है अथवा नहीं, इस पर और निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के कार्यक्रम में आये परिवर्तनों के विस्तार तथा प्रकृति पर निर्भर करते हुए, प्रत्यायन निकाय निम्नलिखित कार्ययोजनाओं में से किसी एक को अपना सकती है :
 - यदि संविदा समाप्त हो गयी हो तो प्रत्यायन अवधि का पुनर्नवीकरण किया जाये;
 - सम्मत समय सारणी के अनुसार सुधारात्मक कार्यवाही करने की माँग करने वाली नवीन शर्तों को अधिरोपित करना ;
 - आगामी बारह महीनों की अथवा इससे कम अवधि के दौरान सम्पूर्ण पुनःमूल्यांकन के अध्यधीन प्रत्यायन अवधि को बढ़ाया जाना;
 - निम्नलिखित 3.3 में सूचीबद्ध प्रतिबन्धों में से किसी को भी अधिरोपित करना।

4. प्रत्यायन निकाय कम से कम वर्ष में एक बार नियमित समीक्षा मूल्यांकनों की माँग करती है।
5. समीक्षा मूल्यांकन हेतु पद्धतियाँ सामान्यतया प्रारंभिक मूल्यांकन की पद्धतियों के समान होती हैं।

12. शिकायतें

1. प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी की कार्यशैली के संबंध में शिकायतों को सबसे पहले तो प्रश्नाधीन निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी के पास भेजा जाना चाहिये। केवल उन मामलों में जिन में शिकायतकर्ता यह महसूस करता है कि प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी के द्वारा शिकायत का सन्तोषजनक रूप से निपटारा नहीं किया गया, तो शिकायत को एपीडा के पास ऐसे ढंग से भेजा जायेगा कि ऐसी शिकायत के स्रोत की गोपनीयता बनाई रखी जाए।
2. मूल्यांकन समिति शिकायत की जाँच करेगी। यदि मूल्यांकन समिति ऐसा महसूस करेगी कि शिकायत को पर्याप्त रूप से प्रमाणित किया गया है, तो वह संबंधित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी को सूचित करेगी तथा उनसे प्रत्युत्तर मांगेगी। तत्पश्चात् इस मामले को प्रत्यायन निकाय के पास शिकायत का समाधान तैयार करने हेतु भेजा जायेगा। शिकायतकर्ता को शिकायत के समाधान के बारे में सूचित किया जायेगा।
3. यदि शिकायत को उचित ठहराया जाता है, तो प्रत्यायन निकाय समुचित प्रतिबन्धों को अधिरोपित करेगा।

13. प्रतिबन्ध

प्रत्यायन संविदा का अनुपालन नहीं किये जाने अथवा शर्तों को पूरा करने में विफलता की स्थिति में, प्रत्यायन निकाय निम्नलिखित प्रतिबंधों में से किसी एक अथवा अधिक को लागू कर सकता है :

- चेतावनी पत्र अथवा फटकार पत्र जारी करें;
- अतिरिक्त शर्तों को अधिरोपित करें तथा एक विशेष समय अवधि के दौरान सुधार करने का आग्रह करें;
- केवल शर्तों का अनुपालन नहीं करने हेतु ही नहीं बल्कि विलंब करने अथवा एक दोषपूर्ण वार्षिक रिपोर्ट को प्रस्तुत करने के लिये भी, शास्ति अधिरोपित करें;
- निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी से एक निश्चित अवधि के भीतर पुनः मूल्यांकन निष्पादित करने की माँग करें;
- प्रत्यायन को निलंबित करें;
- प्रत्यायन को समाप्त करें।

14. प्रत्यायन की समाप्ति

1. यदि एजेंसी का कार्यनिष्पादन और व्यवहार प्रत्यायन मापदण्डों अथवा प्रत्यायन संविदा में निर्दिष्ट शर्तों के अनुसरण में नहीं हो, तो प्रत्यायन निकाय किसी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी की प्रत्यायन अवस्थिति को समाप्त कर सकता है।
2. अनुपालन नहीं किये जाने की अतिशयता के मामले में, प्रत्यायन निकाय भविष्य में सुधार करने की अनुमति प्रदान किये बिना ही संविदा को रद्द करने के अधिकार को अपने पास सुरक्षित रखता है। लाइसेन्स को वापिस लिये जाने के बाद, प्रत्यायन निकाय एक आंतरिक पत्र में उस निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी के नाम को प्रकाशित करेगा तथा एक सार्वजनिक वक्तव्य को भी जारी कर सकता है।
3. प्रत्यायन अवस्थिति को वापिस लिये जाने की शर्तों में, निम्नलिखित भी सम्मिलित हैं, परन्तु इन्हीं तक सीमित नहीं हैं :
 - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी हेतु प्रत्यायन मापदण्डों अथवा जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों का अनुपालन नहीं किया जाना;
 - सम्मत समयसारणी के भीतर अ-पालनों से संबंधित प्रत्यायन की शर्तों को पूरा करने में विफलता;
 - प्रत्यायन अवस्थिति का दुरुपयोग;
 - मूल्यांकन समिति के अनुरोध पर सूचना तक पूर्ण पहुँच प्रदान करने से इंकार अथवा व्यवधान उत्पन्न करना ;
 - शुल्कों तथा प्रभारों का समय पर भुगतान करना में विफलता;
 - अधिरोपित शर्तों का अनुपालन करने में विफलता।

15. अपील

1. आवेदक अथवा प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी के कार्यक्रम द्वारा प्रत्यायन निर्णयों के विरुद्ध अपील की जा सकती है। विवादित निर्णय के 60 दिनों के भीतर अपील दायर की जायेगी। अपीलों को प्रत्यायन एजेंसी के पास भेजा जाना चाहिये।
2. प्रत्यायन निकाय-अपील पर विचार करेगी तथा अंतिम निर्णय देगी।
3. यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी प्रत्यायन निकाय के अंतिम निर्णय को अस्वीकार्य मानती है, तो वह प्रत्यायन निकाय द्वारा दिये गये निर्णय के 30 दिनों के भीतर वाणिज्य मंत्रालय के सचिव के पास अपील कर सकती है।

अनुभाग-5

जैविक प्रमाणीकरण चिन्ह

5.1 जैविक लोगो

जैविक उत्पादन हेतु राष्ट्रीय मानकों (NSOP) के अनुपालन के आधार पर एक ट्रेडमार्क - "India Organic" प्रदान किया जायेगा। उत्पाद की विशुद्धता तथा उत्पत्ति को संप्रेषित करते हुए, इस ट्रेडमार्क का स्वामित्व भारत सरकार के पास रहेगा। केवल ऐसे निर्यातकों, विनिर्माताओं तथा प्रसंस्करणकर्ताओं को इस लोगो का उपयोग करने का लाइसेन्स प्रदान किया जायेगा जिनको प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसियों द्वारा विहित रूप से प्रमाणित किया गया होगा तथा इसको विनियमों के एक समूह द्वारा नियंत्रित किया जायेगा।



5.2 विनिर्दिष्टताएँ

"India Organic" लोगों में निम्नलिखित रूप से सूचीबद्ध रंग विनिर्दिष्टता का समावेश होना अनिवार्य है :-

C-70 M-10	C-70 M-20	C-10 M-0	C-10 M-80	C-55 M-15
Y-100 K-0	Y-100 K-10	Y-80 K-15	Y-80 K-0	Y-0 K-0

5.3 जैविक लोगो की संकल्पना

शक्ति तथा ऊर्जा की नीली तथा भूरी लहरों के माध्यम से निरूपित अंतरिक्षी और पृथ्वी शक्तियों की लय को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करते हुए, "India Organic" लोगो प्रकृति के सत्त्व का उत्सव मनाता है। ये सभी शक्तियां लयबद्ध रूप से पृथ्वी के पर्यावरण पर काम करती हैं तथा हरित वनस्पति वृद्धि के द्वारा इस लय को प्रबलित तथा समर्थित किया जाता है। लोगो संकल्पना में प्रयुक्त रंगों का एक विशेष महत्व है। नीले रंग में अंतरिक्षी शक्ति विश्वव्यापी शुद्धता को निरूपित करती है। जैविक कृषि में प्राकृतिक अवयवों द्वारा पोषित, मृदा की संपन्नता को सुनहले भूरे रंग की पृथ्वी शक्तियों के द्वारा निरूपित किया गया है। हरे रंग का पौधा प्रकृति के रंगों तथा रसायनों के स्पर्श से स्वतंत्र प्राकृतिक उत्पादों का प्रयोग करता है। नीली पृष्ठभूमि पृथ्वी के पर्यावरण को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करती है जोकि जीवन के विकास हेतु अनुकूल है तथा प्रदूषण और हानि कारक रसायनों से भी स्वतंत्र है। सतह के ऊपर उकेरा गया India Organic संवाहक को "जैविक" के रूप में स्थापित करता है तथा चिन्ह के सभी संवाहकों के संदर्भ में भारतीय संपर्क-सूत्र को भी स्थापित करता है। हमारे पर्यावरण के सभी तत्वों को बड़ी सुन्दरता के साथ संश्लेषित करते हुए यह लोगो राष्ट्रीय जैविक मानकों के संपूर्ण अनुपालन को भी सम्प्रेषित करता है।

5.4 जैविक उत्पादों हेतु प्रमाणीकरण चिन्ह के प्रयोग करने का लाइसेंस प्रदान करने हेतु विनियम

मार्च, 2000 के जैविक उत्पादों हेतु मानकों तथा उनमें भविष्य में किये जाने वाले संशोधनों तथा वृद्धियों के अनुसरण में, जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुसार उत्पादित, संसाधित, पैक तथा लेबल किये गये प्रमाणित उत्पादों के ऊपर ही प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने के लिये लाइसेंस प्रदान करने हेतु निम्नलिखित विनियमों, जिनमें किये गये संशोधन तथा वृद्धियाँ भी सम्मिलित हैं, को लागू किया जायेगा।

1. संक्षिप्त शीर्षक तथा आरंभ - (1) इन विनियमों को जैविक उत्पाद प्रमाणीकरण चिन्ह विनियम, 2002 कहा जा सकता है।
2. इनको राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम हेतु वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा गठित संचालन समिति द्वारा स्वीकार किये जाने की तिथि से लागू किया जायेगा।

(1) परिभाषाएं : इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ की आवश्यकता इससे भिन्न नहीं है :

- क) प्रत्यायन एजेन्सी का अभिप्राय भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत गठित राष्ट्रीय संचालन समिति द्वारा नियुक्त की गई किसी एक एजेन्सी अथवा एजेन्सियों से होगा।
- ख) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी का अभिप्राय प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा उसके भीतर परिभाषित क्रियाकलापों को निष्पादित करने हेतु प्रत्यायित एजेन्सी से होगा।
- ग) प्रमाणीकरण चिन्ह का तात्पर्य "India Organic" लोगो से है।
- घ) आवेदक का अभिप्राय एक ऐसे उत्पादक, प्रसंस्करणकर्ता, निर्यातक और आयातक से है जिसने प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने के लिये लाइसेंस प्रदान किये जाने हेतु निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के पास आवेदन किया हो तथा जिसमें एक आयातक भी शामिल है।
- ङ) लाइसेंस धारक का अभिप्राय एक ऐसे आवेदक से होगा जिसको प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने हेतु लाइसेंस प्रदान कर दिया गया हो।
- च) जैविक उत्पादों हेतु मानकों का अभिप्राय जैविक उत्पादों हेतु मानकों को अन्तर्विष्ट करने वाले राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम से होगा।
- छ) फार्म का अभिप्राय इन विनियमों के साथ संलग्न किये गये एक फार्म से होगा।
- ज) विनियमों में प्रयुक्त अन्य सभी ऐसे शब्दों तथा अभिव्यक्तियों, जिनको उसमें परिभाषित नहीं किया हो, का अंग्रेजी भाषा में निर्दिष्ट सामान्य अर्थ माना जायेगा।

3. लाइसेंस हेतु आवेदन करने का तरीका

- (1) लाइसेंस प्रदान किये जाने हेतु प्रत्येक आवेदन को फॉर्म में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।
- (2) लाइसेंस हेतु प्रत्येक आवेदन के साथ एक विवरणिका प्रस्तुत की जायेगी जिसमें निरीक्षण तथा परीक्षण हेतु ऐसी किसी भी योजना का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायेगा, जोकि आवेदक के द्वारा तैयार की गयी है अथवा प्रयुक्त की जाती है या तैयार करने का अथवा प्रयुक्त करने का प्रस्ताव है और जिसको उस उत्पाद अथवा प्रक्रिया के उत्पादन अथवा विनिर्माण की अवधि के दौरान उसकी गुणवत्ता को नियंत्रित करने हेतु निर्दिष्ट किया गया है जिसके लिये लाइसेंस पाने हेतु आवेदन किया गया है।
- (3) प्रत्येक आवेदन पत्र पर एक व्यक्ति के मामले में, आवेदन के द्वारा अथवा, एक फर्म के मामले में, आवेदक के द्वारा अथवा, एक के मामले में फर्म के स्वामी, भागीदार अथवा प्रबंध निदेशक या फर्म की ओर से किसी भी उद्घोषणा पर हस्ताक्षर करने हेतु प्राधिकृत किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा हस्ताक्षर किये जायेगा। आवेदन पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति के नाम तथा पदनाम को आवेदनपत्र में इस प्रयोजन हेतु अलग से निर्दिष्ट स्थान में साफ तौर से पढ़े जा सकने के रूप में रिकार्ड किया जायेगा।
- (4) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा लाइसेंस हेतु प्रत्येक आवेदन को प्राप्त करने पर, उसे प्राप्ति की वरीयता के क्रम में संख्यांकित किया जायेगा तथा उसकी प्राप्ति की सूचना भेजी जायेगी।

- (5) पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी किसी आवेदन से, अपने आवेदक में उसके द्वारा दिये गये किसी भी विवरण के समर्थन में अथवा उसको प्रमाणित करने हेतु किसी संपूरक सूचना अथवा लिखित प्रमाणपत्र की, ऐसी अवधि के भीतर जिसे कि प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा निर्देशित किया गया हो, की मांग कर सकती है, और ऐसे निर्देश का अनुपालन नहीं किये जाने की स्थिति में उस आवेदन को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा सरसरी तौर पर अस्वीकृत किया जा सकता है।
6. लाइसेन्स हेतु कोई आवेदन प्राप्त होने पर तथा लाइसेन्स प्रदान किये जाने से पूर्व, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी -
- क) इस बारे में प्रमाण प्रस्तुत किये जाने की मांग कर सकती है कि जिस उत्पाद अथवा प्रक्रिया के संदर्भ में लाइसेन्स हेतु आवेदन किया गया है, वह पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा तैयार किये गये संबंध निर्देशों तथा विनिर्दिष्टताओं का अनुपालन करती है,
- ख) इस बारे में प्रमाण प्रस्तुत करने की मांग कर सकती है कि आवेदक हट्टीन निरीक्षण तथा परीक्षण की एक योजना को चला रहा है, जोकि पर्याप्त रूप से यह सुनिश्चित करेगी कि सभी चिन्हित उत्पाद अथवा प्रक्रिया जैविक उत्पादों हेतु मानकों में विनिर्दिष्ट निर्देशों तथा विनिर्दिष्टताओं का अनुपालन करेगी,
- ग) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निरीक्षक को आवेदक के फार्मों, प्रसंस्करण यूनिटों, कार्यालय, कार्यशाला, परीक्षण प्रयोगशालाओं अथवा गोदामों और अन्य किसी भी इमारत का निरीक्षण करने तथा खण्ड (क) अथवा खण्ड (ख) या दोनों के अधीन आवेदक द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमाण को सत्यापित करने के प्रयोजन हेतु नमूने अथवा नमूनों को एकत्रित और उनका परीक्षण करने हेतु सभी युक्ति संगत सुविधाओं को उपलब्ध कराने की मांग कर सकती हैं,
- घ) खण्ड (क) के प्रयोजन हेतु, आवेदक को ऐसे परीक्षण प्राधिकारी के पास नमूनों को भेजने का निर्देश दे सकती हैं जिसे निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा उपयुक्त समझा जाये। परीक्षण हेतु व्ययों को आवेदक के द्वारा वहन किया जायेगा, तथा
- इ) खण्ड (ग) अथवा खण्ड (घ) या दोनों के अंतर्गत प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी, जैसा उचित समझें, आवेदक से उसके द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली विनिर्माण अथवा उत्पादन की प्रक्रिया में परिवर्तन, या वृद्धियाँ करने की मांग कर सकती है।

4. लाइसेन्स प्रदान किया जाना

- (1) यदि प्रारंभिक जाँच-पड़ताल के पश्चात्, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को इस बात की सन्तुष्टि हो जाती है कि आवेदक अथवा लाइसेन्स धारी लाइसेन्स को जारी करने से सम्बद्ध आवश्यक कौशल, संसाधनों, उत्पादन, प्रसंस्करण, विगत कार्य निष्पादन तथा पूर्वचरित की दृष्टि से प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने हेतु उपयुक्त है, तो निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी फार्म 12 में किसी उत्पादन, विनिर्माण अथवा कार्य में नियोजित प्रक्रिया के संबंध में आवेदक अथवा लाइसेन्सधारी के द्वारा निर्मित उत्पाद अथवा उत्पादों की श्रेणी के संदर्भ में प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने हेतु प्राधिकृत करते हुए एक लाइसेन्स प्रदान करेगी, जोकि इन विनियमों में विनिर्दिष्ट ऐसे नियमों तथा शर्तों के अध्याधीन रहेगा। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी आवेदक को लाइसेन्स प्रदान किये जाने के बारे में सूचित करेगी।
- (1 क) आवेदक को प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त होगा तथा वह अपने द्वारा उसके प्रयोग को ऐसे पदार्थों अथवा सेवाओं तक सीमित रखेगा जो कि उत्पादों के मापदण्डों तथा मानक विनिर्दिष्टताओं को पूरा करते हों। प्रमाणीकरण चिन्ह को उत्पादों पर लगाया जा सकता है तथा/अथवा पैकिजिंग अथवा प्रचार सामग्री या विज्ञापन कार्यकलापों के संदर्भ में प्रयोग किया जा सकता है।
- (1 ख) उपरोक्त चिन्ह के प्रयोग के अधिकार को वापिस लिये जाने की स्थिति में, प्रमाणपत्र अथवा लाइसेन्स को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को वापिस लौटाया जायेगा। प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने का अधिकार उसी समय समाप्त हो जाता है और इससे पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी और/या निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के विरुद्ध कोई क्षतिपूर्ति दावा उत्पन्न नहीं होगा।
- (1 ग) आवेदक को उपरोक्त चिन्ह का प्रयोग करने का अधिकार तो होगा परन्तु वह अपने उत्पादों की सुरक्षा हेतु स्वयं उत्तरदायी होगा। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा माँगे जाने पर, वह उनके संदर्भ में पर्याप्त उत्पाद उत्तरदेयता बीमा धारण करने का प्रमाण प्रस्तुत करेगा। तथापि, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अथवा पदनामित प्रत्यायित एजेन्सी द्वारा कोई जिम्मेदारी स्वीकार्य नहीं होगी।
- (1 घ) यदि किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लाइसेन्स पाने का आवेदन किया गया हो, जिसके लाइसेन्स को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा गलत जानकारी प्रस्तुत करने अथवा जनता को गुमराह करने के लिये किसी दूसरे उत्पाद के संबंध में मानक अथवा प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने की वजह से रद्द किया गया हो, तो वह इस प्रकार रद्द किये जाने की तिथि से लेकर छह महीनों की एक अवधि के भीतर आवेदन करने का अधिकारी नहीं होगा। प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा अपात्रता की अवधि को निर्धारित किया जायेगा तथा यह अवधि एक वर्ष से ज्यादा समय की नहीं होगी।
- 2) लाइसेन्स को फार्म 12 में एक वर्ष की अवधि के लिये प्रदान किया जायेगा तथा लाइसेन्सधारक द्वारा फार्म 13 में उद्धोषणा प्रस्तुत की जायेगी।

- 3) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी, लाइसेन्स की वैधता की अवधि के दौरान, लाइसेन्स धारक को एक महीने का नोटिस देकर उन नियमों तथा शर्तों को परिवर्तित कर सकती है जिनके अधीन लाइसेन्स को प्रदान किया गया था।
- 4) यदि प्रारंभिक जाँच-पड़ताल के बाद निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की यह राय हो कि लाइसेन्स को प्रदान नहीं किया जाना चाहिये, तो निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी आवेदक को व्यक्तिगत रूप से स्वयं अथवा उसके द्वारा अपनी ओर से प्राधिकृत किसी प्रतिनिधि के माध्यम से सुने जाने का एक युक्तिसंगत अवसर प्रदान करेगी, और आवेदन को रद्द करने से पहले आवेदक की ओर से प्रस्तुत किये गये किसी भी तथ्य अथवा स्पष्टीकरण पर विचार कर सकती है।
- 5) लाइसेन्स प्रदत्त अवधि के समाप्त हो जाने पर खत्म हो जायेगा।
- 6) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा प्रमाणीकरण चिन्ह के प्रयोग के संबंध में इन विनियमों के अधीन जारी किये गये सभी लाइसेन्सों के विवरणों को एक रजिस्टर में दर्ज किया जायेगा जिसको पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी तैयार करेगी।

5. लाइसेन्स की शर्तें

- (1) प्रमाणीकरण चिन्ह को इस तरीके से लगाया जायेगा कि वह उत्पादों अथवा आवरणों पर या ऐसे पदार्थों से संबंधित परीक्षण प्रमाणपत्रों पर एक स्पष्ट चिन्ह के रूप आसानी से दिखाई दे सके जिनको लेबल अथवा आवरण से ढँका नहीं जा सकता है। प्रमाणीकरण चिन्ह उत्पादों के केवल ऐसे प्रकारों, ग्रेडों, श्रेणियों, किस्मों, आकारों पर लगाया जायेगा जिनके लिये लाइसेन्स प्रदान किया गया हो। लाइसेन्स धारक को उसके द्वारा प्रयोग में लाये जाने हेतु प्रस्तावित प्रमाणीकरण चिन्ह की प्रतिकृति को प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी से अनुमोदित कराना होगा।
- (2) यदि किसी पदार्थ अथवा प्रक्रिया के संदर्भ में प्रमाणीकरण चिन्ह को विनिर्दिष्ट किया जा चुका हो, तो उस वैध लाइसेन्स को धारण करने वाले लाइसेन्स धारक के अलावा अन्य कोई व्यक्ति किसी विज्ञापन, बिक्री वृद्धि पर्चियों, मूल्यसूचियों अथवा अन्य किसी साधन के माध्यम से ऐसा कोई सार्वजनिक दावा नहीं कर सकता है कि उसका उत्पाद संबद्ध प्रमाणीकरण चिन्ह का अनुपालन करता है अथवा प्रमाणीकरण चिन्ह को धारण करता है।
- (3) जब तक कि एक पदार्थ अथवा प्रक्रिया हेतु प्रमाणीकरण चिन्ह को विनिर्दिष्ट नहीं किया गया हो, तब तक कोई व्यक्ति सार्वजनिक रूप से यह दावा नहीं कर सकता है कि यह उत्पाद अथवा प्रक्रिया प्रमाणीकरण चिन्ह का अनुपालन करती है।

- (4) (क) प्रत्येक लाइसेन्स धारक अथवा आवेदक, प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को सन्तुष्ट करने हेतु, परीक्षण तथा निरीक्षण की एक योजना के माध्यम से अपने उत्पादन अथवा प्रक्रिया की गुणवत्ता को बनाये रखने हेतु एक नियंत्रण प्रणाली को संस्थापित तथा बनाये रखेगा, जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जिस पदार्थ अथवा प्रक्रिया के संदर्भ में प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग किया जा रहा है, वह निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी तथा / अथवा जैविक उत्पादों हेतु मानकों के संबद्ध मापदण्डों तथा पद्धतियों का अनुसरण करता है।

- (ख) लाइसेन्स धारक अथवा आवेदक परीक्षणों तथा निरीक्षण और परीक्षण तथा निरीक्षण हेतु योजना में विनिर्दिष्ट ऐसे अन्य डेटा का एक सम्पूर्ण रिकॉर्ड तैयार करेगा, जिससे कि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की संतुष्टि के लिये यह साबित किया जा सके कि उत्पादन अथवा प्रक्रिया के आवश्यक नियंत्रण को संतोषजनक रूप से बनाये रखा गया था तथा रखा जा रहा है। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा माँग किये जाने पर ऐसे रिकॉर्डों को निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराया जायेगा।

- 5 (क) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं के बारे में संतुष्ट हो जाने की स्थिति में, उसके द्वारा प्रदत्त लाइसेन्स को निलंबित अथवा रद्द किया जा सकता है :

- i. कि लाइसेन्स के अधीन प्रमाणीकरण चिन्ह से अंकित उत्पाद निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के संबद्ध मापदण्डों तथा पद्धतियों का अनुपालन नहीं करते हैं, अथवा
- ii. कि लाइसेन्स धारक अथवा आवेदक ने एक ऐसी प्रक्रिया के संदर्भ में चिन्ह का प्रयोग किया था जोकि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के संबंधित निर्देशों तथा विनिर्दिष्टताओं के अनुरूप नहीं है, अथवा
- iii. कि लाइसेन्स धारक अथवा आवेदक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को युक्तिसंगत सुविधाएँ उपलब्ध कराने में विफल रहा है जिससे कि वो अपने ऊपर विहित दायित्वों का निर्वाह करने में समर्थ हो पाते; या
- iv. लाइसेन्स धारक अथवा आवेदक लाइसेन्स के किसी नियम अथवा शर्तों का अनुपालन करने में विफल रहा है।

- (ख) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा किसी लाइसेन्स को निलंबित अथवा रद्द किये जाने से पहले, वह लाइसेन्स धारक को उसका लाइसेन्स निलंबित अथवा रद्द करने के अपने इरादे का नोटिस देगी जोकि चौदह दिनों से कम अवधि का नहीं होगा।

- (ग) ऐसा नोटिस प्राप्त होने पर, लाइसेन्स धारक नोटिस प्राप्त होने के चौदह दिनों के भीतर निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के समक्ष अपनी ओर से एक स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर सकता है। यदि कोई स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया है, तो निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी उस स्पष्टीकरण पर विचार कर सकती है और ऐसे स्पष्टीकरण की प्राप्ति की तिथि से चौदह दिनों के भीतर अथवा नोटिस की अवधि के समाप्त होने से पहले, जो भी अधिक हो, लाइसेन्स धारक को सुनवाई का अवसर प्रदान कर सकती है।

- (घ) यदि कोई स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं किया गया है, तो निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी, नोटिस की अवधि के समाप्त होने पर, उपरोक्त वर्णित उप-वैराग्राफ (ग) में विहित अवधि की समाप्ति के 14 दिनों के भीतर एक लिखित सूचना भेजकर लाइसेंस को निलंबित अथवा रद्द कर सकती है।
- (ङ) लाइसेंस के निलंबित अथवा रद्द हो जाने की स्थिति में, लाइसेंस धारक पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष किसी भी अपील के लंबित होने के बावजूद, तत्काल प्रभाव से प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करना रोक देगा और यदि लाइसेंस धारक अथवा उसके एजेन्टों के पास स्टॉक में ऐसा माल मौजूद हो जिसको अनुचित रूप से चिन्हित कर दिया गया हो, तो लाइसेंस धारक अथवा एजेन्ट, जैसी भी स्थिति हो, ऐसे पदार्थों के ऊपर से प्रमाणीकरण चिन्ह को हटाने, रद्द करने, बिगाड़ने अथवा मिटाने हेतु आवश्यक कदमों को उठायेगा।
- (6) लाइसेंस को निलंबित अथवा रद्द किये जाने की स्थिति में, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी लाइसेंस धारक को इस बारे में लिखित रूप में सूचित करेगी तथा ऐसे निलंबन अथवा निरस्तीकरण को एक ऐसे ढंग से प्रकाशित करेगी जिसे उक्त निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा उपयुक्त समझा जाये।
- (7) (क) किसी भी बिन्दु पर आकर, यदि उत्पाद की अनुरूपता को बनाये रखने में कोई कठिनाई आये अथवा विनिर्देशन के पदार्थ अथवा परीक्षण उपकरण में कोई खराबी आ जाती है, तो लाइसेंस धारक को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को सूचित करते हुए, उस उत्पाद को चिन्हित करना बन्द करना होगा। खराबियों को दूर करते ही उत्पाद को चिन्हित करना दोबारा से शुरू किया जा सकता है और तत्पश्चात् तत्काल रूप से ऐसे पुनरारंभ के संबंध में सूचना निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के पास भेजी जायेगी।
- (ख) किसी भी बिन्दु पर आकर, यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के पास पर्याप्त प्रमाण मौजूद हों कि प्रमाणीकरण चिन्ह को धारित करने वाला उत्पाद निर्दिष्ट मापदण्डों तथा पद्धतियों का अनुसरण नहीं कर रहा है, तो लाइसेंस धारक को ऐसे उत्पाद को चिन्हित करना रोक देने का निर्देश दिया जायेगा। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा इस बारे में संतुष्ट हो जाने पर ही उत्पाद को चिन्हित करना फिर से शुरू करने की अनुमति दी जायेगी कि लाइसेंस धारक द्वारा उन कमियों को दूर करने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जा चुकी है।
- (8) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के इस प्रकार के निर्णय को लेने के निर्णय को रजिस्टर्ड डाक के द्वारा लिखित रूप में आवेदक अथवा लाइसेंसधारक, जैसी भी स्थिति हो, को सूचित किया जायेगा।
- (9) निरीक्षण, विशेष रूप से जो आवेदक अथवा लाइसेंसधारक के अनुरोध पर किये गये हों, के लिये आवेदक अथवा लाइसेंस धारक से शुल्क वसूला जायेगा। ऐसे विशेष निरीक्षण अथवा निरीक्षणों के शुल्कों को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा निर्धारित किया जायेगा।
- (10) यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निर्दिष्ट मापदण्डों तथा पद्धतियों को हटा दिया गया हो और उनके स्थान पर किन्हीं अन्य मापदण्डों तथा पद्धतियों को नहीं रखा गया हो, तो उनके संदर्भ में जारी किये गये सभी लाइसेन्सों को उपरोक्त वर्णित ऐसे निर्दिष्ट मापदण्डों तथा पद्धतियों को हटाये जाने की तिथि से रद्द हुआ समझा जायेगा और लाइसेंस धारक द्वारा ऐसे लाइसेंस को तत्काल रूप से निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को सौंप दिया जायेगा। इस प्रकार रद्द किये गये लाइसेंस के मामले में, यदि अग्रिम भुगतान किया गया हो तो, लाइसेंस शुल्क के एक अंश को, लाइसेंस का असमाप्त अवधि के अनुपात में, लाइसेंस धारक के द्वारा देय शुल्क अथवा किसी भी भावी शुल्क के विरुद्ध समायोजित किया जायेगा अथवा लाइसेंस शुल्क के उक्त भाग को वापिस लौटाया जा सकता है और यह निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निर्णय पर निर्भर करेगा।
- (11) किसी उत्पाद अथवा प्रक्रिया के संदर्भ में निरीक्षण के ऐसे मामले में निम्नलिखित पद्धति को लागू किया जायेगा जहाँ उक्त पदार्थ अथवा प्रक्रिया के संदर्भ में प्रमाणीकरण चिन्ह के प्रयोग हेतु लाइसेंस जारी कर दिया गया है, अथवा लाइसेंस पाने हेतु आवेदन किया गया है।
- क. यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी आवेदक की प्रक्रिया अथवा उत्पाद का निरीक्षण करने का विचार रखती है, तो उसे, अधिमानतः रूप से अपने दौरे का एक युक्तिसंगत नोटिस आवेदक को देना होगा परन्तु किसी लाइसेंसधारक की इमारत के निरीक्षण हेतु, ऐसा नोटिस देना जरूरी नहीं है,
- ख. यदि निरीक्षण के दौरान, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी किसी उत्पाद, सामग्री अथवा पदार्थ का एक अथवा उससे अधिक के नमूने लेना चाहती हो, तो वह लाइसेंसधारक अथवा आवेदक या लाइसेंस धारक या आवेदक की संस्था से संबंधित किसी जिम्मेदार व्यक्ति, जैसी भी स्थिति हो, की उपस्थिति में ऐसा कर सकती है,
- ग. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अपनी इच्छानुसार, और लाइसेंसधारक अथवा आवेदक या संस्था से संबंधित किसी जिम्मेदार व्यक्ति के द्वारा मांग करने पर, डुप्लीकेट नमूनों को ले सकती है और उनमें से एक नमूने को लाइसेंसधारक अथवा आवेदक या ऐसे जिम्मेदार व्यक्ति को सौंप सकती है,
- घ. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अपनी इच्छानुसार और लाइसेंसधारक अथवा आवेदक या संस्था में संबंधित किसी जिम्मेदार व्यक्ति के द्वारा मांग करने पर, ऐसे प्रत्येक नमूने को आवृत कर सकती है और प्रत्येक नमूने को संयुक्त रूप से मुहरबन्द कर सकती है। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा ऐसे नमूनों को एकत्रित किये जाने के मामले में, जिनको मुहरबन्द नहीं किया जा सकता हो, ऐसे नमूनों की पहचान को स्थापित करने हेतु कतिपय पहचान संकेत के साथ उन्हें चिन्हित किया जायेगा,

- इ) मुहरों की छाप तथा पहचान के विवरणों को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की रिपोर्ट में प्रस्तुत किया जायेगा। नमूनों को सम्पूर्ण विवरण देते हुए लेबल किया जायेगा; और
- च) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी उठाये गये नमूने अथवा नमूनों के लिये एक रसीद प्रदान करेगी और जिस व्यक्ति की उपस्थिति में नमूना लिया गया था, उस व्यक्ति द्वारा विहित रूप से हस्ताक्षरित रसीद की एक डुप्लीकेट प्रतिका अपने पास रखेगी।
- 12) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी लाइसेंसधारक के किसी एजेंट के गोदामों अथवा अन्य किसी इमारतों से प्रमाणीकरण चिह्न के द्वारा उत्पादों अथवा लाइसेंसधारक या उसके एजेंट के द्वारा खुले बाजार में बिक्री हेतु रखे गये पदार्थों में से नमूनों को उठा सकती है।
- 13) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को प्रत्येक लाइसेंस के संदर्भ में एक वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण दौरे की व्यवस्था जरूर करनी होगी।
- 14) निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अपने द्वारा किये गये प्रत्येक निरीक्षण की एक विस्तृत रिपोर्ट को तैयार करेगी।

6. शुल्क

- (1) लाइसेंस प्रदान किये जाने हेतु प्रत्येक आवेदन के साथ एक शुल्क जमा करना होगा जोकि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को देय होगा तथा वह पदनामित प्रत्ययित एजेन्सी द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट किये गये शुल्क से अधिक नहीं होगा।
- यहाँ पर पैराग्राफ 5(10) के प्रचालन की स्थिति को छोड़कर, अन्य किसी भी परिस्थिति में ऐसे शुल्क अथवा इसके किसी भाग को वापिस नहीं लौटाया जायेगा।

7. प्रतिज्ञा

लाइसेंस प्रदान किये जाने से पहले, आवेदक इस आशय के एक प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करेगा कि वह प्रत्यक्ष अथवा निहित रूप से ऐसा कोई दावा नहीं करेगा कि प्रदान किये जाने वाले लाइसेंस का संबंध लाइसेंस में निर्धारित उत्पादों अथवा प्रक्रियाओं के अतिरिक्त किसी अन्य उत्पाद अथवा प्रक्रिया से है।

8. निगरानी तथा नियमित समीक्षा

- क. लाइसेंस प्रदान किये जाने के पश्चात् निगरानी दौरे किये जायेंगे। ऐसे दौरों की संख्या तथा विस्तारक्षेत्र को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा निर्धारित किया जायेगा।
- ख. लाइसेंस धारक को नोटिस दिये बिना ही ये निगरानी दौरे किये जायेंगे जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहले से ही मूल्यांकित प्रणालियों तथा पद्धतियों का पालन किया जा रहा है।
- ग. यदि कोई लाइसेंसधारक लाइसेंस की शर्तों का पालन करने में विफल रहा है अथवा जहाँ लाइसेंसधारक के संगठन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हों, तो वहाँ पर विशेष पुनर्मूल्यांकन दौरा करना अनिवार्य होगा। लाइसेंसधारक को ऐसे विशेष दौरों की लागत को वहन करना पड़ेगा।

9. प्रमाणीकरण चिह्न का प्रयोग

लाइसेंसधारक द्वारा प्रमाणीकरण चिह्न का केवल निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा प्राधिकृत रूप में ही प्रयोग किया जा सकता है।

10. प्रचार

- क. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी लाइसेंसधारकों की एक सूची को तैयार करेगी तथा उसे पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी को उपलब्ध करायेगी।
- ख. इस सूची को सार्वजनिक रूप से अद्यतन किया जायेगा।
- ग. लाइसेंसधारक संभाव्य ग्राहकों, खरीददारों तथा खरीद प्राप्ति कारियों को लाइसेंस के पूर्ण तथा सटीक विवरणों के बारे में सूचित करेगा।
- घ. लाइसेंसधारक अपनी इमारत में लाइसेंस को प्रदर्शित करेगा।
- ङ. लाइसेंसधारक प्रमाणीकरण चिह्न का प्राधिकृत रूप में प्रयोग करेगा।
- च. लाइसेंसधारक प्रलेखन विवरणिकाओं अथवा प्रचार माध्यमों के द्वारा यह बर्णित करेगा कि संगठन अथवा उस स्थल, जिस पर लाइसेंस लागू होता है, को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा मूल्यांकित तथा अनुमोदित किया जा चुका है। ऐसे विज्ञापन में जैविक उत्पादों हेतु ऐसे राष्ट्रीय मानकों को बर्णित किया जायेगा जिनके लिये लाइसेंस को प्रदान किया गया है तथा प्रवृत्त स्तर से उच्चतर स्तर के अनुमोदन को इंगित नहीं किया जाना चाहिये।

- छ. यदि किसी लाइसेन्स धारक को प्रणाली प्रमाणीकरण चिह्न हेतु लाइसेन्स प्रदान किया गया हो, तो वह यह दावा अथवा संकेत नहीं करेगा कि उसके द्वारा विनिर्मित उत्पाद को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा प्रमाणित या अनुमोदित किया गया है जब तक कि उसके पास पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी की मान्यताप्राप्त उत्पाद प्रमाणीकरण योजना के अंतर्गत उस उत्पाद हेतु एक वैध लाइसेन्स मौजूद नहीं हो।

11. लाइसेन्सधारक की बाध्यताएँ

प्रमाणीकरण चिह्न के प्रयोग हेतु लाइसेन्स प्रदान किये जाने पर किसी भी लाइसेन्सधारक को:

- क. हर समय उसके भीतर निर्धारित की गयी आवश्यकताओं का पालन करना होगा तथा इन विनियमों अथवा उनमें किये गये संशोधनों का पालन करना होगा,
- ख. केवल यह दावा करना होगा कि वह उस क्षमता के संदर्भ में एक लाइसेन्स को धारण करता है जोकि लाइसेन्स के अध्यक्षीन है तथा जिसका संबंध लाइसेन्स आवश्यकताओं के अनुसरण में उत्पादों अथवा प्रक्रियाओं से है,
- ग. लाइसेन्स को किसी भी ऐसे तरीके में प्रयोग नहीं करेगा जिसपर पदनामित प्रत्यायित एजेन्सी को आपत्ति हो और लाइसेन्स धारक के द्वारा लाइसेन्स के प्रयोग के प्राधिकरण के विषय में ऐसा कोई बयान नहीं देगा जोकि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के विचार से भ्रामक हो,
- घ. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के समक्ष वह स्वरूप अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करेगा जिसमें वह अपने लाइसेन्स का प्रयोग करने का विचार रखता है अथवा लाइसेन्स का उल्लेख करने का विचार रखता है।
- ङ. लाइसेन्स को निलंबित अथवा समाप्त किये जाने पर, भले ही किसी भी तरह से इसका निर्णय किया हो, तत्काल रूप से उसका प्रयोग करना रोक देगा और उसका उल्लेख करने वाली सभी प्रचारात्मक तथा विज्ञापन सामग्री को वापिस ले लेगा,
- च. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निरीक्षक को मूल्यांकन, लेखा परीक्षा अथवा निगरानी के प्रयोजनों हेतु पहुँच की अनुमति प्रदान करेगा। लाइसेन्सधारक लाइसेन्स के अंतर्गत आने वाले उत्पादों अथवा प्रक्रियाओं में दोषों के आरोपों से उत्पन्न होने वाली जमीनी समस्याओं के प्रत्युत्तर में की गयी समस्त कार्यवाहियों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करेगा तथा निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निरीक्षक को ऐसे विवरणों को सत्यापित करने के प्रयोजन हेतु सभी संबंधित रिकार्डों तथा दस्तावेजों तक पहुँच उपलब्ध करायेगा।
- छ. लाइसेन्स के अन्तर्गत आने वाले उत्पादों अथवा प्रक्रियाओं हेतु निरंतर रूप से चालू प्रचालनों का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। लाइसेन्स धारक को ऐसे प्रचालनों को रोक दिये जाने की अवधि के तीन महीनों से अधिक हो जाने की स्थिति में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को लिखित रूप में सूचित करना होगा। छह महीनों अथवा इससे भी अधिक अवधि के लिये लाइसेन्स को रोक दिये जाने की स्थिति में लाइसेन्स को रद्द किया जा सकता है। ऐसे मामलों में, प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के समक्ष एक नवीन आवेदन प्रस्तुत करना होगा तथा नया लाइसेन्स प्रदान किये जाने से पहले एक मूल्यांकन दौरा करना अनिवार्य होगा।
- ज. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को देय समस्त वित्तीय राशियों, लाइसेन्स को रोक देने अथवा निलंबित किये जाने की अवधि के लिये भी, का उसके द्वारा विहित रीति में भुगतान करेगा।

12. वापिस सौंपना - लाइसेन्स धारक द्वारा किसी भी समय लाइसेंस को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को वापिस सौंपा जा सकता है। वापिस सौंपे जाने की स्थिति में, लाइसेन्सधारक संबंधित दस्तावेजों के साथ लाइसेन्स को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को वापिस लौटा देगा।

13. निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की शक्तियाँ - निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अपने विवेकानुसार :

- क) लाइसेन्स प्रदान करने से इंकार अथवा उसके स्कोप का विस्तार या रद्द अथवा लाइसेन्स के स्कोप को कम करने हेतु परिवर्तित कर सकती है, बशर्ते कि अस्वीकरण, निरस्तीकरण अथवा परिवर्तन निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निरीक्षक की एक सिफारिश हो जिसके बारे में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा गठित की गयी समिति का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा। दायित्वों का निर्वाह करने में असफलता के कारण पुनर्नवीकरण अथवा निरस्तीकरण से इंकार किया जाना निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निरीक्षक द्वारा निगरानी तथा नियमित समीक्षा के दौरान मूल्यांकन/लेखा परीक्षा संबंधी रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिये। ऐसे निर्णयों की आवेदक अथवा लाइसेन्सधारक को लिखित रूप में सूचना दी जायेगी।
- ख) निम्नलिखित बातों का अनुपालन नहीं किये जाने का पर्याप्त आधार होने की स्थिति में, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को लाइसेन्स को निलंबित करने का अधिकार होगा :
 - i) यदि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा निगरानी में सम्बद्ध आवश्यकताओं का अनुपालन नहीं किया जाना प्रमाणित हो जाये परन्तु तत्काल निरस्तीकरण को आवश्यक नहीं समझा जाये;

- ii) यदि लाइसेन्स, संबंधित दस्तावेजों के अनुचित प्रयोग को प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की दृष्टि में संतोषजनक रूप में सुधारा नहीं गया हो;
 - iii) यदि प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा निर्धारित पद्धतियों का उल्लंघन किया गया हो;
 - iv) यदि लाइसेन्सधारक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की वित्तीय देयताओं को पूरा करने में असमर्थ रहे; और
 - v) पद्धतियों, नियमों के अधीन विशेष रूप से प्रावधान किये गये अथवा लाइसेन्सधारक और निरीक्षण तथा प्रत्यायन एजेन्सी के बीच में औपचारिक रूप से सम्मत अन्य किसी आधार पर.
- ग) यदि लाइसेन्स की वैधता की अवधि के समाप्त हो जाने पर उसे निलंबित अथवा रद्द किया गया हो, तो लाइसेन्सधारक पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष किसी अपील के लंबित होने के बावजूद लाइसेन्स का प्रयोग करना तत्काल रूप से रोक देगा तथा लाइसेन्स और संबंधित दस्तावेजों को निरीक्षण तथा प्रत्यायन एजेन्सी को लौटा देगा।
- घ) यदि लाइसेन्स धारक एक युक्तिसंगत अवधि के भीतर खामियों को दूर करने में असमर्थ हो, जिसकी वजह से वह इस योजना की आवश्यकताओं का अनुपालन करने में असफल हो जाये, तो लाइसेन्स को रद्द किया जा सकता है। ऐसे मामले में, लाइसेन्स को रद्द किये जाने पर लाइसेन्स धारक को इन विनियमों में विहित पद्धति के द्वारा नवीन लाइसेन्स प्रदान किये जाने हेतु नवीन आवेदन प्रस्तुत करना होगा।

14. लाइसेन्स का दुरुपयोग

लाइसेन्सधारक को लाइसेन्स का दुरुपयोग करने का दोषी माना जायेगा, यदि वह

- क) लाइसेन्स को वापिस लौटाने, निलंबन अथवा निरस्तीकरण के तुरंत बाद प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने हेतु लाइसेन्स को प्रदर्शित करना रोक नहीं देता है अथवा उसका अन्यथा प्रयोग करता है,
- ख) लाइसेन्स धारक निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा सुझाये गये परिवर्तनों को क्रियान्वित करने में विफल हो जाये।

15. आयातक

किसी ऐसे आवेदक, जो कि उत्पादों का आयातक है, को प्रमाणीकरण चिन्ह का प्रयोग करने हेतु लाइसेन्स केवल उसी स्थिति में प्रदान किया जायेगा, जबकि उस देश में एक तुल्यता अनुबंध विद्यमान हो जहाँ से उस उत्पाद का निर्यात किया जा रहा हो अथवा जहाँ ऐसा तुल्यता अनुबंध विद्यमान नहीं हो, तो फिर आवेदक को उसके भीतर अन्तर्विष्ट समान विनियमों के अध्यक्षीन रखा जायेगा केवल उत्पादन के स्थल पर निरीक्षण के विनियम को छोड़कर और यह कि, इसके स्थान पर, आवेदक को राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के प्रत्यायन मापदण्डों तथा पद्धतियों के अध्यक्षीन रहना होगा।

16. अपील

प्रत्यायित निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के किसी भी निर्णय के विरुद्ध अपील पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी के समक्ष निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के निर्णय की तिथि के 60 दिनों के भीतर की जायेगी और उसके साथ पदनामित प्रत्यायन एजेन्सी के पक्ष में तैयार किये गये DD के रूप में 500/- रुपये के शुल्क का भुगतान किया जायेगा; और लाइसेन्स धारक निर्णय को मानने हेतु बाध्य होगा तथा उसके अध्यक्षीन रहेगा।

तिथि :

समय :

हस्ताक्षर

अनुभाग - 6

फार्मेट्स

उत्पादकों द्वारा किसी उत्पाद विशेष के उत्पादन हेतु अपनायी जाने वाली पद्धतियों के एक निर्दिष्ट पैकेज के अनुपालन को निरूपित करने में समर्थ होने की क्षमता जैविक उत्पादन के लिये सर्वाधिक हितकारी सिद्ध होती है। इस लक्ष्य की सिद्धि हेतु, अपनाये गये चरणों, की गई टिप्पणियों तथा घटनाओं की डायरी का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखने से उपभोक्ताओं के विश्वास को पैदा करने तथा उत्पाद की विश्वसनीयता को स्थोपित करने में मदद मिलेगी। इस प्रकार के रिकॉर्ड्स से समस्याओं के कारणों का पता लगाने तथा डाँटा की विशाल मात्रा में से तथ्यात्मक जानकारी को हासिल करने में भी सहायता प्राप्त होगी।

प्रमाणीकरण एजेन्सी, फार्म स्तर, थोक/खुदरा स्तरों पर तैयार किये जाने वाले फार्म्स के एक उदाहरण युक्त सेट को अभिग्रहण हेतु विनिष्ट किया गया है। जैविक उत्पादन में अन्तर्ग्रस्त सभी एजेन्सियों से विहित फार्म्स में रिकॉर्ड्स को तैयार करने की आशा की जाती है।

किसी किसान द्वारा रिकार्ड को तैयार करने में असमर्थ होने की स्थिति में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सियों को फार्म स्तर के रिकार्ड्स को तैयार करने में विशेष सावधानी बरतनी होगी।

फार्म - 1

प्रत्यायन हेतु आवेदन पत्र

1. संगठन/पता दूरभाष नंबर :
फैक्स नंबर :
ई-मेल पता :
2. संपर्क व्यक्ति
3. स्थापना वर्ष
4. प्रमाणीकरण का प्रकार
5. प्रत्यायन तथा विनिमय : क्या आपका संगठन किसी जैविक कार्यक्रम द्वारा पहले से ही प्रत्यायित है ? क्या आपने अन्य प्रमाणकर्ताओं के साथ कोई विनिमय करार किया हुआ है ? यदि हाँ, तो कृपया विवरण दीजिये। (यदि आवश्यक हो, तो अलग से पृष्ठ संलग्न कीजिए)।
6. संगठन तथा संरचना : कर्मचारियों की पाठ्यचर्चा सहित उनकी संख्या। (कृपया संगठन का एक चार्ट बनाइये)
7. संगठन नीति : प्रमाणीकरण समिति के विवरण तथा सदस्यों की पाठ्यचर्चा
8. विगत तीन वर्षों का कार्य निष्पादन/टर्न ओवर
9. पृष्ठभूमि
10. आपकी प्रेरणा क्या है ?
11. क्या आप निरीक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करते हैं ?
12. कृपया अपनी रिकार्ड प्रणाली (उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं, थोक विक्रेताओं, खुदरा विक्रेताओं के बारे में) का वर्णन कीजिये।
13. अपनी प्रमाणीकरण पद्धतियों का वर्णन कीजिये।
14. क्या आप अवशेषों हेतु जाँच करते हैं ? यदि हाँ, तो किस प्रयोगशाला में आपके नमूनों की जाँच की जाती है ?
15. क्या आपको जैविक खेती की प्रमाणीकरण पद्धतियों तथा कार्यक्रम के बारे में जानकारी है ?
16. आप कौन-कौन से जैविक मापदण्डों का पालन करते हैं ?
17. क्या आपको NSOP तथा NAPP के बारे में जानकारी है ?
18. आप किन-किन उत्पादों को प्रमाणित करने का विचार रखते हैं अथवा प्रमाणित कर रहे हैं ?
19. कृपया जैविक खेती उत्पादों की संकल्पना की 300 शब्दों में व्याख्या कीजिये।
20. कृपया विभिन्न सेवाओं हेतु अपनी टैरिफ संरचनाओं को नियम तथा शर्तों के साथ इंगित कीजिये।
21. अनुलग्नकों की सूची
22. घोषणा :
उपरोक्त वर्णित समस्त सूचना मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

नाम / पदनाम

तिथि/हस्ताक्षर

फार्म - 2

समझौता-ज्ञापन का प्रारूप (प्रत्यायन संविदा)

पक्षकार :

इस संविदा पर प्रत्यायन एजेन्सी तथा प्रत्यायित निरीक्षण और प्रमाणीकरण एजेंसियों द्वारा हस्ताक्षर किये जायेंगे।

प्रयोजन:

NSOP पर आधारित होते हुए, समझौता ज्ञापन में निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के मूल्यांकन तथा प्रत्यायन हेतु सभी आवश्यक पूर्वशर्तों का वर्णन किया जायेगा।

विलेख :

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी अपने प्रमाणीकरण, कार्यनिष्पादन के मूल्यांकन हेतु आवश्यक समस्त सूचना, तथा साथ ही प्रमाणित प्रचालनों के समस्त प्रलेखन को उपलब्ध करायेगी।

इसके साथ ही, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी समस्त आवश्यक प्रबन्धों का प्रावधान करेगी तथा मूल्यांकन हेतु सूचना के समस्त साधनों को उपलब्ध करायेगी। वह इस प्रक्रिया के दौरान अपना पूरा सहयोग प्रदान करेगी।

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी जैविक उत्पादों हेतु राष्ट्रीय मानकों में निर्धारित मापदण्डों के अनुसार अपने मूल्यांकन को पूरा करेगी।

वित्त पोषण :

प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा प्रस्तुत किये गये एक अनुमोदित बजट के आधार पर, मूल्यांकन तथा प्रत्यायन की लागत को लागत को निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी के द्वारा वहन किया जायेगा।

उत्तरदेयता :

रिपोर्टों को :

- मूल्यांकन तथा भुगतान के पश्चात् एक महीने के भीतर प्रस्तुत करना होगा।
- बीजकपत्र की तिथि के पन्द्रह दिनों के भीतर भुगतान करने होंगे।
- 50% अग्रिम भुगतान आवेदन-पत्र के साथ करना होगा तथा 50% प्रत्यायन के समय देना पड़ेगा।

प्रमाणीकरण चिह्न :

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी को एतद्द्वारा किसी आवेदक को जैविक उत्पादों हेतु प्रमाणीकरण चिह्न से संबंधित विनियमों के प्रावधानों के अनुपालन में India Organic लोगो के प्रमाणीकरण चिह्न का प्रयोग करने का लाइसेंस प्रदान करने के हेतु प्राधिकृत किया जाता है।

टैरिफ :

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा अनुलग्नक - 1 के अनुसार अधिकतम टैरिफ वसूल किया जायेगा।

अवधि :

यह संविदा दोनों पक्षकारों द्वारा हस्ताक्षर किये जाने की तिथि से लेकर तीन वर्षों तक के लिये वैध रहेगी। जब तक कि इसमें अन्तर्विष्ट किसी एक अथवा उससे अधिक प्रावधानों का निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा उल्लंघन किये जाने की स्थिति उत्पन्न हो जाने पर इस संविदा को उससे पहले ही समाप्त नहीं कर दिया गया हो। तदन्तर, कार्य निष्पादन के आशानुरूप होने की स्थिति में संविदा का पुनर्नवीकरण किया जायेगा। कार्य निष्पादन में व्यतिक्रम होने की स्थिति में, प्रत्यायन एजेन्सी द्वारा एक समुचित चेतावनी दिये जाने के पश्चात् संविदा को रद्द किया जा सकता है।

वचनबद्धता :

निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी इसके साथ ही NSOP को बनाये रखने तथा मूल्यांकन के दौरान सहयोग करने में प्रत्यायन एजेन्सी की अपेक्षाओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा करती है।

स्थान तथा तिथि

स्थान तथा तिथि

प्रमाणकर्ता एजेन्सी के हस्ताक्षर

प्रत्यायन एजेन्सी
के सदस्यों के हस्ताक्षर

फार्म - 3

प्रमाणीकरण हस्तांतरण हेतु संविदा फार्म (विदेशी प्रमाणीकरण कार्यक्रमों हेतु)

1. पक्षकार :

यह संविदा इन दो पक्षकारों के मध्य संपन्न तथा हस्ताक्षरित की गई जिन्हें इसके बाद से :

_____ जिसका प्रतिनिधित्व _____ के द्वारा किया गया
(निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी)
और
_____ जिसका प्रतिनिधित्व _____ के द्वारा किया गया ।
(प्रत्यायन एजेंसी) (AA)

2. सामान्य :

बहु-अवयव उत्पादनों के व्यापारिक कार्यकलापों तथा प्रसंस्करण के फलस्वरूप यह संभावना उत्पन्न हो जाती है कि विभिन्न कार्यक्रमों के प्रमाणपत्रों के अंतर्गत आने वाले उत्पादों को एक अंतिम उत्पाद में हैण्डिल तथा अथवा मिश्रित कर दिया जाये। ऐसी किसी भी स्थिति में, प्रत्यायन एजेंसी अनुमोदन का अंतिम प्राधिकरण होगी। प्रत्यायन एजेंसी ऐसे सभी प्राधिकरण कार्यक्रमों की एक सूची को जारी करती है जिनको (गहन जाँच-पड़ताल के पश्चात्) प्रत्यक्षरूप से प्रत्यायित कार्यक्रमों के समतुल्य पाया गया।

3. प्रयोजन:

इस संविदा में प्रत्यायन एजेंसी द्वारा प्रत्यायित एजेंसियों द्वारा जारी किये गये प्रमाणपत्रों के समतुल्य के रूप में पूर्वोल्लिखित प्रमाणकर्ता द्वारा प्रदान किये गये प्रमाणपत्रों की सामान्य स्वीकृति तथा सावधिक पुनर्मूल्यांकन हेतु आवश्यक पूर्वशर्तों का प्रावधान किया गया है।

4. विलेख:

प्रत्यायन एजेंसी के अनुरोध पर, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी अपने प्रमाणीकरण कार्यनिष्पादन के सावधिक मूल्यांकन हेतु आवश्यक समस्त सूचना तथा साथ ही प्रमाणित प्रचालकों तथा उत्पादों हेतु समस्त प्रलेखन को भी उपलब्ध करायेगी। निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी उत्तरदायित्व के दोनों में से किसी भी क्षेत्र में बाजार सर्वेक्षण, पारदर्शिता तथा नियंत्रण को अनुकूलतम बनाने में सभी संभव तरीकों से प्रत्यायन एजेंसी को समर्थन प्रदान करेगी।

इसके अतिरिक्त, निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी जैविक उत्पादों हेतु अपनी निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण पद्धतियों की गुणवत्ता की दृष्टि से प्रासंगिक मानकों, स्कोप, और विधियों में किसी भी परिवर्तन के विषय में प्रत्यायन एजेंसी को सूचित करेगी।

5. वित्तपोषण:

अनुरोध की गयी समस्त सूचना तथा समर्थन को निःशुल्क उपलब्ध कराया जायेगा। इसकी एवज में प्रत्यायन एजेंसी इस प्रमाणीकरण हस्तांतरण के पंजीकरण हेतु कोई शुल्क वसूल नहीं करेगी।

6. अवधि:

यह संविदा एक सीमित अवधि के लिये की जाती है। प्रत्यायन एजेंसी के निर्णय के द्वारा बिना किसी पूर्व चेतावनी के इसको रद्द किया जा सकता है।

7. उत्तरदेयता:

इस संविदा से अथवा किसी भी पक्षकार द्वारा इसको रद्द किये जाने पर कोई उत्तरदेयता उत्पन्न नहीं होती है।

स्थान तथा तिथि

स्थान तथा तिथि

हस्ताक्षर, XXXX

हस्ताक्षर, XXXX

फार्म - 4

**उत्पाद प्रमाणपत्र जारी करने हेतु अनुरोध
के लिये फारमैट**

उत्पादक को ओर से
प्रमाणकर्ता हेतु

महोदय,

विषय : उत्पाद प्रमाणपत्र जारी करने हेतु अनुरोध

1. निर्यातक/उत्पादक का नाम एवं पता
2. आयातक/क्रेता का नाम एवं पता
3. व्यापारी निर्यातक का नाम एवं पता
4. उत्पाद - बीजकपत्र सं. तथा तिथि
5. गुणवत्ता/अवस्थिति (जैविक/रूपान्तरणाधीन जैविक - प्रथम अथवा द्वितीय वर्ष)
6. उत्पाद की उत्पत्ति
7. निवल भार/सकल भार
8. पैदावार का वर्ष
9. आंतरिक ढेरी सं.
10. पैकिंग यूनिटों की सं. तथा प्रकार
11. टिप्पणियाँ

भवदीय,

उत्पादक के हस्ताक्षर

फार्म - 5

फार्म प्रमाणपत्र हेतु फारमैट

प्रमाणकर्ता की
प्रत्यायन सं.

प्रमाणकर्ता का नाम एवं
पता

फार्म प्रमाणपत्र
सं.

फार्म का नाम
एवं पता

उत्पाद श्रेणी

फार्म का भू-क्षेत्र

प्रसंस्करण यूनिट का आकार

संचालित निरीक्षण तथा समझौता-ज्ञापन के आधार पर, प्रमाणकर्ता (नाम) इसके साथ ही प्रमाणित करता है कि उपरोक्त प्रचालन NSOP की जैविक विधियों के अनुसार उत्पादन करता है।

तिथि _____

स्थान _____

हस्ताक्षर

प्रमाणीकरण की वैधता

मुहर

फार्म - 6

उत्पाद प्रमाणपत्र हेतु फारमैट

उत्पाद प्रमाणपत्र

सं.

उत्पाद :

गुणवत्ता :

पैदावार :

उत्पत्ति :

पैकिंग यूनिट :

निवल भार :

बीजकपत्र सं. :

विक्रेता का नाम एवं पता :

क्रेता का नाम एवं पता :

घोषणा :

यह प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त नामित उत्पादों को जैविक उत्पादन के उत्पादन तथा निरीक्षण और जैविक उत्पादन विधि के प्रचालन के नियमों के अनुसरण में प्राप्त किया गया है, जैसाकि NSOP द्वारा निर्धारित किया गया है तथा जिसकी (प्रमाणकर्ता का नाम) के द्वारा निगरानी की गई।

तिथि _____

स्थान _____

हस्ताक्षर

मुहर

फार्म - 7

प्रमाणीकरण हस्तांतरण रजिस्टर

आवेदन का क्षेत्र:

इसरजिस्टर में उन सभी विदेशी प्रमाणीकरण कार्यक्रमों अथवा प्रत्यायन योजनाओं को सम्मिलित किया जायेगा जिन्हें ^{उत्पन्न} के समतुल्य पाया गया हो। किसी भी पंजीकृत विदेशी कार्यक्रमों के प्रमाणित जैविक उत्पादों को भी प्रत्यायित धरेलू कार्यक्रमों के प्रमाणित उत्पादों के साथ ही विपणन करने पर भी विचार किया जायेगा।

रजिस्टर :

विदेशी प्रमाणीकरण कार्यक्रम

देश	कार्यक्रम का नाम	क्षेत्र	प्रतिबंध	निर्णय
ABC	XYZ	खाद्य उत्पादन खाद्य प्रसंस्करण वन्य उत्पाद वस्त्र आंतरिक प्रमाणीकरण	वार्षिक पर्यवेक्षण रिपोर्ट अथवा टिप्पणी	तिथि

विदेशी प्रत्यायन योजनाएँ

देश	योजना का नाम	क्षेत्र	प्रतिबंध	निर्णय
यूरोप	EEC, EEC- Reg. 2092/91 का क्रियान्वयन	खाद्य उत्पादन खाद्य प्रसंस्करण	- पशु उत्पादों - वस्त्र - वन्य उत्पादों पर लागू नहीं होती	तिथि
अंतर्राष्ट्रीय	IFOAM	खाद्य उत्पादन खाद्य प्रसंस्करण वन्य उत्पाद	- वस्त्र - वन्य उत्पादों पर लागू नहीं होती	तिथि

वैधता:

इसरजिस्टर का वार्षिक रूपसे पुनर्नवीकरण किया जायेगा।

यह निर्गम:

1. चालू संख्या
2. निर्गम तिथि
3. प्रवर्तन तिथि

फार्म - 8

आवेदन-पत्र आयात/संव्यवहार-प्रमाणपत्र

लाइसेंसधारी का नाम :
 लाइसेंस धारी-संख्या :
 क्रेता/निर्यातक का नाम :

पता :
 देश :

अंतिम उत्पादक अथवा प्रसंस्करणकर्ता का नाम :
 पता :
 देश :

उत्पाद का व्यापारिक नाम :
 प्रेषण/उत्पत्ति का देश :
 अवार्थति ☐ जैविक ☐ जैविक में स्थान्तरणाधीन
 सकल तथा निवल भार सकल: निवल:
 अथवा वैकल्पिक यूनिटें वैकल्पिक यूनिटें
 पैक किया हुआ अथवा थोक ☐ थोक ☐ की यूनिटों में पैक किया गया
 तिथि के साथ बीजक पत्र :
 परिवहन दस्तावेज सं :
 आदान-सं. :
 पहचान-कोड (उदाहरणार्थ ढेरी सं.) :
 पैदावार/उत्पादन वर्ष :

प्रेषिती/क्रेता का नाम :
 पता :
 देश :
 गंतव्य-स्थल का पता :
 (प्रेषिती/क्रेता के पते से भिन्न होने की स्थिति में ही भरा जायेगा)

प्रमाण पत्र ☐ विक्रेता/निर्यातक ☐ क्रेता/प्रेषिती
 को भेजा जाये

मैंने पूरी सत्यता के साथ समस्त आवश्यक सूचना को भर दिया है तथा मैंने
☐ बीजक पत्र और ☐ अंतर्ग्रस्त परिवहन दस्तावेजों की प्रतियों को भी संलग्न कर दिया है।

तिथि: आवेदक का नाम तथा हस्ताक्षर

फार्म - 9

प्रसंस्करण/कृषकों की वार्षिक प्रश्नावली (निरीक्षण के समय उपलब्ध कराये जाने हेतु)

1. आधारभूत डेटा

		टिप्पणियाँ
प्रचालक	क)	
पता	ख)	
निकटतम रेलवे स्टेशन		
निकटतम एयरपोर्ट		
टेलिफोन / फैक्स	ग)	
फार्म/प्रसंस्करण यूनिट पर जिम्मेदार व्यक्ति	घ)	
प्रबंध निदेशक	ड.)	

2. परिवर्तनों से संबंधित सूचना

गिछली/प्रश्नावली को भरे जाने के बाद से निम्नलिखित परिवर्तन हुए हैं:

जहाँ पर लागू हो, कृपया चिह्नित करें			कृपया अनुलग्नकों को तदनुसार संख्याकित कीजिये	टिप्पणियाँ
भाग	परिवर्तन			
	हाँ	नहीं		
विधिक फार्म				
प्रचालक की संरचना				
उत्तरदायित्वों में परिवर्तन				
संरचना में परिवर्तन				
उत्पादन-स्थल				
गैर-जैविक उत्पादन की विविधता				
आपूर्तिकर्ता				

शाखा	परिवर्तन		कृपया अनुलग्नकों के अनुसार स्पष्टीकरणों को संख्यांकित कीजिये	टिप्पणियाँ
	हाँ	नहीं		
नस्खे				
प्रसंस्करण विधियाँ				
पैकिन्ग				
लेबल				
लाइसेन्स संविदाएँ				
बहीखाता पद्धति				
पहचान प्रणाली				
गुणवत्ता नियंत्रण				
स्वच्छता उपाय				
वितरण प्रणाली				
ग्राहक-गण / क्रय-प्रणाली				
विक्रय प्रणाली				
अन्य				

.....

.....

			टिप्पणियाँ
पिछले बही खाता पद्धति वर्ष के संबंध में, कृपया अपनी कम्पनी के निम्नलिखित आँकड़ों को जोड़िये।			
टर्न ओवर कुल प्रमात्रा	को समाप्त हुआ वर्ष	रूपये	
टर्न ओवर जैविक उत्पाद	को समाप्त हुआ वर्ष	रूपये	

4. गुणवत्ता नियंत्रण

	टिप्पणियाँ
<p>क्या पिछली प्रश्नावली के बाद से आपने कोई अवशेष विश्लेषण संचालित किया था?</p> <p>यदि हाँ, तो किस प्रकार का, कितने तथा किसके द्वारा? (कृपया) परिणामों की प्रतियों को संलग्न करें)।</p>	

5. अनुलग्नकों की सूची

[illegible]

प्रचालक

जिसका प्रतिनिधित्व

द्वारा किया गया है, इसके साथ ही यह विश्वास दिलाता है, कि प्रस्तुत की गयी समस्त सूचना सत्य तथा अद्यतन है।

स्थान / तिथि

हस्ताक्षर

[illegible]

फार्म - 10

ऑफ फार्म इनपुट अनुमति फार्म

1. प्रचालन

नाम:			
पता:	स्थान:		
फोन/फैक्स:	पिनकोड:	लेबल्स:	

2. अनुमोदनार्थ उर्वरण

उर्वरक (संयोजन, किस्म, नाम)	उत्पत्ति (आपूर्ति कर्ता का नाम)	प्रयोग में लायी जाने वाली प्रमात्रा	अनुप्रयोग की अवधि

3. भू भाग

क्षेत्र (संख्या, नाम)	फसल	उर्वरक (नाम, किस्म)	किग्रा/हेक्टे. में अनुप्रयोग	अनुप्रयोग का समय

4. मृदा विश्लेषण

तिथि	क्षेत्र	प्रयोगशाला	परिणाम (स्तर)				
			N	P	K	Mg	Ca

5. पुष्टिकरण

अधोहस्ताक्षरी इसके साथ ही अपनी पूरी जानकारी के साथ पुष्टि करता है कि उपरोक्त सूचना सत्य है:

परामर्शक:

प्रचालक:

स्थान, तिथि, हस्ताक्षर

स्थान, तिथि, हस्ताक्षर

6. निरीक्षक की सिफारिश

परामर्शक:

लेबल योजना:

सिफारिशें (यदि आवश्यक हो, तो अतिरिक्त पृष्ठों का प्रयोग करें)

7. निर्णय (निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा भरा जायेगा)

अनुरोध प्राप्त हुआ..... प्रचालक को निर्णय..... निरीक्षक को निर्णय.....

- ☐ निम्नलिखित शर्तों के अधीन अनुरोध अनुमोदित किया गया:
- ☐ अनुरोध अनुमोदित नहीं किया गया:
- ☐ अनुरोध को सक्षम प्राधिकारी को अग्रेषित किया गया:

प्रमाणीकरण एजेन्सी

स्थान, तिथि, हस्ताक्षर, मोहर

फार्म - 11

जैविक उत्पाद प्रमाणीकरण चिह्न विनियम, 2002 के अंतर्गत प्रमाणीकरण चिह्न के प्रयोग हेतु लाइसेंस प्रदान करने हेतु आवेदन

* मैं/हम, जो _____
शैली के अधीन _____

पर अपना व्यवसाय संचालित करता हूँ/करते हैं, एतद्वारा निम्नलिखित रूप से सूचीबद्ध ऐसे उत्पाद/प्रक्रिया के संदर्भ में India Organic लोगो प्रमाणीकरण के प्रयोग हेतु लाइसेंस हेतु आवेदन करता हूँ/करते हैं, जोकि राष्ट्रीय जैविक उत्पाद मानकों के प्रतिमानों तथा पद्धतियों के अनुरूप हैं:

क) **उत्पाद _____
प्रकार _____
आकार _____
ग्रेड _____
जैविक उत्पादों हेतु मानकों के संबंध प्रतिमान।

ख) *प्रक्रिया _____
जैविक उत्पादों हेतु मानकों के संबंध प्रतिमान।

2. उपरोक्त उत्पाद का _____ के द्वारा विनिर्माण किया गया।

इस प्रक्रिया को _____ स्थान का नाम पर संचालित किया गया।

(पता)

* जो भी लागू न हो, उसे काट दें।

** एक आवेदन में (क), (ख) के अंतर्गत दोनों मदों में से किसी एक को ही लिया जा सकता है, दूसरे मद को काट दें।

3. क) मेरी/हमारी फर्म के शीर्ष प्रबंधन की संरचना निम्नलिखित रूप में है:

क्रम संख्या	नाम	पदनाम
-------------	-----	-------

ख) मैं/हम उपर्युक्त संरचना में कोई भी परिवर्तन किये जाने की स्थिति में यथाशीघ्र निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेंसी को सूचित करने की प्रतिज्ञा करता हूँ/करते हैं।

4. मैं/हम एतद्वारा फर्मों अथवा सोसाइटियों/कम्पनियों के रजिस्टार/उद्योगों के निदेशक (लघु उद्योग एककों के संबंध में) के द्वारा जारी किये गये निगमन के प्रमाणीकरण की अथवा समान अन्य प्रलेखों की एक सत्यापित प्रति/फोटो कापी को संलग्न करता हूँ/करते हैं जिसमें फर्म का नाम तथा उसके उत्पादन स्थल को अधिप्रमाणित किया गया है।

1. क) मेरे/हमारे पास संलग्न सूची के अनुसार तथा जैविक उत्पादों हेतु मानकों के प्रतिमानों और पद्धतियों के अनुसार जाँच व्यवस्थाएँ मौजूद हैं।

अथवा

ख) जैविक उत्पादों हेतु मानकों के प्रतिमानों और पद्धतियों के अनुसार निम्नलिखित जाँच व्यवस्थाओं का प्रबंध करना अभी शेष है:

अथवा

ग) प्रत्यायित प्रयोगशाला के विवरण

नाम

कार्य

- क) हमारे द्वारा प्रयुक्त ट्रेड मार्क / ब्रांड नाम निम्नलिखित है:
 ख) मैं/हम निम्नलिखित ट्रेड मार्क / ब्रांड नाम के साथ India Organic लोगो प्रमाणीकरण हेतु आवेदन करना चाहता हूँ/चाहते हैं:
 ग) India Organic प्रमाणीकरण चिह्न के साथ प्रयुक्त किये जाने हेतु प्रस्तावित ट्रेड मार्को / ब्रांड नामों की पंजीकरण सं. तथा तिथि

अथवा

पंजीकरण नहीं होने की स्थिति में, मैं/हम ट्रेड मार्क / ब्रांड नाम के समर्थन में प्रचार/पैकिंग सामग्री आदि के रूप में प्रलेखी साक्ष्य को संलग्न करता हूँ/करते हैं।

मेरी/हमारी जानकारी के अनुसार उक्त उत्पाद/प्रक्रिया के उत्पादन आँकड़ें तथा उनके मूल्य और प्राक्कलन निम्नलिखित रूप से हैं:

वर्ष	उत्पादन	यूनिट	मूल्य रुपये में
पिछले वर्ष			
_____ से			
_____ तक			
चालू वर्ष			
_____ से			
_____ तक			

(प्राक्कलन)

6. उक्त उत्पाद/प्रक्रिया की जैविक उत्पादों हेतु मानकों के संबंध प्रतिमानों तथा पद्धतियों के साथ अनुस्यूता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से

* मैं/हम यहाँ पर संलग्न विवरणिका में वर्णित निरीक्षण तथा परीक्षण की योजना का प्रयोग करता हूँ/करते हैं/करने का इरादा रखता हूँ/रखते हैं/ समस्त निरीक्षणों तथा परीक्षणों के स्टोन रिकार्ड को विवरणिका में निर्दिष्ट फार्म में रखा जाता है/जायेगा/ मैं/हम आगे अपनी निरीक्षण तथा परीक्षण योजना को सुधारने, संशोधित अथवा परिवर्तित करने की प्रतिज्ञा करता हूँ/करते हैं जिससे कि उसको आपके द्वारा समय-समय पर विनिर्दिष्ट स्वस्थ के अनुस्यू ढाला जा सके।

** मेरे/हमारे पास इस समय निरीक्षण तथा परीक्षण की कोई भी योजना प्रचालन में नहीं है। तथापि मैं/हम निरीक्षण तथा परीक्षण एजेन्सी के द्वारा संस्तुत योजना को प्रचालन में लाने की प्रतिज्ञा करता हूँ/करते हैं।

7. निरीक्षण प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा कोई भी प्रारंभिक जाँच किये जाने की स्थिति में, मैं/हम अपने यहाँ पर उपलब्ध समस्त तर्कसंगत सुविधाओं को निरीक्षण प्रमाणीकरण एजेन्सी को उपलब्ध कराने को सहमत हूँ/हैं तथा मैं/हम उक्त जाँच के समस्त व्ययों का भुगतान करने पर भी सहमत हूँ/हैं जिसमें निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा यथा आवश्यकतानुसार परीक्षण हेतु शुल्क भी साम्मिलित हैं।

मैं/हम अनुरोध करता हूँ/करते हैं कि स्थल का प्रारंभिक निरीक्षण _____ (तिथि इंगित करिये) तक कर लिया जाये।

अथवा

मैं/हम प्रारंभिक निरीक्षण के संचालन हेतु उपयुक्त समय, तिथि आदि के बारे में सूचित कर दूंगा/देगे। आवेदन किये गये उत्पाद का उत्पादन शुरू किये जाने पर और जब मैं/हम नमूनों को एकत्र किये जाने के लिये तैयार हो जाऊँगा/जायेगे, तो शीघ्र ही दूंगा/देगे।

8. क) प्रमाणित किया जाता है कि पहले जब मैंने/हमने आवेदन किया था तथा आवेदन संख्या _____ थी, तो _____ के कारण लाइसेन्स नहीं मिल पाया था।

ख) प्रमाणित किया जाता है कि मेरे/हमारे पास CMS/T, सं. _____ था जोकि निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी की ओर से पत्र सं. _____ दिनांकित _____ के द्वारा

के कारण समाप्त/रद्द कर दिया गया था।

- ग) मुझे/हमें अपने किसी भी ऐसे कार्य हेतु निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी द्वारा चेतावनी/परामर्श नहीं दिया गया था जोकि जैविक उत्पादों हेतु मानकों के प्रतिमानों तथा पद्धतियों का उल्लंघन करता हो।

अथवा

मेरे/हमारे द्वारा जैविक उत्पादों हेतु मानकों के प्रतिमानों तथा पद्धतियों का उल्लंघन करने पर प्राप्त की गई चेतावनी/परामर्श के विवरण निम्नलिखित हैं

9. मैं/हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि आवेदन पत्र में उपरोक्त वर्णित किसी भी सूचना के गलत पाये जाने की स्थिति में, आवेदन को उसी समय अस्वीकृत कर दिया जाये।

10. यदि लाइसेन्स प्रदान कर दिया जाता है और जितनी अवधि तक वह प्रभावी रहता है, तौ मैं/हम एतद्द्वारा लाइसेन्स के सभी नियम एवं शर्तों तथा विहित विनियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करता हूँ/करते हैं। लाइसेन्स को निलंबित अथवा रद्द किये जाने की स्थिति में, मैं/हम यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ/करते हैं कि लाइसेन्स में शामिल किसी भी उत्पाद पर प्रमाणीकरण चिह्न का प्रयोग करना तत्काल प्रभाव से रोक दूंगा/देगे तथा समस्त संबंधित विज्ञापन मामलों को वापस ले लूंगा/लेगे और पूर्वोक्त विनियमों के प्रावधानों को पूरा करने हेतु आवश्यक अन्य सभी कदमों को तत्काल प्रभाव से उठाऊंगा/उठायेगे। लाइसेन्स प्रदान किये जाने की स्थिति में, हम पूर्वोक्त विनियमों में अन्तर्विष्ट प्रत्येक प्रावधान का अनुपालन करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

इस तारीख

का दिन

हस्ताक्षर _____

नाम _____

पदनाम _____

हेतु तथा की ओर से _____

(फर्म का नाम)

फार्म - 12**India Organic लोगो प्रमाणीकरण चिह्न के प्रयोग हेतु लाइसेन्स**

लाइसेन्स सं. CMS -

1. India Organic इण्डिया आरगैनिक लोगो के प्रमाणीकरण चिह्न से संबंधित विनियमों के द्वारा निरीक्षण तथा प्रमाणीकरण एजेन्सी में विहित शक्तियों के अधिकार से, वह एतद्वारा

(जिसे आगे चलकर "लाइसेन्सी" के नाम से पुकारा जायेगा) को India Organic लोगो प्रमाणीकरण चिह्न का प्रयोग करने हेतु यह लाइसेन्स, जैसाकि इसके साथ प्रथम अनुसूची के प्रथम कालम में निर्धारित किया गया है, और जोकि उक्त अनुसूची के दूसरे कालम में निर्धारित उत्पाद/प्रक्रिया के लिये अथवा संदर्भ में, जिसे कि जैविक उत्पादों हेतु मानकों के संबंध प्रतिमानों तथा पद्धतियों के अनुसरण में/अनुस्यू उत्पादित अथवा प्रसंस्करण किया गया है, प्रदान किया जाता है।

2. इस लाइसेन्स में उक्त उल्लिखित विनियमों में विनिर्दिष्ट अधिकार तथा उत्तरदेयताएँ निहित हैं।
3. यह लाइसेन्स _____ से _____ तक वैध रहेगा।
4. इस लाइसेन्स को _____ को _____ इस शर्त के अध्वधीन प्रदान किया जाता है कि जैविक उत्पाद (प्रमाणीकरण) विनियम, 2002 में अन्तर्विष्ट प्रावधानों के अध्वधीन रहने हेतु सहमत हैं।

हस्ताक्षरित, मुहरबंद तथा दिनांकित

प्रत्यायित निरीक्षण तथा
प्रमाणीकरण एजेन्सी हेतु

प्रथम अनुसूची

प्रमाणीकरण चिह्न
(1)

उत्पाद
(2)

--	--

फार्म - 13

उद्घोषणा

सेवा में,
अध्यक्ष,
प्रत्यायन एजेन्सी

मैं/हम,..... उद्घोषणा करते हैं कि हमें INDIA ORGANIC लोगो का प्रयोग करने का लाइसेन्स सं.
..... दिनांकित..... प्रदान किया गया है तथा हम मार्च, 2002 के कृषि उत्पादों हेतु प्रमाणीकरण चिह्न,
INDIA ORGANIC लोगो हेतु विनियमों के अधीन रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।

दिनांकित

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
DIRECTORATE GENERAL OF FOREIGN TRADE
PUBLIC NOTICE

New Delhi, the 21st July, 2004

No. 72 (RE-2003)/2002—2007

F. No. 01/91/180/000159/AM02/PC-III.—In exercise of the powers conferred under Paragraphs 2.4 and 2.29 of the Export and Import Policy, 2002—2007, the Director General of Foreign Trade hereby lays down the following procedures for export of certified organic products in supersession of earlier Public Notice No. 19, dated 11th June, 2001 and Public Notice No. 25, dated 2nd July, 2001 :—

“An agricultural product will be allowed to be exported as “Organic Product” only if it is produced, processed and packed under a valid Organic Certificate issued by a certifying agency duly accredited by the National Steering Committee for Organic Products (NSCOP) set up by the Ministry of Commerce & Industry (Department of Commerce). The Committee will function as the National Accreditation Body for the purpose of accreditation of inspection and certification agencies.”

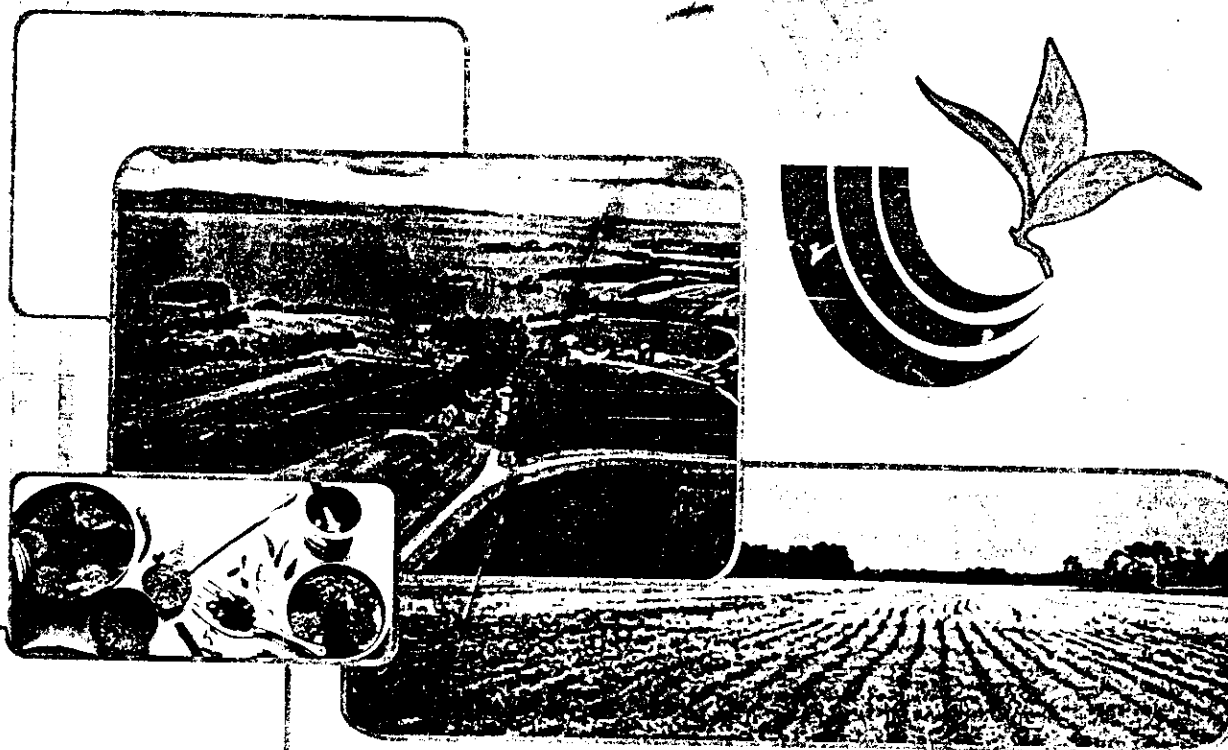
2. The inspection and certification agencies accredited till date by APEDA, Spices Board, Coffee Board and Tea Board shall be deemed to have been accredited by the NSCOP and will be under the control of National Accreditation Body for the purposes of accreditation of inspection and certification agencies for organic products.

3. The National Programme for Organic Production (NPOP) which has been published by Department of Commerce in June, 2004 with a view to ensure orderly development of organic agriculture is annexed to this Public Notice.

4. This issues in Public Interest.

GOPAL K. PILLAI, Director General of Foreign Trade

NATIONAL PROGRAMME FOR ORGANIC PRODUCTION



सत्यमेव जयते

DEPARTMENT OF COMMERCE
MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY
NEW DELHI

SECTION - I PREFACE DEFINITIONS

India with its varied agro-climatic conditions and agricultural biodiversity offers tremendous scope for cultivation and export of a wide range of organic products having great demand in a number of developed countries. To ensure focused and well-directed development of organic agriculture, Ministry of Commerce, Govt. of India launched the National Programme for Organic Production (NPOP) in 2000.

Subsequently, various components required to support this programme were developed and notified. These include national standards for production, processing, labeling, storage and transport of organic products. Systems, criteria and procedures for accreditation of certification and inspection programs by certification agencies to facilitate authentic organic certification, were also evolved. More recently, a national organic logo, "India Organic" was also developed which would be used on certified organic products. The logo and the regulations governing its use have also been launched by the Government.

The National Steering Committee (NSC) set up under the Chairmanship of the Secretary Commerce with representatives from other concerned Ministries, Govt. Departments and autonomous bodies finalised all the above documentation and has also been continuously monitoring progress of the National Programme. Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority (APEDA) was entrusted with the coordination work.

All the components of the programme have, now, been consolidated into a single book titled "National Programme for Organic Production" to facilitate easy reference. These documents, compiled by APEDA with the assistance of their technical consultants, Biotech Consortium India Ltd., New Delhi, were considered and approved by the NSC. It is expected that this compilation will serve as a useful reference book for the organic producers, processors, traders, exporters, importers, inspection and certification agencies in India as well as similar international organizations abroad.

SECTION – 1

DEFINITIONS

ACCREDITATION:

Accreditation means Registration by the Accreditation Agency for certifying organic farms, products and processes as per the National Standards for Organic Products and as per the guidelines of the National Accreditation Policy and Programme for organic products.

ACCREDITATION AGENCY:

Shall be the agency set up by the Steering Committee for National Programme for Organic Production for accrediting Inspection and Certifying Agencies.

ACCREDITED PROGRAMME:

Means programme of accrediting Inspection and Certification Agencies which have been accredited by the Accreditation Agency and which have agreed to comply with the Accreditation contract.

ANNUAL REPORT:

Means the report on operators, products and processors submitted annually to the Accreditation Agency by the accredited Inspection and Certification Agencies.

APPEAL:

Shall be the process by which an Inspection and Certification Agency can request reconsideration of a decision taken by the Accreditation Agency or an operator can request reconsideration of a decision by the Certification Agency.

APPLICANT:

Shall be the Inspection and Certification Agency that has applied for Accreditation to the Accreditation Agency.

CERTIFICATE:

Would mean a document issued by an accredited agency declaring that the operator is carrying out the activities or the stated products have been produced in accordance with the specified requirements in accordance with the National Standards for Organic Products.

CERTIFICATE OF REGISTRATION:

Shall mean the document issued by the Inspection and Certification Agency, declaring that the operator is licensed to use the certificate on specified products.

CERTIFICATION:

Shall be the procedure by which a written assurance is given by the Certification Agency that a clearly identified production or processing system has been methodically assessed and conforms to the specified requirements.

CERTIFICATION MARK:

Shall mean certification programme's sign, symbol or logo which identifies the products as being certified according to the National Standards for Organic Products.

CERTIFICATION PROGRAMME:

Shall mean the system operated by an Inspection and Certification Agency in accordance with the criteria for carrying out certification of conformity as laid down herein.

CERTIFICATION TRANSFERENCE:

The formal recognition by an Inspection and Certification Agency of another Certification programme or Agency or projects or products certified by that programme or Agency, for the purpose of permitting its own certified operators to trade or process under the programme's own certification mark, the products which are certified by the other programme.

COMPETENT AUTHORITY:

Shall mean the official government agency for accreditation.

CONSULTANCY:

Shall mean the advisory service for organic operations, independent from inspection and certification procedures.

CONVENTIONAL:

Farming systems dependent on input of artificial fertilizers and/or chemicals and pesticides or which are not in conformity with the basic standards of organic production.

CONVERSION:

The process of changing an agricultural farm from conventional to organic farm. This is also called transition.

CONVERSION PERIOD:

The time between the start of organic management, and the certification of crops as organic.

EVALUATION:

Shall be the process of systematic examination of the performance of an Inspection and Certification Agency to the extent it fulfills specific requirements under the National Accreditation Programme.

FARM UNIT:

An agricultural farm, area or production unit managed organically, by a farmer or a group of farmers.

FOOD ADDITIVE:

Any substance, added as supplement or as enrichment, influencing the keeping quality and consistency of a food product.

GUIDELINES FOR ORGANIC PRODUCTION AND PROCESSING:

Standards for organic production and processing established by the Accreditation Agencies for specific crops in accordance with the National Standards for Organic Products.

INGREDIENT:

Shall mean any substance, including a food additive, used in the manufacture or preparation of a food and present in the final product although possibly in a modified form.

INPUTS BANNED:

Those items, the use of which is prohibited in organic farming.

INPUT MANUFACTURING:

Shall mean the manufacturing of organic production or processing inputs.

INPUTS PERMITTED:

Those items that can be used in organic farming.

INPUTS RESTRICTED:

Those items that are allowed in organic farming, in a restricted manner, after a careful assessment of contamination risk, natural imbalance and other factors arising out of their use. Farmers should consult the certifying agency.

INSPECTION:

Shall include the site visit to verify that the performance of an operation is in accordance with the production or processing standards.

INSPECTION AND CERTIFICATION AGENCY:

Shall be the organization responsible for Inspection and Certification.

INSPECTION AGENCY:

Shall mean the agency that performs inspection services as per the National Accreditation Policy and Programme.

INSPECTOR:

Shall be the person appointed by the Inspection and Certifying Agency to undertake the inspection of an operator.

INTERNAL REVIEW:

Shall mean an assessment of the objectives and performance of a programme by the Certification or the Accreditation Agency itself.

LABELLING:

Shall mean any written, printed or graphic matter that is present on the label, accompanies the food, or is displayed near the food, including that for the purpose of promoting its sale or disposal.

LICENCE:

Shall be the Accreditation contract that grants a certifier the rights associated with its accredited status in line with the National Program for Organic Production.

LIVESTOCK:

Shall mean any domestic or domesticated animal including bovine (including buffalo and bison), ovine, porcine, caprine, equine, poultry and bees raised for food or in the production of food. The products of hunting or fishing of wild animals shall not be considered part of this definition.

MARKETING:

Shall mean holding for sale or displaying for sale, offering for sale, setting, delivering or placing on the market in any other form.

OPERATOR:

Shall mean an individual or a business enterprise practicing organic farming or organic processing.

ORGANIC:

Refers to a particular farming system as described in the standards and not to the term used in chemistry.

ORGANIC AGRICULTURE:

It is a system of farm design and management to create an eco system, which can achieve sustainable productivity without the use of artificial external inputs such as chemical fertilizers and pesticides.

PACKAGE OF PRACTICES:

Guidelines for organic production and processing established by the Accreditation Agencies for specific crops, specific to the region.

PARALLEL PRODUCTION:

Shall mean any production where the same unit is growing, breeding, handling or processing the same products both in a certified organic quality and a non-certified organic quality. Similarly a situation with "organic" and "in conversion" production of the same product is also parallel production.

PART CONVERSION:

Shall be when part of a conventional farm or unit has already been converted to organic production or processing and a part is in the process of conversion.

PLANT PROTECTION PRODUCT:

Shall mean any substance intended for preventing, destroying, attracting, repelling, or controlling any pest or disease including unwanted species of plants or animals during the production, storage, transport, distribution and processing of food, agricultural commodities, or animal feeds.

PREPARATION:

Shall mean the operations of slaughtering, processing, preserving and packaging of agricultural products and also alterations made to the labeling concerning the presentation of the organic production method.

PROCESSING AIDS:

A substance or material not consumed as a food ingredient by itself but used in the processing of raw materials, food or its ingredients to fulfil a certain technological purpose during treatment or processing and which may result in non intentional but unavoidable presence of residues or derivatives in the final product.

RAW MATERIALS:

All ingredients other than food additives.

STANDARDS:

Shall mean the standards for National Organic Products established by the Steering Committee for National Programme for Organic Production.

VETERINARY DRUG:

Shall mean any substance applied or administered to any food-producing animal, such as meat or milk-producing animals, poultry, fish or bees, whether used for therapeutic, prophylactic or diagnostic purposes or for modification of physiological functions or behaviour.

SECTION – 2

SCOPE AND OPERATIONAL STRUCTURE OF NATIONAL ORGANIC PROGRAMME

The National Programme for Organic Production proposes to provide an institutional mechanism for the implementation of National Standards for Organic Production, through a National Accreditation Policy and Programme. The aims of the National Programme for organic production, inter alia, include the following:

- (a) To provide the means of evaluation of certification programmes for organic agriculture and products as per the approved criteria.
- (b) To accredit certification programmes
- (c) To facilitate certification of organic products in conformity to the National Standards for Organic Products.
- (d) To encourage the development of organic farming and organic processing

2.1 SCOPE

The National Programme for Organic Production shall, amongst others, include the following:

- (a) Policies for development and certification of organic products
- (b) National standards for organic products and processes
- (c) Accreditation of programmes to be operated by Inspection and Certification Agencies
- (d) Certification of organic products

2.2 STRUCTURE

2.2.1 Operational Structure

The operational structure of the National Programme for Organic Production is given in Fig. 1. The programme will be developed and implemented by the Government of India through its Ministry of Commerce as the apex body. The Ministry will constitute a National Steering Committee for National Programme for Organic Production, whose members will be drawn from Ministry of Commerce, Ministry of Agriculture, Commodity Boards and other government and private organisations associated with the organic movement. To advise the National Steering Committee on relevant issues pertaining to National Standards and Accreditation, sub-committees will be appointed. The National Steering Committee for National Programme for Organic Production will formulate a National Accreditation Policy and Programme and draw up National Standards for Organic Products, which will include standards for organic production and processes as well as the regulations for use of the National Organic Certification Mark.

National Accreditation Policy and Programme will be administered by the National Accreditation Body, which will define the overall policy objectives for the Accreditation programmes and operations. The National Steering Committee may amend the Accreditation procedures whenever it deems fit. The National Accreditation Policy and Program is subject to periodic internal review, which will be conducted by the Technical Committee, which will advise the National Steering Committee about the need and content of such amendments in the National Programme for Organic Production.

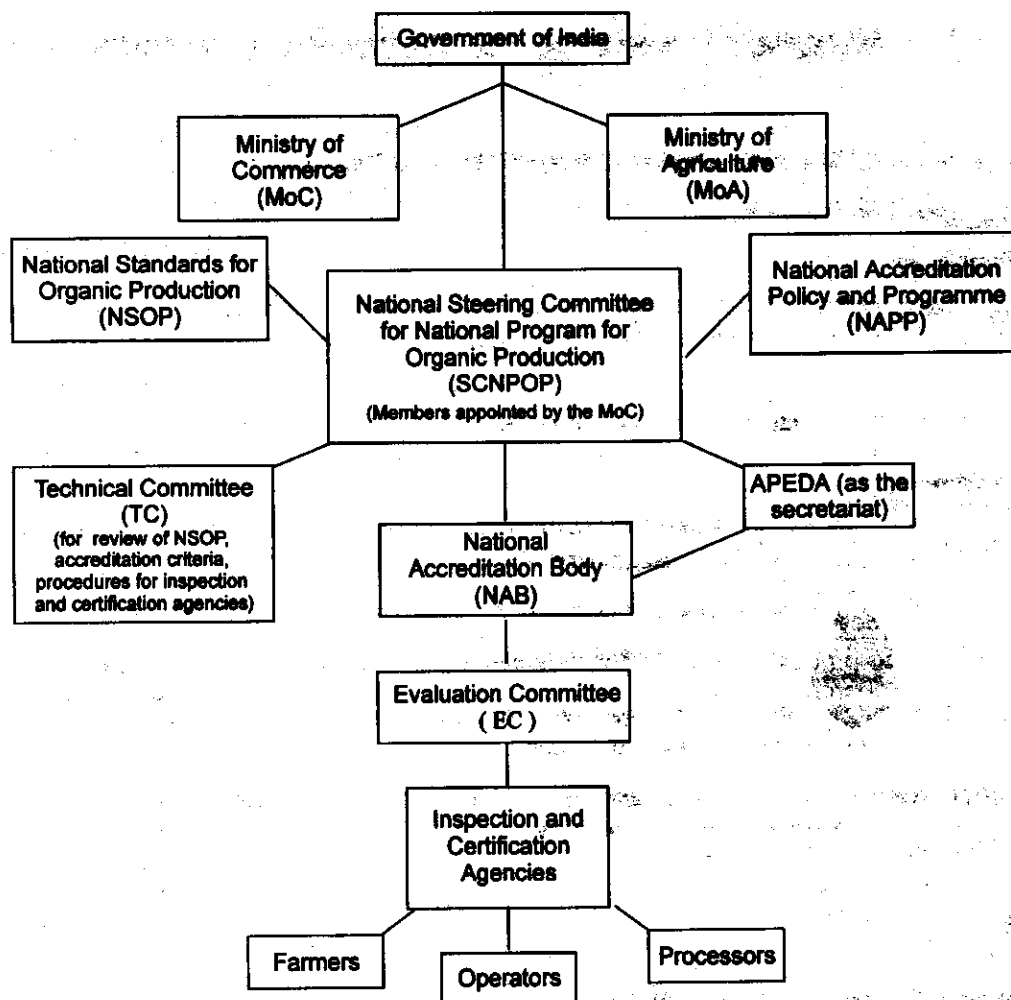
2.2.2 National Accreditation Body

The National Steering Committee would also function as the National Accreditation Body. The members of the National Accreditation Body shall comprise of representatives from Ministry of Agriculture, Ministry of Commerce and Commodity Boards. The Chairman of the Body shall be the Chairman of the National Steering Committee.

The work of the National Accreditation Body will involve:

- (a) Drawing up procedures for evaluation and Accreditation of certification programmes.
- (b) Formulating procedures for evaluation of the agencies implementing the programmes.
- (c) Accreditation of inspection and certification agencies

Every certifier will implement certification programme and a programme cannot be accredited without accrediting the certifier.

Fig. 1. Operational Structure of National Programme for Organic Production (NPOP)

2.2.3 Evaluation Committee

Eligible Inspection and Certification Agencies implementing certification programmes will be evaluated by an Evaluation Committee. The Evaluation Committee will be appointed by the National Accreditation Body. The members of the Evaluation Committee will comprise of members drawn from the Commodity Boards, Ministry of Agriculture and EIC/EIAs.

APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, will receive and screen applications from the certification agencies, will coordinate and arrange evaluation visits etc. to ascertain the credentials of certification programmes of the applicants. The Evaluation Committee, will submit its recommendations to the National Accreditation Body for considering accreditation.

2.2.4 Accredited Inspection and Certification Agencies

Based on the recommendations of the Evaluation Committee, suitable inspection and Certification Agencies will be accredited by the National Accreditation Body. These agencies should be well versed with the procedures, the NSOP and the international standards. Their programmes should have been in operation for at least one year and they should be able to provide the supporting documents.

2.2.5 Inspectors

The inspectors, appointed by the accredited Inspection and Certification Agencies will carry out inspection of the operations through records maintained by the operators as per specified formats and also by periodic site inspection. Based on compliance with the standards and certification programmes, accredited inspection and Certification Agencies will certify the organic status of products and operations, stating their conditions and recommendations.

SECTION – 3

NATIONAL STANDARDS FOR ORGANIC PRODUCTION

3.1 OROP PRODUCTION AND ANIMAL HUSBANDRY IN GENERAL

3.1.1 Conversion Requirements

General Principles

Organic agriculture means a process of developing a viable and sustainable agro-ecosystem. The time between the start of organic management and certification of crops and/or animal husbandry is known as the conversion period.

The whole farm, including livestock, should be converted according to the standards over a period of three years.

Recommendations

For a sustainable agro-ecosystem to function optimally, diversity in crop production and animal husbandry must be arranged in such a way that all the elements of the farming management interplay.

Conversion may be accomplished over a period of time. A farm may be converted step by step.

The totality of the crop production and all animal husbandry should be converted to organic management.

There should be a clear plan of how to proceed with the conversion. This plan shall be updated if necessary and should cover all aspects relevant to these standards.

The certification programme should set standards for how different farming systems can be clearly separated in production as well as in documentation, and the standards should determine how to prevent a mix up of input factors and products.

Standards

3.1.1.1.

The standards requirements shall be met during the conversion period. All the standards requirements shall be applied on the relevant aspects from the beginning of the conversion period onward.

3.1.1.2.

If the whole farm is not converted, the certification programme shall ensure that the organic and conventional parts of the farm are separate and inspectable.

3.1.1.3.

Before products from a farm/project can be certified as organic, inspection shall have been carried out during the conversion period. The start of the conversion period may be calculated from the date of application to the certification programme or from the date of last application of unapproved farm inputs provided it can demonstrate that standards requirements have been met from that date of implementation.

For the length of conversion periods, please refer to sections 3.2.2 and 3.3.2.

3.1.1.4

Simultaneous production of conventional, in conversion and/or organic crops or animal products which cannot be clearly distinguished from each other, is not allowed.

3.1.1.5.

To ensure a clear separation between organic and conventional production, the certification programme shall inspect the whole production system, where appropriate.

3.1.1.6.

A full conversion period is not required where de facto full standards requirements have been met for several years and where this can be verified through several means and sources. In such cases inspection shall be carried out with a reasonable time interval before the first harvest.

3.1.2 Maintenance of Organic Management

General Principles

Organic certification is based on continuance.

Recommendations

The certification programme should only certify production which is likely to be maintained on a long-term basis.

Standards

3.1.2.1.

Converted land and animals shall not get switched back and forth between organic and conventional management.

3.1.3 Landscape

General Principles

Organic farming should contribute beneficially to the ecosystem.

Recommendations

Areas which should be managed properly and linked to facilitate biodiversity:

- Extensive grassland such as moorlands, reed land or dry land
- In general all areas which are not under rotation and are not heavily manured
- Extensive pastures, meadows, extensive grassland, extensive orchards, hedges, hedgerows, groups of trees and/or bushes and forest lines
- Ecologically rich fallow land or arable land
- Ecologically diversified (extensive) field margins
- Waterways, pools, springs, ditches, wetlands and swamps and other water rich areas which are not used for intensive agriculture or aqua production
- Areas with ruderal flora.

The certification programme shall set standards for a minimum percentage of the farm area to facilitate biodiversity and nature conservation.

Standards

3.1.3.1.

The certification programme shall develop landscape and biodiversity standards.

3.2 CROP PRODUCTION

3.2.1 Choice of Crops and Varieties

General Principles

All seeds and plant material should be certified organic.

Recommendations

Species and varieties cultivated should be adapted to the soil and climatic conditions and be resistant to pests and diseases.

In the choice of varieties genetic diversity should be taken into consideration.

Standards

3.2.1.1

When organic seed and plant materials are available, they shall be used. The certification programme shall set time limits for the requirement of certified organic seed and other plant material.

3.2.1.2.

When certified organic seed and plant materials are not available, chemically untreated conventional materials shall be used.

3.2.1.3.

The use of genetically engineered seeds, pollen, transgene plants or plant material is not allowed.

3.2.2 Duration of Conversion Period**General Principles**

The establishment of an organic management system and building of soil fertility requires an interim period, the conversion period. The conversion period may not always be of sufficient duration to improve soil fertility and re-establish the balance of the ecosystem but it is the period in which all the actions required to reach these goals are started.

Recommendations

The duration of the conversion period must be adapted to:

- the past use of the land
- the ecological situation

Standards

3.2.2.1.

Plant products produced can be certified organic when the national standards requirements have been met during a conversion period of at least two years before sowing or in the case of perennial crops other than grassland, at least three years (thirty-six months) before the first harvest of products. The accredited inspection and certification agency may decide in certain cases (such as idle use for two years or more) to extend or reduce the conversion period in the light of previous status of the land but the period must equal or exceed twelve months.

3.2.2.2.

The conversion period can be extended by the certification programme depending on e.g. past use of the land and environmental conditions.

3.2.2.3.

The certification programme may allow plant products to be sold as "produce of organic agriculture in process of conversion" or a similar description during the conversion period of the farm.

3.2.2.4.

For the calculation of inputs for feeding, the feed produced on the farm unit during the first year of organic management, may be classed as organic. This refers only to feed for animals which are themselves being produced within the farm unit and such feed may not be sold or otherwise marketed as organic. Feed produced on the farms in accordance with the national standards is to be preferred over conventionally grown, brought-in feeds.

3.2.3 Diversity in Crop Production**General Principles**

The basis for crop production in gardening, farming and forestry is consideration of the structure and fertility of the soil and surrounding ecosystem and to provide a diversity of species while minimising nutrient losses.

Recommendations

Diversity in crop production is achieved by a combination of :

- a versatile crop rotation with legumes
- an appropriate coverage of the soil during the year of production which diverse plant species

Standards

3.2.3.1.

Where appropriate, the certification programme shall require that sufficient diversity is obtained in time or

place in a manner that takes into account pressure from insects, weeds, diseases and other pests, while maintaining or increasing soil, organic matter, fertility, microbial activity and general soil health. For non perennial crops, this is normal, but not exclusive, achieved by means of crop rotation.

3.2.4 Fertilisation Policy

General Principles

Sufficient quantities of biodegradable material of microbial, plant or animal origin should be returned to the soil to increase or at least maintain its fertility and the biological activity within it.

Biodegradable material of microbial, plant or animal origin produced on organic farms should form the basis of the fertilisation programme.

Recommendations

Fertilisation management should minimise nutrient losses.

Accumulation of heavy metals and other pollutants should be prevented.

Non synthetic mineral fertilisers and brought in fertilisers of biological origin should be regarded as supplementary and not a replacement for nutrient recycling.

Adequate pH levels should be maintained in the soil.

Standards

3.2.4.1.

Biodegradable material of microbial plant or animal origin shall form the basis of the fertilisation programme.

3.2.4.2.

The certification programme shall set limitations to the total amount of biodegradable material of microbial, plant or animal origin brought onto the farm unit, taking into account local conditions and the specific nature of the crops.

3.2.4.3.

The certification programme shall set standards which prevent animal runs from becoming overmanured where there is a risk of pollution.

3.2.4.4.

Brought-in material (including potting compost) shall be in accordance with Appendices 1 and 2.

3.2.4.5.

Manures containing human excreta (faeces and urine) shall not be used on vegetation for human consumption.

3.2.4.6.

Mineral fertilisers shall only be used in a supplementary role to carbon based materials. Permission for use shall only be given when other fertility management practices have been optimised.

3.2.4.7.

Mineral fertilisers shall be applied in their natural composition and shall not be rendered more soluble by chemical treatment. The certification programme may grant exceptions which shall be well justified. These exceptions shall not include mineral fertilisers containing nitrogen (see Appendix 1).

3.2.4.8.

The certification programme shall lay down restrictions for the use of inputs such as mineral potassium, magnesium fertilisers, trace elements, manures and fertilisers with a relatively high heavy metal content and/or other unwanted substances, e.g. basic slag, rock phosphate and sewage sludge (Appendices 1 and 2).

3.2.4.9.

Chilean nitrate and all synthetic nitrogenous fertilisers, including urea, are prohibited.

3.2.5 Pest, Disease and Weed Management Including Growth Regulators

General Principles

Organic farming systems should be carried out in a way which ensures that losses from pests, diseases and weeds are minimised. Emphasis is placed on the use of a balanced fertilising programme, use of crops and varieties well-

adapted to the environment, fertile soils of high biological activity, adapted rotations, companion planting, green manures, etc.

Growth and development should take place in a natural manner.

Recommendations

Weeds, pests and diseases should be controlled by a number of preventive cultural techniques which limit their development, e.g. suitable rotations, green manures, a balanced fertilising programme, early and predrilling seedbed preparations, mulching, mechanical control and the disturbance of pest development cycles.

The natural enemies of pests and diseases should be protected and encouraged through proper habitat management of hedges, nesting sites etc.

Pest management should be regulated by understanding and disrupting the ecological needs of the pests.

An ecological equilibrium should be created to bring about a balance in the pest predator cycle.

Standards

3.2.5.1.

Products used for pest, disease and weed management, prepared at the farm from local plants, animals and micro-organisms, are allowed. If the ecosystem or the quality of organic products might be jeopardised, the Procedure to Evaluate Additional Inputs to Organic Agriculture (Appendix 3) and other relevant criteria shall be used to judge if the product is acceptable. Brand name products must always be evaluated.

3.2.5.2.

Thermic weed control and physical methods for pest, disease and weed management are permitted.

3.2.5.3.

Thermic sterilisation of soils to combat pests and diseases is restricted to circumstances where a proper rotation or renewal of soil cannot take place. Permission may only be given by the certification programme on a case by case basis.

3.2.5.4.

All equipment from conventional farming systems shall be properly cleaned and free from residues before being used on organically managed areas.

3.2.5.5.

The use of synthetic herbicides, fungicides, insecticides and other pesticides is prohibited. Permitted products for plant pest and disease control is listed in Appendix 2.

3.2.5.6

The use of synthetic growth regulators and synthetic dyes are prohibited.

3.2.5.7.

The use of genetically engineered organisms or products are prohibited.

3.2.5.8

Accredited certification programmes shall ensure that measures are in place to prevent transmission of pests, parasites and infectious agents.

3.2.6 Contamination Control

General Principles

All relevant measures should be taken to minimise contamination from outside and within the farm.

Recommendations

In case of risk or reasonable suspicion of risk of pollution, the certification programme should set limits for the maximum application levels of heavy metals and other pollutants.

Accumulation of heavy metals and other pollutants should be limited.

Standards

3.2.6.1.

In case of reasonable suspicion of contamination the certification programme shall make sure that an analysis

of the relevant products and possible sources of pollution (soil and water) shall take place to determine the level of contamination.

3.2.6.2.

For protected structure coverings, plastic mulches, fleeces, insect netting and silage rapping, only products based on polyethylene and polypropylene or other polycarbonates are allowed. These shall be removed from the soil after use and shall not be burnt on the farmland. The use of polychloride based products is prohibited.

3.2.7 Soil and Water Conservation

General Principles

Soil and water resources should be handled in a sustainable manner.

Recommendations

Relevant measures should be taken to prevent erosion, salination of soil, excessive and improper use of water and the pollution of ground and surface water.

Standards

3.2.7.1.

Clearing of land through the means of burning organic matter, e.g. slash-and-burn, straw burning shall be restricted to the minimum.

3.2.7.2

The clearing of primary forest is prohibited.

3.2.7.3.

Relevant measures shall be taken to prevent erosion.

3.2.7.4.

Excessive exploitation and depletion of water resources shall not be allowed.

3.2.7.5.

The certification programme shall require appropriate stocking rates which do not lead to land degradation and pollution of ground and surface water.

3.2.7.6.

Relevant measures shall be taken to prevent salination of soil and water.

3.2.8 Collection of Non Cultivated Material of Plant Origin and Honey

General Principles

The act of collection should positively contribute to the maintenance of natural areas.

Recommendations

When harvesting or gathering the products, attention should be paid to maintenance and sustainability of the ecosystem.

Standards

3.2.8.1.

Wild harvested products shall only be certified organic if derived from a stable and sustainable growing environment. Harvesting or gathering the product shall not exceed the sustainable yield of the ecosystem, or threaten the existence of plant or animal species.

3.2.8.2.

Products can only be certified organic if derived from a clearly defined collecting area, which is not exposed to prohibited substances, and which is subject to inspection.

3.2.8.3.

The collection area shall be at an appropriate distance from conventional farming, pollution and contamination.

3.2.8.4.

The operator managing the harvesting or gathering of the products shall be clearly identified and be familiar with the collecting area in question.

3.3 ANIMAL HUSBANDRY

3.3.1 Animal Husbandry Management

General Principles

Management techniques in animal husbandry should be governed by the physiological and ethological needs of the farm animals in question. This includes:

- That animals should be allowed to conduct their basic behavioural needs.
- That all management techniques, including those where production levels and speed of growth should be concerned, for the good health and welfare of the animals.

Recommendations

For welfare reasons the herd or flock size should not adversely affect the behavioural patterns of the animal.

Standards

3.3.1.1.

The certification programme shall ensure that the management of the animal environment takes into account the behavioural needs of the animals and provides for:

- Sufficient free movement
- Sufficient fresh air and natural daylight according to the needs of the animals
- Protection against excessive sunlight, temperatures, rain and wind according to the needs of the animals
- Enough lying and/or resting area according to the needs of the animal. For all animals requiring bedding, natural materials shall be provided.
- Ample access to fresh water and feed according to the needs of the animals
- Adequate facilities for expressing behaviour in accordance with the biological and ethological needs of the species.

No compounds used for construction materials or production equipment shall be used which might detrimentally affect human or animal health.

3.3.1.2.

All animals shall have access to open air and/or grazing appropriate to the type of animal and season taking into account their age and condition, to be specified by the certification programme.

The certification programme shall allow exceptions in cases where:

- *The specific farm or settlement structure prevents such access provided animal welfare can be guaranteed*
- *Areas where feeding of animals with carried fresh fodder is a more sustainable way to use land resources than grazing providing animal welfare is not compromised.*

Restrictions shall always include a time limit which shall be set for each exception.

Poultry and rabbits shall not be kept in cages.

Landless animal husbandry systems shall not be allowed.

3.3.1.3.

When the natural day length is prolonged by artificial lighting, the certification programme shall prescribe maximum hours respective to species, geographical considerations and general health of animals.

3.3.1.4.

Herd animals shall not be kept individually.

The certification programme may allow exceptions e.g. male animals, smallholdings, sick animals and those about to give birth.

3.3.2 Length of Conversion Period

General Principles

The establishment of organic animal husbandry requires an interim period, the conversion period.

Recommendations

The whole farm, including livestock, should be converted according to the standards set out in this document. Conversion may be accomplished over a period of time.

Replacement poultry should be brought onto the holding at the start of the production enterprise.

Standards

3.3.2.1.

Animal products may be sold as "product of organic agriculture" only after the farm or relevant part of it has been under conversion for at least twelve months and providing the organic animal production standards have been met for the appropriate time.

3.3.2.2.

The certification programme shall specify the length of time for which the animal production standards shall have been met. With regard to dairy and egg production this period shall not be less than 30 days.

3.3.2.3.

Animals present on the farm at the time of conversion may be sold for organic meat when the organic standards have been met for 12 months.

3.3.3 Brought-in Animals

General Principles

All organic animals should be born and raised on the organic holding.

Recommendations

Organic animal husbandry should not be dependent on conventional raising systems. When trading or exchanging livestock, it should preferably take place between organic farms or as part of a long term cooperation between specific farms.

Standards

3.3.3.1.

When organic livestock is not available, the certification programme shall allow brought-in conventional animals according to the following age limits:

- 2 day old chickens for meat production
- 18 week old hens for egg production
- 2 week old for any other poultry
- piglets up to six weeks and after weaning
- calves up to 4 weeks old which have received colostrum and are fed a diet consisting mainly of full milk.

Certification programmes shall set time limits (not exceeding 5 years) for implementation of certified organic animals from conception for each type of animal.

3.3.3.2.

Breeding stock may be brought in from conventional farms with a yearly maximum of 10% of the adult animals of the same species on the farm.

For brought-in breeding stock the certification programme shall allow a higher yearly maximum than 10% in the following cases and with specific time limits:-

- Unforeseen severe natural or man made events
- Considerable enlargement of the farm

- Establishment of a new type of animal production on the farm
- Small holdings

3.3.4 Breeds and Breeding

General Principles

Breeds should be chosen which are adapted to local conditions.

Breeding goals should not be in opposition to animal's natural behaviour and should be directed towards good health.

Recommendations

Breeding shall not include methods which make the farming system dependent on high technological and capital intensive methods.

Reproduction techniques should be natural.

Standards

3.3.4.1.

The certification programme shall ensure that breeding systems are based on breeds that can both copulate and give birth naturally.

3.3.4.2.

Artificial insemination is allowed.

3.3.4.3.

Embryo transfer techniques are not allowed in organic agriculture.

3.3.4.4.

Hormonal heat treatment and induced birth are not allowed unless applied to individual animals for medical reasons and under veterinary advice.

3.3.4.5.

The use of genetically engineered species or breeds are not allowed.

3.3.5 Mutilations

General Principles

The animals distinctive characteristics should be respected.

Recommendations

Species shall be chosen which do not require mutilation.

Exceptions for mutilations shall only be given so that suffering can be kept to the minimum.

Standards

3.3.5.1

Mutilations are not allowed.

The certification programme shall allow the following exceptions:

- Castrations
- Tail docking of lambs
- Dehorning
- Ringing
- Mulesing

Suffering shall be minimised and anaesthetics used where appropriate.

3.3.6 Animal Nutrition

General Principles

The livestock should be fed 100% organically grown feed of good quality.

All feed shall come from the farm itself or be produced within the region.

The diet shall be offered to the animals in a form allowing them to execute their natural feeding behaviour and digestive needs.

Recommendations

The diet should be balanced according to the nutritional needs of the animals.

Products from the organic food processing industry shall be used.

Colouring agents shall not be used in organic livestock production.

Standards

3.3.6.1.

The certification programme shall draw up standards for feed and feed ingredients.

3.3.6.2.

The prevailing part (at least more than 50%) of the feed shall come from the farm unit itself or shall be produced in co-operation with other organic farms in the region.

The certification programme shall allow exceptions with regard to local conditions under a set of time limit for implementation.

3.3.6.3.

For the calculation purpose only, feed produced on the farm unit during the first year of organic management, may be classed as organic. This refers only to feed for animals which are themselves being produced within the farm unit and such feed may not be sold or otherwise marketed as organic (as 4.2.4).

3.3.6.4.

Where it proves impossible to obtain certain feeds from organic farming sources, the certification programme shall allow a percentage of feed consumed by farm animals to be sourced from conventional farm. The maximum percentages of such feeds are given in the following table and shall be calculated in terms of the average diet for each animal category. These maximum percentages shall be followed the whole year round:

Ruminants (dry matter intake)	15%
-------------------------------	-----

Non-ruminants (dry matter intake)	20%
-----------------------------------	-----

These percentages will be reduced within 5 years to

Ruminants (dry matter)	10%
------------------------	-----

Non-ruminants (dry matter)	15%
----------------------------	-----

The certification programme shall allow exceptions to these percentages, with specific time limits and conditions in the following cases:

- *Unforeseen severe natural or man-made events*
- *Extreme climatic or weather conditions*
- *Areas where organic agriculture is in early stages of development*

3.3.6.5.

The following products shall not be included nor added to the feed given to farm animals:

- Synthetic growth promoters or stimulants
- Synthetic appetisers
- Preservatives, except when used as a processing aid
- Artificial colouring agents
- Urea
- Farm animal by-products (e.g. abattoir waste) to ruminants
- Droppings, dung or other manure (all types of excreta) even if technologically processed

- Feed subjected to solvent (e.g. hexane), extraction (soya and rape seed meal) or the addition of other chemical agents
- Pure amino acids
- Genetically engineered organisms or products thereof

This covers both organic and conventional feeding stuffs.

3.3.6.6.

Vitamins, trace elements and supplements shall be used from natural origin when available in appropriate quantity and quality.

The certification programme shall define conditions for use of vitamins and minerals from synthesised or unnatural sources.

3.3.6.7.

All ruminants shall have daily access to roughage.

3.3.6.8.

The following fodder preservatives shall be used:

- Bacteria, fungi and enzymes
- By-products of food industry (e.g. molasses)
- Plant based products

Synthetic chemical fodder preservatives shall be allowed in special weather conditions. The certification programme shall specify conditions for use of substances from synthesised or unnatural sources e.g. acetic, formic and propionic acid, vitamins and minerals.

3.3.6.9.

The certification programme shall set minimum weaning times taking into account the natural behaviour of the relevant animal species.

3.3.6.10.

Young stock from mammals shall be raised using systems which rely on organic milk, preferably from their own species.

In emergencies the certification programme shall allow the use of milk from non-organic farming systems or dairy based milk substitutes so long as they do not contain antibiotics or synthetic additives.

3.3.7 Veterinary Medicine

General Principles

Management practices should be directed to the well being of animals, achieving maximum resistance against disease and preventing infections.

Sick and injured animals shall be given prompt and adequate treatment.

Recommendations

Natural medicines and methods, including homeopathy, ayurvedic, unani medicine and acupuncture, shall be emphasised.

When illness does occur the aim should be to find the cause and prevent future outbreaks by changing management practices.

Where appropriate the certification programme should set conditions based on the farm's veterinary records to minimise the use of medicines.

The certification programme should make a list of medicines specifying the withholding periods.

Standards

3.3.7.1.

The well-being of the animals is the primary consideration in the choice of illness treatment. The use of

conventional veterinary medicines are allowed when no other justifiable alternative is available.

3.3.7.2.

Where conventional veterinary medicines are used, the withholding period shall be at least double the legal period.

3.3.7.3.

Use of the following substances is prohibited :

- Synthetic growth promoters
- Substances of synthetic origin for production stimulation or suppression of natural growth
- Hormones for heat induction and heat synchronisation unless used for an individual animal against reproductive disorders, justified by veterinary indications

3.3.7.4.

Vaccinations shall be used only when diseases are known or expected to be a problem in the region of the farm and where these diseases cannot be controlled by other management techniques. The certification programme shall define conditions for such cases.

Legally required vaccinations are allowed.

Genetically engineered vaccines are prohibited.

3.3.8 Transport and Slaughter

General Principles

Transport and slaughter should minimise stress to the animal. Transport distance and frequency should be minimised.

The transport medium should be appropriate for each animal.

Recommendations

Animals should be inspected regularly during transport.

Animals should be watered and fed during transport depending on weather conditions and duration of the transport.

Stress to the animal shall be minimised, especially taking into consideration:

- Contact (by eye, ear or smell) of each animal with dead animals or animals in the killing process
- Existing group ties
- Resting time to release stress

Each animal shall be stunned before being bled to death. The equipment used for stunning should be in good working order. Exceptions can be made according to cultural practice. Where animals are bled without prior stunning this should take place in a calm environment.

Standards

3.3.8.1.

Throughout the different steps of the process there shall be a person responsible for the well-being of the animal.

3.3.8.2.

Handling during transport and slaughter shall be calm and gentle. The use of electric sticks and such instruments are prohibited.

3.3.8.3.

The certification programme shall set slaughter and transportation standards that will take into consideration:

- Stress caused to the animal and person in charge
- Fitness of the animal
- Loading and unloading
- Mixing different groups of animals or animals of different sex

- Quality and suitability of mode of transport and handling equipment
- Temperatures and relative humidity
- Hunger and thirst
- Specific needs of each animal

3.3.8.4.

No chemical synthesised tranquillisers or stimulants shall be given prior to or during transport.

3.3.8.5.

Each animal or group of animals shall be identifiable during all steps.

3.3.8.6.

Where the transport is by axle, the journey time to the slaughterhouse shall not exceed eight hours.

Certification programmes may grant exceptions on a case by case basis.

3.3.9 Bee Keeping

General Principles

The collection area should be organic and/or wild and should be as varied as possible to fulfil the nutritional needs of the colony and contribute to good health.

The feed supplied should be fully organic.

Bee keeping is considered to be part of animal husbandry. The general principles therefore also apply to bee keeping.

Recommendations

The feeding of colonies shall be seen as an exception to overcome temporary feed shortages due to climatic conditions.

The foundation comb should be made from organic wax.

When bees are grown in wild areas, consideration should be taken of the indigenous insect population.

Standards

3.3.9.1.

Hives shall be situated in organically managed fields and/or wild natural areas. Hives shall not be placed close to fields or other areas where chemical pesticides and herbicides are used.

Exceptions can be made by certification bodies on a case by case basis.

3.3.9.2.

Feeding shall only take place after the last harvest before the season when no foraging feed is available.

3.3.9.3.

Each bee hive shall primarily consist of natural materials. Use of construction materials with potentially toxic effects are prohibited.

3.3.9.4.

Persistent materials may not be used in beehives where there is a possibility of permeation of the honey and where residues may be distributed in the area through dead bees.

3.3.9.5.

Wing clipping is not allowed

3.3.9.6.

Veterinary medicine shall not be used in bee keeping.

When working with the bees (e.g. at harvest) no repellent consisting of prohibited substances shall be used.

3.3.9.7.

For pest and disease control and for hive disinfection the following products shall be allowed:

- caustic soda
- lactic, oxalic, acetic acid
- formic acid
- sulphur
- etheric oils
- bacillus thuringiensis

3.4 FOOD PROCESSING AND HANDLING

3.4.1 General

General Principles

Any handling and processing of organic products should be optimised to maintain the quality and integrity of the product and directed towards minimising the development of pests and diseases.

Recommendations

Processing and handling of organic products should be done separately in time or place from handling and processing of non organic products.

Pollution sources shall be identified and contamination avoided.

Flavouring extracts shall be obtained from food (preferably organic) by means of physical processes.

Standards

3.4.1.1.

Organic products shall be protected from co-mingling with non-organic products.

3.4.1.2.

All products shall be adequately identified through the whole process.

3.4.1.3.

The certification programme shall set standards to prevent and control pollutants and contaminants.

3.4.1.4.

Organic and non-organic products shall not be stored and transported together except when labelled or physically separated.

3.4.1.5.

Certification programme shall regulate the means and measures to be allowed or recommended for decontamination, cleaning or disinfection of all facilities where organic products are kept, handled, processed or stored.

3.4.1.6.

Besides storage at ambient temperature, the following special conditions of storage are permitted (See Appendix 4):

- Controlled atmosphere
- Cooling
- Freezing
- Drying
- Humidity regulation

Ethylene gas is permitted for ripening.

3.4.2 Pest and Disease Control

General Principles

Pests should be avoided by good manufacturing practices. This includes general cleanliness and hygiene.

Treatments with pest regulating agents must thus be regarded as the last resort.

Recommendations

Recommended treatments are physical barriers, sound, ultra-sound, light, and UV-light, traps (incl. pheromone

traps and static bait traps), temperature control, controlled atmosphere and diatomaceous earth.

A plan for pest prevention and pest control should be developed.

Standards

3.4.2.1.

For pest management and control the following measures shall be used in order of priority:

- Preventive methods such as disruption, elimination of habitat and access to facilities
- Mechanical, physical and biological methods
- Pesticidal substances contained in the Appendices of the national standards
- Other substances used in traps

Irradiation is prohibited.

3.4.2.2.

There shall never be direct or indirect contact between organic products and prohibited substances. (e.g. pesticides). In case of doubt, it shall be ensured that no residues are present in the organic product.

3.4.2.3.

Persistent or carcinogenic pesticides and disinfectants are not permitted.

The certification programme shall set up rules to determine which protection agents and disinfectants may be used.

3.4.3 Ingredients, Additives and Processing Aids

General Principles

100% of the ingredients of agriculture origin shall be certified organic.

Recommendations

For the production of enzymes and other micro-biological products the medium shall be composed of organic ingredients.

The certification programme should take into consideration:

- The maintenance of nutritional value
- The existence or possibility of producing similar products.

Standards

3.4.3.1.

In cases where an ingredient of organic agriculture origin is not available in sufficient quality or quantity, the certification programme may authorise use of non organic raw materials subject to periodic re-evaluation. Such non-organic raw material shall not be genetically engineered.

3.4.3.2.

The same ingredient within one product shall not be derived both from an organic and non-organic origin.

3.4.3.3.

Water and salt may be used in organic products.

3.4.3.4.

Minerals (including trace elements), vitamins and similar isolated ingredients shall not be used.

The certification programme may, grant exceptions where use is legally required or where severe dietary, or nutritional deficiency can be demonstrated.

3.4.3.5.

Preparations of micro-organisms and enzymes commonly used in food processing may be used, with the exception of genetically engineered micro-organisms and their products.

3.4.3.6.

The use of additives and processing aids shall be restricted.

3.4.4 Processing Methods

General Principles

Processing methods should be based on mechanised, physical and biological processes.

The vital quality of an organic ingredient shall be maintained throughout each step of its processing.

Recommendations

Processing methods shall be chosen to limit the number and quantity of additives and processing aids.

Standards

3.4.4.1.

The following kinds of processes are approved :

- Mechanical and physical
- Biological
- Smoking
- Extraction
- Precipitation
- Filtration

3.4.4.2.

Extraction shall only take place with water, ethanol, plant and animal oils, vinegar, carbon dioxide, nitrogen or carboxylic acids. These shall be of food grade quality, appropriate for the purpose.

3.4.4.3.

Irradiation is not allowed.

3.4.4.4.

Filtration substances shall not be made of asbestos nor may they be permeated with substances which may negatively affect the product.

3.4.5 Packaging

General Principles

The use of material for packaging shall be eco-friendly.

Recommendations

Unnecessary packaging materials should be avoided.

Recycling and reusable systems shall be used wherever possible.

Biodegradable packaging materials shall be used.

Standards

3.4.5.1.

Material used for packaging shall not contaminate food.

3.4.5.2.

The certification programme shall have a policy to reduce the environmental effects of packaging material.

3.5 LABELLING

General Principles

Labelling shall convey clear and accurate information on the organic status of the product.

Recommendations

When the full standards requirements are fulfilled, products shall be sold as "produce of organic agriculture" or a similar description.

The name and address of the person or company legally responsible for the production or processing of the product shall be mentioned on the label.

Product labels should list processing procedures which influence the product properties in a way not immediately obvious.

Additional product information shall be made available on request. All components of additives and processing aids shall be declared.

Ingredients or products derived from wild production shall be declared as such.

Standards

3.5.1.1.

The person or company legally responsible for the production or processing of the product shall be identifiable.

3.5.1.2.

Single ingredient products may be labelled as "produce of organic agriculture" or a similar description when all Standards requirements have been met.

3.5.1.3.

Mixed products where not all ingredients, including additives, are of organic origin may be labelled in the following way (raw material weight):

- Where a minimum of 95% of the ingredients are of certified organic origin, products may be labelled "certified organic" or similar and should carry the logo of the certification programme.
- Where less than 95% but not less than 70% of the ingredients are of certified organic origin, products may not be called "organic". The word "organic" may be used on the principal display in statements like "made with organic ingredients" provided there is a clear statement of the proportion of the organic ingredients. An indication that the product is covered by the certification programme may be used, close to the indication of proportion of organic ingredients.
- Where less than 70% of the ingredients are of certified organic origin, the indication that an ingredient is organic may appear in the ingredients list. Such product may not be called "organic".

3.5.1.4.

Added water and salt shall not be included in the percentage calculations of organic ingredients.

3.5.1.5.

The label for conversion products shall be clearly distinguishable from the label for organic products.

3.5.1.6.

All raw materials of a multi-ingredient product shall be listed on the product label in order of their weight percentage. It shall be apparent which raw materials are of organic certified origin and which are not. All additives shall be listed with their full name.

If herbs and/or spices constitute less than 2% of the total weight of the product, they may be listed as "spices" or "herbs" without stating the percentage.

3.5.1.7.

Organic products shall not be labelled as GE (genetic engineering) or GM (genetic modification) free in order to avoid potentially misleading claims about the end product. Any reference to genetic engineering on product labels shall be limited to the production method.

3.6 STORAGE & TRANSPORT

General Principles

Product integrity should be maintained during storage and transportation of organic products.

Recommendations

Organic Products must be protected at all times from co-mingling with non-organic products.

Organic products must be protected at all times from contact with materials and substances not permitted for use in organic farming and handling.

Standards

3.6.1

Where only part of the unit is certified and other products are non-organic, the organic products should be stored and handled separately to maintain their identity.

3.6.2

Bulk stores for organic product should be separate from conventional product stores and clearly labeled to that effect.

3.6.3

Storage areas and transport containers for organic product should be cleaned using methods and materials permitted in organic production. Measures should be taken to prevent possible contamination from any pesticide or other treatment not listed in Appendix – 2.

Appendix 1**Products for Use in Fertilising and Soil Conditioning**

In organic agriculture the maintenance of soil fertility may be achieved through the recycling of organic material whose nutrients are made available to crops through the action of soil micro-organisms and bacteria.

Many of these inputs are restricted for use in organic production. In this appendix "restricted" means that the conditions and the procedure for use shall be set by the certification programme. Factors such as contamination, risk of nutritional imbalances and depletion of natural resources shall be taken into consideration.

Matter Produced on an Organic Farm Unit

- | | |
|--|-----------|
| • Farmyard & poultry manure, slurry, urine | Permitted |
| • Crop residues and green manure | Permitted |
| • Straw and other mulches | Permitted |

Matter Produced Outside the Organic Farm Unit

- | | |
|---|---|
| • Blood meal, meat meal, bone meal and feather meal without Preservatives | Restricted |
| • Compost made from any carbon based residues (animal excrement including poultry) | Restricted |
| • Farmyard manure, slurry, urine | Restricted (preferably after control fermentation and/or appropriate dilution) "factory" farming sources not permitted. |
| • Fish and fish products without preservatives | Restricted |
| • Guano | Restricted |
| • Human excrement | Not allowed |
| • By-products from the food and textile industries of biodegradable material of microbial, plant or animal origin without any synthetic additives | Restricted |
| • Peat without synthetic additives (prohibited for soil conditioning) | |
| • Sawdust, wood shavings, wood provided it comes from untreated wood | |
| • Seaweed and seaweed products obtained by physical processes, extraction with water or aqueous acid and/or alkaline solution | Restricted |
| • Sewage sludge and urban composts from separated sources which are monitored for contamination | Restricted |
| • Straw | Restricted |
| • Vermicasts | Restricted |
| • Animal charcoal | Restricted |
| • Compost and spent mushroom and vermiculate substances | Restricted |
| • Compost from organic household refuse | Restricted |
| • Compost from plant residues | |
| • By products from oil palm, coconut and cocoa (including empty fruit bunch, palm oil mill effluent (pome), cocoa peat and empty cocoa pods) | Restricted |
| • By products of industries processing ingredients from organic agriculture | Restricted |

Minerals

• Basic slag	Restricted
• Calcareous and magnesium rock	Restricted
• Calcified seaweed	
• Calcium chloride	
• Calcium carbonate of network origin (chalk, limestone, gypsum and phosphate chalk)	
• Mineral potassium with low chlorine content (e.g. sulphate of potash, kainite, sylvinite, patenkali)	Restricted
• Natural phosphates (e.g. Rock phosphates)	Restricted
• Pulverised rock	Restricted
• Sodium chloride	
• Trace elements (baron, In, Fe, Mn, molybdenum, Zn)	Restricted
• Woodash from untreated wood	Restricted
• Potassium sulphate	Restricted
• Magnesium sulphate (Epson salt)	
• Gypsum (calcium sulphate)	
• Stillage and stillage extract	Ammonium Stillage excluded
• Aluminum calcium phosphate	Restricted
• Sulphur	Restricted
• Stone mill	Restricted
• Clay (bentonite, perlite, zeolite)	

Microbiological Preparations

- Bacterial preparations (biofertilizers)
- Biodynamic preparations
- Plant preparations and botanical extracts
- Vermiculite
- Peat

"Factory" farming refers to industrial management systems that are heavily reliant on veterinary and feed inputs not permitted in organic agriculture.

Appendix 2

Products for Plant Pest and Disease Control

Certain products are allowed for use in organic agriculture for the control of pests and diseases in plant production. Such products should only be used when absolutely necessary and should be chosen taking the environmental impact into consideration.

Many of these products are restricted for use in organic production. In this appendix "restricted" means that the conditions and the procedure for use shall be set by the certification programme.

I. Substances from plant and animal origin

• Azadiracta indica [neem preparations (neem oil)]	Restricted
• Preparation of rotenone from <i>Derris elliptica</i> , <i>Lonchocarpus</i> , <i>Thephrosia spp.</i>	Restricted
• Gelatine	
• Propolis	Restricted
• Plant based repellents [neem preparations, (Azadiractin) from <i>Azadirachta indica</i>]	
• Preparation on basis of pyrethrins extracted from <i>Chrysanthemum cinerariaefolium</i> , containing possibly a synergist pyrethrum cinerifolium	Restricted
• Preparation from <i>Quassia amara</i>	Restricted
• Release of parasite predators of insect pests	Restricted
• Preparation from <i>Ryania species</i>	Restricted
• Tobacco tea (pure nicotine is forbidden)	Restricted
• Lecithin	Restricted
• Casein	
• Sea weeds, sea weed meal, sea weed extracts, sea salt and salty water	Restricted
• Extract from mushroom (Shitake fungus)	
• Extract from <i>Chlorella</i>	
• Fermented product from <i>Aspergillus</i>	Restricted
• Natural acids (vinegar)	Restricted

II. Minerals

• Chloride of lime/soda	Restricted
• Burgundy mixture	Restricted
• Clay (e.g. bentonite, perlite, vermiculite, zeolite)	
• Copper salts / inorganic salts (Bordeaux mix, copper hydroxide, copper oxychloride) as a fungicide	Restricted
• Mineral powders (stone meal, silicates)	Not allowed
• Diatomaceous earth	Restricted
• Light mineral oils	Restricted
• Permanganate of potash	Restricted
• Lime sulphur (calcium polysulphide)	Restricted

• Silicates	Restricted
• Sodium bicarbonate	
• Sulphur (as a fungicide, acaricide, repellent)	Restricted
III. Microorganism used for biological pest control	
• Viral, fungal and bacterial preparations (biopesticides)	Restricted
IV. Others	
• Sterilised insects	Restricted
• Carbon dioxide and nitrogen gas	Restricted
• Soft soap (potassium soap)	
• Ethyl alcohol	Not allowed
• Homeopathic and Ayurvedic preparations	
• Herbal and biodynamic preparations	
• Sterilized insect males	Not allowed
V. Traps	
• Chromatic traps	
• Mechanical traps	
• Pheromones - in traps and dispensers only	

Appendix 3**Procedure to Evaluate Additional Inputs to Organic Agriculture**

Appendices 1 & 2 refer to products for fertilising of the soil and control of plant pest and diseases in organic agriculture. But there may well be other products which may be useful and appropriate for use in organic agriculture which may not fall under these headings. Appendix 3 outlines the procedure to evaluate other inputs into organic production.

The following checklist should be used for amending the permitted substance list for fertilising the soil conditioning purposes:

- The material is essential for achieving or maintaining soil fertility or to fulfil specific nutrient requirements, for specific soil-conditioning and rotation purposes which cannot be satisfied by the practises outlined in Chapter 4 or of other products included in Appendix 1
- and
- The ingredients are of plant, animal, microbial or mineral origin which may undergo the following processes:
 - physical (mechanical, thermal)
 - enzymatic
 - microbial (composting, digestion)
- and
- Their use does not result in, or contribute to, unacceptable effects on, or contamination of, the environment, including soil organisms
- Their use has no unacceptable effect on the quality and safety of the final product

The following checklist should be used for amending the permitted substance list for the purpose of plant disease or pest and weed control:

- The material is essential for the control of a harmful organism or a particular disease for which other biological, physical or plant breeding alternatives and/or effective management techniques are not available
- and
- The substances (active compound) should be plant, animal, microbial or mineral origin which may undergo the following processes:
 - physical
 - enzymatic
 - microbial
- and
- Their use does not result in, or contribute to, unacceptable effects on, or contamination of, the environment.
- Nature identical products such as pheromones, which are chemically synthesised may be considered if the products are not available in sufficient quantities in their natural form, provided that the conditions for their use do not directly or indirectly contribute to contamination of the environment or the product.

Evaluation

When an input is to be evaluated it must first be investigated by certification programmes to see whether it fulfils the following six criteria. An input must fulfil all 6 requirements before it can be accepted as suitable for use in organic agriculture.

Inputs should be evaluated regularly and weighed against alternatives. This process of regular evaluation should result in organic production becoming ever more friendly to humans, animals, environment and the ecosystem.

1. NECESSITY

The necessity of each input must be established. This will be investigated in the context in which the product will be used.

Arguments to prove the necessity of an input may be drawn from such criteria as yield, product quality, environmental safety, ecological protection, landscape, human and animal welfare.

The use of an input may be restricted to:

- Specific crops (especially perennial crops)
- Specific regions
- Specific conditions under which the input may be used

2. NATURE AND WAY OF PRODUCTION

Nature

The origin of the input should usually be (in order of preference):

- Organic - vegetative, animal, microbial
- Mineral

Non-natural products which are chemically synthesised and identical to natural products may be used.

When there is any choice, renewable inputs are preferred. The next best choice is inputs of mineral origin and the third choice is inputs which are chemically identical to natural products. There may be ecological, technical or economic arguments to take into consideration in the allowance of chemically identical inputs.

Way of Production

The ingredients of the inputs may undergo the following processes:

- Mechanical
- Physical
- Enzymatic
- Action of micro-organisms
- Chemical (as an exception and restricted)

Collection

The collection of the raw materials comprising the input must not affect the stability of the natural habitat nor affect the maintenance of any species within the collection area.

3. ENVIRONMENT

Environmental Safety

The input must not be harmful or have a lasting negative impact on the environment. Nor should the input give rise to unacceptable pollution of surface or ground water, air or soil. All stages during processing, use and breakdown must be evaluated.

The following characteristics of the input must be taken into account:

Degradability

All inputs must be degradable to their mineral form.

Inputs with a high acute toxicity to non-target organisms should have a maximum half-life of five days.

Natural substances used as inputs which are not considered toxic do not need to be degradable within a limited time.

Acute toxicity to non-target organisms

When inputs have a relatively high acute toxicity for non-target organisms, restrictions for their use is needed. Measures have to be taken to guarantee the survival of these non-target organisms. Maximum amounts allowed

for application may be set. When it is not possible to take adequate measures, the use of the input must not be allowed.

Long-term chronic toxicity

Inputs which accumulate in organisms or systems of organisms and inputs which have, or are suspected of having, mutagenic or carcinogenic properties must not be used. If there are any risks, sufficient measures have to be taken to reduce any risk to an acceptable level and to prevent long lasting negative environmental effects.

Chemically synthesised products and heavy metals

Inputs should not contain harmful amounts of man made chemicals (xenobiotic products). Chemically synthesised products may be accepted only if identical to the natural product.

Mineral inputs should contain as few heavy metals as possible. Due to the lack of any alternative, and long-standing, traditional use in organic agriculture, copper and copper salts are an exception for the time being. The use of copper in any form in organic agriculture must be seen, however, as temporary and use must be restricted with regard to environmental impact.

4. HUMAN HEALTH AND QUALITY

Human Health

Inputs must not be harmful to human health. All stages during processing, use and degradation must be taken into account. Measures must be taken to reduce any risks and standards set for inputs used in organic production.

Product quality

Inputs must not have negative effects on the quality of the product - e.g. taste, appearance and quality.

5. ETHICAL ASPECTS - ANIMAL WELFARE

Inputs must not have a negative influence on the natural behaviour or physical functioning of animals kept at the farm.

6. SOCIO ECONOMIC ASPECTS

Consumers' perception: Inputs should not meet resistance or opposition of consumers of organic products. An input might be considered by consumers to be unsafe to the environment or human health, although this has not been scientifically proven. Inputs should not interfere with a general feeling or opinion about what is natural or organic - e.g. genetic engineering.

Appendix 4

List of Approved Ingredients of Non Agricultural Origin and Processing Aids Used In Food Processing

Food Additives and Carriers¹

Int'l Numbering System	Product	Product Group	Limitation / Note
INS 170	Calcium carbonate	GA	
INS 220	Sulphur dioxide	W	
INS 224	Potassium metabisulphite	W	
INS 270	Lactic acid	FV	Concentrated fruit / veg. juice & fermented veg. Products Sauages, fermented vegetables products
INS 296	Malic acid	-	
INS 290	Carbon dioxide	GA	
INS 300	Ascorbic acid	FV	If not available in natural form
INS 306	Tocopheroles, mixed natural concentrates	GA	
INS 322	Lecithin	GA	Obtained without use of bleaches and organic solvents
INS 330	Citric acid	FV	Concentrated fruit / veg. juice jam, fermented veg. prod.
		W	Restricted to 1 gm/l
INS 335	Sodium citrates	ME	
INS 336	Potassium citrates	ME	
INS 400	Aliginic acid		
INS 401	Sodium aliginate		
INS 402	Potassium		
INS 333	Calcium citrates	ME	
INS 334	Tartaric acid	W	
INS 335	Sodium tartrate	CO/CB	
INS 336	Potassium tartrate	C/CO/CB	
INS 341	Mono calcium phosphate	C	For raising flour only
INS 342	Ammonium phosphate	W	Restricted to 0.3 gm/l
INS 406	Agar	GA	
INS 407	Carrageenan	GA	Milk products
INS 410	Locust bean gum	GA	Milk products / meat production
INS 412	Guar gum	GA	

¹ Food additives may contain carriers which shall be evaluated

INS 413	Tragacanth gum	GA	
INS 414	Arabic gum	MI/F/CO	Milk, fat and confectionary products
INS 415	Xanthan gum	F/FV/CB	
INS 416	Karaya gum		
INS 440	Pectin	GA	Unmodified (Milk products)
INS 500	Sodium carbonates	CO/CB	Milk products neutralizing substances
INS 501	Potassium carbonates	C/CO/CB	Drying of grape resins
INS 503	Ammonium carbonates	C/CO/CB	
INS 504	Magnesium carbonates	C/CO/CB	
INS 508	Potassium chloride	FV/SA	Only frozen & canned fruit/veg., veg. sauces, ketchup, mustard
INS 509	Calcium chloride	MI/F/FV/SO	Milk products / meat products / fat products / fruits & vegetables / soyabean products
INS 511	Magnesium chloride	SO	Soyabean products
INS 516	Calcium sulphate	CB/SO	Restricted
		C	Only in bakers' yeast
INS 517	Ammonium sulphate	W	Restricted to 0.3 gm/1
INS 524	Sodium hydroxide	C	
INS 938	Argon	GA	
INS 941	Nitrogen	GA	
INS 948	Oxygen	GA	

Key - list of abbreviations used in above tables:

GA - Greasing /releasing agent	M - milk products	F - fat products
ME - meat products	C - cereal products	FV - fruit/vegetable products
W - wine	S - sugar	CO - confectionery
CB - cakes and biscuits		SO - soybean products

Flavouring Agents

- Volatile (essential) oils produced by means of solvents such as oil, water, ethanol, carbon dioxide and mechanical and physical processes
- Natural smoke flavour
- Use of natural flavouring preparations should be approved on the national procedure to evaluate additives and processing aids based on NSOP guidelines (Appendix 3).

Preparations of Micro-organisms

- Preparations of micro-organisms accepted for use in food processing. Genetically modified organisms are excluded.
- Bakers yeast produced without bleaches and organic solvents.

Processing Aids and Other Products

Int'l Numbering System	Product	Product Group	Limitation / Note
INS 153	Wood ash		Traditional cheeses
INS 170	Calcium carbonate	GA	Milk products. Not as colouring agents
INS 181	Tannin	W	
INS 184	Tannic Acid	W	Filtration aid
INS 220	Sulphur dioxide	W	
INS 270	Lactic acid	ME	Milk products, coagulation agent, pH regulation of salt batch for cheese, sausages
			casings
INS 290	Carbon dioxide	GA	
INS 322	Lecithin	CO/CB	Greasing agent, obtained without the use of bleaches or organic solvents. Milk products / milk based infant food / fat products / mayonnaise
INS 501	Potassium carbonate	FV/W	
INS 513	Sulphuric acid	S	pH adjustment of water in sugar production Isopropanol for sugar crystallization process Restricted
INS 516	Calcium sulphate	GA	Coagulation agent
INS 524	Sodium hydroxide	S	pH adjustment against sugar production
INS 334-7	Tartaric acid & salts	W	
INS 500	Sodium carbonate	S	
INS 511	Magnesium chloride	SO	For soybean products
INS 551	Silicon dioxide	W/T/FV	As gel or colloidal solution as anticaking agent for herbs and spices
INS 553	Talc	GA	
INS 901	Beeswax	GA	Releasing agent
INS 903	Carnauba wax	GA	Releasing agent
INS 941	Nitrogen	GA	
	Activated carbon	GA	
	Asbestos free filter materials	GA	
	Bentonite	FV/W	

Casein	W	
Diatomaceous earth	S/FV	
Egg white albumen	W	
Ethanol	GA	Solvent
Gelatine	FV/W	
Isinglass	W	
Kaolin	GA	Extraction of propolis
Perlite	GA	
Preparations of bark	S	
Vegetable oils	GA	Greasing or releasing agent
Glycerol as plant extracts		Restricted
Beet sugar		Restricted

Preparations of Micro-organisms and Enzymes

These may be used as processing aids with approval based on the national procedure to Evaluate Additives and Processing Aids for Organic Food Products.

Key - list of abbreviations used in above tables:

GA - Greasing /releasing agent

M - milk products

F - fat products

ME - meat products

C - cereal products

FV - fruit/vegetable products

W - wine

S - sugar

CO - confectionery

CB - cakes and biscuits

SO - soybean products

Ingredients

- Drinking water
- Salt
- Minerals (including trace elements) and vitamins where their use is legally required or where severe dietary or nutritional deficiency can be demonstrated.

Appendix 6**Approved Products for Packaging of Organic Foodstuffs**

Certain products are allowed for use in organic agricultural for packaging of foodstuffs, however, many of these are restricted for use in organic production. In this appendix "restricted" means that the conditions and procedures for use shall be set by the accredited certification programme.

Use of plastics for packaging of organic foodstuffs

S. No.	Products	Limitation
1.	4,4'-Bis(2-benzoxazolyl)stilbene	Restricted
2.	9,9-Bis(methoxymethyl)fluorine	Restricted
3.	Carbonic acid, copper salt	Restricted
4.	Diethyleneglycol	Restricted
5.	2-(4,6-Diphenyl-1,3,5-triazin-2-yl)-5-(hexyloxy)phenol	Restricted
6.	Ethylenediaminetetraacetic acid, copper salt	Restricted
7.	2-(2-Hydroxy-3,5-di-tert-butyl-phenyl-5-chlorobenzotriazole	Restricted
8.	2-Methyl-4-isothiazolin-3-one	Restricted
9.	Phosphoric acid, trichloroethylester	Restricted
10.	Polyesters of 1,2 propanediol and/or 1,3-and 1, 4 butanediol and/or polypropyleneglycol with adipic acid, also end-capped with acetic acid or fatty acids C10-C18 or n-octanol and/or n-decanol	Restricted
11.	1,1,1-Trimethylolpropane	Restricted
12.	3-hydroxybutanoic acid 3-hydro xypentanoic acid, copolymer	Restricted

Appendix 7

List of Approved Feed Materials, Feed Additives and Processing Aids for Animal Nutrition

1. **Feed Materials from Plant Origin**
 - Cereals grains, their products and by products
 - Oilseeds, oil fruits, their products and by products
 - Legume seed, their products and by products
 - Tuber roots, their products and by products
 - Other seeds and fruits
 - Forages and roughages
 - Molasses

As a binding agent
2. **Feed Material as an Animal Origin**
 - Milk and milk products
 - Fish, other marine animals, their products and by products
3. **Feed Material from Mineral Origin**

Restricted

 - Sea salt, rock salt
 - Sodium sulphate
 - Sodium carbonate
 - Sodium bicarbonate
 - Sodium chloride
 - Calcium carbonate
 - Calcium lactate
 - Calcium gluconate
 - Bone dicalcium phosphat precipitate
 - Defluorinated dicalcium phosphate
 - Defluorinated monocalcium phosphate
 - Anhydrous magnesia
 - Magnesium sulphate
 - Magnesium chloride
 - Magnesium carbonate
4. **Trace Elements**

Feed additives

 - Iron
 - Iodine
 - Cobalt
 - Manganese
 - Zinc
 - Molybdenum
 - Selenium
5. **Vitamins**

Restricted
6. **Enzymes**

Restricted
7. **Micro-organisms**

Restricted
8. **Preservatives**

For silage

 - E-336 Formic acid
 - E-260 Acetic acid
 - E-270 Lactic acid
 - E-280 Propionic acid
9. **Binders, anti-caking agent and coagulants**
 - E-551b Colloidal silica

- E-551c Kieselgur
- E-553 Sepiolite
- E-558 Bentonite
- E-559 Kaolinitic clays
- E-561 Vermiculite
- E-599 Perlite

10. Processing aids for silage

- Sea salt
- Coarse rock salt
- Enzymes
- Yeasts
- Sugar
- Sugar beet pulp
- Cereal flour
- Molasses
- Lactic

Appendix 8

**Products Authorized for Cleaning and Disinfection
of Livestock Buildings and Installations**

- Potassium and sodium soap
- Water and steam
- Milk of lime
- Lime
- Quicklime
- Sodium hypochlorite (e.g. as liquid bleach)
- Caustic potash
- Hydrogen peroxide
- Natural essences of plants
- Citric, peracetic acid, formic, lactic, oxalic and acetic acid
- Alcohol
- Nitric acid (diary equipment)
- Phosphoric acid (dairy equipment)
- Formaldehyde
- Sodium carbonate

SECTION – 4

ACCREDITATION OF INSPECTION AND CERTIFICATION AGENCIES

A. ACCREDITATION REGULATIONS

1. SHORT TITLE & COMMENCEMENT

- (a) These regulations shall be called the Accreditation Regulation 2001 under the National Organic Programme for organic production.
- (b) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- (c) These Regulations shall apply to all certifying agencies in India which propose to engage, or are already engaged before the commencement of these Regulations, in the certification of production and processing of organic crops/products under these Accreditation Agencies as organic.

2. SCOPE OF ACCREDITATION

- (a) These Regulations shall apply to all certifying agencies whether they are individuals, firms, co-operatives, societies which are already engaged, or which propose to engage in the work of certifying organic crops/products, who must comply with ISO Guide 65.
- (b) No Certificate granted by a certifying agency in respect of products as organic shall be valid unless the agency is accredited by the National Accreditation Body authorised by the Ministry of Commerce, Government of India.
- (c) The National Accreditation Body if it is satisfied that it is necessary or expedient in public interest to do so with the approval of the Central Government, by notification in the official gazette, add or delete any other products or processes to be brought under the scope of these regulations.
- (d) The National Accreditation Body will follow the criteria defined in the Accreditation criteria for inspection and certification agency as specified under section 3 of these regulations.
- (e) Govt. of India shall have absolute right for revision of the Accreditation criteria, as and when deemed appropriate by it after following the necessary procedure as laid down under section 3 of these regulations.

3. COMMITTEE FOR ACCREDITATION

- (a) The National Steering Committee would also function as the National Accreditation Body. After the evaluation of the agency, the National Accreditation Body would consider accreditation of the inspection and certification agency.
- (b) The Committee for Accreditation shall comprise of representatives from Ministry of Agriculture, Ministry of Commerce, Commodity Boards. The Chairman would be the chairman of the National Steering Committee. The appellate authority would be the Commerce Secretary.
- (c) The Committee shall meet as and when necessary and the quorum for any such meeting shall be six. If required, the issues for Accreditation by the committee can also be decided through circulation. The committee shall conduct at least two meetings in a year.
- (d) The said Committee for Accreditation shall have the authority to conduct random or surprise field inspections, including analysis of samples drawn from the certified operators' (producer groups) farms.

4. APPLICATION FOR ACCREDITATION

- (a) Applicants seeking Accreditation, as an Agency or renewal thereof shall submit an application to the authorized officer in the form prescribed, available with APEDA along with fee prescribed for the purpose and specified in these Regulations.

5. ACCREDITATION FEE

- (a) An applicant shall deposit an Accreditation fee of Rs. 15, 000/- along with the application form for Accreditation for the first year. The fee shall be in the form of a bank draft in favour of APEDA payable at New Delhi. The National Accreditation Body however, shall have the right to revise the said fee from time to time.

Provided further that in the event of non-approval of Accreditation by the National Accreditation Body constituted for the purpose, the fee paid shall be refunded after deducting 25% thereof towards processing charges.

- (b) The Certificate of Accreditation will be valid for a period of 3 years from the date of issue of Certificate of Accreditation.
- (c) For renewal of certificate of Accreditation there shall be a renewal fee of Rs. 10, 000/- for a period of 3 years, which shall be remitted with the application for renewal.

6. ALLOCATION OF ACCREDITATION NUMBER

All Accredited Inspection and Certification Agencies shall be allotted a specific Accreditation number, which cannot be transferred or reassigned.

7. APPROVAL/NON-APPROVAL OF ACCREDITATION

- (a) On receipt of the application duly filled in all respects, together with the prescribed fee, APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, shall conduct a preliminary screening of all the applications. If the application is found in order, the APEDA shall arrange for field evaluation by the Evaluation Committee nominated by the National Accreditation Body. The National Accreditation Body shall consider the application, after reviewing the evaluation report submitted by the Evaluation Committee. In case the applicant fulfills the prescribed criteria with a reasonable tariff structure for inspection and certification, the Committee shall give approval to the Certifying Agency.
- (b) The National Accreditation Body may, if it considers appropriate, give opportunity to the applicant to fulfill / rectify any deficiencies (tariff structure, inadequacy in manpower, resources and operations) found during the evaluation.
- (c) In the case of non-approval, the same shall be intimated to the applicant in writing along with reasons thereof.
- (d) The Certificate of Accreditation shall be valid for a period of three years from the date of issue.

8. ACCREDITATION CONTRACT

- (a) On approval of Accreditation, APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, shall inform the Certifying Agency about the approval along with a copy of the prescribed Accreditation contract. The Certifying Agency shall execute the contract on a non-judicial stamp paper of the value intimated to the applicant, within fifteen days, from the date of receipt of approval.
- (b) On receipt of the Contract duly signed by the authorised person of the Certifying Agency, APEDA shall issue the Certificate of Accreditation within a period of fifteen days, from the date of receipt of the contract.

9. UPDATION & RENEWAL OF ACCREDITATION

Accredited Inspection and Certifying Agencies will have to undergo an annual updating procedure on the lines similar to the initial Accreditation procedure for renewal of Accreditation:

- (a) APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, shall be entitled for renewal of the certificate for a block of three years on payment of a sum of Rs. 10, 000.00, which is to be paid along with an application for renewal, which shall be filed by the Certifying Agency 30 days before the expiry of the Accreditation period.
- (b) Application for renewal of Accreditation along with the fees prescribed shall be submitted by the Certifying Agency to reach the Authorized Officer 30 days before the expiry of Accreditation period.
- (c) The Chairman of APEDA shall, however, have the power to condone any delay in submitting the said renewal application, in the events of a reasonable cause shown for the same.
- (d) The renewal of the certificate for Accreditation shall be based on the past performance of the Inspection and Certifying Agency and the National Accreditation Body shall have the right to renew or reject such applications, at their absolute discretion.
- (e) In the event of rejection of an application for renewal, APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, shall furnish the reasons for such rejections, in writing.
- (f) Chairman of the National Accreditation Body shall be the Appellate Authority for deciding any appeal filed on account of any such rejection.

- (g) The Ministry of Commerce, Govt. of India, shall be the competent Authority for entertaining all appeals. Decisions on such appeal shall be final and binding on both the parties.

10. POWER TO ISSUE GUIDELINES

- (a) APEDA, on behalf of the National Accreditation Body, shall have the powers to issue necessary guidelines to the Certifying Agencies for inspection and certification programmes, from time to time.

11. LOGO

The logo used under the certification programme will be called "India Organic". This shall be the seal used on all the certified organic products, which would identify that the product is organically produced and originates from India.

12. USE OF LOGO

- (a) All Accredited Agencies shall be entitled to use this logo for certified organic products. Use of the logo will be based on the fulfillment of the terms and conditions, contained under these regulations.
- (b) Products marketed by any person can bear the National Organic Logo, only if the necessary certification is done by an Inspection and Certification Agency accredited by the National Accreditation Body.

13. SUSPENSION/ TERMINATION OF ACCREDITATION

The Certificate of Accreditation granted to an agency shall be liable to be suspended for a specific period or permanently terminated in the event of violation of any of the clauses under these regulations and of such other directions issued by the National Accreditation Body or Govt. of India from time to time.

Provided that in case of suspension, the National Accreditation Body shall have the powers to nominate any other Certification Agency to continue the work of certification in order to protect the interest of the operators.

14. APPEALS AND REVISION OF AWARD ON APPEALS

- (a) An appeal in respect of such suspension and/ or termination of the Certificate of Accreditation shall lie with the Chairman of the National Accreditation Body. The appeal shall be filed within a period of 30 days from the date of issue of suspension / termination by the National Accreditation Body.
- (b) The Ministry of Commerce, Govt. of India shall be the competent Authority for revision of the decision of the Appellate Authority. The revision shall be filed within 30 days from the date of issue of award on the appeal. However, the said periods for filing an appeal/revision condoned by the Respective Authority, in the event of a reasonable cause being shown.

15. AMENDMENT TO REGULATION

The National Accreditation Body may with the prior approval of the National Steering Committee delete, amend or modify any of the clauses contained in these Regulations.

16. JURISDICTION

In case of any disputes arising out of these Regulations, guidelines and or the conditions and directions issued by the Govt. of India and National Accreditation Body from time to time, only the court situated within the territorial jurisdiction of the National Accreditation Body, shall have the jurisdiction to try and entertain the same.

17. CATEGORIES FOR ACCREDITATION

Accreditation shall be granted for each category of products as follows:

- (a) Organic agricultural production
- (b) Organic processing operations
- (c) Wild products
- (d) Forestry
- (e) Organic animal production and processing

The Certifying Agencies applying for Accreditation should be actively engaged in programmes related to organic agriculture movement/production and their programmes should have been in operation for at least one year.

18. RECIPROCITY

18.1 National

Products certified organic by any Accredited Certifying Agency as per NPOP will be accepted as organic by the other Certifying Agencies also.

18.2 International

For imported organic products, the authority for approval will be the National Accreditation Body. It will decide on the recommendations of the Inspection and Certification Agencies or in the event of an equivalency agreement to grant a license based on such equivalency agreement. It will notify a list of such Inspection and Certifying Agencies.

Organic products certified under the exporting countries' organic standards require to be re-certified for import. Any Inspection and Certification Agency which wishes to re-certify any imported product or products with imported certified ingredients are required to apply to the National Accreditation Body for inclusion of such products and the procedure for their certification in the certification programme.(MOU)

19. STANDARDS

19.1 The National Standards for Organic Products

Inspection and Certification Agencies shall follow the National Standards for Organic Products under the National Programme for Organic Production notified under the FTDR Act. These standards will be reviewed by the Technical committee periodically. Revisions and amendments will be made as and when required. The amendments will be proposed to the National Steering Committee for consideration. After approval by the National Steering Committee, the amendments will be carried out under the National Programme for Organic Production. The accredited Inspection and Certification Agencies will be allowed a certain phase-in period before the amendments/revisions become effective.

19.2 Guidelines for Organic Production and Processing

Guidelines for specific crops in accordance with the National Standards for organic Products will be prepared by the concerned departments (Ministry of Agriculture and Commodity Boards) and will be submitted to the National Steering Committee for approval.

19.3 Package of Practices

Package of practices for specific crops, specific to the region in accordance with the National Standards for Organic Products will be prepared by Ministry of Agriculture and Ministry of Commerce.

20. ISSUE OF CERTIFICATES.

The accredited Inspection and Certification Agency will issue Scope Certificates, Product Certificates and Transaction Certificates certifying compliance to the National Organic Standards based on reports of inspection.

B. ACCREDITATION CRITERIA

The criteria defined in this document is based on recommendations by the National Steering Committee of Govt. of India for National Programme for Organic Production. These criteria along with the National Standards for Organic Products will cover the requirements to be fulfilled by agencies seeking Accreditation for themselves and for the organic programmes operated by them under ISO Guide 65. Evaluation of the certification programmes, details of the procedure of inspection, the process of certification and the redressal of grievances regarding certification are also covered under the Accreditation criteria for organic programmes.

1. APPLICATION OF THE CRITERIA

These criteria are to be followed for approving accredited programmes certifying organic agriculture, products and processes according to these programmes. However, the National Accreditation Body may grant provisional Accreditation setting out conditions for fulfillment of some of the criteria within a specified time following Accreditation. The time limit will depend upon the factors such as:

- degree of deviation from the criteria.
- safeguards within the certification programme that may minimize problems related to non compliance of the criteria.

- the general development of organic agriculture in the region.
- the regulatory framework within which the certification programme operates.
- any special circumstances.

These conditions and the timetable shall form the part of the Accreditation contract.

If the number and degree of non-compliance are substantial the National Accreditation Body will deny the Certificate of Accreditation or withhold Accreditation, pending action taken by the applicant programme to attend complaints with the criteria.

If the National Accreditation Body decides that in the context of all the policies and performance of a programme, non-compliance within a particular criterion is not of serious consequence, it may recommend full adherence to the criterion without making it a condition of accreditation. Such recommendation, however, may be changed into mandatory conditions on re-evaluation or when changes in the programme are made.

2. REVISION OF ACCREDITATION CRITERIA

The Accreditation criteria may be revised from time to time as may be considered necessary based on proposals made by interested parties or other sources to National Accreditation Body.

Ministry of Commerce reserves the right to make changes in the Accreditation criteria if the development of the Accreditation programme, international harmonization activities or other relevant factors may deem necessary.

All applicant and accredited certification programmes and other interested parties and regulatory authorities may be consulted in the process of amendment of the Accreditation criteria.

The final deciding authority on changes to the criteria will be the Ministry of Commerce.

All applicant and accredited certification programmes and agencies will be informed of any changes.

The implementation of the revised criteria will come into force on the day of its notification. Applicant programmes that have already been evaluated before the date of implementation of the revised criteria will be assessed according to the previous criteria.

3. GENERAL ACCREDITATION CRITERIA

Accredited Inspection and Certifying Agencies shall operate based on the following criteria:

3.1 Competence

The Inspection and Certifying Agencies shall have adequate resources, sound financial management and shall demonstrate professional competence based on adequate training and experience of its officers and personnel. Standards, inspection and certification shall cover all relevant aspects of products and production methods.

3.2 Independence

The Inspection and Certifying Agencies shall have structures and procedures to enable it to be free to operate without undue influence from vested interests or otherwise.

3.3 Accountability and Responsibility

The officers and personnel of the Agency shall be accountable by having clear lines of authority. The Agency shall take full responsibility for all activities operated by its own officers and personnel and/or sub contracted within its system.

3.4 Objectivity

The Inspection and Certifying Agency shall be impartial. Inspection and certification shall be based on an objective assessment of relevant factors, as documented under section 4 of the NPOP document. The programme shall have procedures for consideration of appeals.

3.5 Credibility

The Inspection and Certifying Agencies shall take all adequate measures to ensure that there is no misuse of its licenses, certificates and marks of conformity.

3.6 Quality Improvement and Internal Review

The Inspection and Certifying Agencies shall provide adequate arrangements for continuous quality improvement and have adequate procedures for evaluation of its development and performance. It shall have procedures for dealing with complaints and the remedial actions taken relative to the certification process.

3.7 Access to Information

Production standards, organizational structures, financial sources, rules and procedures for granting of certification, training arrangements for personnel, procedural records, and similar information shall be published or made available, as deemed appropriate. A list of certified producers shall also be published.

3.8 Confidentiality

The Inspection and Certifying Agencies shall have adequate arrangements to ensure confidentiality of information regarding specific operators, (certified in the course of its certification activities) at all organization levels, including committees and contracted agencies.

3.9 Participation

The Inspection and Certifying Agencies shall provide adequate procedures for enabling input from affected parties.

3.10 Non-discrimination

The policies and procedures under which the Inspection and Certifying Agencies operate and their administration shall be non-discriminatory and shall be administered without reference to race, national background, religious affiliation, gender, age or marital status.

4. SPECIFIC CRITERIA FOR ACCREDITATION

For each relevant criteria, the evaluation of the certification programme not only assesses the theoretical content, but also the practical application of the policies and procedures. This shall demonstrate a high degree of competence, consistency and effectiveness. The general requirements for assessment and accreditation of the certification programme would be based on the ISO Guide 61.

It is recognized that new programmes, and programmes operating in economically less favoured areas may have difficulty in fulfilling all the "formal" criteria. Changes may be required to suit cultural and social conditions and traditions. In such cases, the National Accreditation Body will take such factors into consideration for certification, provided that the integrity of organic production and certification is maintained and that the general criteria are met.

5. GENERAL PROVISIONS FOR INSPECTION AND CERTIFYING AGENCIES

5.1 Application of Procedures

Inspection and Certification Agencies shall demonstrate a high degree of competence, consistency and effectiveness in the practical application of their procedures.

5.2 Adherence to Regulations

The Inspection and Certifying Agencies should adhere to relevant governmental and regional regulations.

5.3 Registration

The Inspection and Certifying Agencies shall have always to display such documents, which provide its legal and official status.

The Inspection and Certifying Agencies shall have documents, which demonstrate its ownership or control of the certification mark, when such a mark exists.

5.4 Structure

The Inspection and Certifying Agencies shall have a documented structure of operations, which safeguards impartiality, including provisions to ensure the impartiality of the operations of the Inspection and Certifying Agencies. This structure shall enable the participation of all parties significantly concerned in the development of policies and principles regarding the content and functioning of the certification system.

When activities are delegated to committees, such committees shall have clear responsibilities and rules of procedures.

The Inspection and Certification Agency shall have clear division of the functions of inspection, certification and appeals.

5.5 Regulation on Conflict of Interest

5.5.1 Declarations of interest

A declaration of interest by all persons involved in certification, inspection and appeals shall be placed on file in writing at the Inspection and Certification Agency's office.

5.5.2 Signed agreements

All such persons associated with the certification shall sign an agreement to abstain from any inspection or other decision-making in case they have any family, business, trade or advisory connection with the operator.

5.5.3 Exclusion

All persons with a potential conflicting or vested interest shall be excluded from work, discussions and decisions at all stages of the certification process relating to the potential conflict.

In the case of paid consultancy work undertaken by inspectors, such exclusion must apply for two years prior to inspection.

5.5.4 Payment of fees

The Inspection and Certifying Agencies shall be entitled to a certification fee from the operator. However, the payment of the said fee itself shall not ipso facto entitle the grant of Certificate to the operator and decision on the grant of the Certificate shall be independent of the payment of fees. All financial transactions of inspection and certification relating to domestic as well as exports will be charged in Indian currency.

5.6 Confidentiality

The Inspection and Certifying Agencies shall have adequate arrangements to ensure confidentiality of the information obtained in the course of its certification activities at all levels of its organization, including the establishment of a confidentiality policy and the requirement for all personnel to sign a confidentiality agreement.

5.7 Other Functions of the Certification Agency

5.7.1 General

The Inspection and Certifying Agencies shall not provide any product or service, which could compromise the confidentiality, objectivity or impartiality of its certification process and decision unless these are clearly separated in a manner that ensures that such compromise cannot occur. Inspection and Certifying Agencies shall ensure that activities of related agencies do not affect the confidentiality, objectivity and impartiality of its certifications.

5.7.2 Consultancy services provided to operators

The inspection and certification agencies accredited under NPOP shall not provide any consultancy services to operators.

Pre-assessment of production to identify areas of weakness and proposals for improvements may be done as part of the certification process.

The Inspection and Certifying Agencies may offer advice to the certified operators regarding compliance with organic standards, and this information shall be offered without any additional fee.

Generic information, training and advice through newsletters, seminars etc. may be offered to all certified operators in a non-discriminatory manner.

5.7.3 Marketing activities

Inspection and Certifying Agencies shall have a policy regarding referrals resulting from inquiries from the trade, promotional activities and other market related activities.

Such policy shall at least include:

- equal treatment of all certified operators

- that the Inspection and Certifying Agencies do not engage in the actual sales, pricing and other direct commercial activities.
- that the Inspection and Certifying Agencies do not solicit individual applications based on individual operator's needs.

5.8 Equity in Access and Non Discrimination

The Inspection and Certifying Agencies shall make its services accessible for all applicants whose activities fall within its declared field of application.

Certification requirements, inspections and decisions shall be confined to the scope of the certification being granted. Access shall not be conditional upon the size of the supplier or membership of any association or group, nor shall certification be conditional upon the number of certificates already issued.

Fee structure shall not unduly discriminate against operators of any special groups or on the basis of membership.

Application shall be open to all operators regardless of commercial considerations.

5.9 Membership Organizations

Inspection and Certifying Agencies that are run by membership organisations shall have identical requirements for membership and certification, or run the Inspection and Certifying Agencies as a clearly separated activity, without membership requirements.

5.10 Public Information

The Inspection and Certifying Agencies shall actively inform the public of the scope of its certification and the contents of the standards.

The Inspection and Certifying Agencies shall have a documented policy for public information. It shall at least include:

- Policies on which information is public and which is not.
- Standards and a general description of the Inspection and Certifying Agencies shall be available to the public.
- The Inspection and Certifying Agencies shall have a current public list of certified operators, including name and address (location). A listing of sub-licensed production must also be available although this may be a general list without linkage to the main licensee.
- The production of public reports on its certification activities, preferably in the format of an annual report.

6. MANAGEMENT

6.1 General

The Inspection and Certification Agencies shall:

- have the financial stability and resources required for the operation of a certification system.
- employ or contract sufficient number of personnel, including inspectors, who have the necessary education, training, technical knowledge and experience for performing certification functions relating to the type, range and volume of work performed.
- have resources to respond to queries, complaints, etc. within a reasonable time frame.
- have a documented description of its administration, including officers and responsibility.

6.2 Personnel

The Inspection and Certification Agencies shall have documented recruitment requirements for deploying its personnel regarding necessary education, training, technical knowledge and experience in organic agriculture and/or processing.

Documented information on the qualifications, training and experience of all personnel shall be maintained by the Inspection and Certification Agency.

Personnel shall be made available clear, up-to-date, documented instructions pertaining to their duties and responsibilities.

6.3 Subcontracting

When an Inspection and Certification Agency subcontracts work related to certification (e.g. inspection) to an external agency or person, an agreement covering the arrangements including confidentiality and conflict of interest shall be drawn up which shall be duly signed by both the parties.

The Inspection and Certification Agency before executing any such agreement shall ensure that the subcontracted agency or person is competent and complies with all applicable provisions of these criteria.

The Inspection and Certification Agency shall be fully responsible for such subcontracted work.

6.4 Documentation and Document Control

The Inspection and Certification Agencies shall maintain a system for the control of all documentation relating to the certification system and shall ensure that:

- The current issues of appropriate documentation are available at relevant locations.
- All changes of documents are corrected by the authorized persons.
- All changes are processed in a manner, which will ensure direct and speedy action.
- Superseded documents are removed from use throughout the organization and its agencies.
- All affected parties are notified of the changes.
- Documents shall be reissued when substantial amendments are made.
- A register of all appropriate documents with the respective issues shall be maintained.

6.5 Records

All records shall be safely stored and held secure and in confidence to the operator, for a minimum period of five years.

Inspection reports, certification decisions, certificates and other relevant records shall be signed by the authorized person.

The record keeping system shall be transparent and enable easy retrieval of information.

6.6 Quality Management and Internal Review

The Inspection and Certification Agencies shall conduct periodic internal inspection covering all procedures in a planned and systematic manner, to verify that the certification system is implemented and is effective.

The Inspection and Certification Agencies shall ensure that:

- personnel responsible for the area inspected are informed of the outcome of the inspection;
- corrective actions are taken in a timely and appropriate manner;
- the results of the inspection are documented.

The Inspection and Certifying Agency's management shall review its system at defined intervals records of such review shall be maintained.

7. STANDARDS

7.1 General

Inspection and Certification Agencies shall comply with the National Standards for Organic Products. Standards shall be presented in a way adapted to the language, capacity and knowledge of the operators. Standards shall be published for all production systems or product categories certified by the Inspection and Certification Agencies.

7.2 Standards Review

- The standards shall be reviewed regularly.
- The body responsible for review shall be the National Steering Committee for National Programme for Organic Production.
- The date of implementation of the standards shall be indicated in the standards.
- Where required, a time period shall be allowed for operators to implement major changes to the standards.
- Deadlines for implementation by the operators shall be clearly stated.

8. INSPECTION

8.1 General

The inspector shall have access to all relevant facilities, including accounts and other documentation of the operator.

The policies and procedures for inspection shall be documented and shall include:

- The basis for assignment of inspectors.
- Grounds for objection to inspection by operator.
- Instructions for inspection visits.
- Inspection methods and frequency.
- Inspection requirements.
- Sampling requirements.
- Instructions for preparation of reports.

8.2 Assignment

The inspector shall be assigned by the Inspection and Certifying Agencies.

Prior to the assignment of the inspector the Inspection and Certification Agency shall:

- ensure sufficient expertise needed for the actual inspection.
- exclude any possible conflict of interest.

Operators shall have neither the right to choose nor to recommend inspectors.

The operators shall have the right to be informed about the identity of the inspector before the inspection visit, and to raise objections related to any potential conflict of interest. This does not apply to unannounced inspections.

Continuous inspection by a single inspector for the same operator should be avoided.

8.3 Inspection Visit and Report

Sufficient information shall be made available to the inspectors about the operator to allow proper preparation by the inspector. This includes, among others, earlier inspection findings, a description of activities/processes, maps/plans, product specifications, and used inputs, earlier irregularities, infringements, conditions and disciplinary measures.

The visit and the questionnaires used during the inspection, and the reports emanating from the inspection, shall be comprehensive, covering all relevant aspects of the production standards and shall adequately validate the information provided.

Inspection and Certifying Agencies shall have access to any non-organic production unit, or units associated by ownership or management. Inspection, including document review, should include such units when there is sufficient reason for doing so, such as production of the same kind of products etc.

Inspection reports and inspection shall, as far as possible, follow a specified protocol to facilitate a non-discriminatory and objective inspection procedure.

Reports shall be designed to allow for elaboration and analysis by the inspector on areas where compliance might be partial, standards might not be clear etc.

Inspection reports shall give adequate information on what was actually checked, including, but not restricted to:

- date and time of inspection,
- persons interviewed,
- crops/products requested for certification,
- fields and facilities visited,
- documents reviewed,

In addition the report shall contain:

- inspector's observations,
- evaluation of compliance to standards, and certification requirements.

8.4 Methods and Frequency

Inspection methods and frequency shall be determined by, among others;

- Intensity of production.
- Type of production.
- Size of operation.
- Outcome of previous inspections and the operator's record of compliance.
- Any complaints received by the programme.
- Whether the unit or operator is engaged only in certified production.
- Contamination and drift risk.
- Complexity of production.

8.4.1 Inspection frequency

The Inspection and Certifying Agencies shall have a written policy on inspection frequency and it shall interalia include:

- Inspection of licensee operators shall take place at least twice annually.
- Inspection of sub-contracted operators shall take place at least once annually.
- There shall be provisions for more inspections with respect to the factors in 6.4 above.
- A minimum number (percentage) of unannounced inspections to be carried out shall be determined along with the basis for selection of operators to be subject to such inspections.
- The manner in which the cost for "extra" inspection is borne.
- Timing of inspections shall not be so regular as to become predictable.

8.4.2 Inspection methods

Inspections shall regularly include, but are not restricted to:

- Visits of facilities, fields, etc.
- Review of records and accounts.
- Calculation of input/output balances, production estimates etc.
- Assessment of production system of operator.
- Interview with responsible persons.

8.5 Analysis and Residue Testing

Testing is a major instrument for organic certification, provided it is done by competent institutions accredited as per ISO 17025 having appropriate facilities for quality testing. After evaluation of the laboratories, the National Accreditation Body would authorize the labs for residue testing of the soil, organic products and organic inputs. The testing laboratory shall have operating manuals and procedures for residue testing of pesticides, heavy metals and other prohibited substances.

The Inspection and Certifying Agencies shall have documented policies and procedures on residue testing, genetic testing and other analysis. These policies must inter alia contain:

- Indication of the cases in which samples shall be taken for analysis where use of a substance prohibited by the standards is suspected.
- Indication of any random sampling requirements.
- Instructions to the inspectors on sampling requirements and methods.
- Post-sampling procedures.
- Indication of responsibility for payment of sampling.

8.6 Inspection Regime for Part Conversion and Parallel Production

Part conversion is the stage or situation when conventional, in conversion and/or organic production or processing occur in the same unit.

Parallel production is defined as any production where the same unit is growing, breeding, handling or processing the same products both in a certified organic quality and not certified organic quality. A situation with "organic" and "in conversion" production of the same product is also parallel production.

8.6.1 Provisions for part conversion in production and processing

The Inspection and Certifying Agencies shall develop special inspection regimes when part conversion occurs. Certification in situations of part conversion may only be granted when there is a system to safeguard the products against being mixed or contaminated.

The Inspection and Certifying Agencies shall ensure:

- that appropriate storage capacity exists to ensure separate handling;
- that the documentation regarding the production is well managed and makes a clear distinction between certified and not certified production;
- that inspections are carried out at critical times;
- that inspection is done in a timely manner;
- that accurate production estimates are available.

8.6.2 Provisions for parallel production

If a farm is engaged in parallel production, the certification programme shall further require, in addition to the requirements for part conversion above that: -

- buffer zones are maintained for demarcation
- crops are visually distinguishable or
- the crops are harvested in such a way that there are reliable methods to verify the actual harvest of the respective crops (i.e. inspections between harvests, extra inspections during harvests).

Such a system shall be approved by the certification programme for each individual situation.

If parallel production is allowed in livestock husbandry and bee keeping the certification programme must develop documented procedures and inspection regimes appropriate for that kind of production.

8.7 Inspection for Use of Genetically Engineered Products

Inspection and Certifying Agencies shall implement a system of inspection for potential use of genetically engineered products. When use of such products is detected at any stage, certification shall not be granted.

Inspection and Certifying Agencies shall at least annually publish and distribute to all operators and inspectors a register listing the common name and product name of all known genetically engineered products or of all not genetically engineered products relevant to the areas of certification.

Lists shall include the following where appropriate to the certification being conducted:

- seeds and planting stock
- animal breeds
- production inputs
- livestock inputs
- processing aids
- ingredients

When appropriate, operators must be required to retain signed statements from all suppliers verifying that no genetically engineered products were supplied.

9. CERTIFICATION

9.1 The Responsible Body and Certification Decisions

Note: Certification decisions are not limited to initial approval of operators, but also approval of products, changes in production, disciplinary measures etc.

The Inspection and Certifying Agencies shall ensure that each decision on certification is taken by person(s) different from those who carried out the inspection or assessment.

The agency responsible for certification decisions shall reflect a diversity of stakeholders, without any single interest predominating.

Where certification decisions are delegated to a small committee or officers, the Inspection and Certifying Agencies shall demonstrate reporting and review functions that enables the agency responsible for certification to exercise ultimate control and responsibility for such decisions.

9.1.1 Exceptions

If exceptions are granted, clear criteria and procedures for granting exceptions shall be evolved.

- Exceptions shall be clearly limited in time.
- The rationale for any exception shall be properly recorded.

9.2 The Certification Process

The certification policies and procedures shall inter alia include:

- all procedural steps in processing the application, until final certification;
- that the certification status of all operators and their production be indicated throughout the certification process;
- procedures for extension and updating certification, including certification of individual products; [The Inspection and Certifying Agencies shall require the operator to inform of any changes in production as modification to the products, the manufacturing process, extension of acreage etc. The Inspection and Certifying Agencies shall determine whether the announced changes require further investigations. In that case, the operator shall not be allowed to release certified products resulting from such changes until the Inspection and Certifying Agencies have notified the operator accordingly].
- that the certification decisions be recorded and clearly communicated to the operator;
- that, where certification is denied, the reasons shall be clearly stated;

- that the programme shall be able to impose conditions and restrictions. Mechanisms for monitoring compliance with such conditions and restrictions shall be in place.
- that the criteria for the acceptance of applicants, formerly certified by other certification programmes shall be documented. Relevant records from the other certification programme must be requested;
- that, when asked for by the operator, relevant records are released to another certification programme.
- that processing of inspection reports and certification decision shall be done in a timely manner.
- that processing of any issue related to violations shall be done with highest priority.

All policies and procedures shall be documented.

9.3 Appeals

The Inspection and Certifying Agencies shall have procedures for the consideration of appeals against its decisions.

The Inspection and Certifying Agencies shall:

- keep a record of all appeals
- take appropriate follow up actions
- document the action taken

Persons responsible for the decision being appealed against shall not be involved in the final decision on the appeal.

9.4 Certification Records and Reports

9.4.1 Operator files

Operator files shall be up to date and contain all relevant information, including history and product specifications. The Inspection and Certifying Agencies shall have relevant data available for all certified production units, including any sub-contractors and members of grower groups.

Inspection reports and written documentation shall provide sufficiently comprehensive information to enable the Inspection and Certifying Agencies to make competent and objective decisions.

The files shall demonstrate the way in which each certification procedure was applied, including inspection reports and outcome of imposed disciplinary measures.

The Inspection and Certifying Agencies shall maintain regularly updated lists of all certified production units and of all certified processed products.

9.4.2 Records

Records shall be kept by respective Inspection and Certification Agencies for:

- Violations
- Precedents
- Exceptions
- Disciplinary measures

Note: This will normally mean that such information shall be available both in the producer's file as well in a separate record, or registered in a database system.

9.4.3 Annual certification report

An annual certification report shall relate to:

- the number of inspections performed
- the number of certified operators, divided in relevant groups
- the frequency and kind of violations and disciplinary measures

- the frequency and kind of exemptions
- the frequency and kind of complaints
- the frequency and kind of appeals
- other areas of concern.

9.5 Integrity of the System

The certification system shall be based on written agreements, with clear responsibilities of all parties involved in the chain of production of a certified product.

The certified operators shall sign contracts, agreements or affidavits obliging them inter alia to:

- follow the production standards and other published requirements for certification
- accept inspections
- supply accurate information
- notify the certification programme of any changes

The programme shall not allow operators to switch in and out of the certification system.

9.5.1 Disciplinary measures

The Inspection and Certifying Agencies shall have a documented range of disciplinary measures (sanctions) including measures to deal with minor infringements of the standards.

A clear procedure for imposing such measures shall be in place.

The disciplinary measures applied shall be effective.

9.5.2 Withdrawal of certification

Where an infringement that affects the organic integrity is found, the Inspection and Certifying Agencies shall ensure that the indication of certification is removed from the entire lot of the production run which is affected by the infringement concerned.

Where a violation is made by the operator, the Inspection and Certifying Agencies shall withdraw certification from the operator for a specified period.

9.6 Marks and Certificates

The Inspection and Certifying Agencies shall establish guidelines concerning the use of its mark, accreditation number, National Organic Logo or other reference to the certification.

The Inspection and Certifying Agencies shall exercise proper control over the use of its licenses, certificates and certification marks.

Incorrect references to the certification system or misleading use of licenses, certificates or marks shall be dealt with by suitable remedial actions. This will be applicable to any use of the same by non-certified operators.

The Inspection and Certifying Agencies shall have documented procedures for withdrawal and cancellation of contracts, certificates and certification marks.

9.6.1 Certificate of registration / Scope Certificate

Certificate of Registration shall include:

- Name and address of the operator
- Name and address of the certification programme and accreditation number
- Reference to the applicable standards
- Products or product categories
- Date of issue
- Validity

9.6.2 Transaction certificate

The Inspection and Certifying Agencies may only issue transaction certificates if the seller provides all the required details. The Inspection and Certifying Agencies shall take reasonable measures to verify that the information provided is correct before issuing the certificate. The Inspection and Certifying Agencies shall take adequate measures, including ensuring that certificates contain sufficient information, to prevent fraudulent usage.

Copies of issued transaction certificates shall be stored in a manner that enables easy retrieval and inspection of information on each operator.

9.6.3 Product certificate

The certifier on request of the operator will issue product certificate to the buyer, at a cost to be borne either by the operator or the buyer. Product certificate shall contain the following:

- The name and description of the seller
- The name and description of the buyer
- The date of delivery of the product
- The date of issuing of certificate
- A clear indication of the product, its quantity and when applicable, the quality and season thereof
- Lot numbers and other identification (marks) of the products
- Reference to invoice or bill of lading
- An indication of the certification programme and the applicable standard
- A statement from the certifier that the product is produced according to the applicable standards

When applicable, the original certification of raw materials, and any other certification from another programme shall be indicated on product certificates.

Copies of issued operators transaction certificates shall be stored in a manner that enables easy retrieval of information on each operator.

10. LICENSED OPERATORS**10.1 Information to the Licensees**

The Inspection and Certifying Agencies shall ensure that each certified licensed operator has at the time of application:

- A current version of the applicable national standards for organic products.
- An adequate description of the procedure for inspection, certification and appeals.

For the existing operators

- Notification of changes in the standards and relevant procedures without undue delay.
- A current certificate or other written proof of certification status.
- Valid contracts/licenses.

Operators shall have the right to take copies of inspection findings and other documentation related to the certification of their production, unless the documents are confidential such as filed complaints, confidential section of inspection reports.

10.2 Records and Documentation Maintained by the Licensee

The Inspection and Certifying Agencies should require, that each licensee has a record keeping system adapted to the type of production that enables the Inspection and Certifying Agencies to retrieve necessary information and to seek verification of the production, storage, processing, purchase and sales.

11. INSPECTION AND CERTIFICATION OF ALL STAGES IN HANDLING

The following applies to inspection and certification of the whole production chain, and clarifies what is applicable for various special cases.

Each step in the handling of a product shall be inspected, at least twice annually.

This means that not only the farmers but also the storage units, the processing units, packaging, shipment etc. shall be inspected. Any exceptions to this shall be based on a documented risk assessment and be restricted to situations as identified in these criteria.

Any person who sells a product (raises invoice) shall be registered and certified. Normally this applies until the product is in its final package/has its final label.

11.1 Packed Products

The Inspection and Certifying Agencies are not obliged to have a system for inspection of products that are further handled after being packed in the final consumer package, and/or after issuing of a transaction certificate. The Inspection and Certifying Agencies are however, obliged to take action where there is reason to believe that the standards have been or may be violated at such later stages. Examples of such situations could be fumigation in harbours etc.

11.2 Storage Companies

Depending on the kind of storage, the product, packing, prevailing storage practices (i.e. fumigation) and the time for storage, inspections may be required. A first inspection will be required to determine future need for inspections.

11.3 Transport Companies

Transport is normally not certified as such, but remains under the responsibility of the party owning the product at the point of transport.

12. INSPECTION AND CERTIFICATION OF WILD PRODUCTS

These criteria only apply for the Inspection and Certifying Agencies that certify wild production as defined in the National Standards for Organic Products. All relevant criteria apply to the inspection and certification of wild production. The collectors are normally not subject to requirements similar to those of a farmer in a grower group, through the integrity of the system shall be guaranteed.

The responsible operator shall be dealt with as any other certified party. The operator shall issue instructions to the collectors, that at least:

- defines the area of collection
- informs them about the standards and other requirements for certification

The collectors shall sign statements that they have followed the instructions. The operator shall have records of all collectors, and the quantities bought from each collector. The area of production shall be properly identified on appropriate maps, which shall be large and distinct enough to reduce the risk of mixing up with non-certified production. Any local agents (middlemen) must be properly contracted by the operator.

The inspection regime shall, apart from normal inspection visit to the operator and the facilities, also include:

- interviews with the collectors.
- visit to an appropriate proportion of the certified area.
- visits to and interviews of any local agents.
- interviews of landowners and other parties (environment agencies, NGOs etc.) supplying relevant information about the area of collection.

13. INSPECTION AND CERTIFICATION OF INPUT MANUFACTURING

Many Inspection and Certifying Agencies operate system of approval of input manufacturing without issuing any form of license or rights to the use of logo to the manufacturer. Other Inspection and Certifying Agencies certify input products.

13.1 Approval Systems

Where Inspection and Certifying Agencies issue lists or in any other way approve products without formal certification, it shall document at least the following measures:

- the application procedure, including the necessary documents to be submitted by the applicant;
- the procedure to be followed in evaluating the product's compliance with the programme's standards;
- the decision making authority;
- the period for which approval is granted and the requirements for the manufacturer to report changes in composition or other relevant factors;
- a clear statement of the nature and guarantee of the approval.

The Inspection and Certifying Agencies shall not receive any endorsement payments. Approval systems shall allow for indication of the approval on the product itself.

13.2 Certification Systems

Where an inspection and certification agency issues certificates or allows the use of its certification mark on input products, in addition to the measures in 11.1 above, the programme shall document the inspection and certification procedures including the relevant requirements under section 7 and 8 above. This shall clearly indicate:

- the inspection frequency which may be less than annual.
- the requirements other than the composition of the product that will be checked during inspection and evaluated in making the certification decision (source of the ingredients for traceability for compliance of the inputs allowed under the NPOP standards, pollution / contamination risks etc.).

14. CERTIFICATION TRANSFERENCE

14.1 General Certification Transference (acceptance of other certification programmes)

It shall be the function of the Accredited Inspection and Certifying Agencies to evolve a basis of such transference. The National Accreditation Body reserves the right to, at a future date, require that accredited Inspection and Certifying Agencies only grant such transference to products covered by a certification or programmes accredited according to equivalent criteria and procedures as decided by the National Organic Programme.

In the short term the National Accreditation Body will assess the procedures of certification transference according to the following criteria:

The procedures and responsibility for granting such recognition shall be clearly documented. The assessment and decision to include a programme shall be documented to show that objective criteria are used.

There shall be a formal register of recognized certification programmes.

Inclusion in the register shall be on the basis of at least one of the following:

- A recent and adequate evaluation visit and report conducted either by the programme-granting acceptance or by a third party.
- Accreditation details.
- Any other Accreditation system deemed equivalent to the Inspection and Certifying Agencies must demonstrate, to the satisfaction of the National Accreditation Body that the referred programme is equivalent to a programme accredited by the National Accreditation Body.
- The Inspection and Certifying Agencies may accept other programmes in the process of evaluation by the National Accreditation Body. Such acceptance shall only be permitted for a limited time period.

Full documentation of the registered Inspection and Certifying Agencies including standards, inspection and certification procedures and valuation reports shall be available.

A contract with the other Inspection and Certifying Agencies that regulate the obligations of the parties shall be drawn up. This can also be a multilateral agreement. Such a contract shall inter alia contain the following provisions:

- The scope of the mutual recognition (applicable for all products).
- The obligation to inform each other of changes in major programme or standards.
- The obligation to inform each other of the certified production (lists of certified operators).
- Indemnification.
- Obligation to inform the other party in case of loss of accreditation, regulatory approval and similar circumstances.
- The right to review the other party's performance.
- The right to have access to relevant information.
- The regulation of confidentiality.
- Dispute settlement provisions.

The registration of transference is subject to periodic reviews and updates.

The processors, traders or other licensees operating according to the register shall be promptly informed of any changes in the status of recognized programmes.

14.2 Re-certification

Inspection and Certifying Agencies need not re-certify products or processes that are certified by an Inspection and Certifying Agency accredited under the National Programme for Organic Production, within the validity of the certificate.

14.3 Certification "partnerships"

There might be situations where Inspection and Certifying Agencies develop "joint ventures" or "partnerships" with other Inspection and Certifying Agencies. The National Accreditation Body reserves the right to formulate criteria for Accreditation in such cases at a future date. Meanwhile, in developing any such partnership the Inspection and Certifying Agencies shall consider the relevant aspects of the criteria for "general certification transference", "individual certification transference" and "sub-contracting".

15. COMPLAINTS

The Inspection and Certifying Agencies shall have policies and procedures for dealing with complaints against its operation and against certified operators.

Complaints shall be dealt with in a speedy and efficient manner. The Inspection and Certifying Agencies shall keep a record of all complaints and remedial actions relating to certification.

When a complaint is resolved a documented resolution shall be made and forwarded to the complainant and the party concerned.

C. ACCREDITATION PROCEDURES

1. BACKGROUND

The aims of the National Accreditation Programme is:

- to provide the means of evaluation of inspection and certification agencies, for organic agriculture and products as per approved criteria for accreditation based on the international criteria as per ISO Guide 65
- to accredit inspection and certification agencies

- to provide the means of evaluation of the facilities available with the laboratories for residue testing of soil, inputs and organic products
- to accredit testing laboratories

2. SCOPE

2.1 Inspection and Certification Agencies

Accreditation is open to Inspection and Certification Agencies engaged in the inspection and certification of organic production and/or processing operations.

The Inspection and Certification Agencies programmes must conform to all applicable standards, structures and operating procedures as laid down in the national standards for organic products and to the accreditation criteria as per the national organic programme. The Inspection and Certifying Agency's programmes must have:

- been in operation for a minimum period of one year prior to the evaluation.
- it should provide all required documents for reference.

The evaluation of the Inspection and Certifying Agency will include the evaluation and selection process of the inspectors. In accordance with the accreditation criteria, the certification agency must exercise full responsibility for any services that it contracts out to third parties. The accreditation contract will be primarily with the Inspection and Certifying Agency.

The scope of the National Accreditation Programme does not include advisory services extended to certification programmes.

The Accreditation status of an Inspection and Certification Agency will apply to inspection and certification of only those categories of production, products and processing covered by the programme.

3. CONFLICT OF INTEREST

A declaration of interest by all persons involved in certification, inspection and appeals shall be on file at the Inspection and Certification Agency's office. They shall sign an agreement to abstain from any inspection or other decision making in case they have family or business connection, trade or advisory with the operator.

In the case of paid consultancy work undertaken by inspectors, such exclusion must apply for two years prior to inspection.

The Inspection and Certification Agencies shall also seek the moral understanding that inspectors who cease to be employed will not undertake related consultancy for two years following their leaving the employment.

All persons with a potential conflicting or vested interest shall be excluded from work, discussion and decisions at all stages of the certification process related to the potential conflict.

The Inspection and Certification Agencies shall be entitled for a certification fee from the operator. However, the outcome of the certification decision itself shall be independent of the payment of fees.

4. STANDARDS

4.1 General

The Inspection and Certification Agencies shall comply with the National Standards for Organic Products. Standards shall be presented in a way adapted to the language, capacity and knowledge of the operators. Standards shall be published for all production systems or product categories by the Government of India.

4.2 Standards Review

- The standards shall be reviewed regularly.
- The body responsible for review shall be the National Steering Committee for National Programme for Organic Production.
- The date of implementation of the standards shall be indicated in the standards.

- Where relevant, a time period shall be allowed for operators to implement major changes to the standards.
- Deadlines for implementation by the operators shall be clearly stated.

5. ACCREDITATION CONTRACT PERIOD

The term of the accreditation contract is decided at the time the accreditation decision is made by the National Accreditation Body.

6. USE OF ACCREDITATION STATUS

All accredited Inspection and Certification Agencies will be allotted a specific accreditation number, which cannot be transferred or reassigned. The accredited Inspection and Certification Agencies will use the assigned number in all their documents, reports and correspondence.

7. FEE

Charges are set to cover the operating and development cost of the accredited Inspection and Certification Agency. Charges are made in the following categories:

- Application fee
- Assessment fee
- Annual fee
- Evaluation visit costs (travel and other expenses)
- Fee for issuing certificates (Transaction Certificate, Product certificate and scope certificate)

The fee for inspection and certification would be applicable after these are approved by the National Accreditation Body.

8. AMENDMENTS

Ministry of Commerce, Govt. of India reserves the right to make changes in the accreditation criteria, procedures and national standards set out in the policy document, if the development of the accreditation programme, international harmonisation activities and other relevant factors may deem necessary. All applicants and accredited Inspection and Certification Agencies will be informed of any amendments. The implementation of the amended criteria standards and procedures will come into force the day of its notification. Accredited applicant programmes that have already been evaluated before the date of implementation of the revised criteria/ standards/procedures will be assessed according to the previous conditions.

9. REVIEW OF THE ACCREDITATION PROGRAM

The Accreditation Programme is subject to periodic internal review in line with its National Organic Programme and Policy. The review will be conducted as and when required based on the proposals made by interested parties addressed to the National Accreditation Body.

10. COMPLAINTS

- The Inspection and Certification Agencies shall have policies and procedures for dealing with complaints against its operation and against certified operators.
- Complaints concerning the Inspection and Certification Agencies should be addressed to the National Accreditation Body's office.
- The Inspection and Certification Agencies shall keep a record of all complaints and remedial actions related to certification.
- Complaint shall be dealt with in a speedy and efficient manner and the complainants will be informed of the decision.
- If dissatisfied with the National Accreditation Body's decision, the complainant may refer the matter to the Secretary, Ministry of Commerce.

11. APPLICATION, EVALUATION AND ACCREDITATION PROCEDURES

11.1 Procedure for the Accreditation of Inspection and Certification Agencies

The accreditation procedure will have the following steps :

- Screening of the application and documentation
- Evaluation and assessment of programme
- Accreditation

11.2 Application and Screening Procedures

1. All applications will be made to APEDA in Form-I by the prospective inspection and certification agencies operating certification programmes along with the prescribed fee.
2. On receipt of requests, APEDA will provide the required information regarding the Accreditation programme, the requirements to be fulfilled by the applicant.
3. The applications should be accompanied by a fee of Rs.15000/- by way of demand draft in favour of APEDA. The following documents should be submitted along with the application.
 - Documentary evidence of the organization, financial status (turnover), annual report and number of employees along with their bio-data,
 - Details of the certification committees, standards committees, inspectors etc,
 - A copy of the operating manual, quality manual
 - Tariff proposed
 - Documentary evidence of accreditation by any other country or programme.
 - The applications should be signed by head of the organization, partner, director, managing trustee duly authorized for the purpose and a documentary evidence/power of attorney/copy of the resolution, as the case may be.
4. Preliminary scrutiny of the application will be carried out by APEDA. The applicant may be required to provide additional information / documentation.
5. APEDA will screen the documents with respect to the National Standards for Organic Production as well as the accreditation criteria for inspection and certification agencies and prepare a screening report. In case the application is in order, it will be forwarded to the evaluation committee authorized for this purpose for carrying out the evaluation.

11.3 Evaluation and Assessment of application for accreditation

1. A detailed evaluation of the certification programmes would be carried out by an evaluation committee comprising of three members drawn from the commodity boards along with representative each from Ministry of Agriculture and EIC/EIA. An outside expert may also be associated if required. This evaluation would be conducted through physical evaluation of the applicant's office, personal discussions, project visit, etc. The members would be selected based on the following criteria:
 - He / She should have knowledge of organic farming, standards, policies relating to NPOP and other international standards.
 - The evaluator must not have, or have had any interest during the past two years in the agency to be evaluated,
 - A Inspection and Certification Agency shall not be evaluated by the same committee for more than two consecutive evaluations
2. The date of visit of the evaluation committee will be informed to the applicant in advance. The applicant would need to confirm the visit.

3. If serious grounds for challenging the appropriateness of the assigned Evaluation Committee are submitted in writing by the Inspection and Certification Agency, the National Accreditation Body may reassign the evaluation. Where agreement regarding the Evaluation Committee cannot be reached, the matter will be referred to the National Accreditation Body for a decision.
4. The Evaluation Committee are briefed and provided with the screening report and any other necessary documents.
5. At the start of the evaluation visit, a meeting will be held at the office of the Inspection and Certification Agency, with officers of the applicant programme. A detailed inspection of the certification office files will be undertaken.
6. The Evaluation Committee will check, among other things, that:
 - All valid documents are complete in all respects.
 - The inspection reports are comprehensive and enable sound certification decisions to be taken on the basis of the information provided.
 - The certification decisions are consistent with the degree of compliance recorded in the inspection reports.
 - Where the certification programme has imposed conditions or restrictions, that their implementation has been adequately monitored and documented.
 - The Inspection and Certification Agency is operating in accordance with the national basic standards for organic products and the national criteria for accreditation programmes. Issues of possible non-compliance highlighted by the screening report are substantiated or clarified.
 - That, in the case of re-evaluations, compliance with conditions of Accreditation has been accurately recorded in the annual reports.
7. The Evaluation Committee will be given access to the files of the operators and select a sample for inspection. The sample number will be given by the Programme Manager, taking into account:
 - The number of certified producers in the Inspection and Certification Agency's Programme;
 - The number of types of operations certified;
 - The number of inspectors;
8. The Evaluation Committee will visit the operators identified in the sample and conduct check inspections. The Evaluation Committee will require access to all previous inspections, if any.
9. The Evaluation Committee will, among others, check that:
 - The practices of the operator conform to the Standards of the certification programme;
 - The inspection files accurately record the production system;
 - The inspection system is capable of identifying non-compliance and is implemented in line with the stated approach in the operating manual of the programme;
 - The operator has the appropriate documents of the Inspection and Certification Agency;
10. At the end of the evaluation visit, Evaluation Committee will summarize the findings of a meeting in the office of the Inspection and Certification Agency.
11. The Evaluation Committee will incorporate the findings in the screening report. This combined report, known as the evaluation report will also include:
 - The history and structure of the Inspection and Certification Agency;
 - Its independence from commercial activity in the field in which it operates;
 - A review and comparison of the standards against the national standards for organic products;

- The procedures involved in the inspection and certification programme, including documentation;
 - The findings of the evaluation visit, including operator visits and any instances of non-compliance observed;
 - A summary of the main findings of the visit together with any recommendations and conclusions.
12. When the report is complete, the Evaluation Committee will forward it to the National Accreditation Body who will send a copy to the office of the evaluated programme for acceptance of the report. The evaluated Inspection and Certification Agency will be invited to identify any inaccuracies in the report and to provide explanatory comments. These will be included in the report as comments of the applicant Inspection and Certification Agency together with any opinion from the Evaluation Committee when appropriate.
 13. The Evaluation Committee will review the evaluation report and assesses the compliance of the Inspection and Certification Agency with the national standards for organic products and the accreditation criteria. These will be noted in the evaluation document.
 14. The Evaluation Committee will compile a summary of discrepancies with recommendations for remedial action.
 15. The Evaluation committee will submit the evaluation report together with the summary of discrepancies to the National Accreditation Body.
 16. In case the evaluation committee is satisfied that the inspection and certification programme conforms to the National Standards and Accreditation Criteria, it will recommend for accreditation to the National Accreditation Body.

11.4 Accreditation Procedures

1. The National Accreditation Body is responsible for the decision on the accreditation of an applicant Inspection and Certification Agency.
2. When the National Accreditation Body is satisfied that the applicant Inspection and Certification Agency meets the requirements, it will be awarded Accreditation status. National Accreditation Body may award Accreditation status conditional on corrective action being undertaken according to an agreed schedule. Alternatively, the National Accreditation Body may withhold accreditation status until all conditions are met.
3. The applicant will be informed in writing of the decision. If the National Accreditation Body decides that an applicant programme does not meet the requirements for Accreditation, the Inspection and Certification Agency will be informed of the necessary improvements for re-application.
4. Applicants may wish to seek review of specific conditions without officially appealing to the National Accreditation Body. Such requests must be addressed to the Chairman of the National Accreditation Body and include substantive reasons why the condition imposed is considered inappropriate or unjustified. The National Accreditation Body may seek additional information before reaching its final decision.
5. Accredited status will be awarded only for the certification of categories of production and processing covered by the National Standards for Organic Production and the Inspection and Certification Agency itself.
6. Once the applicant Inspection and Certification Agency has agreed to the conditions imposed and the timetable for compliance, the applicant will be sent an Accreditation contract which must be signed and returned with the annual fee. The contract provides a license to the Inspection and Certification Agency to use its Accreditation status subject to the terms stated in the contract.
7. Once the contract has been signed, APEDA will issue a certificate of Accreditation, containing at least the following details:
 - Accreditation number;
 - The name and address of the Inspection and Certification Agency;

- The nature of the activities covered;
 - The date of issue and date of expiry;
8. The contract with the inspection and certification agency will be signed by an APEDA official.

11.5 Annual Surveillance and Review Evaluations

1. Accredited Inspection and Certification Agencies are required to submit an annual report to APEDA. This annual report should contain an updated report on recent developments in the Inspection and Certification Agency's Programme such as the number of operators certified, geographical area of operation and changes in personnel, and a compliance report in which compliance with imposed conditions is reported, supported by documentary evidence.
2. APEDA will review the annual report and prepare an annual report summary for decision making by the National Accreditation Body.
3. Depending upon whether the Inspection and Certification Agency has complied with conditions imposed by the National Accreditation Body, and the extent and nature of changes to the Inspection and Certification Agency's Programme, National Accreditation Body may take any of the following courses of action:
 - Renew the Accreditation period if the contract has expired;
 - Impose new conditions requiring corrective action according to an agreed timetable;
 - Extend the accreditation period subject to a full re-evaluation during the ensuing 12 month period or shorter;
 - Impose any of the sanctions listed in Para 13 below.
4. National Accreditation Body requires regular review evaluations, at least once every year.
5. Procedures for the review evaluation are normally identical to those of the initial evaluation.

12. COMPLAINTS

1. Complaints regarding the functioning of an accredited Inspection and Certification Agency should in the first instance be directed to the Inspection and Certification Agency in question. Only in cases where the complainant feels that the complaint has not been handled satisfactorily by the accredited Inspection and Certification Agency, the complaint be lodged with APEDA in such a manner that confidentiality regarding the source of such a complaint is maintained.
2. The Evaluation Committee will investigate the complaint. When the Evaluation Committee considers that the complaint is sufficiently substantiated, it will inform the Inspection and Certification Agency concerned and invite a response. The matter will then be referred to the National Accreditation Body to formulate a complaints resolution. The complainant is informed of the complaints resolution.
3. If the complaint is upheld, the National Accreditation Body may impose appropriate sanctions.

13. SANCTIONS

In event of non-compliance with the accreditation contract or failure to fulfill conditions, the National Accreditation Body may apply one or more of the following sanctions:

- Issue a warning letter or letter of reprimand;
- Impose additional conditions and insist for rectification during a particular time period;
- Impose penalty, not only for non-compliance with conditions but also for being late or filing a deficient annual report;
- Require the Inspection and Certification Agency to undergo a re-evaluation within a certain period;
- Suspend Accreditation;
- Terminate Accreditation.

14. TERMINATION OF ACCREDITATION

1. The National Accreditation Body may terminate the accreditation status of an Inspection and Certification Agency if performance and conduct of the agency is not in accordance with the Accreditation criteria or the conditions laid down in the Accreditation contract.
2. If non-compliance is severe, the National Accreditation Body reserves the right to revoke the contract without allowing future rectification. When a license is withdrawn, the National Accreditation Body will publish the name of the Inspection and Certification Agency in the internal letter and may release a public statement.
3. Conditions where Accreditation status may be withdrawn include, but are not limited to:
 - Non compliance with the Accreditation criteria for Inspection and Certification Agency or the national standards for organic products;
 - Failure to fulfill conditions of Accreditation related to non-conformities within the agreed timetable;
 - Misuse of Accreditation status;
 - Refusal to allow or hindering full access to information at the request of the Evaluation Committee.
 - Failure to pay fees and charges on time
 - Failure to comply with any sanctions imposed.

15. APPEALS

1. Applicant or accredited Inspection and Certification Agency's Programme can appeal Accreditation decisions. Appeals must be lodged within 60 days of the disputed decision. Appeals should be directed to the National Accreditation Body.
2. The National Accreditation Body will consider the appeal and make a final decision.
3. If the final decision of the National Accreditation Body is considered unacceptable by the Inspection and Certification Agency, it may appeal to the Secretary, Ministry of Commerce within 30 days of the decision given by the National Accreditation Body.

SECTION – 5

ORGANIC CERTIFICATION MARK

5.1 ORGANIC LOGO

A trademark – “India Organic” will be granted on the basis of compliance with the National Standards for Organic Production (NSOP). Communicating the genuineness as well as the origin of the product, this trademark will be owned by the Government of India. Only such exporters, manufacturers and processors whose products are duly certified by the accredited inspection and certification agencies, will be granted the licence to use of the logo which would be governed by a set of regulations.



5.2 SPECIFICATIONS

The Indian Organic Logo must comprise of the colour specifications listed below: -



C -70 M -10
Y -100 K -0



C -70 M -20
Y -100 K -10



C -10 M -0
Y -80 K -15



C -10 M -80
Y -80 K -0



C -55 M -15
Y -0 K -0

5.3 CONCEPT OF ORGANIC LOGO

Symbolizing the rhythm of cosmic and earth forces represented by the blue and brown waves of force and energy, 'India Organic' logo celebrates the essence of nature. These forces work in harmony upon the earth's environment and this rhythm is reinforced and supported by the green plant growth. The colours used have a special significance in the logo concept. The cosmic force in blue symbolizes universal purity. Richness of soil, nourished with natural ingredients in organic farming, is symbolized by the earth forces in golden brown. The plant in green uses the colour of nature and natural products untouched by chemicals. The blue background is symbolic of earth's environment that is congenial for life to thrive in and is also free of pollution and harmful chemicals. India Organic etched over the surface authenticates the carrier as "Organic" and also establishes the Indian connection for all the carriers of the mark. Beautifully synthesizing all the elements of our environment, the logo also communicates total adherence to the National Organic Standards.

5.4 REGULATIONS FOR GRANT OF LICENCE TO USE CERTIFICATION MARK FOR ORGANIC PRODUCTS

In pursuance to the Standards for the Organic Products of March 2000, and the modifications and additions that may in the future be made thereto, the following regulations, which include any modifications and additions thereto, shall apply for grant a license to use of the Certification Mark only on the certified products produced, processed, packed and labeled as per the National Standards for Organic Products.

1. Short Title and Commencement – (1) These regulations may be called the Organic Products Certification Mark Regulations, 2002.
2. They shall come into force on the date of acceptance by the National Steering Committee for National Program for Organic Production constituted by the Ministry of Commerce and Industry.
 - (1) Definitions – In these regulations, unless the context otherwise requires-
 - a. Accreditation Agency means an agency or agencies appointed by the National Steering Committee constituted under the National Program for Organic Production by the Government of India.
 - b. Inspection and Certification Agency shall mean that agency accredited by the Accreditation Agency for carrying out the activities defined herein.
 - c. Certification Mark means the India Organic logo.
 - d. Applicant means a producer, processor, exporter and importer who applies to Inspection and Certification Agency for grant of a license to use the Certification Mark and includes an importer.
 - e. Licensee shall mean an applicant who has been granted the license to use of the Certification Mark.
 - f. Standards for the organic products shall mean National programme for Organic Production containing the Standards for Organic Products.
 - g. Form means a form annexed to these regulations.
 - h. All other words and expressions used in the regulations and not defined herein shall have the ordinary meanings assigned in the English language.

3. Manner of Applying for License

- (1) Every application for the grant of a license shall be made to Inspection and Certification Agency on Form-11.
- (2) Every application for a license shall be accompanied by a statement furnishing in detail any scheme of inspection and testing, which the applicant maintains or has been in use or proposes to maintain or to put into use and which is designed to regulate, during the course of manufacture or production, the quality of the product or process for which the license is applied for.
- (3) Every application shall be signed in the case of an individual, by the applicant or, in the case of a firm, by the proprietor, partner or the managing director of the firm or by any other person authorised to sign any declaration on behalf of the firm. The name and designation of the person signing the application shall be recorded legibly in the space set apart for the purpose in the application form.
- (4) Every application for a license shall, on receipt by the Inspection and Certification Agency, be numbered in order of priority of the receipt and be acknowledged.

- 5) The Inspection and Certification Agency accredited by the designated Accreditation Agency may call for any supplementary information or documentary evidence from any applicant in support of or to substantiate any statement made by him in his application, within such time as may be directed by the accredited Inspection and Certification Agency, and non-compliance with such direction may have the effect of the application being summarily rejected by the Inspection and Certification Agency.
- 6) On receipt of an application for a license and before granting a license, the Inspection and Certification Agency may-
 - a) require evidence to be produced that the product or process in respect of which a license has been applied for conforms to the related directions and specifications as maintained by the designated Accreditation Agency;
 - b) require evidence to be produced that the applicant has in operation a scheme of routine inspection and testing, which will adequately ensure that all marked products or process shall conform to the directions and specifications as provided in the standards for the Organics Products;
 - c) require all reasonable facilities to be provided to an Inspector of the Inspection and Certification Agency to inspect the farms, processing units, office, workshop, testing laboratories or godowns and any other premises of the applicant and to draw and test sample or samples for the purpose of verifying the evidence produced by the applicant under clause (a) or clause (b) or both;
 - d) for the purpose of clause (a), direct the applicant to submit samples to such testing authority as Inspection and Certification Agency may consider appropriate. The expenses for testing shall be borne by the applicant; and
 - e) On the basis of any report received under clause (c) or clause (d) or both, the Inspection and Certification Agency may, as deemed fit, require the applicant to carry out such alterations in, or addition to, the process of manufacture or production in use by the applicant.

4. Grant of License

- (1) If Inspection and Certification Agency, after a preliminary inquiry, is satisfied that the applicant or Licensee having regard to requisite skill, resources, production, processing previous performance and antecedents relevant to the issuance of the license is fit to use the Certification Mark, the Inspection and Certification Agency shall grant a license in Form 12 authorising the use of the Certification Mark in respect of the product or class of products manufactured by the applicant or Licensee in respect of the process employed in any production, manufacture or work, subject to such terms and conditions as specified in these regulations. The Inspection and Certification Agency shall intimate the applicant about grant of license.
 - (1A) The Applicant shall be entitled to use the Certification Mark and restrict his use thereof to goods or services, which will meet the norms and standard specification of the products. The Certification Mark may be affixed to the products and/or used on packaging or promotional material or in the context of advertising activities.
 - (1B) In the event of a withdrawal of the right to use the aforesaid Mark the certificate or the License shall be returned to Inspection and Certification Agency. The right to use the Certification Mark expires at the same time without giving rise to any indemnification claim against designated Accreditation Agency and/or Inspection and Certification Agency.
 - (1C) The Applicant is entitled to the aforesaid Mark but shall be answerable for the safety of their products themselves. They shall furnish proof of holding sufficient product liability insurance in respect thereof, if required by the Inspection and Certification Agency. No liability whatsoever will be accepted by Inspection and Certification Agency or designated Accredited Agency.
 - (1D) Where the application for a license is made by a person, whose license is cancelled by the Inspection and Certification Agency due to furnishing of incorrect information or use of the Standard or Certification Mark in relation to any other product to deceive the public, he shall not be eligible to apply for a period of six months from the date of such cancellation. The period of disqualification shall be determined by Inspection and Certification Agency having regard to the facts and circumstances of each case and it shall not exceed a period of one year.
- 2) A license shall be granted on Form 12 for a period of one year and a declaration by licensee shall be given on Form 13.

- 3) The Inspection and Certification Agency may, during the period of the validity of the license, alter by giving one month's notice to a licensee any terms and conditions subject to which the license has been granted.
- 4) Where Inspection and Certification Agency, after a preliminary inquiry, is of the opinion that a license should not be granted, the Inspection and Certification Agency shall give a reasonable opportunity to the applicant of being heard, either in person or through a representative authorised by him on his behalf, and may take into consideration any fact or explanation urged on behalf of the applicant before rejecting the application.
- 5) A license shall expire at the end of the period for which it is granted.
- 6) Particulars of all licenses issued by Inspection and Certification Agency under these regulations in connection with the use of the Certification Mark shall be entered in a register which designated Accreditation Agency shall maintain.

5. Conditions of a License

- (1) The Certification Mark shall be applied in such manner as it may be easily visible as a distinct mark on the products or the covering or on test certificates relating to articles which cannot be labeled or covered. The Certification Mark shall be applied to only such types, grades, classes, varieties, sizes of the products for which the license has been granted. The licensee shall get the facsimile of the Certification Mark proposed to be used by him, approved from the accredited Inspection and Certification Agency.
- (2) When a Certification Mark has been specified in respect of an article or process, no person other than the licensee in possession of a valid license shall make any public claim, through any advertisement, sales promotion leaflets, pricelists or the like, that his product conforms to the relevant Certification Mark or carries the Certification Mark.
- (3) So long as the Certification Mark is not specified for an article or process, a person may not publically claim that this product or process conforms to the Certification Mark.
- (4) (a) Every licensee or applicant shall institute and maintain, to the satisfaction of accredited Inspection and Certification Agency, a system of control to keep up the quality of his production or process by means of a scheme of testing and inspection, so as to ensure that the article or process, in respect of which the Certification Mark is being used, comply with the relevant norms and procedures of Inspection and Certification Agency and/or standards for the Organic Products.
- (b) The licensee or applicant shall maintain a complete record of the tests and inspection and such other data as specified in the scheme for testing and inspection, to establish to the satisfaction of Inspection and Certification Agency that the required control of production or process has been and being satisfactorily maintained. Such records shall, on demand, be made available for inspection to Inspection and Certification Agency.
- (5) (a) Any license granted by Inspection and Certification Agency may be suspended or cancelled by it, if it is satisfied:-
 - i. that the products marked with the Certification Mark under a license do not comply with the related norms and procedures of the Inspection and Certification Agency; or
 - ii. that the licensee or applicant had used the Mark in respect of a process which does not come up to the related directions and specification of Inspection and Certification Agency; or
 - iii. that the licensee or applicant failed to provide reasonable facilities to the Inspection and Certification Agency enable them to discharge the duties imposed on them; or
 - iv. that the licensee or applicant has failed to comply with any of the terms and conditions of the license.
- (b) Before Inspection and Certification Agency suspends or cancels any license, it shall give the licensee not less than fourteen days notice of its intention to suspend or cancel the license.
- (c) On the receipt of such notice, the licensee may submit an explanation on his behalf to Inspection and Certification Agency within fourteen days from the receipt of the notice. If an explanation is submitted, Inspection and Certification Agency may consider the explanation and give a hearing to the licensee within fourteen days from the date of receipt of such explanation or before the expiry of the notice whichever is longer.

- (d) If no explanation is submitted, Inspection and Certification Agency may, on the expiry of period of the notice, suspend or cancel the license by addressing a written communication within 14 days of the expiry of the period stipulated in sub-paragraph (c) herein above.
 - (e) Where a license has been suspended or cancelled, the licensee shall discontinue forthwith the use of the Certification Mark notwithstanding the pendency, of any appeal before the designated Accreditation Agency and if there be, with the licensee or his agents, any articles in stock which have been improperly marked, the licensee or his agents, as the case may be, shall take necessary steps to get the Certification Mark on such articles either removed, cancelled, defaced or erased.
- (6) When a license has been suspended or cancelled, the inspection and certification agency shall so advise the licensee in writing and publish such a suspension or cancellation in a manner as found appropriate by said inspection and certification agency
- (7) (a) If, at any time, there is some difficulty in maintaining the conformity of the product or articles to the specification or the testing equipment goes out of order, the marking of the product shall be stopped by the licensee, under intimation to Inspection and Certification Agency. The marking may be resumed as soon as the defects are removed and information regarding such resumption of marking be sent to Inspection and Certification Agency, immediately thereafter.
- (b) If, at any time, Inspection and Certification Agency has sufficient evidence that the product carrying the Certification Mark may not be conforming to designated norms and procedures, the licensee shall be directed to stop marking of such product. The resumption of marking on the product shall be permitted by Inspection and Certification Agency after satisfying itself that the licensee has taken necessary actions to remove the deficiencies.
- (8) The decision of Inspection and Certification Agency for arriving at such decision shall be communicated, in writing by registered post, to the applicant or the licensee, as the case may be.
- (9) An inspection, specially made at the request of an applicant or a licensee, shall be chargeable to the account of applicant or the licensee. Charges for such special inspection or inspections shall be such as may be decided by Inspection and Certification Agency.
- (10) When the designated norms and procedures of Inspection and Certification Agency are withdrawn and not superseded by any other norms and procedures, any license issued in respect thereof shall be deemed to have been cancelled from the date of withdrawal of such designated norms and procedures as stated above and any such license shall be surrendered to Inspection and Certification Agency by the licensee forthwith. In the case of such cancelled license, a part of the license fee, if paid in advance, proportionate to the unexpired period of the license, shall be adjusted against any future fee or license fee payable by licensee or the said part of the license fee can be refunded depending on the decision of the Inspection and Certification Agency.
- (11) The following procedure shall apply in the case of inspection in respect of any product or process where a license for the use of Certification Mark in respect of that article or process has been issued, or an application has been made for a license.
- a. When Inspection and Certification Agency proposes to inspect the process or product of an applicant, he shall, preferably, give reasonable notice of his visit to the applicant but for inspection of premises of a licensee, such notice is not necessary;
 - b. If during an inspection, Inspection and Certification Agency wishes to take one or more samples of any product, material or substance, he shall do so in the presence of the licensee or the applicant or a responsible person belonging to the establishment of the licensee or the applicant, as the case may be;
 - c. Inspection and Certification Agency may at his discretion, and shall if the licensee or applicant or the responsible person belonging to the establishment demands it, take duplicate samples and give one sample to the licensee or the applicant or such responsible person;
 - d. Inspection and Certification Agency may at his discretion, and shall if the licensee or applicant or the responsible person belonging to the establishment demands it, place each such sample in a covering and jointly seal each sample. In the case of samples drawn by Inspection and Certification Agency which cannot be so sealed, such samples shall be marked with certain identification to establish their identity;

- e. impression of the seals and details of identification shall be given in the Inspection and Certification Agency's report. The samples shall be labelled giving complete details; and
 - f. Inspection and Certification Agency shall give a receipt for sample or samples taken and retain a duplicate copy of the receipt duly signed by the person in whose presence the sample was taken.
- 12) Inspection and Certification Agency may take samples of products marked with the Certification Mark from the godowns or any such premises of any agent of the licensee or from the articles put up for sale in the open market by the licensee or his agent.
 - 13) Inspection and Certification Agency shall arrange at least one inspection visit in a year in respect of each license.
 - 14) Inspection and Certification Agency shall make a detailed report of every inspection made by them.

6. Fees

- (1) Every application for the grant of a license shall be accompanied by a fee payable to Inspection and Certification agency and which shall not exceed the fee prescribed by designated Accredited Agency from time to time.

No such fee or part thereof shall, in any circumstance, be refunded, except in the event of operation of paragraph 5 (10) herein.

7. Undertaking

Prior to grant of license, the applicant shall sign an undertaking to the effect that he will make no claim direct or implied that the license to be granted relates to any products or processes other than those that will be set out in the license.

8. Surveillance and regular review

- a. The grant of license shall be followed by surveillance visits. The frequency and extent of visits shall be determined by Inspection and Certification Agency.
- b. The surveillance visits may be without notice to the licensee to ensure that the systems and procedures already assessed are being maintained.
- c. The special reassessment visit shall be necessary where a licensee fails to observe the conditions of the license or where there have been significant changes in the organization of the licensee. The licensee shall be liable for the costs of such special visits.

9. Use of Certification Mark

The licensee may use the Certification Mark only as authorised by Inspection and Certification Agency.

10. Publicity

- a. The Inspection and Certification Agency shall maintain a list of licensees and make it available to the designated Accreditation Agency
- b. The list shall be updated periodically,
- c. The licensee shall inform potential customers, purchasers or purchasing authorities of the full and exact details of the license.
- d. The licensee shall display the license in his premises.
- e. The licensee shall make use of the certification mark as authorised.
- f. The licensee shall state in documentation brochures or through advertising media that the organization or location to which the license applies have been assessed and approved by the Inspection and Certification Agency. In such advertisement the National Standards for Organic Products for which a license has been granted is to be stated and a higher level of approval than granted is not to be implied.
- g. A licensee who has been granted a license for System Certification Mark shall not claim or imply that the produce manufactured by him as been certified or approved by the Inspection and Certification Agency unless he is holding a valid license for that product under the recognized product certification scheme of designated Accreditation Agency.

11. Obligations of the licensee

A licensee on grant of a license to use of the Certification Mark shall:

- a. at all times comply with the requirements of the license as set out therein and comply with these regulations or any amendments hereto;
- b. only claim that he is holding a license in respect of the capability which is the subject of the license and which relates to the products or processes in accordance with the license requirements,
- c. not use the license in any manner to which designated Accreditation Agency may object and shall not make any statement concerning the authority of the Licensee's use of the license which in the opinion of the Inspection and Certification Agency may be misleading,
- d. submit to inspection and Certification Agency for approval the form in which he proposes to use his license or proposes to make references to the license,
- e. upon suspension or termination of the license, however determined, discontinue its use forthwith and withdraw all promotional and advertising matter which contains any reference thereto,
- f. Permit access to the inspector of Inspection and Certification Agency for purposes of assessment, audit or surveillance. The licensee shall give full details of all actions taken in response to field problems arising from allegations of defects in products or processes covered in the license and allow the inspector of the Inspection and Certification Agency access to all relevant records and documents for the purpose of verifying such details,
- g. Be required to produce evidence of continuing operations for the products or processes covered by the license. Licensee shall notify the Inspection and Certification Agency in writing of discontinuance in such operations exceeding three months. Discontinuance of a license in excess of six months or more may lead to cancellation of license. In such cases, a new application shall be lodged with the accredited Inspection and Certification Agency and an assessment visit will be necessary prior to grant of a new license,
- h. Pay all financial dues to the Inspection and Certification Agency in the manner prescribed by it, even for the period of discontinuance or suspension of license.

12. Surrender of - A license may be surrendered by the licensee at any time in writing to the Inspection and Certification Agency. In the case of surrender, the licensee shall return the license with all the related documents to the Inspection and Certification Agency.

13. Powers of Inspection and Certification Agency - The Inspection and Certification Agency may at its discretion:

- a. Refuse to grant a license or extend its scope or cancel or alter so as to reduce the scope of the license provided that the refusal, cancellation or alteration is a recommendation of the inspector of the Inspection and Certification Agency as to which a decision by the committee constituted by the Inspection and Certification Agency shall be conclusive. The refusal to renew or cancel a license for failure to discharge to obligations shall be based on the report of the inspector of the Inspection and Certification Agency on assessment/audit during surveillance and regular review. Such decisions shall be communicated to the applicant or licensee in writing,
- b. The Inspection and Certification Agency shall be entitled to suspend a license if there are sufficient grounds of non-compliance of the following:
 - i) if surveillance by Inspection and Certification Agency proves non-conformity to the relevant requirements but immediate termination is not considered necessary;
 - ii) if improper use of the license, related documents, is not remedied to the satisfaction of accredited Inspection and Certification Agency.
 - iii) if there has been any contravention of the procedures set out by accredited Inspection and Certification Agency,
 - iv) if the licensee fails to meet financial obligations to Inspection and Certification Agency, and
 - v) on any other grounds specifically provided for under the procedures, rules or formally agreed between the licensee and Inspection and Certification Agency.

- c. Where a license has been suspended or cancelled on the expiry of the period of its validity, the licensee shall discontinue forthwith the use of the license notwithstanding the pending of any appeal before designated Accreditation Agency and shall return the license and related documents to the Inspection and Certification Agency.
- d. Where the licensee is unable, in a reasonable period of time, to rectify any deficiencies, which make the licensee unable to comply with the requirements of this scheme, the license may be cancelled. Cancellation of the license in such case shall require the licensee to lodge a fresh application followed by the procedure prescribed in these regulations for the grant of a new license.

14. Misuse of license

The licensee shall be deemed to have misused the license, if he does not cease to display or otherwise use the license for use of the Certification Mark immediately after:

- a) Surrender of license, suspension or cancellation,
- b) The licensee has failed to implement changes as advised by Inspection and Certification agency.

15. Importer

Any applicant who is an importer of the products shall be granted a license to use the Certification Mark in the instance where an equivalency agreement exists with the country from where the product is exported or where such equivalency agreement does not exist then the applicant shall be subjected to the same regulations contained herein except for that of inspection at the location of production and that, instead, the applicant would be required by accreditation criteria and procedures of the National Programme For Organic Production.

16. Appeals

Appeals against any decision of accredited Inspection and Certification Agency shall be made to the designated Accreditation Agency within 60 days from the date of decision of the Inspection and Certification Agency accompanied by a fee of Rs. 500/- in the form of DD drawn in favour of designated Accreditation Agency, and the licensee shall abide and be subjected to the decision.

Date:

Place:

Signature

SECTION – 6

FORMATS

Organic Production is best served by the ability on the part of producers being able to demonstrate an adherence to the prescribed package of practices adopted for the production of a particular product. Towards this end, a careful record of the steps undertaken, observations made and the diary of events would help build customer confidence and product reliability. Such records will also help in diagnosing causes of problems and deriving factual information drawn from wide range of data.

An illustrative set of forms to be maintained at the Certifying agency, farm level, wholesale/retail levels are prescribed for adoption. All agencies involved in organic production are expected to maintain records in the forms drawn up.

Special care is to be taken by inspecting and Certifying Agencies to maintain farm level records, where the farmer is unable to maintain the record.

FORM - 1**APPLICATION FORM FOR ACCREDITATION**

1. Organisation/Address Phone No :
Fax No :
Email address :
2. Contact Person
3. Year of Foundation
4. Type of Certification
5. Accreditation and Reciprocity : Is your organisation already accredited by any organic programme?
Do you hold any reciprocal agreements with other certifiers. If yes, please give details. (If needed attach a separate page)
6. Organisation and Structure : No. of employees with curriculum vitae. (Please draw up an organisation chart)
7. Organisation Policy : Details of certification committee and CV of members.
8. Performance / Turnover of last 3 years.
9. Background
10. What is your motivation?
11. Do you conduct inspectors training programme?
12. Please describe your record system (about growers, processors, wholesalers, retailers).
13. Please describe your certification procedures.
14. Do you test for residues? If so, in which laboratory are your samples tested?
15. Are you aware of the certification procedures and programme of organic farming?
16. Which organic standards do you follow?
17. Are you aware of the NSOP and NAPP?
18. Which are the products you plan to certify or are certifying?
19. Please explain the concept of organic farming and products in 300 words.
20. Please indicate your tariff structures for various services along with the terms and conditions.
21. List of annexures.
22. Declaration:
All the information stated above are correct to the best of my knowledge.

NAME / DESIGNATION

DATE / SIGNATURE

FORM – 2**FORMAT FOR MEMORANDUM OF UNDERSTANDING (ACCREDITATION CONTRACT)****PARTIES:**

This contract will be signed between the accreditation agency and the accredited inspection and certification agencies.

PURPOSE:

Based on the NSOP, the MOU will provide all the necessary preconditions for evaluation and accreditation of the inspection and certification agency.

DEEDS:

The inspection and certification agency will provide all information necessary for evaluation of its certification, performance, as well as all documentation of the certified operations.

The inspection and certification agency will further make all necessary arrangements and provide all means of information for evaluation. It will give its full cooperation during the process.

The inspection and certification agency will fulfill its evaluation according to the criteria set in the national standards for organic products.

FINANCES:

On the basis of an approved budget submitted by the accreditation agency, the cost for evaluation and accreditation will be covered by the inspection and certification agency.

LIABILITY:

Reports will have to be submitted within :

- One month after the evaluation and payment.
- Payments are to be made within 15 days of the date of invoice.
- 50% advance payment to be made along with the application form and 50% at the time of accreditation.

CERTIFICATION MARK:

The inspection and certification agency is hereby authorized to grant license to an applicant for use of the certification mark of Indian Organic Logo in pursuance to the provisions of Regulations pertaining to Certification Mark for Organic Products.

TARIFF:

The maximum tariff to be charged by the inspection and certification agency will be as per Annexe-1.

DURATION:

The contract will be valid for three years from the date of signing by both the parties. Unless terminated earlier by a breach by Inspection and Certifying Agency upon an occurrence of a breach by them at any one or more of the provisions contained herein. The contract will be renewed subsequently if the performance is upto the expectation. In case of default in performance, the contract may be canceled by the accreditation agency following an appropriate warning.

COMMITMENT:

The inspection and certification agency herewith pledges to live up to the expectations of the accreditation agency in maintaining the NSOP and cooperation during evaluation.

Place and date

Place and date

Signature of certifying agency

Signature of the members of
Accreditation Agency

FORM – 3**CONTRACT FORM FOR CERTIFICATION TRANSFERENCE
(FOR FOREIGN CERTIFICATION PROGRAMMES)****1. PARTIES:**

This contract is made and duly signed between the two parties named hereafter:

_____ represented by _____
(the inspection and certification agency)
and the

_____ represented by _____
Accreditation Agency (AA)

2. GENERAL:

Trading activities and processing of multi-ingredient products make it likely that products covered with certificates from different programmes are handled and/or mixed into one final produce. In any such case, the final authority of approval is the accreditation agency. The accreditation agency issues a list of all such certification programmes that (after thorough investigations) have been found equivalent to the programmes directly accredited.

3. PURPOSE:

This contract provides for the necessary preconditions for general acceptance and periodic reevaluation of the certificates provided by the forementioned certifier as equivalent to those issued by the agencies accredited by the accreditation agency.

4. DEEDS:

On request of the accreditation agency, the inspection and certification agency will provide all information necessary for periodic evaluation of its certification performance as well as all documentation for the certified operators and products. The inspection and certification agency will support the accreditation agency in all possible ways in optimizing the market survey, transparency and control in either area of responsibility.

The inspection and certification agency will furthermore inform the accreditation agency of any changes in the standards, scope, and methods relevant to the quality of their inspection and certification procedures for organic products.

5. FINANCES:

All requested information and support will be provided free of charge. In return the accreditation agency will charge no fees for registration of this certification transference.

6. DURATION:

This contract is made for a limited duration. It may be canceled without prior warning by decision of the accreditation agency.

7. LIABILITY:

No liability may be deducted from this contract or its cancellation by any party.

Place and Date

Place and Date

Signature, XXXX

Signature, XXXX

FORM - 4
FORMAT FOR
REQUEST FOR ISSUE OF PRODUCT CERTIFICATE

From : The Producer

To : The Certifier

Dear Sir,

Sub : Request for Issue of Product Certificate

1. Name and address of exporter/producer
2. Name and address of importer/buyer
3. Name and address of merchant exporter
4. Products - Invoice no. and date
5. Quality / Status (Organic/Organic under conversion - 1st or 2nd year)
6. Origin of produce
7. Net weight/Gross weight
8. Year of harvest
9. Internal Lot nos.
10. No. and kind of packing units
11. Remarks

Yours faithfully,

Signature of producer

FORM - 5,
FORMAT FOR FARM CERTIFICATE

Accreditation no. . .
of the certifier

Certifier's name
and address

FARM CERTIFICATE

No.

Name and address
of farm

Product category

Area of farm

Size of processing unit

Based on the inspection conducted and Memorandum of Understanding, the certifier (name) herewith certifies that the above mentioned operation produces according to the organic methods of NSOP.

Date _____

Place _____

Signature

Validity of certification

Seal

FORM - 6
FORMAT FOR PRODUCT CERTIFICATE

PRODUCT CERTIFICATE

No.

Product :

Quality :

Harvest :

Origin :

Packing Units :

Net Weight :

Invoice No. :

Name and address of the seller :

Name and address of the buyer :

Declaration :

This is to certify that the products designated above have been obtained in accordance with the rules of production and inspection of the organic production and operation of the organic production method, as set by the NSOP and monitored by _____ (Name of the certifier).

Date _____

Signature

Place _____

Seal

125165-04-12

FORM - 7**CERTIFICATION TRANSFERENCE REGISTER****AREA OF APPLICATION:**

This register will include all foreign certification programmes or accreditation schemes which will be found equivalent to NSOP. Certified organic products of any registered foreign programmes will be considered for marketing along with the certified products of the accredited domestic programmes.

THE REGISTER:***Foreign certification programmes***

Country	Name of Programme	Field	Restrictions	Decision
ABC	XYZ	Food production Food processing Wild productsTextile Internal certification	Annual supervision report OR None	Date

Foreign Accreditation Schemes

Country	Name of Scheme	Field	Restrictions	Decision
Europe	EEC, implementation of EEC-Reg. 2092/91	Food productionFood processing	Not applicable for - animal products - textile - forest products	Date
International	IFOAM	Food production Food processing Wild products	Not applicable for - textile - forest products	Date

VALIDITY:

This register will be renewed annually.

This issue: _____

1. Running number _____
2. Date of issue _____
3. Date of enforcement _____

FORM - 8**Application-form import/transaction-certificate**

Name licensee

Licensee-number

Name of seller/exporter

Address

Country

Name last producer or processor

Address

Country

Trade name of product

Country of dispatch/origin

Status ☐ organic ☐ under conversion to organic

Gross and net mass gross:..... net:.....

or alternative units alternative units:.....

Packed or bulk ☐ bulk ☐ packed in units of

Invoice-no with date

Transport document no.

Container-no.

Identification-code (eg. lot-no)

Harvest/production year

Name consignee/buyer

Address

Country

Address of place of destination

(only to be filled in if different from address of consignee/buyer)

Send certificate to ☐ seller/exporter ☐ buyer/consignee**I have truthfully filled in all the information required and I have also enclosed copies of:**☐ Invoice and ☐ transport documents involved.

Date:

Name and signature applicant:.....

FORM - 9**ANNUAL QUESTIONNAIRE OF PROCESSING/ FARMERS**

(To be provided at Inspection)

1. BASIC DATA

		Remarks
Operator	a)	
Address	b)	
Closest Railway Station		
Closest Airport		
Telephone/Fax	c)	
Responsible person at Farm / Processing Unit	d)	
Managing Director	e)	

2. INFORMATION ON CHANGES

There have been the following changes since the last questionnaire was filled out :

Please mark where applicable			Please number the annexures accordingly	Remarks
Branch	Change			
	Yes	No		
Legal Form				
Structure of operator				
Changes in responsibilities				
Changes of construction				
Place of production				
Variety of non organic production				
Suppliers				

Branch	Change		Please number the explanations according to the annexes	Remarks
	Yes	No		
Recipes				
Processing methods				
Packing				
Label				
Licence contracts				
Book keeping				
Identification system				
Quality control				
Hygienic measures				
Distribution system				
Clientele/System of selling				
Purchase system				
Others				

			Remarks
Please add the following figures of your company, regarding the last book keeping year			
Turnover total volume	Year ended ———	Rs. ————	
Turnover organic products	Year ended ———	Rs. ————	

4. QUALITY CONTROL

	Remarks
Did you carry out any residue analysis since the last questionnaire? If so, what kind of, how many and by whom ? (Please enclose copies of the results).	

5. LIST OF ANNEXURES

		Remark
Would you please list and number all documents which you enclose to this questionnaire		
Code	Title	
	Sample of labels	
	Sample of promotion material	
	Current price list	

The operator

represented by

assures herewith, that all information given is true and up to date.

Place/Date

Signature

FORM - 10**OFF FARM INPUT PERMISSION FORM****1. OPERATION**

Name :			
Address :	Place :		
Phone/Fax :	Pin code :	Labels :	

2. FERTILIZATION TO BE APPROVED

Fertilizer (Composition, Type, Name)	Origin (Address of Supplier)	Quantity to be used	Period of Application

3. AREA(S)

Field (Number, Name)	Crop	Fertilizer (Name, Type)	Application in kg/ha	Time of Application

4. SOIL ANALYSIS

Date	Field	Laboratory	Result (Levels)				
			N	P	K	Mg	Ca

5. CONFIRMATION

The undersigned herewith confirm to the best of his knowledge that the above given information is true :	
Consultant :	Operator :
Place, Date, Signature	Place, Date, Signature

6. RECOMMENDATION OF THE INSPECTOR

Consultant : recommendations (use additional sheets if necessary)	Label Scheme :
--	----------------

7. DECISION (TO BE FILLED IN BY INSPECTION AND CERTIFICATION AGENCY)

Request received	Decision to Operator	Decision to Inspector
<input type="checkbox"/> Request approved under following conditions: <input type="checkbox"/> Request not approved : <input type="checkbox"/> Request forwarded to the competent authority:		
Certification Agency :		
Place, Date, Signature, Stamp		

FORM 11**APPLICATION for grant of LICENCE to use the CERTIFICATION MARK
Under the Organic Products Certification Mark Regulations 2002**

*I/We carrying on business at _____

Under the style of _____

Hereby apply for a license to use the Indian Organic Logo Certification in respect of the product/process which conforms to the National Standards for Organic Products norms and procedures listed below:

a) **Product _____

Type _____

Size _____

Grade _____

Related norms of Standards for Organic Products

b) **Process _____

Related norms of Standards for Organic Products.

2. The above product is manufactured by _____

process is carried out _____ Name of location

(address)

* Strike out one not applicable

** Only one of the two items under (a), (b) may be covered by one application strike out the other.

3. a) The composition of the top Management of my/our firm is as follows:

S. No.	Name	Designation
--------	------	-------------

b) I/we undertake to intimate to the Inspection and Certification Agency any change in the above composition as soon as it takes place.

4. I/We hereby enclose an attested copy/photocopy of the certification of incorporation issued by the Registrar of firms or Societies/Companies/director of Industries (In case of Small Scale Units) Or similar other Documents authenticating the name of the firm and its producing location.

1. a) I/We have testing arrangements as per enclosed list and as per norms and procedures of Standards for Organic Products.

OR

b) The following testing arrangements as per norms and procedures of Standards for Organic Products are still to be made:

OR

c) Details of Accredited Laboratory

Name	Job
------	-----

- a) Trade-Mark (s)/Brand Name (s) used by us as follows:
- b) I/We intended to apply the India Organic Logo Certification with our following Trade-Mark (s)/Brand Name (s):
- c) Registration No. and Date of the trade-Mark (s)/Brand Name (s) proposed to be used with the India Organic Certification Mark.

OR

In case of non-registration, I/We enclose documentary evidence in form of publicity/packing material, etc. in support of the Trade-Mark(s) Brand Name(s)

5. Production figures of the said product/process and the value thereof to the best of my/our knowledge and estimates are as follows:

Year	Production	Unit	Value Rs.
Last year from			

to			

Current year from			

to _____			
(estimate)			

6. In order to ensure conformity of the said product/process to the related norms and procedures of the Standard for Organic Products.

*I/We have in use/propose to use the scheme of Inspection and Testing described in the Statement attached hereto. Routine records of all the inspections and tests are being/will be kept in the form detailed in the Statement. I/We further undertake to modify, amend or alter my/our Scheme of Inspection and Testing to bring it in line with that which may be specified by you from time to time.

**I/We have at present no scheme of Inspection and Testing in operation. I/We, however, undertake to put in operation any such as recommended by the Inspection and Certification Agency.

7. Should any initial enquiry be made by the Inspection Certification Agency, I/We agree to extend to the Inspection Certification Agency all reasonable facilities at my/our command and I/We also agree to pay all expenses of the said enquiry, including charges for a testing, as and when required by the Inspection and Certification Agency.

I/We request that the preliminary inspection of location may be carried out by _____
(indicate date)

OR

I/We shall intimate the time, date etc. suitable for carrying out the preliminary Inspection as soon as production of the product applied for is undertaken and I/We are ready for drawl of samples.

8.
 - a) Certified that earlier I/we had applied and the application No. _____ was It did not mature into a license because of _____
 - b) Certified that earlier I/We held CMS/T, No. _____ which was lapsed/cancelled because of _____ vide letter No. _____ dated _____ from Inspection and Certification Agency.
 - c) I/We have never been warned/advised by the Inspection and Certification Agency for any of our actions violative of the norms and procedures of the Standards for Organic Products.

OR

The details of warning/advice received by me/us for violating the norms and procedures of the Standards for Organic Products are as under:

9. I/We undertake that should any of the information supplied above in the application form is found to be wrong, the application may be rejected forthwith.

10. Should the license be granted and as long as it will remain operative, I/We hereby undertake to abide by all the terms and conditions of the license and the prescribed regulations. IN the event of the license being suspended or cancelled, I/we also undertake to cease with immediate effect to use the Certification Mark on any product covered by the license and to withdraw all relevant advertising matters and to take such other steps as may be necessary to fulfill the provisions of the aforesaid Regulations with immediate effect. We also undertake to comply with each and every provision contained in the aforesaid Regulations, where a license is granted to us.

Date this

day of

Signature _____

Name _____

Designation _____

For and on behalf of _____

(Name of the firm)

FORM 12**License for the use of India Organic LOGO CERTIFICATION MARK****LICENSE NO. CMS –**

1. By virtue of the powers conferred on it by the Regulations pertaining to Certification Mark of India Organic Logo, the Inspection and Certification Agency hereby grants to

(hereinafter called 'the licensee') this license to use India Organic Logo Certification Mark set out in the first column of the first Schedule hereto, upon or in respect of the product/process set out in the second column of the said Schedule which is produced or processed in accordance with/conforms to the related norms and procedures of Standard for Organic Products.

2. This license carries the rights and obligations stipulated in the above mentioned Regulations.
3. This license shall be valid from _____ to _____
4. This license is being granted to _____

subject to the condition that _____

has agreed to be subjected to the provisions contained in the Organic Products (Certification) Regulations, 2002.

Signed, Sealed and Dated this _____

day of _____

For ACCREDITED INSPECTION AND
CERTIFICATION AGENCY

THE FIRST SCHEDULECERTIFICATION MARK
(1)PRODUCT
(2)

--	--

FORM 13**DECLARATION**

To,
The Chairman
Accreditation Agency

I/We, of declare that we have been granted license no. dated to use of the INDIA ORGANIC LOGO, and we undertake to be subjected to the Regulations for INDIA ORGANIC LOGO Certification Mark for Agricultural Products March 2002.

Dated _____